# রেকর্ড-কাকলী

## क्षित्रियद्वी कर्क

সংগৃহীত। 📖 🗀

চতুর্থ সংস্করণ।



১৩৩२ --- कास्त्रन् ।

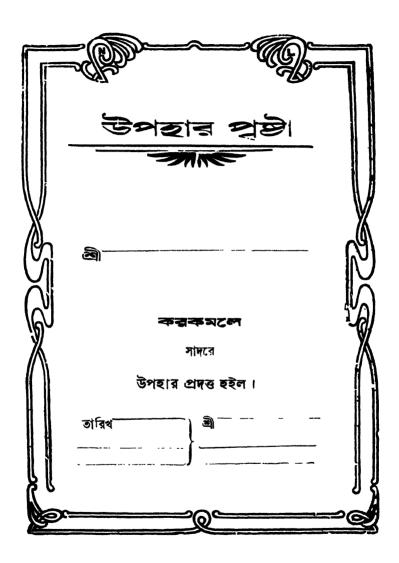
্ৰুল্য ১৪০ দেড় টাকা

#### প্রকাশক— শ্রীভাগ্রহান্ত চক্রান্তা।

১০৫ নং আপার চিৎপুর রোড, "তারা-লাইব্রেরী" কলিকাতা।

All Rights Reserved,





## স্থুচীপত্র।

| গান                        | পৃষ্ঠা             | গান                      | পৃষ্ঠা     |
|----------------------------|--------------------|--------------------------|------------|
| ভা                         | į                  | আজি এনেছি আজি এনেছি      | ¢          |
| অমুগত জনে কেন              | æ                  | আহা কিবা মানিয়েছে রে    | >>         |
| অধীর হ'য়ে দড়ি দিয়ে মিছে | ৬৯ ˈ               | আমরা বিলেত ফেরৎ ক'ভাই    | ७०         |
| অতি কাতর হৃদয়ে সে যে      | ৮৬                 | আব থাড়া হ্লায়          | ১৬         |
| অসার সংসার মায়ায় মজিয়া  | >>8                | অাপনাকে চেন ত আগে        | २ •        |
| অঞ্চল ছাড় চঞ্চল শ্ৰাম     | ১৩৬                | আজ কেন বঁধু অধরকোণে      | २०         |
| অন্তরে জাগিছে অন্তর্যামী   | >62                | আমার নতুন বেদেনী         | २€         |
| অধিন <b>ব্ৰদ্ধাণ্ড</b> পতি | <i>&gt;</i> >8     | আঃ বেঁচেছি               | २৮         |
| অচল ঘন-গহন-গুণ গ†ও         | 7.6.6              | আমরা কি ডরি অরি          | २৯         |
| অস্তে যেন ঐ চরণ পাই        | 794                | আমরা বেরিয়েছি সেই ভোরে  | ٥,         |
| অনস্ত মহিমা গো মা          | <b>&gt; &gt; 9</b> | স্থামার এ সাধের তরী      | ૭ર         |
| অহুথে দিন যায় মা তারা     | >%                 | আসি আসি ব'লে কেন         | <b>○</b> € |
| অতি শীতল মলয়ানিল          | १८८                | আজু রজনী হাম             | 20         |
| অন্ধর-তাপ তপনে যব জারব     | २०१                | আমার মনটি করিয়া চুরি    | 65         |
| অর বয়সে মোর শ্রাম         | २२१                | ত্মামি তাঁরে প্রাণ দিয়ে | 88         |
| অমল ধবল পালে লেগেছে        | २७8                | আকাশে ঢেউ লেগেছে         | 88         |
| অন্ধ বিৰুঢ় মন             | ২৩৬                | আমার কাঁচা পিরিভ         | 80         |
| অয়ি ভূবন-মনগোহিনী         | २ <b>৫</b> ६       | আমার বুকে পিঠে সেটে      | ¢ •        |
| <b>ভা</b>                  |                    | আমারে আস্তে হ'লে         | <b>¢</b> 8 |
| আর কেন মিছে আশা            | ર                  | আমার আর কিছুই ভালগাগে না | _          |

|   | গান                         | : পৃষ্ঠা       | গান                        | পৃষ্ঠা      |
|---|-----------------------------|----------------|----------------------------|-------------|
|   | আমার সাধ না মিটিল           | ٤۶             | আমি নারী হ'য়ে বুঝলাম নাকো | 200         |
|   | আসার চোখে যদি লাপে ভাব      | ৬১             | আর কবে দেখা দিবি মা        | 229         |
|   | আমি নিশি নিশি কত            | ৬৪             | অ'মার স্থন্দব না           | >8 •        |
|   | আমার সাধনের বাঁশী দাও       | 90             | আমি আমি করি বুঝিতে         | >8>         |
|   | আমি তোমারই আশে              | 98             | আমায় ভালবাস না বাস        | 282         |
|   | আয় মা সাধন-সমনে            | ৭৬             | আর কাজে কাছে যাব না        | >88         |
|   | আয় না আয় না উমা           | 99             | আনি তোমার জন্মে কাঁদি      | >0.         |
|   | আমার হৃদয়কমলে এসো          | <b>ዓ</b> ৮     | আর জলে য। ওয়া হ'ল না      | >00         |
|   | আমায় লোহারই বাঁধনে         | 60             | আর বাশী বাজা'ওন            | >00         |
|   | আমার যত দিন যায়            | <sub>የ</sub> ን | অমার পর্ণে যাতা চায়       | : @ @       |
|   | আনার নাথা নত ক'রে দাও       | 92             | মার ত যাব নালো সই,         | >27         |
|   | আমি ত তোমারে চাহি নি        | 92             | আমার সভামিশা। সকলি         | 586         |
|   | আকুল হয়ে কেঁনে কেঁদে       | 92             | মাহা বিঘোৰে বেহারে         | 292         |
|   | আমায় দে গো মোহনচূড়া বেঁধে | 94             | মানি ভালবেসে ভাল করি নাই   | >99         |
|   | আর কিছু চাই ন। তারা         | 66             | মরি কি লাজের কথ।           | <b>:</b> 6: |
|   | আর কেন কাঁদাৎ শ্রামণ        | 66             | আর জাগাস্ নে মা জয়া       | १८६         |
|   | আনি কি তোর কেউ নই তার।      | 66             | মানক-বন গিরিজাপতনগরী       | 466         |
|   | আমি নিতে জানি থেতে জানি     | >04            | মাজ এসেজি নাথ পারে ধ'রে    | > > C <     |
|   | আমি স্বপনে তাঁহারে          | 605            | আনি যদি প্রানের দেখা পাই   | <b>330</b>  |
|   | আমি দারা স্থত চিনি ভাই      | 222            | আমার আহলাদে প্রোণ          | ३२५         |
|   | আমায় সবই দিয়েছ স্থ        | <b>&gt;</b> 25 | আছ৷ কি আছে এমন             | २२५         |
|   | আজ কেন কালী কদ্ৰনূলে        | 25@            | অ্যার বিবি আ্যার বিবি      | २२৫         |
|   | আমাহ নিয়ে বেড়ায় হাত ধ'রে | 202            | মার ভাল লাগে না ভারা       | २७৫         |
| ŧ | আৰু কাঁহা মেরি হাদয় কি রাজ |                | অনি হারাদে দেলেছি সামারে   |             |

|                              | সূচীণ        | ত্তে ৷ <sub>ূ</sub>        | <i>ં</i> ૦   |
|------------------------------|--------------|----------------------------|--------------|
| গাৰ                          | পৃষ্ঠা       | গান:                       | পৃষ্ঠা       |
| আমার বল্তে ছিল যাহা          | २८७          | এখনও প্রাণে ছবি কেন তারি   | 8•           |
| আমি কি ছঃখেরে ডরাই           | २ <b>৫</b> 8 | এদ এদ রে কানাই             | 84           |
| স্থামার খাঁচার পাখী          | २৫৫          | একবার নাচ নাচ ওরে          | 81-          |
| আসি ব'লে চলে গেল সে          | २६१          | এস যদি থেল্বে হোরি         | <b>e&gt;</b> |
| আমার মন বেদনা                | २६२          | একি রূপ হেরি হরি           | "            |
| <b>অানন্দ</b> ময়ী হ'য়ে গো  | २६२          | এহো রাজা জাতি <b>হা</b> য় | ૯৬           |
| মানারে গোপন ক'রে             | २७२          | এমন মধুর নিশিতে            | 93           |
| শ্ৰমি যাহার লাগিয়ে কলন্ধিনী | ર ৯৫         | এবার উমা এলে পরে           | <b>b</b> •   |
| আপন বঁবুগা আন বাড়ী যায      | ૨ ৬ ৬        | এবার তোরে চিনেছি না        | <b>৮8</b>    |
| আনি সংসারে নন দিয়েছিত্      | २ ५४         | এস এস গোমা ভবরাণি          | >•           |
| আমরি কি মালা গেঁথেছ          | 290          | এ মায়া প্রাপঞ্চময়        | <b>≥€</b>    |
| আরতি নব গৌরচ <del>ত্র</del>  | २৮२          | এদ এদ কাছে দূরে কি গো      | ۵ ۹          |
| আর ত ব্রজে যাব না ভাই        | २४९          | একদিন ভোমার এমন হবে        | 24           |
| 萝                            |              | এ তো মায়ের উচিত নয়       | > 8          |
| ঈশানী পাষাণীর বেটা           | >99          | <b>এन मा क्रमानी</b>       | >•¢          |
| स्थान क्लांब नारत चेत्राह    | \\\\         | এস মা আনন্দময়ী            | >•७          |
| ₹                            |              | এখাতে চিন্তায় উঠলে চিতায় | <b>%</b> •¢  |
| উমারে বিদায় দিয়ে কেমনে রব  | 86           | এলোকেশে হেসে হেসে          | 5 <b>-</b> 9 |
| উঠিতে কিশোরী বসিতে কিশো      | ە د د        | এই মা ছিুলে কোথায় গেলে    | 22.          |
| উঠ গো করুণাম্মী              | २ऽ४          | এখন নূতন প্রেটেত তোমার     | >>0          |
| উঠে চাঁদ দেখ তুমি            | ₹88          | এস করি কোলে উমা            | >>0          |
| • 🕥                          |              | এলো রণে ওই গ্রামা বামা বে  | 2 27¢        |
| এখনো তারে চোখে দেখিনি        |              | এ পাতকী যদি ডুবে যায়      | >>%          |
| এস হে প্রোণ জনয়-ধন          | ৩২           | একবার চল দেখি মন           | >>@          |

## ,সূচীপত্ৰ

| গান                        | পৃষ্ঠা       | গান                            | पृष्ठे!     |
|----------------------------|--------------|--------------------------------|-------------|
| এমন দিন কি হবে মা তারা     | 656          | একা প্রেম রাখা হ'ল দায়        | २४१         |
| এস প্রাণ এস হৃদয় আবরি     | ५००          | <b>a</b>                       |             |
| এস শুভদে বরদে শ্রামা       | > 98         | ঐ দেখা যায় ঘরখানি             | ೦ನಿ         |
| এস এস ব'লে রসিক নেয়ে      | ६०८          |                                | <b>28</b> 3 |
| এখনও কি ব্ৰহ্মময়ী হয় নি  | \$83         |                                | 789         |
| এ প্রেম ছলনা               | 784          | 🗳 পয়সা উড়ে যায়              | २१¢         |
| এদ রে নয়নে তোমায়         | <b>68</b> ¢  | <b>'</b> €                     |             |
| এহেন পাষাণ যদি             | >৫१          | ও গো কেউ বল না গো ভাতার        | રહ          |
| এক মনেতে তোর এক তারাতে     | ১৬৩          | ওরা একুল ও কুল রাখ্বে ছকুল     | २.७         |
| এমন যামিনী মধুর চাঁদিনী    | <b>३</b> १२  | ওলো রাজকুমারী হাতে ধরি         | 8२          |
| এসে বঁধুয়ার পাশে          | ১৭৩          | ও কি হ'ল গো আমার               | ৫२          |
| এত ক'রে ডাকি শ্রামা        | 29F          | ও মাকেমন মাতাকে জ্বানে         | <b>(</b> 3  |
| এই সময় ভঙ্গরে মন তারা     | ১৮৬          | ও তোর শ্রীদাম সথা পটেতে        | ৬৮          |
| একবার ব্রঙ্গে চল ব্রঞ্জেধর | २००          | ও গো দয়ানয়ি কোন্ <b>গুণে</b> | >8>         |
| একবার যা গো সহচরী          | २∙8          | ও মা ত্রিনয়না যেও না যেও না   | ১৮৩         |
| এবার বৃঝি আমার ভাগ্যে      | २२०          | ও কুজার বন্ধু হরি              | ०५८         |
| এমন নয়ন বাগ কে তোমার      | २२১          | ও সেই মহাসিদ্ধুর ও পার থেকে    | ২৩১         |
| এন প্রাণসখা এন প্রাণে      | <b>२</b> 8२  | ও মা গা তোল গা তোল             | २७৯         |
| এ কি কৰুণা কৰুণাময়        | २ <b>৫</b> २ | ওরে লাজের মামুদ                | ২৬৩         |
| এ কি আকুলতা ভূবনে          | २०७          | <b>₹</b>                       |             |
| এস বঁধু এদ আধ ফরাসে        | २ <b>∉</b> ७ | কি জানি কি হ'ল প্ৰাণ সই        | >>          |
| এত দাধিলাম কাঁদিলাম        | २७२          | কে তুমি নিদয় হ'য়ে হান্লে     | २२          |
| এমন কালিয়ে চাঁদ কে আনিল   | २१४          | ক্বিতাকুমারী এস ধীরি ধীরি      | २¢          |
| এবার উমা এলে আবার          | ২৮৬          | কে পোয়াতি রসবতি থোলা নি       | ৰি ৩•       |

|                                  | সূচীণ          | ত্রি ৷                      | !/·          |
|----------------------------------|----------------|-----------------------------|--------------|
| গাৰ                              | পৃষ্ঠা         | গান                         | প্ৰ          |
| কেমনে ভাল না বেলে                | ৩৭             | কালরূপে গেল সকল             | >68          |
| কাঁহা জীবনধন বুন্দাবন-প্রাণ      | 82             | কালী কালী কালী বল মন        | >66          |
| কান্থ সে বিনোদ রায় গো           | ৬২             | কালী করুণাময়ী শিবানী অভয়  | SEE          |
| কই গো কুটিল কালা                 | ৬8             | কাঙ্গাল বলিয়া করিও না হেলা | >64          |
| কি দিয়ে পুজিব বল না তোমারে      | 90             | কে তুমি আড়াল থেকে          | >65          |
| কোথায় লুকালে ও হে নাগর          | 90             | কর তার নাম গান              | >6¢          |
| কেন দাঁড়ায়ে খ্রাম কুঞ্জের ছারে | 98             | কেন গঙ্গাবাসী হব            | >96          |
| কালার প্রেমের জ্বালায় জ্বলে     | ७७             | কালী গো কেন স্তাংটা ফের     | >44.         |
| কত দিন পরে তারা এ দীনে           | ۶8             | কেমনে যাবি মা চলে           | )म्ञ         |
| কি হবে কি হবে উমা চলে যাবে       | ৮৬             | কালী নাম জপরে মন            | 749          |
| করী-অরিপরে আনিলে হে              | <b>৮</b> ৮     | কেন ভাবি ভাবি তাই           | 745          |
| কেন হারাবি হু'কুল                | ಶಿ೨            | কালা তুমি ছল ক'রে           | 75.0         |
| কত দিনে হবে সে প্রেম-সঞ্চার      | ৯৬             | কিবা অমুভব কামু             | २०३          |
| কেন গো মা জিব্ কেটেছ             | >0>            | কোথা হে প্রাণস্থা           | २১७          |
| কাল গেল কালী কালী বল না          | 226            | করুণা করিয়া রূপাম্যী       | २ऽ१          |
| কত থেলা জান তুমি                 | <b>১२</b> ०    | কইরে কইরে কইরে আমার         | २२१          |
| কেন যামিনী না যেতে জাগালে        | <b>&gt;</b> 28 | কোলের ছেলে খুলো ঝেড়ে       | ર <b>્</b>   |
| কার প্রেমে অমুরাগে ভূলেছ         | <b>&gt;</b> २१ | কে রে হৃদয়ে জাগে শান্ত শীত | ল ২৪.০       |
| কেন কেন যারে নাহি পায়           | 200            | কুটিল কুপুথ ধরিয়া          | २ <b>8</b> > |
| কলুষ-বিনাশিনী কালী               | २०१            | করালবদনী কালী               | ₹8>          |
| কাঁচা বয়েস দেখে প্রগো           | 208            | কালি বেলা অবসানে            | २ <b>8</b> 9 |
| কেন মন চায়-                     | ६७८            | কদমতলায় কেগো বাঁশরী বাজ    | ায়২৪৮       |
| কতবার আসিয়া কত ভাল              | \$88           | কেমনে বুঝিব তোমারি ছলনা     | २६६          |
| কে বলে ভারিণী ভোমায়             | <b>&gt;8</b> % | কেন রে মন কিসের তরে         | <b>૨٤</b> >  |

| 19/4                                   | ′সূচীণ | পত্ৰ                            |               |
|--|--------|---------------------------------|---------------|
| গান                                    | পৃষ্ঠা | গান                             | পৃষ্ঠ         |
| কিছুই ব'ল না তারে গো                   | ২.৬৬   | <b>2</b>                        |               |
| কেন আর গাঁথলো মালা                     | ৬৭     | ঘন তমসাবৃত অম্বর ধরণী           | ২৩০           |
| কোলে তুলে নে মা কালী                   | २१२    | ঘাটে লাগায়ে ডিঙ্গা পান থেয়ে   | ২৬৯           |
| কি ধন তোমারে দিতে পারি                 | २१२    | 5                               |               |
| কেন গেলাম যম্নারি জলে                  | 5 P C  | চাই বেলফুল                      | 8 ¢           |
| কে তুমি হে তরুবর আছ স্থ                | ২৮৬    | চাই না চাই না চাই না রে তো      | まつくみ          |
| ~                                      |        | চরম সময় হও মা উদয়             | <b>&gt;⊘8</b> |
| খুলে দে তরণী খুলে দে                   | ع ث و  | চরণ ছাড়িয়ে কেন দাও না         | 704           |
| থেলতে ত এসেছি ভবে                      | > 98   | চিরদিন কি এগনি যাবে কালী        | 282           |
| <b>7</b> 1                             |        | চুড়ি নিবি গো                   | 295           |
| গুণমণি দাসী তব পায়                    | ٦٦     | চলিলে আনন্দম্যী আজি             | :69           |
| গগনে গরজে ঘন ঘন বরষা                   | ၁၁ ်   | চির দিবস ভেল হরি                | २०၁           |
| গত নিশি খ্যান গেছে ফিরে                | 28     | है। म है। म है। म हो दमत्र वादम | 520           |
| গোঠে হ'তে আইল ন <del>নত্ব</del> লাল    | 24     | চির্দ্থা ছেড় না মোরে           | ૨૯૨           |
| গয়লা দিদি লো তোমার ময়লা              | e:     | চলইতে অঙ্গ রাধার চলই            | <b>२</b> ৮8   |
| গিরি একি তব বিবেচনা                    | FC     | <b>5</b> .                      |               |
| গিরিশ-নন্দিনী মহেশভাবিনী               | ەد     | ছকি আইয়ে নায়                  | ૯૭            |
| গিরি গৌরী আমার এসেছিল                  | 86     | ছাড়িয়ে সংসার কোথা চলে যাও     | 96            |
| গতিকি গঙ্গে হবে না •                   | ८०८    | ছ'জনায় মিলে পথ দেখায় ব'লে     | 388           |
| গোকুলে গোপনে তারা                      | 252    | ছি ছি একি দারুণ মানের           | २०३           |
| গেৰুয়া বদন অঙ্গেতে পরিব               | 398    | ছি ছি কেন ব'লে গেলে             | २७৯           |
| গমন সময়ে উনা আয় যা                   | 228    | <i>उ</i> न                      |               |
| গোবি <del>না</del> মুখারবিনা এ নিরখি ম | नऽठऽ   | জানিশ্ ত তোরা বল                | ۶             |
| গভীর যমুনা জলে                         | २२∙    | জুটলো অলি ফুটলো কত ফুল          | >9            |

| গান                             | পৃষ্ঠা            | গান                        | <b>ું</b>      |
|---------------------------------|-------------------|----------------------------|----------------|
| তুমি ত মা ছিলে ভূলে             | <b>)</b> 9 %      | দীনতারিণী ছরিতাহারিণী      | >5.            |
| তোরা মিসি নিবি মিসি নিবি        | <b>56.9</b>       | ছই হৃদয় নদী একত্ৰ মিলিল   | :8¢            |
| তুমি কার কে ভোমার               | >> C              | দেহি শ্রীচরণ যুড়াক এ জীবন | <b>७</b> ७२    |
| তবে তারা তোমার ভরদা             | <b>&gt;</b> b9    | দিও না দিও না দিও না বাথা  | ১৬১            |
| তোমায় দিব না শ্রাম যাইতে       | 749               | দেখ লো সজনী                | 720            |
| তুমি যদি ভালবাস প্রাণ           | <b>3</b> 28       | দোষ করিলে রোষ করে না       | <b>&gt;</b> ४९ |
| তারা কতদিনে হব পার              | <b>&gt;&gt;</b> @ | দিনে দিনে গেল দিন          | <i>5</i> 2 8   |
| তোমারই তুলনা তুমি প্রাণ         | २ऽ७               | দিন যে আমার যায় মা কালী   | २১१            |
| তারাপদ ভাবনা যে করে             | २ऽठ               | দিন ছনিয়াকো মালিক         | <b>२</b> २8    |
| তোমারই ইচ্ছা হোক্ পূর্ণ         | २२৯               | দীনতারিণী ব'লে মা ডাকি     | २२४            |
| তারা মোরে রেখে ছিলে             | ২৩৪               | দয়াল আমায় ভবে কর পার     | २७७            |
| তুমি নির্মাল কর মঙ্গল করে       | २७৮               | দাদা গো আর বুঝি মোর বিয়ে  | २৫०            |
| তোমার চরণে করি হৃঃখ             | २७৯               | দেখ সথা ভূল ক'রে ভাল       | २०४            |
| তুমি মা তারা হঃধহরা             | ع <i>و</i> ج      | দিবসে নিশিতে নিয়ত ভোজনে   | २११            |
| তুমি আমার পোষা পাখী             | ર.৬১              | দেখ দেখ দেখ সবে ভাই        | २৮১            |
| 2                               |                   | 욕                          |                |
| থেকে থেকে কে যেন ডাকে           | >82               | ধনধান্ত পুষ্প ভরা          | 9              |
| <b>₹</b>                        |                   | ধিন্ তা ধিনা পাকা নোনা     | €8             |
| দিদি গো আমরা আর একাদশী          | (b                | ধর ধর হে সথা প্রণয়-হার    | 92             |
| দিন গেল দীনদয়াসয়ী             | 90                | ধিয়া তা ধিয়া নরমালী      | ४२             |
| হুঃধহরা তারা নাম তোমার          | 9.9               | ধরম করম সকলি গেল মা        | <b>५२</b> ६    |
| <b>ক্লতা</b> রে নিন্তার না দেখি | FC                | ধূলা খেলা কর্ব না আৰু      | ১২৬            |
| দিবা নিশি তারা ব'লে ডাঁক রে     | \$2               | ধীরে তীরে কর পার           | ১२१            |
| দেখ হুদয় আসন রেখেছি শুন্ত      | ૦૬                | थिकः त्रांका थिकः धिकः     | 794            |

71-

٥0

20

200

258

282

282

>84

>08

396

>>0

226

720

204

377

নিত্য নিতা রাজবাঙীর ফুল 80 প্রেপর রবির কর a o প্রাণ কেমন কেমন করে 95 পাগল ক'রেছ তুমি আঁথিতে নব্যীনিশি পোহাল কি করি **b** 8 প্রভাত সময়ে আকুল হৃদয়ে 44 পাথী এই যে গাহিলি গাছে **F**2 নিশীথ শয়নে ভেবে রাখি মনে প্র'ল আমার কাহারে জানাব 25 পিরীতি ক'রেছি বিসর্জন নিশিদিন তোমায় ভালবাসি প্রাণপণে প্রাণ সঁপলাম যারে 202 প্রেম ভালবাসি ব'লে ভাইতে নীল আকাশে অসীম ছেয়ে 202 প্রাণ রাখিতে সদাই যে প্রাণান্ত ১৬৭ নাচা হাসা কানদা ক'দিন ভবে 225 পরিবার নীল শাড়ী 754 প্রাণ চাহে যারে মন তারে 720 পরাণ প্রিয়া মোর জীবন প্রিয়া 222 প্রিয়া বিনে হিয়া মোর 2019 প্রেম কি অঙ্কুর নীলগগনতলে নিভ্ত নিশার 222 পুনঃহ মিনতি করি কানায়ে নাথ তুমি ক'মেছিলে তোমা

গান

ধরা যদি ছথে ভরা

নিমিষের দেখা যদি পাই

না জানে না জানে প্রাণ

নাচত মোহন নৰ্ম্পুলাল

নীল নবীন সেই বহিম

নিশি যে পোছায়ে যায়

নিতান্ত আপন তাঁরে

নীলবরণা যমুনা ধাইছে

नमत्छ नमत्छ भातरम

ৰূপতি স্থথবাছা যদি

নন্দকুল চক্রমা

নজুরা দিল্বাহার বেনিয়া

নয়ন গলিয়ে যায় স্থনীলিম

## সূচীপত্ত।

| গান                             | পৃষ্ঠা | ্ গান                         | পৃষ্ঠ               |
|---------------------------------|--------|-------------------------------|---------------------|
| পার কর হে বংশীধারী              | २५५    | বারে বারে যে হঃখ দিয়েছ       | ১২৩                 |
| প্রাণ সঁপেছি পরের হাতে          | २১७    | বালিকা বয়সে ছিলাম স্বৰশে     | 254                 |
| প্রভাত অরুণ-কণ                  | २७৯    | বাশরী বাজিল যমুনায়           | >&>                 |
| প্যারী ঐ এন বৃঝি তোর            | २৫১    | বল স্থী মন বেদনা              | >06                 |
| প্রাণ তোমার স্থথের পথে          | २৫१    | বন্দে মাতরম্                  | >64                 |
| প্রেম ক'রে প্রাণদথী             | २७५    | বল্ব তারে যদি দেখা পাই        | ১৬২                 |
| <b>25</b>                       |        | বিপদ ভয় বারণ যে করে এরে      | ১৬৬                 |
| ফাঁকি দিয়ে প্রাণের পাখী        | રર     | বুড়ো বুড়ি ছ'জনাতে মনের মিলে | ১৬৮                 |
| कॅंकि मिर्च ८१न निर्व           | 88     | বড় ভালবাসা লেগেছে প্রাণে     | 290                 |
| কুলের মালায় <b>সাজ</b> ্বে ভাল | ខ។     | বিকল হ'তেছে মা গো ক্রমে       | ১৭৬                 |
| ফিরে লও মা তোমার স্থথের         | 774    | বুঝেছি মা তোর ইচ্ছা           | ar c                |
| কুটেছে কমলকলি                   | २२১    | বিলক্ষে কি কাজ যাও গিরি       | ১৮২                 |
| ⋖                               |        | বিফল জন্ম বিফল জীবন           | १६८                 |
| বসিয়া বিজন বনে বসন আঁচল        | >•     | বহুদিন পরে বঁধুয়া আইল        | <b>&gt;</b>         |
| বাঁধি যত মন ভালবাসিব না         | 20     | বদসি যদি কিঞ্চিদপি            | > 0 >               |
| বাঁটের মুখে খাঁটী হ্বধ          | 66     | বল নারে সখি কছ নারে স্থি      | २১১                 |
| বাজা প্রয়ে চিকণকালা            | ૭৬     | বিমল আনন্দে জাগ রে            | २२৯                 |
| বাজে শ্রামের মোহনবণ্ডে          | ૭৮     | বাশরী বাজায় ফিরে ফিরে        | २७२                 |
| বহুদূর হ'তে এসেছি বঁধু          | ೨৯     | বিমহর সারাৎসার পূর্ণব্রহ্ম    | <b>२</b> 9 <b>೨</b> |
| বনে বনে ঢুঁজ়ি রে বঁধুয়া       | 85     | বুণা ভবে খেল্তে এলি তাস       | ર ૧૭                |
| বাঁধ না বাঁধ বাঁধ-না আমি আর     | 8.9    | বড় ছথ রহিল মরমে              | २४७                 |
| বলিশ্ হ'দিন থাক্তে হেথায়       | 69     | বৃঝ্লাম না তোর লীলাক ধারা     | २२७                 |
| বাজিছে তেনাক তেনা তেলাক         | >90    | ৰুথা দিন গেল তে হবি           | ২৬•                 |
| বড় ভালবাসি বারে বারে আসি       | 3.8    | বাঁশরী বাজায় ভামরায়         | २४२                 |

|                             | সূচী               | পত্ৰ । .                              | 112/-         |
|-----------------------------|--------------------|---------------------------------------|---------------|
| গান                         | পৃষ্ঠা             | গান                                   | পৃষ্ঠা        |
| <b>\(\rightarrow\)</b>      |                    | মন স্বাদশদল কমল দোলায়                | ৬৭            |
| ভাগড় ভাগড় হো              | २৮                 | মরমে মরম যাত্রনা                      | ۲۰            |
| ভালবাসি ব'লে আমারে          | ၁৬                 | মেয়ে হ'য়ে রণ-সজ্জা                  | ৮২            |
| ভালবেদে ভাল কাঁদালে         | ೨५                 | মিছে কেন যা মা কর                     | >•¢           |
| ভাল যদি বাস হে স্থা         | 8२                 | মা তোমার কি এতদিনে মনে                | >>0           |
| ভুলিশ্ নে ভুলিশ্ নে তারা    | <b>@</b> 9         | নিছায় আসিলাম কি কাজে                 | 222           |
| ভালবাসি যারে সে যদি না বাসে | 200                | না ব'লে ডাকিলে তোমায়                 | >>@           |
| ভানবাসি হ'টা কথা            | 704                | মা তোর র <del>ঙ্গ</del> দেখে রঙ্গময়ী | 374           |
| ভালবাসি হরি থেই মনে করি     | <b>225</b>         | মৃই অধনের অধম                         | 200           |
| ভালবাসি ব'লে কি রে          | २५७                | মাঝে মাঝে তব দেখা পাই                 | 300           |
| ভেদ বিচারি কিছু নাহি        | 252                | মা তোর এ কোন্ দেশী বিচার              | >8•           |
| ভুবন-মোহিনী তারা            | >>>                | মা ভবভয় কল্যনাশিনী                   | >8%           |
| ভবে এসে বেড়াই ভেসে         | ऽ <sub>व्र</sub> द | মনের সাধে শিবের হৃদে                  | 784           |
| ভূলিতে কি বল সথি            | <b>5-</b> 2        | মন গহীবের কি দোষ                      | ১৬২           |
| ভালবাসি ব'লে কিরে আসিতে     | २७৮                | মিল <b>নে</b> যে কত স্থ               | <b>&gt;90</b> |
| ভবে সেই সে পরমানন্দ         | २९७                | না গো <del>আ</del> মার এই ভাবনা       | ८१८           |
| স                           |                    | মা ব'লে ডাকিস্ না রে মন               | くりゃ           |
| মন বাঁধা দে বেঁধেছে মনে     | 76                 | মোট ব'য়ে মোর কাটলো দিন               | <b>?</b> ト>   |
| মরম ব্যথা কব'লো কারে        | 83                 | মা আমার বড় ভয় হ'য়েছে               | 740           |
| মাগো চিনিতে কি পার নি মোরে  | র ১৬               | মনের আশা রইল মনে                      | 746           |
| মুখটী আমার বুকে নেই তার     | ¢>                 | মধুপুর নাগরী                          | 866           |
| মনের বাসনা শ্রুমা           | 45                 | মরিব মরিব সখি নিশ্চয় মরিব            | १६८           |
| মাতিয়ে দে মা আনন্দময়ী     | ৬০                 | মধু-নাগরি যোষিতা <b>সবছ</b>           | ₹•8           |
| মা মা রবে মনস্থথে           | ৬১                 | যন্ত্রিম্ম কে আসিল হে                 | २२৯           |
|                             |                    |                                       |               |

| গান                       | পৃষ্ঠা      | গান                       | পৃষ্ঠা      |
|---------------------------|-------------|---------------------------|-------------|
| মোরে ডাকি ল'য়ে যাও       | २७०         | যে যাবার সে যাক্ সই রে    | 200         |
| মনের বাসনা যদি গাবে গান   | २७१         | ষেমন খ্রামা তেমনি খ্রাম   | <b>५</b> ५८ |
| মন চুরি যে ক'রেছে         | २85         | যতন তোমায় করি কত         | 797         |
| মিনতি করি হে কালাচাঁদ     | २8७         | যশোমতী নন্দ জন্ধ সম বৈঠত  | 3 o ¢       |
| মন যে নিল সে ত            | २८१         | যমুনারি জলে মোর কি নিধি   | २७७         |
| মনে করি ভুলি ভুলি         | २८৮         | যদি এসেছ এসেছ এসেছ বঁধু   | ₹89         |
| মরি হ'ল এ কি দায়         | २७५         | যাত্ব লুকিয়ে লুকিয়ে     | २89         |
| মা কি তুই পরের শ্বারে     | ২৬৩         | যে দিন বুকে রাখ্তে তোমায় | ₹8৮         |
| যন মাঝি তোর বৈঠা          | ২.৬৪        | যাহ আড়নয়নে মূচকে হেসে   | २৫०         |
| মা তোদের ক্যাপার হাটবাজার | 1 292       |                           |             |
| মোহ অন্ধাকার নাশিরে       | २ १७        | _                         |             |
| <b>2</b>                  |             | রাম রহিম না জুদা করো      | 28          |
| যথন স্থন গগন গরভে         | >           | রূপে যার মন মজেছে         | ¢ •         |
| যে যাতনা অযতনে            | २७          | রাঙ্গা জবাফুলের মালা      | 26          |
| যদি পরাণে না জাগে         | 99          | রাধা বিনে হ'নয়নে হেরি    | ३२२         |
| যাবত জীবন রবে আর কারে     | 8¢          | রাখ রাখ মিনতি মম রাই      | 25%         |
| যমুনে এই কি তুমি সেই      | అం          | রাধানামে অভিলাষী          | ંગ          |
| যে জন খ্যামা তোমা ভজে     | ৬৬০         | রূপদী প্রীবাদিনী          | ১৫৬         |
| যে দিকে তাকাই কুল নাহি প  | ই ৮৯        | রাই ধৈর্য্যং রহু ধৈর্য্যং | 720         |
| যদি এক বিন্দু প্রেম পাই   | >>8         | ক্ষপের শোভা দিন হুইচারি   | २১१         |
| যদি হবি মায়ের বেটা       | <b>३</b> २२ | রাক্ষ্সী প্রেয়সী শশী     | २५৯         |
| যতন ক'রে হলে রাখ          | 20          | রতন দেখিয়ে অবাক্ হট্টয়ে | <b>२</b> २8 |
| যাবে কি তে দিন আমার       | <b>306</b>  | রাম তুই হ'ল বনবাস         | २७६         |
| যাতনা দিতে, আমারে বাবি    | k 200       | র'য়ে র'য়ে কেন তার মুখ   | २४६         |

| ho/·                                     | সূচীপ         | াত্র।                    |              |  |
|--|---------------|--------------------------|--------------|--|
| গান                                      | পৃষ্ঠা        | হর হর শব্ধর              | うらゃ          |  |
| স্বপনের ছবি সম কে রে                     | २७२           | হরি হে দেখ্লাম তোমার     | રુષ્         |  |
| সত্যমঙ্গল প্রেমময় তুমি                  | २७१           | হরিনামের তরি বাঁধ ভাই    | 500          |  |
| সাধের থুমঘোর কভু                         | २इ७           | :<br>! इत इत इत महोटमव   | ২ 9 ৪        |  |
| সঁপেছি <b>জন</b> মের মত                  | <b>3</b> .₽\$ | ্তভিনয়।                 |              |  |
| সজল জলদান্ধ ত্রিভঙ্গ                     | २७8           | পুথীরাজ                  | २৮৮          |  |
| দ্ৰানন্দময়ী কালী                        | ₹98           | রিজিয়া                  | २৯२          |  |
| স্বদেশের ধূলি স্বর্ণবেণ্ বলি             | २५०           | বিজয়-বৃসন্ত             | २२७          |  |
| <b>ē</b>                                 | ;             | প্রকৃত্ব                 | २२४          |  |
| হরি ব'লে ডাক রসনা                        | >> ;          | <b>ମୃথী</b> ରଙ୍          | २२२          |  |
| <b>ঁ'ল না ইজ্দি ন</b> তুন                | २१            | পা গুর-গৌরব              | ೨೯೨          |  |
| হেলে ছলে নেচে গোষ্ঠবিহারী                | 89            | চক্রশেপর                 | 600          |  |
| হুন্য-রাসমন্দিরে                         | <b>«</b> 9    | লবি <b>শ্চন্ত</b>        | 950          |  |
| হরি তোমায় ভালবাসি কই                    | ৬৬            | জনা                      | ৩২০          |  |
| হরি দিবানিশি ডাকি তাই                    | 98            | ভবির <b>া</b> জ          | <b>0</b> > 0 |  |
| স্থদে বাঁধিয়া কেন নয়ন-জল               | ৮৮            | কপানকুণ্ডলা              | ৩২৬          |  |
| হরিপদ নিরাপদ সার                         | २१            | <b>ल</b> गत              | ৩২৯          |  |
| হরে মুরারে মধুকৈটভারে                    | 759           | বিৰমঙ্গল                 | <b>99</b> )  |  |
| হর হর হর বম্বম্                          | >>>           | রঙ্গরহস্ত।               |              |  |
| হেসে নাও ছ'দিন বই ত নয়                  | > 2>          | মাতালের গোপাল দাদা       | ৩৩৬          |  |
| হরি হে কেমনে চিনিব তোমায়                | 260           | আমিতো মদ মারি তুমি মাতাল | ೨೨१          |  |
| হরস্কৃদি সরোজ্ঞ' পরে                     | ントラ           | তাম্রকৃট-মাহাত্মা        | <b>08</b> •  |  |
| হারে রে রে রে রে                         | २85           | পৱিশি                    |              |  |
| হের গিরিরাণী তোমারি ন <del>ন্দি</del> নী | >8¢           | স্থপরিচয়                | <b>७</b> 8२  |  |
| রেকর্ড-কাকলীর স্কীপত্ত সমাপ্ত।           |               |                          |              |  |

## গায়ক-গ∤িয়কাগণের নাম।

| াড, এল, রায়                            | 7-7.9   | আমতা মালতামালা দাসা          | 766-797                      |
|---|---|------------------------------|------------------------------|
| গিরিশচক্র বোষ                           | <i>५७</i> -२०   | শ্রীযুক্ত অঘোরনাথ চক্রবর্ত্ত | ७८८-८६:री                    |
| মিদ্ গহরজান                             | २ •-२ ह   | শ্রীমতী পাল্লাময়ী দাসী      | <b>&gt;&gt;&gt;-&gt;&gt;</b> |
| অমৃতলাল বস্থ                            | २ 8∹၁२  | মাষ্টার মদন                  | २>२-२>8                      |
| <b>শা</b> ল্কাজান                       | ૭ર  | শ্ৰীমতী ব্ৰজবানা দাদী        | २ <b>&gt;</b> 8-२> <b>१</b>  |
| রবীক্রনাথ ঠাকুর                         | <b>၁</b> ೨-၁8   | শ্রীযুক্ত নিকুঞ্জবিহারী দত্ত | 229-224                      |
| বেদানা দাসী                             | <b>၁</b> 8-৫૨   | শ্ৰীমতী উধাবালা দাসী         | २७७-२२७                      |
| স্বৰ্গীয় লালচাঁদ বড়াল                 | (J-50   | বি, কে, মিত্র                | २२२-२२8                      |
| শ্ৰীমতা পূৰ্ণকুমারী দাদী                | ७०-१३   | ননীলাল ব্যানাজী              | २२8-२२१                      |
| শ্রীমতী রাধারাণী                        | 92-95   | রাধারমণ দাস                  | २२ <b>१-२२</b> ৮             |
| শ্ৰীযুক্ত কে, মল্লিক                    | <b>३</b> ०-३२३  | রাধিকাপ্রসাদ গোস্বামী        | २२४-२२৯                      |
| শীযুক হিজেন্দ্রনাথ বাগ্চী               | <b>&gt;&gt;&gt;&gt;</b>   | শরৎচক্র চটোপাধাায়           | २२৯-२७•                      |
| <u> </u>                                | 759-707   | তিনকড়ি চক্রবত্তী            | २००-२०२                      |
| <b>এ</b> মতী নর <del>স্থল</del> রী দাসী | )OC <- <cc< td=""><td>তুলসীচরণ দাস</td><td>२ ၁२-२ ၁৫</td></cc<> | তুলসীচরণ দাস                 | २ ၁२-२ ၁৫                    |
| শ্রীমতী মানদাস্থকরী দাসী                | >>0->@@   | ভবসিদ্ধ দুত্ত                | २७৫-२७१                      |
| শীযুক্ত সতাভূষণ গুপ্ত                   | >66->%  | শ্রীরাধাচরণ ভট্টাচার্য্য     | २०१-२8२                      |
| ঐমতী ননীবালা দুদী                       | 747-780   | শ্ৰীমতী নগেব্ৰুবানা দাসী     | २8२-२8€                      |
| শ্ৰীযুক্ত বলাইত শীল                     | <b>১७</b> ०-১१२   | শীযুক্ত চণ্ডীচরণ বন্দো       | २8६-२६२                      |
| শ্ৰীমতী চাৰুবালা দাসী                   | >9 <b>२-</b> >9@  | মিশ্ দাস                     | २৫२-२৫৪                      |
| শীযুক্ত নারায়ণচক্র মুখো                | <b>&gt;9%-&gt;</b> bb   | ত্রীযুক্ত কাশীনাথ চট্টো      | २৫৫-২৫৬                      |

## গায়ক-গায়িকাগণের নাম।

|                          | ১৫१-২৬৩  | ারাধাগোবিন্দ গোস্বামী       | २৮२-२৮৩ |
|--------------------------|----------|-----------------------------|---------|
| শ্ৰীযুক্ত যতীক্ৰনাথ বস্থ | ২৬৩-২৬৯  | তী ভাস্কুমতি দেবী           | २४०-२४६ |
| শ্ৰীমতী থাকমণি দাসী      | २७৯-२१১  |                             |         |
| শ্রীযুক্ত এম, এন ঘোষ     | २१२-२११  | শ্রীমতী পঞ্মণি দাসী         | २४७-२४७ |
| শ্রীমতী ডালিমমণি দাসী    | २११-२ १৯ | শ্রীমভয়পদ চট্টোপাধাায়     | २৮७-२৮१ |
| শ্ৰীযুক্ত হেমচন্দ্ৰ সেন  | २৮०-२৮२  | শ্রীমতী রাজলন্দ্রী মুখার্জি | २৮१     |

### চিত্ৰ সূচী

| <u> </u>         |             | রবীক্রনাথ ঠাকুর             | ೨೨             |
|------------------|-------------|-----------------------------|----------------|
| বসন্তরাগ         |             | স্বৰ্গীয়া বেদানা দাসী      | ୬୫             |
| পঞ্চমরাগ         |             | স্বৰ্গীয় লালচাদ বড়াল      | 40             |
| ভৈরবরাগ          |             | শীমতী নরস্থক্রী             | 202            |
| মেঘরাগ           |             | শীমতী চারুবালা দাসী         | <b>&gt;</b> 9₹ |
| নট-নারায়ণরাগ    |             | শ্ৰীমতী ভাস্থমতি দেবী       |                |
| ডি, এল, রায়     | <b>&gt;</b> | İ                           | २४७            |
| গিরিশচন্দ্র ঘৌষ  | 20          | শ্রীমতী রাণী <b>স্থ</b> নরী | ۵•۵            |
| মিদ্ গহরজান      | २०          | অনরেজ দত্ত ও কুস্থমকুমারী   | ৩২৩            |
| অমৃতলাল বস্থ     | ₹8          | মিদ্ তারাস্থন্দরী           | ૦૨૬            |
| <b>মাল্কাজান</b> | ૭ર          | স্বৰ্গীয়া স্থশীলাবাল       | <b>99</b> 3    |

# রেকর্ড-কাকলী

#### ডি- এল, রায়।

#### ইমন --- এক :

বপন স্থন গগন গর্জে, বরিষে করকাধারা ;
সভয়ে অবনি আবরে নয়ন, লুপ্ত চক্র তারা ;
দীপ্ত করি' সে তিমির জাগে কাছার আননথানি—
আমার কুটার-রাণী দে যে গো—আমার জনয়-রাণী।
ক্রোংস্লাছসিত নীল আকাশে যথন বিহগ গাহে,
স্লিগ্ন স্নীরে শিহরি' ধরণা মৃগ্ধ-নয়নে চাহে ;
তথন স্বরণে বাজে কাছার — মৃতল মধুর বাণী—
আমার কুটার-রাণী সে যে গো—আমার হৃদয়-রাণী।
আধারে আলোকে, কাননে কুঞ্জে, নিথিল ভ্বন মাঝে,
তাছারই ছাসিটী ভাসে হৃদয়ে, তাছারই মুরলী বাজে ;
উজল করিয়া আছে দূরে সেই আমার কুটারথানি—
আমার কুটার-রাণী সে যে গো—আমার হৃদয়-রাণী।



বহুদিন পরে হইব আবার আপন কুটারবাসী, দেখিব বিরহ্-বিধুর অধরে মিলন-মধুর হাসি, শুনিব বিরহ্-নীরব কঠে মিলন-মুগর বাণী,— আমার কুটার-রাণী সে যে গো—আমার হৃদ্য-রাণা দ

#### কীর্তুন— এক তালা।

জার, কেন মিছে আশা, মিছে ভাগবাস: মিছে কেন তার ভাবন: ।

সে যে, সংগরের মণি, আকাশের চাল—আমি'ত তাহারে পাব না ।

আজি, তব্ তারে অরি' সতত শিহরি, কেন আমি হত-ভাগিনী,
কেন, এ প্রাণের মাঝে নিশিদিন বাজে সেই এক মধুর-রাগিলা ।
ভানি,—উতে সেই গান নীরব মহান, যায় সে আকাশ ছাপিয়া;
দেখি ভানি' সেই ধ্বনি, শিহরে ধরণা, তারাকুল উতে কাপিয়া;
আমি, চেয়ে থাকি—ভির নীরব গভীর নির্দ্ধাল নীল নিশাথে;
কেন—রহি' এ মহীতে স্পান হইতে চাহি সে অনীমে মিশিতে।
আমি পারি না'ত হায়, ধুলায় গড়ায় তপ্ত অশ্বারি গো;
তবে, কেন হেন বেচে তথ লই বেছে, কেন না ভুলিতে পারি গো;
না, না, তবু সেই ছথ জাগিয়া থাকুক আমরণ মম অরবে;
আমি, ল'ভেছি যদি এ বিরস জীবন, লভিব সরস মারণে।



মিশ্র ইমন্—জলদ্কাওরালী।

ঘন তমসাবৃত অম্বর ধরণী,—

গর্জে সিন্ধ: চলিছে তরণী!—

গভীর রাত্রি গাহিছে ঘাত্রী.

ভেদি সে ঝাঝা উঠিছে হার!—

"ওঠ্মা ওঠ্মা দেথ্মা চাহি"

এই'ত এসেছি হার চিস্তা নাহি—

জননী হীনা, ক্সা দীনা,

ওঠ্মা ওঠ্মা প্রদীপটী ধর্। লজিয'বননী পকাতরাজী,

তোর কাছে এই আমি এসেছি'ত আজি।

কোথায় জননী ? গভীর রজনী, গজে অশনি, বহিছে ঝড়। "একি"!- --কুটার বে মুক্তদ্বার ! নিবলৈ দীপ---গৃহ অন্ধকার---

কোপার জননী ? কোপার জননী ?
শূস্ত যে শ্যা—শূনা বে ঘর"—
সে ধ্বনি উঠিয়া আউনিনাদে,
বিধাত-চরণে পড়িয়া কাদে;

চরণার্থীতে বজু-নিপাতে মচ্ছিয়া পড়িল সে অবনী পর ॥

# <u>রেকর্ড -কাকলী</u>

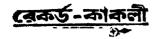
#### ইমন-একতালা।

দেগা গিয়াছেন তিনি সমরে, আনিতে জয় গৌরব জিনি; সেথা, গিয়াছেন তিনি মহা আহ্বানে— মানের চরণে প্রাণ বলিদানে :---মথিতে অমর মরণসিক্ত, আজি গিয়াছেন তিনি। সধবা, অথবা বিধবা, তোমার রহিবে উচ্চশির:---উঠ বীরজায়া, থাঁবো কুন্তল, মুছ এ অশ্রনীর। সেথা, গিয়াছেন তিনি করিতে রক্ষা শক্রর নিমন্ত্রণে ; সেথা, বর্ম্মে বর্মে কোলাকুলি হয়: থজেন ২জেন ভীম পরিচয়: ভ্রুকটির সহ গজন মিশে রক্ত রক্ত সনে। সধবা, অথবা বিধবা, তোমার রহিবে উচ্চশির ;— উঠ বীরজায়া, বাগে কুম্বল, মুছ এ অঞ্নীর। দেশা, নাহি অমুনয়, নাহি পলায়ন—দে ভীম সমর মাঝে: দেখা. রুধির রক্ত অসির **অঙ্গে, মৃত্যু** নৃত্য করিছে রঙ্গে, গভীর আর্ভনাদের মঙ্গে বিজয়-বান্ম বাজে। সধবা অথুবা বিধবা, তোমার রহিবে উচ্চশির :---উঠ বীরজায়া , বাবো কুম্বল, মুচ এ অঞ্নীর। দেশা, গি<sup>য়া</sup>ছেন তিনি দে মহা আহবে জুড়াইড্<sup>‡</sup>্সব জালা হেথা হয়'ত ফিরিতে জিনিয়া সমর:



হয়'ত মরিয়া হইতে অমর ; সে মহিমা ক্রোড়ে ধরিয়া হাসিয়া তুমিও মরিবে বালা। সধবা অথবা বিধবা, তোমার রহিবে উচ্চশির ; — উঠ বীরজায়া, বাধো কুন্তল মুছু এ অঞ্জনীর॥

> মিশ্ৰ ইমন-কাওয়ালী। আজি এসেছি—আজি এসেছি, এসেছি বধু হে, নিয়ে এই হাসি রূপ, গান। আন্ধি, আমার যা কিছু আছে, এনেছি তোমার কাছে. তোমায় করিতে সব দান। আজি তোমারি চরণতলে রাখি এ কুসুমভার, এ হার ভোমার গলে দিই বঁধু উপহার. স্থার আধার ভরি' তোমার অধরে ধরি.— কর বঁধু কর ভার পান ! আজি হৃদয়ের সব আশা, সব সুথ, ভালবাসা, ভোমাতে হউক অবসান। ঐ ভেদে আদে কুম্বমিত উপবন দৌরভ, ভেসে তাসে উচ্ছল জলনল কলরব, স আসে রাশি রাশি, জ্যোৎসার মৃত্-হাসি. ভেসে আসে পাপিয়ার তান:



আজি, এমন চাঁদের আলোং—মরি যদি সেও ভাল,

দে মরণ স্বরগ সমান।

আজি, ভোমার চরণতলে লুঠায়ে পড়িতে চাই,
তোমার জীবনতলে ডুবিয়া মরিতে চাই
তোমার নরনতলে শ্রন লভিব বলে,

আফ্রিছি তোমার নিধান;
আজি সব ভাষা সব বাক্—নীরব হইয়া যাক্,
প্রাণে শুধু মিশে থাক্—প্রাণ॥

#### কার্ত্রন।

স্থাবের লাগিয়া এ বর বানিক অনলে পুড়িয়া গেল. অমিয়া সাগরে সিনান করিতে সকলি গরল ভেল:

স্থি হে—কি মোর করমে লেথি।—

শাতল বলিয়া ও চাঁদ সেবিমু—ভামুর কিরণ দেথি।

নিচল ছাড়িয়া, উচলে উঠিতে, পড়িয়ু অগাধ জলে:
শছমী চাহিত্বে, দারিদ্র বেড়ল, মাণিক হারামু হেলে;

পিরাস লাগিয়া—জলদ সেবিমু বজর পড়িয়া শেল জ্ঞানদাস করে—কামুর পীরিতি মরণ অধিক খুলু॥



#### নিশ কেদারা-এক তালা।

ধনধান্য পুষ্পভরা আনাদের এই বহুন্ধরা, তাহার মাঝে আছে দেশ এক-সকল দেশের সেরা: ও দে, স্বপ্ন দিয়ে তৈরি দে দেশ, স্মৃতি দিয়ে খেরা ;— কোরস--এমন দেশটি কোথায় খুঁজে পাবে নাকে৷ তুমি, সকল দেশের রাণী সে যে—আমার জন্মভূমি। চক্র স্থ্য গ্রহ তারা, কোথায় উদ্ধল এমন ধারা। কোথায় এমন থেলে তডিৎ, এমন কালো মেঘে। তারা পাথীর ভাকে ঘুমিয়ে পড়ে, পাথীর ভাকে জেগে। এমন দেশটি কোথার খুঁজে পাবে নাকো তুমি. সকল দেশের রাণা সে বে-অমার জন্মভূমি। এত স্নিগ্ধ নদী কাহার, কোথায় এমন ধুম পাহাড় ! কোপায় এমন হরিংক্ষেত্র, আকাশতলে মেশে। এমন ধানের উপর চেউ থেলে যার বাতাস কাহার দেশে ! এমন দেশটি কোগায় খুঁজে পাবে নাকো তুমি, সকল দেশের রাণী সে বে—আমার জন্মভূমি। পুপে ভরাশাধী:কুঞ্জে কুঞ্জে গাহে পাখী, রিয়া আসে অলি পুঞ্জে পুঞ্জে ধেয়ে— তারা, ফুলের উপর ঘুমিয়ে পড়ে ফুলের মধু থেয়ে !



এমন দেশটি কোথায় খুঁজে পাবে নাকো তুমি,
সকল দেশের রাণী সে বে—আমার জন্মভূমি।
ভা'রের মারের এত স্নেহ কোথায় গোলে পাবে কেহ!
—ওমা! তোমার চরণ ছ'টি বক্ষে মোরা ধরি,—
এই দেশেতে জন্ম মোনের—বেন এই দেশেতে মরি—
এমন দেশটি কোথায় খুঁজে পাবে নাকে। তুমি,
সকল দেশের সাণী সে বে—আমার জন্মভূমি।

মিশ্র ইমন্—কা ওরাণী। এখনো তারে চোপে দেখিনি, শুধু কাব্য পড়েছি,

অমনি নিজেরই মাথা থেয়ে বদেছি

শুনেছি তার বরণ কালো, কিন্তু তার চেহার, ভালো:,
প্রগো বল আমি—তারে নিয়ে দেশ ছেড়ে যাবো কি 
পূ
শুধু বারান্দায় যাচ্ছিল সে, "হুঁ হু " করে, ভৈরবী হুঁ। ছছিল সে.
তাই শুনে বাপ—হুই তিন পাপ্ডিপ্লিয়ে এলাম নেরে এক লাফ্-উপর তলায় যে গুনী সে যায়, ভুনি থিচুড়ী সে গুনী সে থায় :
স্থি বল আমি—আদা দিয়ে কচুপোড়া থাবো কি 
পূ

গীত।

সান্ধ্য সমীরে পরে পরে পরে কে দিছে মধুর বিক্রুপ্র



চাদে কে দিয়েছে জোছনা রাশি, প্রেমিকের গলে পরাতে ফাঁসি, কামিনী অধরে কেন স্থধা ঝরে, কেন সেথা রতে সদা মধু বার মাস ? এ ভব ভবন কেন বা স্থানর, কেন তাতে ক্ষরে শশিক্র কেন বা তটিনী কুলুকুলু ধ্বনি চ'লেছে সাগর পাশ ?

#### হাম্বি---মধ্যমান।

( ওগো ), জানিস্ ত, তোরা বল, কোণা সে, কোণা সে ।

এ জগং মাঝে আমারে যে প্রাণের মত ভালবাসে।

নিদাঘ নিশাথে, ভোরে, আথ-জাগা বুমঘোরে,
আশোরারি তানের মত, প্রাণের কাছে ভেসে আসে।

আসে যার সে হাদে মম. সৈকতে লহরী সম,—

মন্দ।র-সৌরভের মত বসস্ত বাতাসে;

ফাল্ম মাঝে কাছে এসে, কি বলে যায় ভালবেসে,
। পরে যায় সে মিশে ফুলের কোণে চাঁদের পাশে।

# ব্রেকর্ড -কাকনী

াম্বাজ—মধ্যমান।
বিষয় বিজন বনে, বসন-আঁচল পাতি,
পরাতে আপন গলে, নিজ মনে মালা গাঁথি।
ভূষিতে আপন প্রাণ, নিজ মনে গাই গান:
নিজ মনেকৈরি খেলা, আপনারে ক'রে সাথী।
নিজ মনে কুলি হাসি, আপনারে ভালবাসি।
গোহাগ, আদর, মান, অভিমান, দিন-রাতি॥

ভীম-পলঞ্জী—মধ্যমান।
বাধি বত মন ভালবাসিব না তায়,
তত্তই এ প্রাণ তাঁরি চরণে লুটায়!
বত্তই ছাড়াতে চাই,
তত্তই জড়িত হই—
বত বাধি বাধ—তত্ত ভেক্ষে যায়।

বারোয়া — ভরতক্ষা।
প্রেম যে মাথা বিষে, জানিতাম কি তায়!
ত: হ'লে কি পান করি' মরি যাতনায়!
প্রেমের স্থা যে সথি পলকে ফুরায়;
প্রেমের ফাতনা স্থানে চিরকাল রয়।
প্রেমের কুস্থম সে'ত পরশে শুকায়;
প্রেমের কণ্টক-জালা গুচিবার নয়॥



#### হাস্তোদীপক।

আহা কিবা মানিয়েছে রে—

যেন, মেঘের কোলে ইন্দ্রধমু, ক্লফের পাশে বলরাম;

( ব্রজের কুঞ্জবনে )

যেন, নাচের সঙ্গে তবলার চাটী টপ্পার ক্রীরে হরিনাম ;

( বাহবারে বাহৰ

যেন, কপির সঙ্গে কড়াই ভাঁটি, ক্ষীরের সঙ্গে পাকা আম ;

( বৈশাথ জ্যৈষ্ঠ মাসে )

মেন, মুড়ির সঙ্গে মটর ভাজা, মদের সঙ্গে হরিনাম :

( বাহবারে বাহবা!)

যেন, জরের দঙ্গে অতিদার, গোপীর দঙ্গে ব্রজধাম ;

( ও সেই দ্বাপর যুগে )

যেন, বিয়ের সঙ্গে রৌসন-চৌকি, মরণ কালে হরিনাম।

( বাহ্বারে বাহবা )

#### হাস্থোদীপক।

প্রথম যখন বিয়ে হ'লো ভাব্লাম বাহা বাহারে।

কি রকম যে হ'য়ে গেলাম, বলবো তাহা কাহারে।

ভাব্লাম বাহা বাহারে।

**ং'লো আমার স্বভাব, যেন আমি হ'লাম নবাব,** 

নাইকো আমার কোনই অভাব, পোলাও কোর্ম্মা কোগু৷ কাবাব,



রোচে নাকো আহারে,

ভাব্লাম বাহা বাহারে। ভাব তাম গোলাপ ফুলের মতন, ফুটে আছে প্রিয়ার মুণ: দূরে থেকে দেখ্বো স্বধু ভ ক্বো স্বধু গন্ধটুক্: রাথ বো জমা প্রেমের খাতায় –খরচ মোটে ক'রবো না তায়, রাথ্বে, তারে মাথায় মাণায়, মুদ্নো না কো আঁথির পাতায়,

হারাই পার্ছে তাহারে।

ভাব লাম বাহা বাহারে। শঙ্কা হ'তো পাছে প্রিয়া কখন ক'রে অভিযান. পরীর মতন পেখন তুলে হাওয়ার সঙ্গে মিশে বান, নকল নবিশ প্রেমের পেশায়, হ'য়ে রোতুম বিভার নেশায় . প্রাণের সঙ্গে দিয়ে কে সায়, খাম্বাজ সঙ্গে বেহাগ মেশায় মরি মরি আহারে।

ভাব লাম বাহা বাহারে। দেখ্লাম পরে পরক ক'রে নেহাত প্রিয় তৈরী ন'ন, वहन-छ्यात्र गांत्र ना क्या, वतः (शास काला इन : যদি একটু হেলায় থেলায়, আসতে দেরি রাণ্ডির বেলায় অমনি তর্ক, গুরু চেলায়, পালাই তাঁর বক্নির ঠেলায়,

পগার কি পাহাডে।

ভাব্লাম বাহা বাহারে। দেখ্লাম পরে প্রিয়ার সঙ্গে, হ'লে আরও পরিচ. পরীর মতন মোটেই প্রিয়ার উড়ে যাবার গতিক নয়;



বরং শেষে মাথার রতন, নেপ্টে রৈলেন আঠার মতন, বিফল 5েপ্টা বিফল যতন, স্বর্গ হ'তে হ'ল পতন, রচেছিলাম যাহারে। ভাব্লাম বাহা বাহারে।

#### হাস্তোদীপক 🜆

তোমায় ভালবাসি ব'লে তুমি বুঝি মনে ভাব,

যে, তোমার চক্রমুখথানি না বেথিলে ম'রে যাব ?

ঘৃষু চর্বে আমার বাড়ী, উমুনে চড়্বে না হাড়ি,
বৈজেতে পাবে না নাড়ী, এম্নি অস্তিম দশায় থাবি থাব।

এথানে ইস্তফা— তবে যা হ'বার তা হ'য়ে গেল;

ডুমি যদি আমায় ভাল না বাস ত আমার তবে ) ব'য়ে গেল,

াক্লে তোমার পাইনে সাড়া, নেই কি কেউ বুঝি তোমা ছাড়া ?

এই গোপ জোড়াতে দিলে চাড়া তোমার মত অনেক পাব॥

#### কমিক।

আমরা বিলেত ফেরং ক' ভাই, আমরা সাহেব সেজেছি সবাই। তাই কি করি নাচার, স্বদেশী আচার, করিয়াছি সব জবাই॥



আমরা বাংলা গিয়াছি ভুলি, আমরা শিথেছি বিলিতি বুলি,

> আনরা চাকরকে ডাকি 'বেয়ারা', আর মুটেদের ডাকি 'কুলি'॥

त्राम, कालीशन, इति5त्रन, नाम अमन रमरकरल धतन,

তাই নিজেদের সব "ডে" "রে" ও "নিটার" করিয়াছি নামকরণ,

আমর। সাহেব সঙ্গে পচি:

আমরা মিষ্টার নামে রটি,

যদি সাহেব না বলে বাবু কেছ বলে মনে মনে ভারি চটি।

আমর: ছেড়েছি টিকির আদর,

আমরা ছেড়েছি ধুতি ও চাদর

আমরা পাণ্ট কোট আর হাট বট পোরে.

নেজেছি বিলিতি বাদর,

আমরা বিলিতি ধবণে হাসি,

আনরা করাসি ধরণে কাশি,

জামর: পা ফাঁক করিয়া সিগারেট থেতে

**२५५३ डाल**नामि ।

আমর: হাতে থেতে বড় ডরাই,

আমরা স্ত্রীকে ছুরী কাটা ধরাই,

আমর৷ নেয়েদের জুতো মোজা,

দিদিমাকে জ্যাকেট কামিজ পরাই.



মোদের সাহেবিয়ানার বাধা,
এই বে রংটা হয় না সাদা,
তবু চেষ্টার ক্রটি নাই,
ভিনোলিয়া মাখি রোজ গাদা গাদা,
আমরা বিলেত ফের্ডা ক'টায়,
দেশে কংগ্রেস আদি ঘটাই,
মোদের সাহেব ধনিও দেবজা,
তবুও সাহেবগুলোই চটাই,
আমরা সাহেবি রক্ষে হাঁটি,
আমরা স্পিচ দেই ইংরিজি খাটি,
কিন্তু বিপদেতে দিই বাঙালিরই মত চম্পট পরিপাটি।

#### ক্ষিক।

পার'ত জন্মো' না কেউ বিষ্যুৎবারের বারবেলার।
জন্মাও ত সামলাতে পার্বে নাক তার ঠেলার।
শোন, বিষ্যুৎবারের বারবেলাতে, আমার জন্ম হইল,
তাই দিল কাল ক'রে, রোদে ধরে,
মাথিরে মাথিরে তৈল।
দেখে মা কাল ছেলে দিল ঠেলে,
বিশ্ নাক মায়ের হৃধ, ক'রে দিল শরীর সক, বৃদ্ধি গরু,
রে থাইয়ে গায়ের হৃধ,
বরে, মিলে আমার আটটা মামার, বাবার সেই আট শালার ।

# <u>রেকর্ড-কাকলী</u>

হ'তে না হ'তে বড়, নিয়ে চড় পাঠিয়ে দিলে পাঠশালায়,
নেথে মোর শুক্রনণাই, যেন ক্যাই. বিজ্যে থাটো শন্মারে.
ক'রে দিলে সেই ফ'কে শরীরটাকে
পিটিয়ে পিটিয়ে লম্বারে।
বাবা আমি উচু দিকেই বাড়ছি দেখে,
ইস্কল থেকে ছাড়িয়ে নিল,
দিল মোর চাকরা ক'রে, ভারাও মোরে,
ত'দিন পরে ভাড়িয়ে দিল,
দেখে মোর চাকুরী শৃন্তা, বাবা ক্রয়,
বিয়ে দিতে নিয়ে ঘরে গেল,
দেখে মোর শরীর লম্বা বৃদ্ধি রস্তা,
ক'নের দরও চ'ড়ে গেল।
হায় গো! বিধি হয়্ট, সবাই তৃষ্ট, রুষ্ট কেবল আমার বেলায়.
সে কেবল ফেল্লাম বলে, জন্মে ভূলে,
বিষাৎবারের বারবেলায়॥

# গিরিশচন্দ্র যোষ।

গীত।

সাব্ থাড়া সায়--- স্তজুর আব্ থাড়া স্থায় স্তজুর।

চড়্বড় চড়্বড় চালাইরে কোড়া জারগীর করি ব তেরা পিঠ নেরা জারগীর,

মেরা পিঠ তেরা জারগীর.



# রনীস্রনাথ ঠাকুর।

দোনার তরী

গগনে গরজে মের্য ঘন বরষা, কুলে একা ব'দে আছি, নাহি ভরদা। বাশি বাশি ভরা ভরা, ধান কাটা হ'ল সারা, ভরানদী ক্ষুরধারা খর-পর্শা. কাটিতে কাটিতে ধান এল বরষা॥ একথানি ছোট কেত আমি একেলা, চারিদিকে বাঁকা জল করিছে খেলা, প্রপারে দেখি আঁকা, তরু ছায়া মদীমাখা. গ্রামখানি মেঘে ঢাকা প্রভাতবেলা. এ পারেতে ছোট ক্ষেত আমি একেলা॥ গান গেয়ে তরী বেয়ে কে আসে পারে ! দেখে যেন মনে হয় চিনি উহারে, ভরা পালে চলে যায়, কোন দিকে নাহি চায়, ঢেউগুলি নিরুপায় ভাঙ্গে ছ'ধারে, দেখে যেন মনে হয় চিনি উহারে॥ ওগো তুমি কোথা যাও কোন বিদেশে! বারেক ভিড়াও তরী কুলেতে এসে ! যথা যেতে চাও যারে খুসি তারে দাও ي এধু ভূমি নিয়ে যাও ক্ষণিক হেসে আমার সোণার ধান কুলেতে এসে॥



যত চাও তত লও তরণী 'পরে,
আরো আছে ? আর নাই, দিরেছি ভ'রে।
এতকাল নদী-কূলে বাহা ল'রে ছিমু ভূলে
সকলি দিলাম ভূলে থরে বিথরে
এখন আমারে লহ করুণা ক'রে॥
ঠাই নাই, ঠাই নাই! ছোট সে তরী
আমারি সোণার ধানে গিরাছে ভরি.
শ্রাবণ গগন ঘিরে, ঘন নেঘ ঘুরে ফিরে,
শৃত্য নদীর তীরে, রহিমু পড়ি,
যাহা ছিল নিয়ে গেল সোণার তরী॥

# স্বর্গীয়া বেদানা দাসী।

हेमन्-ज़ुशानी।

গত নিশি শ্রাম গেছে ফিরে। / স্থিরে)
রাধা রাধা ব'লে কত ডেকেছে আমারে—
বনমালা বাশরী তাঁর ফেলে গেছে ছারে।
সারা নিশি জেগে জেগে ঘুমায়ে প'ড়েছিলাম,
তাই বুঝি শ্রামচালে হারাইলাম—
হায় হায় কি করিলাম, মরমে তাঁর বাথা
কৈ এমন সুহুদ্ আছে এনে দিবে তারে।



#### গজল।

পাগল ক'রেছ তুমি অঁথিতে প্রাণ আমারে।
লোকে বলে ক'রেছ গুণ—বল দেখি সে কেমন গুণ,
সমান নিদর হ'টী বমিতে প্রাণ আমারে।
ক্র-ধমুতে কামগুণ, শরে ভরা কেন রে তুণ,
মনো-মৃগ লক্ষ্য ব্ঝি বধিতে প্রাণ আমারে।
সর্বায় নিয়েছ লুটে, বলিতে পারি না ফুটে,
মুখখানি ক'রেছ বিভার নাশিতে প্রাণ আমারে।

# ভীমপলশ্ৰী—যৎ।

আসি আসি ব'লে কেন প্রাণে ব্যথা দাও.

এমন নিদয় তুমি, কাঁদায়ে চলে যেতে চাও।

য়তক্ষণ থাক তুমি, কি আনন্দে থাকি আমি,
পায়ে ধরি প্রাণ-নাথ ছদে এসে প্রাণ ভুড়াও॥

বেহাগ-থাস্বাজ— ঠুংরি।
আজু রজনী হাম ভাগে পোহায়নু,
পেথফু পিয়া-মুথ-চন্দা।
প্রীবন থোবন সফল করি মানিমু,
দশ দিশ ভেল নির-নন্দা॥



আৰু মরু গেছ গেছ করি মানিমু, আজু মরু দেছ ভেল দেহা—
আৰু বিধি মোহে অমুকূল হ'রল, টুটল সবহু সন্দেহা।
সোহি-কোকিল অব লাথ ডাকউ লাথ উদয় করু চন্দা,
পাঁচ বাণ অব লাথ ডাকউ, মলয়-পবন বহু মন্দা॥

ঝিঁ ঝিট-থাম্বাজ—থেম্টা।

ভালবাসি ব'লে আমারে কাঁদাও সতত প্রাণ।
দল্পা মারা নাহি কিরে তোর, হ'লি রে পাষাণ,—
দিলি যে তৃঃথ হৃদে রইল গাঁথা, হারে রে বেইমান।
স্কাদিনিধি প্রাণনিধি রীতি-নীতি-বিধান।
আগে মন নিয়ে, প্রাণে মার, কর রে হাররাণ।

থামাজ-দাদ্রা।

বাজাওয়ে চিকণ-কালা।
মন-প্রাণ হ'রে নিল পাইয়ে অবলা।
শুকু-জনার মাঝে বসি, নাম ধ'রে বাজাওয়ে বানী,
পারি না বে—দেথে আসি, ঘটল কি জালা॥

সিন্ধ-পাস্বাজ—বৎ
ভালবেসে ভাল কাঁদালে।
ভাল ভালবাসা জানালে॥
মদি মজিতে না মন ছিল, তবে কেন মজালে

ভূমি যে পরেরি সোণা, আগে তো ছিল না জানা,
জান্লে পরে পরের সোণা,
আমি দিতাম নাকে। কর্ণমূলে।
ভূমি যে পরেরি চিত, পাষাণেতে বিরচিত,
(প্রাণ) কষ্ট দিলে যথোচিত, চিত সঁপেছি ব'লে

ঝিঁ ঝিট-খাম্বাজ।
কেমনে বল ভাল না বেসে থাকি।
পাগল ক'রেছে তোমার ঐ হুট আঁথি।
কে যেন মজায়ে, রেখেছে প্রাণ লুকায়ে—
সাধ হয় তারে আমি বুকে ক'রে রাথি॥

থাষাজ — ঠুংরি।

যদি পরাণে না জাগে আকুল পিয়াসা,

গোধের দেখা দিতে এস না ( বঁধু হে )
ভালবেসে যদি ছঃখ পাও সখা
পায়ে ধরি ভালবেস না ( বঁধু )॥
সারাটি দিন আমি একেলা বসিয়ে—
চেয়ে রব ঐ পথের পানে :—
সারাটি রজনী রহিব জাগিয়ে,

টাদ জাগিবে আমারি সনে,—
াহা চাহ সখা দিব ফিরাইয়ে,
শৃতি টুকু ফিরে চেও না ( বঁধু হে )॥



বেহাগ-থাছাজ—কের্তা।
গোঠে হ'তে আইল নন্দ-ছলাল ( আমার )
গোধ্রি-ধৃসর ভাম-কলেবর,
আজাফু-লম্বিত বনমালা॥
ঘন ঘন শিলা বেণু শুনিরা বরজবাসী ঘন শোভা পায়।
মঙ্গল সাঁজি, দীপ করে বধ্গণ
মন্দির-ছ্রারে দাঁড়ারে॥
ধেরু বৎসগণ, গোঠে পরবেশল
মন্দির তলে নন্দলাল,
আকুল পন্থে যশোমতী ধাওল
ঝর ঝর ছটা আঁথি হ'রে পাগলিনীর মত
( হার পাগলিনীর মত )
ধারার বিরাম নাই—বিরাম নাই,
প্রেমের ধারার বিরাম নাই—বিরাম নাই॥

পূর্বী—একতালা।
বাজে খ্রামের মোহন-বেণু।
বেণু-রব শুনে জুড়াল তথু॥
যে বনে বাজিছে সেই বনে ধাই,
এ ছার জীবনে আর কাজ নাই,
পূরাইব আশ, মন-অভিলাধ
হ'রে থাকি খ্রামের চরণ-রেণু॥



পঞ্চম স্বরেতে ধরিরাছে তান, পবন দাঁড়ারে শুনিতেছে গান, যাহার গানেতে যমুনা উজান, হামা হামা রবে ডাকিছে ধেমু

# निक्-थाबाक-मशुस्तान्।

ঐ দেখা যায় ঘরখানি ওরে যাত্মণি।
আমি বালাখানা কোথা পাব আমি তৃ:খিনী মালিনী॥
এস যাত্ আমার ঘরে, রাখ্বো তোমায় হৃদ্-মাঝারে,
মাসী বলা ছেক্টে দেরে, তুই নাতি আমি দিদি-মণি॥

বহুদ্র হ'তে এসেছি বঁধু বারেক ফিরিয়ে চাও হে।
বহু আশা প্রাণে পুষেছি বঁধু আর কেন চ'লে যাও হে॥
সদয়ে রেখেছি প্রেম-সরোবর, হাসির কমল তার,—
আদর-হিল্লোলে ধুয়ে পরিমলে মাথাব শিখর-গায়,

কতই করিব থেলা,—
প্রাণে দিব আশা, বুকে ভালবাসা করিব পীরিতি-মেলা,
অগাধ সোহাগ রেখেছি বঁধু আর কেন ফিরে যাও হে॥

বেহাগ-খাম্বাজ।

তু' ক্ষল দিয়ে—তাড়ালো ভ্রমরাকুল, ধ্য বুর লো ডালা এনেছি কামিনীফুল।

# <u>রেকর্ড-কাকলী</u>

উহঁ সথি মরি জলি, কপোলে দংশেছে জলি ; আবার এসে বুকে বসে, ভ্রমরারি একি ভূল ॥

#### বেহাগ-খাম্বাজ।

এখনও প্রাণে ছবি কেন তারি। থেকে থেকে জৈগে উঠে ভূলিতে না পারি। শরতের শনী জিনি, সে টাদবদনথানি, এখনো হৃদয়ে গাঁথা র'য়েছে আমারি॥

# ভূপালী।

তোমরা বল ছাড় ছাড়, ছাড়্তে কি গো পারা যায়।
ছাড়্বার কথা মনে হ'লে প্রাণটা আমার বিগড়ে যায়।
হ'ট কর দিয়ে মাথে, প্রাণ স পেছি হাতে হাতে.
দান করা প্রাণ ফিরিয়ে দিতে, সহজে কি পারা যায়।
(দান করা প্রাণ ফিরিয়ে নিলে, কালীব'টের কুকুর হয়।)

সরল মনে সরল প্রাণে, প্রাণ যদি নিতে পার দিতে গো পারি তথু মুখেরি কথায় মজেছি বলে যেন ক'রো নাঁ ছল-চাত্রি॥ হালয় মাঝারে আঁকিয়ে ছবি, চিরদিন তারে লুকু'য়ু রাখি, নিলে জীবন বধিলে প্রাণ, পিয়ানা মিটাব দোটে বি ॥



#### ननिङ ।

আমার মনটি করিয়া চুরি, আমার প্রাণটি করিয়া চুরি।
এই আসি ব'লে গিয়াছিলে চলে, এতদিনে এলে ফিরে (গো)
কত নিশি গেছে কত দিন, কত সকাল সন্ধ্যাবেলি,
কত বারমাস. কত যুগ-যুগাস্তরে অতীত প'ড়েছে ঢলি!
কত মরু গেছে কত সাগরে, কত্রুসাগরে শুকাল বারি॥
কত নদী গেছে পথ ভুলি গো, গ'লে গেছে কত গিরি।
সারা জীবনের সাধে রচেছি ডোর, কোথা যাবে মোর নয়ন চোর;
ধ'রেছি যথন বেধেছি তথন, আর কি ছাড়িতে পারি (গো)॥

## গৌর সারং।

কাহা জীবন-ধন বৃন্দাবন প্রাণ, কাঁহা মেরি হৃদয়কি রাজা। শৃক্ত হৃদয়-পুরী আও আও মুরারি, মোহন-বাঁশরী বাজা॥ নয়ন সলিলে বসন তিতাওল, সাধকি সাগর হিয়া পর স্থাল

শিরতাজ মেরি শিরোপরি আ জা ,
নয়নাকা রোস্নি নয়না ছোড়কে,
ঘুরত ফিরত কাহা ফাকে ফাকে,
হা হা পিয়া বঁধু এ কোন্ সাজা ॥

#### জংলা।

্নরন গলিয়ে যায় স্থনীলিম গগনে।
হাসিতেছে চারিদিক দিনমণি-কিরণে



হাসিতেছে তরুশির, হাসিছে ফুল রুচির, সাঁতারে সমীর ধীর নীর নাচে পবনে। কালিন্দির কল-কল, ঢেউগুলি ঢল ঢল, চলে জল অবিরল জলি জলি তপনে॥

থেম্টা।

ওলো রাজকুমারি হাতে ধরি, প্রাণে দিও না আর ব্যথা।
কথা রাথ, চেয়ে দেথ—'আজকে কেমন মালা গাঁথা॥
বে জন্মে হ'রেছে বেলা, জান্তে যদি সে সব জালা,
থুলে দেখ্লে ফুলের মালা, (ও মন) অমনি ঘুরে যাবে মাথা॥

য়ং।
ভাল যদি বাস হে সথা।

দূরে থেকে স'রে স'রে দিও না দেখা॥

দূর হ'তে সে বড় ভাল,

অধরে বেঁধেছ হাসি ভূবন আলো—

চঞ্চল নয়নে তার অমিয় মাথা॥

রও হে রও হে দূরে,

এ ভাল দেখিবে তারে,

কাছে চাদ স্থা নয়,

প্রেমে কি প্রমাদ সথা, সকল সময়—

নিকটে তরঙ্গ দূরে—রজত-রেখা॥



# ঠংগী।

মরম-ব্যথা কবলো কারে আছি মরমে ম'রে !

যার ব্যথা সেই জানে জানেকি কি পরে ।

সজনী আগে জানিনে,

এ ফুলবাসে কুটিল কীট নিবাসে ;

তা হ'লে কি সই আমি ফুলে ব'সে রই,

গঞ্জনা জালাতে জর জর হই,

কি জানি কালে ফুলটি আমার—

সাধের হার পরেছি গলায়,

বল দেখি প্রাণ-সথি আর কি পাব লো তারে ।

কালাংড়া---আড়থেম্টা

নিত্য নিত্য রাজবাটীর ফুল যোগাই কেমন ক'রে।

যামিনীতে কামিনী ফুল নিতুই নে যায় চোরে॥

এমন কর্ম কে ক'রেছে

স্ক্ডে কলি ভেঙ্গে দেছে,

স্মাটাতে ডাল ভাসিয়ে দেছে, তলায় খোঁচা মেরে॥

বনে বনে চুঁরি রে বঁধুরা কাঁহা গেই।

দরশন নাহি পাওরে রে বঁধুরা কাঁহা গেই॥

যৌবন লুটি, পিয়া লোকে ভাগি,

দরশন নাহি পাওরে বঁধুয়া কাঁহা গেই॥



#### शाशक।

আমি তারে প্রাণ দিয়ে পাগলিনী হ'য়েছি।
অমৃত ভাবিয়ে বিষ-মাথালে প্রাণ দ পেছি॥
লোক বলে দিও না মন তবু তারে দিয়েছি।
দেবে না মন-প্রাণ আগে কি তা জেনেছি॥
প্রণয়েরি যে বাতনা এখন ঠেকে শিখেছি।
বাচি যনি বাঁচাও, আমি বিপদেতে পড়েছি॥

আকাশে টেউ লেগেছে চাঁদ উঠেছে চাঁদের গায়,
ছড়িয়ে দেছে সোণার কিরণ ফুর্ ফুরে হাওয়ায়।
তাজে অলস ল'য়ে কলস গগন-ভরা ফুল
ছটেছে পবন-বেগে সোহাগে আকুল—
দেখলে পাছে জড়িয়ে ধরে পায়,
তাই তোরে করি মানা যাসনে লো তার সীমানায়॥

#### জঙ্গলা

(বৃঝি) ফ্রাঁকি দিয়ে গেল নিয়ে নাগরে তোমার।
সথি কোথা হ'তে গ্র:থ দিতে এলো রে আবার॥
নূতন বঁধু নূতন মধু নূতন সোহাগ।
নূতন পেলে শুক্নো ফুলে আসে কি সে আরু



#### চাই বেল ফুল।

আমার এই ফুলের গন্ধে প্রাণ করে আকুল ॥
মতিয়া বেল টাট্কা তোলা, এনেছি গড়ে মালা,
এ মালা পর্লে গলে, কত নাগর ওম্নি ভোলে;
আমি কেরি করি পাড়ায় পাড়ায় বেলওয়ারী চুড়ি।
চুড়ি কেনে কত সোহাগ-ভরে যুবতী ছুঁড়ি॥
আমার চুড়ির এমনি গুণ, নিভে যায় সই মনের আগুন,
হাতে পর্লে ঠাগু করে,
ওলো সই মাইরি মাইরি মাইরি॥

#### বেহাগ---থাম্বাজ।

যাবত জীবন রবে আর কারে ভালবাসব না।
ভালবেসে এই হ'ল ভালবাসা কি লাগুনা॥
মনেরে বুঝাইব, ভালবাসা ভুলে যাব,
পৃথিবীতে ব'লে দিব কেউ কারে ভালবাসে না॥

#### থাম্বাজ।

আমার কাচা পিরীত পাড়ার লোকে পাক্তে দিলে না। কোন অভাগী নজরা দিলে পিরীত পোক,র কাট্লে আর বাডে না।

বি ্র কে হানিলে, আমার তারে কেড়ে নিলে, প্রেমের ভরা ডুবিয়ে দিলে ধম্মে সবে না।



আঁধার ঘরে আলো যেমন সে আমার যে ছিল তেমন, কু-বাতাসে নিবিয়ে দিলে (ও তার) ভাল ত হবে না॥

ঝিঁঝিট— তেতালা।

মাগো চিনিতে কি পারনি মোরে।
(আমায়) দেখেছিলে আগে রাম অবতারে॥
ভক্তিভরে দিলি মুখে তুলি ফল
হাতে হাতে মাগো তুই পাবি মোক্ষফল,
চতুর্ব্বর্গফল আমারি সম্বল—
যে যা যাচে মাগো তথনি দেই তারে।
ছিল মনেরি বাসনা ভক্তিতে মোরে ( মনে পড়ে কি ? )
সেই ত্রেতার কথা মনে পড়ে কি, মনে পড়ে কি ?
ছিল মনেরি বাসনা ভক্তিতে মোরে, তাই
প্রিল কামনা দ্বাপরে॥

ন্ত

বাধ মা বাধ বাঁধ মা আর আমি পালাব না॥ বাধা ত প'ড়েছি আমি কোথা যাব বল না। বাধ মা বাঁধ মা মোরে, বাঁধ মা কঠিন ভোটে, মা মা ব'লে সকাতরে মুখ পানে চাব না—



ভোর প্রাণে ব্যথা দিব না, গোপালে বেঁধেছ ব'লে, মা মা মা ব'লে ডাকিলে পরাণ গলে, কত স্থধা উথলে মা—তা কি তুমি জ্ঞান না॥

কীর্ত্তন (নন্দবিদায়)

হেলে ছলে নেচে গোঠবিহারী।

চঞ্চল দিঠি দিঠি রঙ্গে বিথারী॥

বৃদ্ধির ঠাম শিরে শিথিপাথা শোভরে।

স্থলর পীত ধটি কটিতট বেড়রে॥

নূপুর রুণু রুণু রুনু ।

নাচত বাজত বংশী বোলাওত

ধীরে ফিরে চার ধার ধেরু ছ'ধারি॥

# कीर्जन ( ननक्विमात्र )

( আজ ) কুলের মালার সাজ্বে ভাল রাম কামু ছ'ভাই।
থরে থরে আর না রে ভাই প্রাণ ভ'রে সাজাই॥
রূপের ছটার মাত্বে গোকুল, দেণ্বো শোভা ধরার অতুল
( আজ প্রাণ ভ'রে সাজাইব )
চোল্গর দেখার আশ মিটে না, প্রাণের দেখা চাই।
নিয়ে প্রাণ নের ব'লে তাই, সদাই দেখা পাই॥



#### ভৈরবী।

এস এস রে কানাই।
সবে মিলে হেসে নেচে নেচে ঘরে যাই॥
ঐ দেথ সব গরুগুলি তোমার পানে চেয়ে,
বাজাও বেণু, চলুক ধেমু ঘরের দিকে ধেয়ে।
ছুব্লো রবি রাঙ্গাছবি বেলা ত আর নাই॥
চাদের আলো হাস্লো ভাল পূরব গগনে,
কালশনা হেরে খুনী হ'ল মোদের মন।
একবার দাঁড়াও হেরি নয়ন ভরি,
কানাই বলাই ছ'টি ভাই।
সাদায় কালোয় মিশবে ভাল হেরে প্রাণ জুড়াই॥

#### कीर्डन।

একবার নাচ নাচ নাচ ওরে যশোলা ত্লাল

দিব মনের সাথে ক্ষীর নবনী,
তার চাদবদনে নাখনলাল ॥
একবার নেচে নেচে, নেচে নেচে কাছে আয়,
তোরে দরশি' পরশি' প্রাণ জুড়ায়,
থেয়ে আয় আয় আয় কোলে আয়
তোর রাজা পায় কত



ভ্রমরা ভ্রমরী নাচিয়ে বেড়ায়,
গুন্ গুন্ রবে তোর গুণ গায়
হেরে হৃদয়ের বাসনা দ্রে যায়)
আজ পেয়েছি,
সাধনের ধনে আজ পেয়েছি
যতনে রতনে পেয়েছি;
মধু যশোদার ধনত্মি নও,
যে মনরূপ ননী দেয় তাহারি হও,
আজি ছাডিব না তোরে নন্দলাল॥

কীর্ত্তন ( নৃদ্ধবিদায় )

জাগ জাগরে কানাই জাগ জাগরে বলাই,
প্রাণের সাথী আর জেগে আর ।
ও ভাই গোঠে যাবার বেলা ব'রে যায় ॥
কোথা গো মা নন্দরাণী. সাজারে দাও নীলমণি,
চাঁদ মুথে ফাঁদ পাতা আছে গো;—
তাইতে সবাই ধরা দিতে আসি গো ॥
( কত যুমাবে জাগ জাগ রে )
( ঐ দেথ নিশি প্রভাত হ'ল )



#### टेडबरी।

এস এস রে কানাই।
সবে মিলে হেসে নেচে নেচে ঘরে যাই॥
ঐ দেখ সব গরুগুলি তোমার পানে চেয়ে,
বাজাও বেণু, চলুক ধেকু ঘরের দিকে ধেয়ে।
ছুব্লো রবি রাঙ্গাছবি বেলা ত আর নাই॥
চাঁদের আলো হাস্লো ভাল পূরব গগনে,
কালশনী হেরে খুসী হ'ল মোদের মন।
একবার দাঁড়াও হেরি নয়ন ভরি,
কানাই বলাই ছ'টি ভাই।
সাদায় কালোয় মিশবে ভাল হেরে প্রাণ জুড়াই॥

#### কীৰ্ত্তন।

একবার নাচ নাচ নাচ ওরে যশোদা গুলাল

দিব মনের সাথে ক্ষীর নবনী,

তোর চাদবদনে মাখনলাল ॥

একবার নেচে নেচে, নেচে নেচে কাছে আয়,

তোরে দরশি' পরশি' প্রাণ জুড়ায়,

ধেয়ে আয় আয় আয় কোলে আয়;

( ঈষৎ বামে গেলে কোলে আয়

তোর রাঙ্গা পায় কত



প্রমন্না প্রমন্ত্রী নাচিয়ে বেড়ার,
গুন্ গুন্ রবে তোর গুণ গার
হেরে হৃদয়ের বাসনা দূরে বার )
আজ পেয়েছি,
সাধনের ধনে আজ পেয়েছি
বতনে রতনে পেয়েছি;
স্থ্ যশোদার ধনত্মি নও,
যে মনরূপ ননী দের তাহারি হও,
আজি ছাড়িব না তোরে নন্দলাল॥

কীর্ত্তন ( নৃন্দবিদার )

জাগ জাগরে কানাই জাগ জাগরে বলাই,
প্রাণের সাধী আয় জেগে আয় ।
ও ভাই গোঠে যাবার বেলা ব'রে যায় ॥
কোথা গো মা নন্দরাণী. সাজ্ঞায়ে দাও নীলমণি,
চাদ মুখে ফাঁদ পাতা আছে গো ;—
তাইতে স্বাই ধরা দিতে আসি গো ॥
( কত ঘুমাবে জাগ জাগ রে )

। এ দেখ নিশি প্রভাত হ'ল )



কীর্ত্তন ( নন্দবিদার )
নাচত মোহন নন্দ-ত্লাল ।
রঙ্গিম চরণে নৃপুর রুণু ঝুরু বাজত,
কিন্ধিণী তাহে রসাল ।
মণি আভরণ কত, অঙ্গহি ঝলকত,
নাসায়ে মুকুতা কিবা দোলে ।
মা মা বলি চাদবদন তুলি,
নবীন কোকিল যেন বোলে ॥
( একবার নাচ দেখি বাপ )
( তোরে হেরে নয়ন সফল করি )

জঙ্গলা।
আমার বৃকে পিঠে সেটে ধ'রেছে রে।
যেন বেড়াজালে জেলে ঘেরেছে রে॥
পোড়া ঝোড়া মড়া সঝড়া,
তার ফুলবমু-গুণে দিয়ে চাড়া
(ঝেড়ে) চোথা চোথা বাণ মেরেছে রে॥

#### खक्रमा ।

রূপে যার মনে মজেছে তারে কি গো যার লো ভোলা।
উঠ্তে গিরে পড়্বি ঢ'লে প্রেমের এই ত বিষম জালা।
ভালবাসা ভূল্তে পারে, নেখ্তে ত সই পাই 'রে,
যে ভালবাসা ভূল্তে পারে, ও তার ভালবাসা . .থলা।



# জঙ্গণা ( নৃত্য-সংগণিত )।

গয়লা দিদি লো তোমার ময়লা বড় প্রাণ।
তুমি সেরেকে জল হসের ঢেলে হথে ডাকাও বান্॥
তোমার হাত পা নাড়া কোমর দোলা সার,
দোলায় নাই কিছু বাহার,
আবার কেঁড়ে থই থই অথৈ জলে ভর্তি কানে কান্।

#### সিন্ধ-খাম্বাজ।

মুখটী আমার বুকে নেই তার নামটী আছে মনে।
সেই নামটী দিবানিশি ফির্ছে আমার সনে॥
আমি উঠি বসি, যাই ভতে বিছানার,
নাম সঙ্গে ওঠে, সঙ্গে বসে, সঙ্গে ভতে যার;
নাম কত কথা সুখার আমার, পেলে পরে নির্জ্জনে॥
নাম আমার জপনালা, জুড়ার জালা
আমার সিঁথের সিঁদ্র হাতের বালা;
নাই বিরহ অহঃহ মধুর মোহ নাম আলাপনে;
আমি নামের প্রেমে সুখে আছি অনেক দাহ
দেহের মিলনে।

#### সিমুরা।



বারে বারে নাগরালি, এবার ভাঙ্গু বো তোমার চতুরালী,
একবার বাজাও তোমার সেই মুরলী
প্রাণ কেড়ে নাও নিঠুর কালা ॥
কাল অঙ্গ রাঙ্গা ফাগে,
এবার দেখ্বো তোমার কেমন সাজে,
সাজায়ে রমণী-সাজে নাচাবে যত ব্জবালা ॥

#### कन्न ।

ওকি হোল গো আমার বৃঝি বা সপি হৃদয় আমার হারিয়েছে
পথেরি মাঝারে থেলিতে গিরে হৃদয় আমার হারিয়েছে।

একদিন সথি সকাল বেলাতে,

মন ল'য়ে আমি গেছেয় থেলিতে

মন কুড়াইতে মন ছড়াইতে, পথেরি মাঝারে থেলে বেড়াইতে
সহসা সন্ধনি দেখিয়ু চেয়ে হৃদয় আমার হারিয়েছে।
আমার কুয়্ম আমার হৃদয়, সহেনি কথন রবির তাপ,
আমার হৃদয়-কামিনী-পাপড়ী সহেনি কথন বিরহ-তাপ।

চিরদিন সথি হাসিত পেলিত,

জ্যোৎয়া আলোকে পেলে বেড়াইত.
সহসা সন্ধনি দেখিয়ু চেয়ে হৃদয় আমার হারিয়ে

## স্বৰ্গীয় লালচাদ বড়াল।



# স্বৰ্গীয় লালটোদ বড়াল।

সিদ্ধ-কাফি—দাদ্রা।
ও মা কেমন মা তা কে জানে।
মা ব'লে মা ডাক্ছি কত
বাজে না কি মা তোর প্রাণে॥
পাষাণী পাষাণের মেয়ে,
বারেক না মা দেখিস্ চেয়ে;
পেত্নী নিয়ে ধেয়ে ধেয়ে,
বেড়াস্ মা তুই শ্মশানে।
আমি মা ব'লে ত ডাক্ব না আর,
বাজে কি না দেখি এবার;
বাবা ব'লে ডাকব এবার
প্রাণ যদি না মানে॥

ভৈরবী—দাদ্রা।

তুমি কাদের কুলের বৌ,

বমুনার জল আন্তে যাচ্ছ সঙ্গে নাইকো কেউ।

যাচ্ছ তুমি হেসে হেসে,

তোমার কাদ্তে হবে অবশেষে,

কুলটা তোমার যাবে ভেসে

( ওগো ) লাগ্লে প্রেমের ঢেউ।

( কলসী তোমার যাবে ভেসে

লাগ্লে জলের ঢেউ॥)

# স্বৰ্গীয় লালচাদ বড়াল



#### সিন্ধ-মিশ্র----ং

আমারে আস্তে ব'লে এত অপমান করা।
মনে কি পড়ে না বাছ ছ'হাত দিয়ে পারে ধরা॥
মনে মনে ভাব তুমি, বড় স্থচতুরা আমি,
বলিহারি যাই তোমারি, এই কিরে তোর প্রেম করা॥

সিদ্ধ-কাফি—-দাদ্রা।
ধিন্তা ধিনা পাকা নোনা,
ঘুচ্লো ভবের আনা গোনা,
ও তোর হাভের ফাঁসি রইল হাতে
আমার ধর্তে পার্লি না।
পেছনে তোর মোটা সোটা,
দাঁড়িরে আছে গুণ্ডা ছ'টা,
মনে ক'রেছিস্ বাঁধ (বি আমার,
আমি বন্ধন-দশার ঠেক্বো না।

স্থরট—কাওয়ালী।
আমার আর কিছুই ভাল লাগে না।
মনের মামুষ হারিয়ে গেছে, খু জে পেলাম না॥
মনের মামুষ বিনে সধি
(ওরে) আমার মন হ'য়েছে উড়ো পাথী,
(উড়ো পাথী)



আমি হৃদ-পিঞ্জরে ধ'রে—রাখি, পোষ ত মানে না॥

কাফি-সিন্ধু---যৎ।

অমুগত জনে কেন কর এত প্রবঞ্চনা।
( যথন ) তুমি আমার মারিলে মারিতে পার,
তথন রাখিলে কে করে মানা॥
আমি ক'রে থাকি অপরাধ,
প্রেম-ডোর দিয়ে বাধ,—
আমার বিনা অপরাধে বধ,
একি রে তোর বিবেচনা॥

বাগেন্সী।

একি রূপ হেরি হরি
তুমি ধ'রেছ যোগীর বেশ।
কিবা রূপ, কিবা ছটা, তুমি বেধেছ
টাচর-চিকুর কেশ।
মুরলী তাজিয়ে হরি, পিণাক ত্রিশূল ধরি
বনস্দ ্পরিহরি, হাড়ের মালিনী বেশ।
প্রহে রাঙ্গা, এমন সোণার চকিত অঙ্গে,
তুনি চেকেছ বিভৃতি দিয়ে, শুন ওহে পৃথীশ।



# ভূপাল---বাগেশ্রী।

মনের বাসনা শ্রামা ! শবাসনা শোন মা বলি ।
অস্তিমকালে জিহবা যেন বল্তে পার মা কালী কালী ॥
আমার হাদর মাঝে উদর হইও মা ! বথন কর্বে অস্তর্জনি
তথন আমি মনে মনে, তুল্বো জবা বনে বনে,
মিশারে ভক্তি-চন্দনে পদে দিব পুপাঞ্জলি ॥
অর্দ্ধ অঙ্গ গঙ্গাজনে, অর্দ্ধ অঙ্গ থাক্বে স্থলে,
কেহ বা লিথিবে ভালে কালীনামাবলী—
কেহ বা কর্ণ-কুহরে বল্বে কালী উচ্চৈঃস্বরে,
কেহ বল্বে হরে হরে, করে করে দিয়ে তালি ॥

#### স্থান--পেষ্টা।

ছঁকি আইরে মার, সব সেথ সেচা নিরঞ্জন কে।
মোরত বিশারত মন মে,
পানি ঘট যমুনা-তট (বংশীধর নিকটে তই)
পানিয়া ভরণা আধা কুধা নিধা নিশা পা মা মা গা।

স্থরট—আড়াঠেকা।

এই রাজা জাতি হার,

চম্কো বিজোরেকে ছোড়্কে

চম্কো বিজোরি লকে ছোড়্কে

তেজে তো ধ্বজাধারী রাতি

বিজ্ঞানি এ চমকে গরজে গরজে ধা ধা ধা।



কাফি—সিন্ধ।
হাদয়-রাস-মন্দিরে দাঁড়া মা ত্রিভঙ্গ হ'য়ে।
একবার হ'য়ে বাঁকা দে মা দেখা,
শ্রীরাধারে বামে ল'য়ে॥
নর-শিরোম্গুমালা, ত্যক্তে পর মা বনমালা
কালী ছেড়ে হও মা কালা,
হাদে গো পাষাণের মেয়ে॥
নর-কর কটি-বেড়া, খুলে পর মা পীতধড়া,
মাথায় পর মা মোহনচ্ড়া
চরণে চরণ থুয়ে॥
হাদ্-মাঝারে কালশনী, দেখ তে বড় ভালবাসি,
একবার অসি ছেড়ে ধর মা বাঁশী—
ভত্তের প্রতি সদয়া হ'য়ে॥

কাফি-সিন্ধু।
তনমে তার তারিণি i
ত্রিবিধ তাপে তারা, নিশিদিন হ'তেছি সারা,
বারবার বৃথা আর, কাঁদায়ো না অনিবার,
অধম সস্তানে হংথ দিও না গো জননি ॥
সংসার রাঙা ফলে ভূলিব না আর আমি আর,
খাইয়ে দেখেছি তার নাহি যে কোন স্থ-তার
সে যে পূরিত গরলে, খাইলে কু-ফল ফলে,



থেলে জ্ঞান হারাই, পাছে তোমা ভূলে যাই,
মা হ'রে সন্তানে হংখ, দিও না হংখনাশিনি ॥
আমার আমার ব'লে, মত্ত হই অনিবার
পিতা-মাতা দারা-স্বত, সকলি-ই ভাবি আমার,
কিন্তু আমি কোন্ খানে, খুঁজিয়া না পাই ধ্যানে,
দ্বিজ রামে আর হংখ দিও না নিস্তারিণি ॥

## जुलानी-नान्ता।

দিদি গো আমরা আর একাদশী কর্ব না।
একাদশী কর্বো না—সাদা ধুতি পর্বো না,
রাত ত্পুরে বিভের কাষড় বিছানাতে সইব না॥
আমরা গরনা প'রে গোট ঝুলাব
পাছা পেড়ে শাড়ী ছাড়্বো না

পোছা পেড়ে ছাড়বো না )
আমরা গরম কর্বো নরম প্রাণ
শাণিরে নেবো নয়ন-বাণ,
ওগো কালামুখো কাল কোকিলের কুহুতে উহু বল্বো না,
কলিটার একি ধারা, কেউ হাসে কেউ কেঁদে সারা,
যদি মাগ ম'লে মাগ পায় পুরুষে,
আমরা কেন ভাতার পাব না,
এক যাত্রার পৃথক্ ফল ফল্তে দিব না ॥



ললিত—গোরী একতালা।
আমার সাধ না মিটিল, আশা না পূরিল,
সকলি ফুরারে যায় মা।
আমি জনমের শোধ ডাকি মা তোরে
তুই কোলে তুলে নিতে আর মা॥
পৃথিবীর কেউ আমায় ভাল ত বাসে না,
এই পৃথিবী ভালবাসিতে জানে না,
যেথা আছে শুধু ভাল-বাসা-বাসি
সেথা যেতে প্রাণ চার মা॥

বেহাগ—আড়াঠেকা।
তারা পরমেশ্বরী।
কথন পুরুষ হও মা কথন ষোড়শী নারী॥
অনাভা আভারূপিণী, গতি-মুক্তি-প্রদায়িণী
এ ভব সংসারে মা ভরসা তব চরণ্ডরী॥

শক্ষর— দাদ্রা।
তোমার ভাল তোমাতে থাক,
আমায় ত তা'র ভাগ দেবে না।
যে আগুনে জল্ছি রে প্রাণ
বুঝেও তুমি তা বোঝ না॥

# ব্রেকর্ড -কাকলী

এ জালাতে জল্ছি যত,
বুঝেও তুমি বোঝ না ত
আমি কাঁদ্ছি যত, তুমি হাস্ছ তত,
জান না কি ডব্কা ছুঁড়ীর
বুক ফাটে ও মুখ ফোটে না॥

#### আলেয়া।

তারা তারা তারা ব'লে কবে আমার প্রাণ বাবে।
বলিতে বলিতে তারা, স্থির হবে হ'টি নয়নতারা—
তথন তোমায় আমি ভব্লিব তারা—
যবে তারায় কায়া মিশাবে॥

# ঐ মত পূর্ণকুমারী দাসী।

#### থাম্বাজ।

মাতিরে দে মা আনন্দময়ী, আনন্দেতে মেতে যাই।
একবার আমার মাতিরে দে মা, যেমন মেতেছিলেন রাই॥
দেশে দেশে গ্রামে গ্রামে, তব নাম-স্থধা-পানে,
( তারা ) আমুক যত নারী, আমি দেখে শুনে প্রাণ জুড়াই
( তারা ) ওমা হ'রে যে মহাভাবের উদর
আমি সেই স্থধাপ



#### থাম্বাজ।

"মা মা" রবে মন-স্থেথ মন ত্রিতন্ত্রী বাজাও রে।
মায়ের রচিত স্থমধুর বীণা বাজারে মায়ের নাম গাও রে॥
গঙ্গা, যমুনা, সরস্বতী, ঘেরি সপ্তকোটী তন্ত্রী সারি সারি।
বাজিছে নিয়ত "মা মা" করি বীণার ভিতরে শুন রে।
দীন রাম বলে ক'রো না হেলা, বাজাও সাধের বীণা এই বেলা,
(তব) আকাক্ষা কুরালে, যাবে লীলা ফেলে,

আনন্দে চলিয়ে আনন্দনগরে॥

#### থাম্বাজ।

আমার চোখে যদি লাগে ভাল কেন চাইব না।
দেখ বো কেবল মুখখানি তার তাও কি পাব না!
আঁখি আমায় দিয়েছে বিধি, দেখ বো ব'লে নিরবধি,
নয়ন ভ'রে দেখ বো তারে কারুর কথা শুন্বো না॥

#### मिक्।

তোমার চিনি গো চিনি গো তোমারে ও বিদেশিনি।

কুমি থাক সিন্ধু-পারে, ওগো বিদেশিনি।

তোমার দেখেছি মাধবী রাতে, তোমার দেখেছি শারদ প্রাতে

তোমার দেখিছি হৃদি মাঝারে ওগো বিদেশিনি।

অ পাতিয়া কাণ, শুনেছি তোমারি গান

তামারে সঁপেছি প্রাণ ওগো বিদেশিনি।

# শ্রীমতী পূর্ণকুমারী দাসী



ভূবন ভ্রমিয়ে শেষে, এসেছি তোমারি দেশে, আমি অতিণি তোমারি দ্বারে ওগো বিদেশিনি॥

#### কীৰ্ত্তন।

কান্থ সে বিনোদ রায় গো---ও তার বিনোদ চুড়ার বিনোদ করিহা উডিছে বিনোদ বায় গো— ও তার বিনোদ গলায় বিনোদ মালা বিনোদ বিনোদ দোলে। মালা আপনি দোলে (না দোলালে) বিনোদ গলেতে মালা আপনি দোলে-( আলো ক'রেছে গো) ( গলার আলে ক'রেছে গো ) (বিনোদ ফুলের মালা আলো ক'রেছে গো) কিবা কোন বিনোদিনী সথিরে (ও সথি ) কিবা কোন বিনোদিনী বিনোদ গাঁথুনি গেঁথেছে বিনোদ ফলে ( তার বালাই যাই গো) ( त्नहे वित्नामिनीत वानावे याहे ला ) অনুরাগ মিশাইয়ে মালা গেঁথেছে তার বালাই য কহে শ্রামানন, বিনোদ নাগর



বিনোদ কদমমূলে ( ধনি দাঁড়াইয়ে আছে )।
বিনোদ কদমমূলে নাগর দাঁড়ায়ে আছে—
নারীর কুল মজাবে ব'লে নাগর দাঁড়ায়ে আছে—
ললিত ত্রিভঙ্গ ঠামে নাগর দাঁড়ায়ে আছে—
ওগো বামে চূড়া হেলাইয়ে নাগর দাঁড়ায়ে আছে—
ওরপ দেখিয়ে কত বিনোদিনী

কলসী ভাসালে জলে॥

( আর রাখ্তে নারে )

(রপ কলদী আর রাথ্তে নারে)

( কুল-কলসী ভাসাইয়ে দিলে আর রাখ্তে নারে )।।

## কীর্ত্তন।

যমুনে এই কি তুমি সেই যমুনা প্রবাহিনী ?
ও যার বিমল তটে, রূপের হাটে, বিকাত নীলকাস্তমণি!
কোথা চাক্ল চন্দ্রাবলী, কোথা বা সে জল-কেলী,
কোথা সে ললিভা সথি সোহাগিনী—?
কোথা সেই রাস্বিহারী বংশাধারী, বামেতে রাই বিনোদিনী ?
না বাজে নুপুর ধ্বনি, না বাজে কিছিণী,
মধুর হাসি মধুর বাশা আর নাহি শুনি—
বিমোহন স্বরে উজান ভরে—বইতে তুমি আপনি!

## শ্রীমতী পূর্ণকুমারী দাসী।

## <u>রেকর্ড-কাকনী</u>

আমি—নিশি নিশি কত রচিব শয়ান, আকুল নয়ন রে।
আমি—নিতৃই নিতৃই বনে করিয়ে যতন, কত কুস্থম চয়ন রে॥
কত—শারদযামিনী হইবে বিফল, বসস্ত যাইবে চলিয়া
কত—আশার স্থপন, উদিবে তপন, প্রভাতে যাইবে ঝরিয়া॥
এ—যৌবন কত, রাখিব বাঁধিয়া, মরিব কাঁদিয়া রে।
দে—চয়ণ পাইলে, ময়ণ মাগিব কাঁদিয়া সাধিয়া রে॥
বেন—কার পথ চাহি এ জনম বাহি কার দয়শন যাচি রে
বেন—আদিবে বলিয়া, কে গেছে চলিয়া তাই আমি ব'সে আছি রে॥

বি বৈট—থাষাজ।

কই গো কুটলে কুটল কালা

এই যে কালী কপালিনী।

যতনে রাধিকা প্জেছে কালিকা

তবে কেন বল রাধা কলন্ধিনী

কই সে করেতে কুলনাশা বাণী,

কই সে অধরে মৃহ-মধুর হাসি,
মায়ের করেতে লোভে স্থশাণিত অসি

লোল রসনা রণে উলন্ধিনী॥

ভূই লো বাদিনী ননদিনী বলে
বৃথা রাধার বাদ রটালি গোকুলে

জ্বা-বিল্লপ্লে পুজি পা হু'থানি॥



#### ভৈরব—তাল ভরতঞ্চা।

ভূমি সব রূপে রূপ মিশাইরে আপনি নিরাকার।
আমি শুনেছি হে বিশ্বরূপ এমন রূপ আর আছে কার
ভূমি জল, ভূমি স্থল, ভূমি হে অনিল অনল,
ইন্দ্র, যম, স্থা, সোম, আলোকরূপী অন্ধকার॥
ভূমি ঘাটে ভূমি মাঠে, ভূমি হে ঘটে পটে,
ভূমি বেড়াও সকল ঘটে, ভূমি ঘটের কুন্তকার।
ভূমি সিংহ ভূমি করী, আপনি হও আপনার অরি,
ভূমি মার ভূমি কাঁদ, তোমার লীলা বোঝা ভার॥

#### বেহাগ---একতালা।

( এ সংসারে ) সকলই আমার।
শ্রামলা ধরণী, ধবলা থামিনী,
শনী দিনমণি, রূপেরি আধার॥
আকাশের তারা ডাকিছে আমারে,
সমীরণ ডাকে আয় আয় ক'রে,
কে থেন বলিছে প্রাণের ভিতরে,
আমরা সবাই তোমার॥
সংসার কি ভয় দেখাও আমারে,
ভাল নাহি বাস যাব চলে দ্রে,
ত জন এ বিশ্ব মাঝারে, মুছাইতে আঁথি ধার—

অ,

## এমতা পূর্বমারী দাসী



আছে কাননে কুস্থমের প্রীতি, আছে বিহগীর মধুমর-গীতি, নির্ম্বলা সলিলা আছে প্রোতস্বতী, যার কেহ নাই সকলই তার ॥

#### সিন্ধ-পান্বাজ।

বে জন শ্রামা গো মা ভজে তোমারে
সে কি মা কথন শমনে ডরে।
ও তার শমনে, শমন ধরে, থাক তারই অস্তরে ॥
ওগো তোর ভাবেতে ধার ভোলা মন
( তারিণী মা সে যে পাগল ভোলার মতন
সে জন সেজে গোগী এ বনে সে বনে
বেড়ার মা তোর তর ক'রে।
ওগো তুই ধারে ছুঁ য়েছিস্ তারা ( মা )
সে জানন্দে মাভোরার।
নইলে কেন কাটা মুণু হাস্বে মাগো বদন ভ'রে।

ঝি ঝিট—খাস্বাজ।
হরি তোমায় ভালবাসি কই।
আমার আর সে মন কই
লোক দেখান কেবল মাত্র, মুখে হরি হরি কই॥

## এীনতী পূর্ণকুমারী দাসী।



বে বাহারে ভালবাসে, সে বাঁধা তার প্রেমফাঁসে;
ভোমার যদি বাস্তেম ভাল, জান্তাম না কি তোমা বই।
আমার এই যে অশ্রুবিন্দু, প্রেম নাই তার এক বিন্দু;
লোক দেখান কেবলমাত্র মুখে হরি হরি কই॥
তব পদে এই নিবেদন, ভজিব হে হু'টি চরণ
সর্বকালে তোমার যেন কাতর প্রাণে শরণ লই॥

#### থাম্বাজ।

মম দাদশদল কমল দোলার,
দোলে কমলিনী সনে কমল নয়নে
 ত্লিছে ভ্রনমোহন।
প্রেম পরশে দোলাইছে দোলা
দেখ রে মানব অপরপ লীলা,
মেন এ চপলা কোলে করে পেলা,
 নবীন নীরদ ভাবে নিমগন॥
বিজ্ঞানে বিজ্ঞানে বিপিনে মহাতীর্থধামে
শ্মশান ঘাটে কর শক্তি ল'য়ে বামে
নীরবে নয়নে সেই রাধা সনে
 আনন্দ-সাগরে হের অরূপম।
সনারাসে জিনিতে পারে সে শমন॥
প্রেমারেশে দিগমর দিগমরী।

### এমতী পূর্বকুমারী দাসী।

# ব্রেকর্ড -কাকলী

থেলিছে বলিছে হরি হরি হরি, জন্ম রাধে গোবিন্দ-মুকুন্দ-মুরারি জন্ম যতুপতি লক্ষী-নারায়ণ॥

কীর্ত্তন।

ও তোর শ্রীদাম সথা পটেতে আঁক।
তোর মাধুরী হেরে।
ও বধু হে—থুঁজিয়ে স্কবল হ'য়েছে পাগল
থুঁজিয়ে না পায় তোরে।
ব'লে আয় রে ও ভাই—অনেক দিন

তোরে দেখি না----একবার আয়রে ও ভাই )

ও তোর মা নকরাণী. করে নবনী.

বেড়ার ব্রঞ্জের পথে।
বলে আয় নীলমণি কোলে ব'সে ননী
থেয়ে যাও—(একরার) আয় নীলমণি।
রাণী করে লয়ে নবনীর থাল,
বলে আয় রে আমার নন্দ-গুলাল।

তোর নন্দ পিতা, এ ছার প্রাণ তার দেখে তাজিবে—

ব'লে নন্দতলাল—আমার এলো না,
(প্রাণ দেহে রাখি পে)

## **শ্রীমতী পূর্ণকুমারী দাসী।**



ও তোর নন্দ পিতা—ছেলেছে চিতা. প্রাণ ঘুচাবার তরে। প্রাণ আর রাখ্তে নারে---অনলেতে প্রাণ তেয়াগিবে আর রাখবে নারে। ও তোর নন্দ পিতা—জেলেছে চিতা, প্রাণ ঘুচাবার তরে। ধনি ক্ষণে মূরছে, আর কি বাঁচে, আছে যমুনার কূলে। ও তোর চন্দ্রাবলী, শ্রীহরি বলি, বলে ধরি সথি তারে তুলে। কেঁদে কি হ'বে রাধে---তোর গেছে—আমারও গেছে॥ কীর্ত্তন ( মঙ্গল-বিভাস )। অধীর হ'য়ে দড়ি দিয়ে মিছে বাঁধিতে প্রয়াস পাও জননী 1 (কেন কেন ক্রোধে) তমোগুণ ছদে ধরে, বাধিতে কেউ পারেনি॥ ( আৰু অবধি ) ছাড় তমো রক্ত হ'টী গুণ ( জননী আমার কথা রাথ মা )

হ্বদে ধর সৰগুণ আমি নিগুণ সগুণ হ'য়ে,

বাধা রব মা নন্দরাণী॥ পাশে চিরদিন তরে বাঁধা রব মা নন্দরাণী॥

## শ্রীমতী পূর্ণকুমারী দাসী

## রেকর্ড-কাকলী

#### ভৈরবী।

কি দিয়ে পৃঞ্জিব বল না তোমারে।

যে দিকে নেহারি সকলি তোমারি,

কি আছে আমার এ ভব সংসারে॥

লতার লাবণ্য কুসুমে স্থবাস,

সর্ব্ধ সৌরভেতে তোমারি বিকাশ,

ধৃপ আদিতে তোমারি প্রকাশ,

কল মূল সব তোমারি ভাণ্ডারে।

চন্দনে পৃতগন্ধ শাতল, তুমি পবিত্র জাহ্ণবীর জল,

তুমি তুলদী নব-দ্র্বাদল, বিহুদলে তুমি

ত্রিকোণ আকারে॥

আতপ তঙুল, ক্ষীর, সর, ননী, সকলি তোমারি ওতে চিন্তামণি, কি দিয়ে পৃদ্ধিব ঐ পা তু'থানি কি আছে আমার এ ভব সংসারে॥

থায়াজ।

আমার সাধনের বার্না দাও হে ফিরে।
রাধানামে সাধা বার্না দিব না কা'রে॥
নাগরী নাগর হ'লে, মন সাধ পুরাইলে;
চূড়া বার্না লুকাইলে কিসের ভরে।
যত পার মিনতি করি, শুন ওগো রাধা পা,
শ্রাম বিনে এ বাঁশরী কে ধরে অধরে॥

## भागा पृत्कूमातीमामी।



বেহাগ-মিশ্র।
নীল নবীন সেই বৃদ্ধিম ঠামে ম'জেছি।
ধরম করম সরম ভরম জীবন ধন প্রাণ মোর
ভবের কাণ্ডারীর সেই রাঙ্গা পায়—আপনারে মজিয়েছি
আমার হৃদয় মাঝে নেচে নেচে সবে যায়
ধর্ম অর্থ মোক্ষ কাম নির্বাণ তারে দিব বিলারে,
সংসার স্থুখ সম্পদে আর কাজ নাই,
অকলে যেথায় ভেদে যাই রাজরাণী হ'তে নাহি চাই।

#### কীর্ত্তন।

স্থিরে বরষ বহিরে গেল।

শাঁত বসস্ত গেল স্থাল মাধবীলতা
আমার কেশ স্থাল অঙ্গের বেশ।
আমি নিতি নিতি বেঁধে রাথতাম।
প্রিয়া যবে মথুরায় রহিল
জীবন যৌবন পরশ রতন ধন
কাচের সমান গেল।
কিবা কোন সে নগরে নাগর রহিল।
নাগরে পাইয়ে তথা কোন পুণাবতী গুণেতে বেঁধেছে
স্থি রে আমি চাই গুণের বালাই চাই ।
(কি গুণে মন ভূলায়েছে)
(মদনমাহনের মন ভ্লায়েছে)

#### শ্রীমতী রাধারাণী

## <u>রেকর্ড-কাকলী</u>

## শ্রীমতী রাধারাণী।

বসস্ত-বাহার।

( আজি ) এমন মধুর নিশিতে শুধু চায় প্রাণ বৃকভরা গান

ভনিতে খ্রামে বানীতে।

হুদয় মাঝারে উঠিছে তুকান পলকে প্রলয় হেরিছে পরাণ রূপ যায় পিছু, তারি পিছু পিছু

ছুটে আদে পার মিশিতে।

সারানিশি জেগে র'য়েছি ছেপায় কি জানি যদি সে এসে ফিরে যায়, কে বলিবে কথা মরমেরি ব্যথা

কে বলিবে তারে, আসিতে।

ङ:লা।

ধর ধর তে স্থা প্রণয়হার

অধিনীর উপহার।

তোমারি তরে সদা আঁথি ঝরে

তোমা বিনা আমি কু'র

কত যে যতনে তোনা হেন ধনে .

পেয়েছি হে প্রাণাধার।

(আমি) স্থদরে স্থদরে রব মিশাইরে
থতে দিব না আর ॥
তোমারি বিরহে, প্রতি পলে পলে
যাতনা সহি অপার।
আর কাদা'য়ো না, কাঁদিতে পারি না
ভূলে থেকো না আর ॥

## শ্রীযুক্ত কে, মল্লিক—

রাগিণী-থাম্বাজ---যং।

কোথার লুকালে ওহে নাগর শ্রাম রার।
তোমা বিহনে বনে বুঝি বা প্রাণ বার॥
একে ঘোরা যামিনী তাহে মোরা কামিনী,
ভরেতে কাপে প্রাণী নাথ হে একি দার।
কোথার লুকালে ওহে নাগর কানাই;
কুলে দিয়েছ কালী অকুলে ভাসি তাই;
তুমি অকুলকা গুারী, দাও চরণতরী
গোপিকা তোমারি শুধু তোমারে চার॥
নাথ তোমারি কারণ জীবন ধারণ,
লাও হে পদে স্থান রাথ হে গোপিকার॥



সিশ্ব—থাম্বাজ।

আমি তোমারই আশে ব'সে আছি ব'লে

ठारे कि (मधा मिला ना मिला ना।

ত্ৰথবা দেবতা-বাঞ্ছিত তুমি

তাইতে বুঝি দেখা দিলে না॥

শুধু নয়নেরি আশা দেখিতে বাসনা প্রাণে ব্যথা স্থা দিও না দিও না, তুমি স্থাংশু বদনে, হের স্থা বিনে,

চকোর জীবন বাঁচে না বাঁচে না॥

কাফি।

( ওহে ) হরি দিবানিশি ডাকি তাই।
আমায় দাও দাও দরশন যাতনা জুড়াই॥
চিরস্থ-আশে সংসারে সঁপিয়া মন—
কত হঃণ পাই হরি কাহারে জানাই
মনোবেদনা জানাই হরি যাতনা জুড়াই॥

বিঁ বিট---মিশ্র।

কেন দাড়ায়ে শ্রাম কুঞ্জের দ্বারে, সথি ! তারে ফিরে যেতে বল ।
নিশি শেষে কেন এসে সথি, সে করে নানা ছল "
আগে না বৃঝে স্থাঝে রাখালের সঙ্গে ম'জে
কি লাঞ্জনা কি যন্ত্রণা সথি তার পেলাম প্রতিফল ॥

### শ্রীগুক্ত কে, মল্লিক।



#### ছারানট-মিশ্র—তেতালা।

তোমারি দেওয়া প্রাণে তোমারি দেওয়া চ:খ. তোমারি দেওয়া বুকে, তোমারি অমূভব। ভোমারি দেওয়া নিধি তোমাণি কেডে নেওয়া. তোমারি শক্ষিত. আকুল পথ চাওয়া. তোমারি নিরজনে. ভাবনা আনি মনে তোমারি সান্তনা অমৃত সৌরভ ॥ তোমারি হু'নয়নে ভোমারি শোকবারি। তোমারি ব্যাকুলতা তোমারি হা হা রব ॥ তোমারি বলে কেন ভ্ৰান্ত হ'ল হেন মিথ্যা-গৌরব ॥ ভাঙ্গ রে অহমিকা

ভূলিদ্নে ভূলিদ্নে তারা আমি যে তোর অবোধ ছেলে।
আমি যদি থাকি ভূলে কোলে নিদ্ মা ছেলে বলে॥
যে বাঁধনে বাঁধা থাকি, হয় না মনে বারেক ডাকি,
দয়ায়য়ী দিদ্নে ফাঁকি, ভূলিদ্নে মা দিন ফ্রালে॥
খেলা ঘরে ধ্লা খেলা, ফত খেলি তত জালা,
ডাকি তোরে বিপদ বেলা, চরণ দিদ্ মা চরমকালে।

#### निक्---य९।

্ত্র গোল দীন দরাময়ী দীনের দিন কি বাবে না কাতর কিন্ধরে ডাকে তবু দরা হলো না ॥



মাভূগর্ভে যবে ঘোর অন্ধকারে একা, কত মা মা বলিয়ে মা পেলেম না মা দেখা, তথন তারিবি বলিয়ে কত আশা দিলি, এখন ডেকে মরি সাড়া দাও না॥

রাগিণী বারোরা—তাল ঠুংরি।
ছঃখহরা তারা নাম তোমার।
তাই ডাকি মা বারে বার॥
জনম অবধি ধ'রে ডাকি শ্রামা তোমারে,
ছুমি না করিলে দুয়া কি গতি হবে আমার॥

টোড়ী ভৈরবী— আড়াঠেকা।
তারিতে হবে মা তারা হ'য়েছি শরণাগত।
অনায়াসে তরে গেল কত পাপী আমার মত॥
অসংখ্য অপরাধি আমি জ্ঞানশূনা মিছে ভ্রমি,
মায়াতে মোজিত হ'রে বংস্কারা গাভীর মত॥

মূলতান মিশ্র—একতালা
আয় মা সাধন সম্বে।
দেখি মা হারে কি পুত্র হারে॥
আরোহণ ক'রেছি পুণ্য মনরণে,
ভজন পুত্রন হ'টি অশ্ব যুড়ি তাতে,



দিয়ে জ্ঞান ধহুকে টান, ভক্তি ব্রহ্মবাণ,
ব'দে আছি ধ'রে॥
বাবে বাবে রণে তুমি দৈত্যজয়ী,
এবার আমার রণে এস ব্রহ্মময়ী,
ভক্ত রসিকচক্র বলে, মা তোমারি বলে,
জিনিব তোমায় সমরে॥

#### আগ্ৰমনী।

স্বপনে দেখেছি গিরি গৌরী আমার এসেছে ঘরে, মা মা ব'লে চাঁদ মুথে কত ছঃথ প্রকাশ করে। তটিনী জাহ্নবীরে আদরে শিব ধরে শিরে গৌরীরূপে কালী হেরে ফল নিতে পারে পড়ে॥

সিন্ধ-কাফি

আর মা আর মা উমা আর কোলে করি।
কতদিন ছিলি মাগো অকুল অন্ধকার করি।
তিন দিনের তরে, বৎসর গেলে, মা আমার আসিবে বলে,
আশা পথে নয়ন ফেলে, চিরদিন গেছে আমার,
কোলে ছ'টি নব কুমার,

আর উমা দেখি শ্রামা—নয়ন ভ'রে উমা তোমার কচি মুখে হাসি হেরি।

## ব্রেকর্ড-কাকনী

### পূরবী---মিশ্র।

আমার জনয় কমলে এসো গো মা ভবনারা।
এলোকেশী ঘোরবেশী মহানিশা ভরকরা॥
ছয়জন শত্রু মিলে, কুপথেতে দেয় মা ঠেলে,
ভাকি ভোমায় ভারা বলে, কেনে কেনে হই মা সারা,
প'ড়েছি মা ঘোর বিপদে, রেথো গো মা অভয় পদে,
সংসারেরি মহামদে উন্নত্ত হ'য়েছি ভারা॥

ভৈরবী-মেশ্র।

ছাড়িয়ে সংসার কোথা চলে বাও

দীন হীন বেশ ধরিয়ে।

স্থাত্ম-পবিজন কাদিছে এখন

দেখ না তাদের চাহিয়ে॥

ত্যজিয়ে মমতা দারা পুত্রগণ,

কোন মহাদেশে করিছ গমন,

দেহেতে সব বৈরাগ্য লক্ষণ

কি ভাবেতে আছ ভূবিয়ে।

গুনিলে না তুমি আমার বচন

मिथिट पिथिट म्मिट नम्न.

কি ভাবেতে তুমি হুটলে এমন, না পেলাম উত্তর ডাকিটে



### ঝিঁ ঝিট।

শ্বশানে কেন মা গিরিকুমারি, কেন মা তোমারি এমন বেশ।
( তুমি ) হর-হাদি'পরে দিয়াছ চরণ, নাই মা তোমার লাজের লেশ।
দিয়াছ চরণ হরেরি উপর,
উলঙ্গিনী অঙ্গে না পর অস্বর,
লহ লহ জিহ্বা করিছে তোমার, এলায়ে প'ড়েছে চাঁচর কেশ।
ভৈরবী ভবানী ভবের কারণ,
করে করি মাংস করিছ চর্ব্বণ,
স্থাপাত্র করে করিয়া ধারণ যোগিনী সঙ্গে নাচিছ বেশ।

#### ঝিঁ ঝিট---থাম্বাক্ত।

জাল গুটিরে নে মা শ্রামা বাধন থুলে দেনা মা।
ছেড়ে দে মা কেঁদে বাঁচি আর থেলিতে চাহিব না॥
কি ঝকমারি ভবের থেলা,
ঘরে পরে দের মা জালা,
ঘ্রিয়ে দে মা ভবের দোলা, খাটতে আর পারি না।
সর্ব্ধ ঘটে থাক তুমি,
নিমিত্তের ভাগী কেন আমি,
ছহং ব্লাশ অন্তর্যামিনী বৃকে দিয়ে ঐ রাঙ্গা পা॥



#### সিন্ধ--কাফি

মরমে মরম-যাতনা ভালবাসার অবতনে।

এ কাব্দে কুকাব্দে মব্দে বাব্দের অধিক বাব্দে প্রাণে॥

যে জনা পিরীতে নাচায়, সে যদি ফিরিয়া না চায়,

আমার মন-প্রাণ যাহারে চায় সে যদি না বাঁচায় প্রাণে॥

#### সাহানা ( আগমনী )

এবার আমার উমা এলে আর উমায় পাঠাব না।
বলে বল্বে লোকে মন্দ, কারো কথা গুনবো না॥
আসে যদি মৃত্যুঞ্জয়, উমা নেবার কথা কয়,
এবার মায়ে ঝিয়ে কর্ব ঝগড়া, জামাই বলে মানবো না

#### সাহানা-মিশ্র।

আমায় লোহারই বাধনে বেঁধেছে সংসার
দাসথত লিখে নিরেছে হায়।
আমার থেটে থেটে থেটে, জন্ম গেল কেটে,
তথাপি এ ছার খাটা না কুরায়॥
আলস্ত অস্তথ রোদ বৃষ্টি নাই,
কাঁপেতে জোরাল না আছে কামাই,
আমার চক্ষ্ জলে পোরে, মৃছি এক করে
স্থি



বড় শ্রান্ত হ'লে পাছে ঘুমাই ব'লে, রেথে দেছে আমায় শক্রর মহলে; তারা অগুণের থেলা, মায়াকাঁসে ফেলা, বুকে পিঠে উঠে সতত থেলায়॥

বি বৈট-মিশ্র।

আমার যত দিন যায় তত কাজ বাড়ে,
অবসর কই ত হ'লো না।
ব'সে নির্কিন্নে নিশ্চিন্তে, কর্ব হরির চিন্তে,
এমন দিনটি ত কই পেলাম না॥
বাল্যকালে থেলার গত হ'ল মন,
রস-বিলাসে গেল রে যৌবন,
জরা ব্যাধি আদি বার্দ্ধকো এখন,
আমার হ'ল না বৃত্তি তাঁর সাধনা॥
মাতৃপিতৃ ঋণ নারিমু শুধিতে,
না পারিমু তাঁদের চরণ সেবিতে,
তাই সদাই চিন্তে শমন আসি অন্তে,
দিবে বৃত্তি কত যাতনা॥

মিশ্র-ভৈরবী।

র সে দিন মন কর রে শ্বরণ
ভবধাম যবে ছাড়িবে।



কুস্থপন ষত দেখিছ অবিরত
চিরদিনের মত কুরাবে ॥
ভাই ভগ্নি ষত, কাদিবে অধিরত
শিশু সন্থান ধূলায় লুটাবে।
স্বেহময়ী জননী হারায়ে নয়নমণি,
গাহিয়ে তব গুণ কাদিবে॥

মিশ্ৰ-থাম্বাজ।

মেরে হ'রে রণসজ্জা লাজের মাথা থেরেছ কি ?

এমা—ওমা—এ কি গো মা, এমন মেরে দেখেছ কি ?
বাম হস্তে অসি ধরা, দস্ত জিহ্বা বাহির করা,
নরকরে কটিবেড়া কপালে উঠেছে আঁপি।
একি অসম্ভবা মেরে, পুরুষের বুকে পা দিরে,
নাচিছে ধেরে ধেরে আর কি রেখেছে বাকি॥

রামকেলী।

স্বপ্ন যদি ভাঙ্গিলে রজনী প্রভাতে পূর্ণ কর হিন্না মঙ্গল কিরণে। রাথ মোরে তব কাজে নবীন কর এ জীবন হে॥

ধিয়া তা ধিয়া নরমালা। ঘোরাননা রক্তদশনা, রণাঙ্গনা করালী॥

### শ্ৰীযুক্ত কে, মল্লিক।



অটু অটু হাস, ত্রিপুর তাস,
প্রশার জলন ঘন গভীর ভাস;
দস্ত বিনাশ অস্কর হ্রাস,
কোটি অরুণ চটা চরণে বিকাশ,
মানস সকাশ, আশ্রিত আশ বামিনী-রূপিণী,
অব্দে জগদন্থে——
জয়ন্মে জরদে কালী,
অধিকে তাম্বক কামিনী কপালী।

### जुलानी-भिञ्च-कार्का।

কালার প্রেমের জালার জলে মইলাম মইলাম গো হে
মনের মত মালা গাঁথি আরে সজনী ।
মুই দিমু শ্রামের গলে গো হো,
কুক্ষণে জল ভর্তে গেলাম গো সজনী ।
যমুনারি কুলে এহে এহে এহে হে ।
কাঁকের কলস রইয়া গেল গো
সজনী মোর তুলে আনিল
চলে ওহো ওহো ওহো ।
বলে প্রাণ কানাই গিয়াছে (সজনী)
সার সেই বনে মন টানে ওহো ॥



#### সিন্ধু-কাফি---বিজয়!।

নবমী নিশি পোহাল কি করি কি করি বল।
ছেড়ে যাবে প্রাণের উমা দেখ না বিজয়া এল।
পুত্রশোকে জীর্ণজরা, ভূলে ছিলাম পাইয়ে তারা,
হই যদি তারা হারা জীবনে কি ফল বল।
বংসরাবধি পরে তারা, আনন্দ করিলেন ধরা;
কিসে যার হুধ পাসরা আমারে বল।

#### বি বৈট---থাম্বাজ।

এবার তোরে চিনেছি মা, আর কি শ্রামা তোরে ছাড়ি।
ভবের হু:খ ভবের জালা, পাঠিয়ে দিছি যমের বাড়ী॥
ফেলেছিলে গোলোক ধাঁধায়, মা হ'য়ে কি এমি কাঁদায়;
ছেলের কায়া ভনে অমি কেঁদে উঠ্লো মায়ের নাড়ী॥
হাতে ধ'য়ে নিলি মায়ের, ভাবনা ভীতি গেলাম ভূলে
ছেলের চোথের বারি মুছিয়ে দিয়ে নিলি আমায় কোলে তুলি

#### সিন্ধ-থামাজ।

কত দিন পরে তারা এ দীনে করিবে দরা।
সংসার পেষণে পিষে সারা হ'লাম গো অভরা ॥
কাঁদি যত মা মা বলে, , ধরিয়ে তব অঞ্চু
তুই তত দিস্ মা ঠেলে ফেলে—বেন পাষাণে প্রাদ্ধি ।
তোর পেটের ছেলে হ'লে পরে, ফেল্তিস্ কি মা ওদ্ধি ক'রে,
ঘরে বসে পেতাম তারা ঐ রালা চরণের ছায়া॥



#### ভৈরবী।

ছস্তরে নিস্তার না দেখি মা আর,
ভরদা তোমার, তার মা আমার।
আশ' দিরে তারা ভাসালি পাথারে
বিপদ-সাগরে রাথ রাঙ্গা পার॥
ও গো মা ঈশানী শ্রশানবাসিনী
ছথে গুথহরা ছরিত নাশিনী,
কুপাণ করাল, শোভে মা কিরীট,
কপাল-মালিনী যায় প্রাণ যায়॥

কাফি-মিশ্র—আগমনী
গিরি একি তব বিবেচনা!
গেল সম্বংসর দহিছে অন্তর,
গৌরী আনিতে তব মনে হ'ল না॥
রাজার মেয়ে উমা, জামাই ভিথারী,
লোক মুখে শুনে সদাই হুখে মরি,
আবার নাকি শিব ত্রিশূল ডম্বুরধারী,
শ্রশানাধিকারী ঘরে থাকে না।
গায়ে মাখে ছাই উমারে মাখায়,
সিদ্ধি ঘুটে খায় বলদে চড়ায়
মরণ নাই শিবের, সে যে মৃত্যুঞ্জয়,
পাষাণীর হৃদয় হুব সহে না॥



#### ভৈরবী।

কি হবে কি হবে উমা চলে গাবে,
কেমনে ধরি এ প্রাণে।
বংসর যাইবে তবে মা আসিবে,
নতুবা তাহারে পাব না এখানে॥
জন্মা নিলে কাভিকে, বিজন্মা গণেশে,
ন্নী ভূঙ্গী যায় আশে পাশে.
সিংহবাহিনী দেখ গো ভবানী,
চলিল ঈশানী আপন ভবনে॥

#### ঝি ঝিট-মিশ্র।

অতি কাতর হানরে সে যে ক'রে গেছে, শেষের সে কথা আমার হ'টা হাতে ধ'রে। ভালবাস বা নাই বাস কিন্তু মনে রেখ, আমি নিশিদিন ভালবাসিব তোমারে॥ বসস্তু প্রবনে কোকিলেরি সনে যাবে হুঃখ গান

অতি প্রেম ভরে।
আমি নিদাঘ-তাপিত তরুলতা মত
প্রাণেরি বেদনা জানাব তাহারে॥
মধু-যামিনীতে প্রেম-শন্তনেতে স্থাথেতে ঘুমায়ো লইরা

আমি চিরস্তি তব হৃদয়ে ধরিয়া সদা জেগে রব বিরহী, সরে॥



#### আদোরারী।

তব চরণ-কমলে কবে চিরশরণ পাব দীন-জননি।
ভবসাগর পার হ'তে কেবল আছে গো তব পদ-তরণী।
নিত্য ভবে মঞে ভুলিয়াছি—তোমার নিশ্মল গুণকাহিনী
জ্ঞানহীন দীন গোপেশ্বর প্রতি চাহ গো মহেশ-ভামিনী॥

#### ইমন।

জননী আমার তারা স্থপন মোক্ষদা
জগৎ-গুরু শিব, ঐ পদতলে তব,
বেদাগমে মহিমা অপার।
রাম শঙ্কর গুণহীনজনে তব গুণ বিরিঞ্চি বাঞ্চিত পদ যার।
ইন্দ্রাদি স্থরেশগণ বিরপত্র স্কচন্দ্রন
দিচ্চে সদা চরণে তোমার॥

#### কালেংড়া।

বলিস্ হ'দিন পাক্তে হেথার কাল্কে ভোলা নিতে এলে।
ক্ষতি কি তার বল্ গো আমার ঘরে থাক্বে ঘরের ছেলে॥
ব্ঝিরে হ'ট মিষ্টি ক'রে, ভূলিরে তারে রাখিস্ ধ'রে,
মনের মত পেলে পরে থাক্বে ভূলে হেঁসে থেলে॥
সিদ্ধি বাট্বো আপন হাতে, শুনেছি সে তুই তা'তে,
গঙ্গাজল হ ক্লেপাতাতে নিজ্যি মাথার দিব ঢেলে॥
বি জামাই আনে স্বাই, আমার মনে সে সাধ কি নাই,
কেমন ক'রে আন্বো জামাই দেখা পাই তার বছর গেলে॥



#### বিভাস।

করী অরি'পরে আনিলে হে কারে কই গিরি মম নন্দিনী।
আমার অম্বিকা দিভুজা বালিকা, এ যে দশভুজা ভুবনমোহিনী॥
দক্ষিণ অঙ্গ রাথি মৃগেন্দ্র পরেতে, আর পদ আরোপিয়ে অস্করেতে,
দাঁড়িয়ে আছেন কিবা ত্রিভঙ্গ ভঙ্গিতে, জ্ঞান হয় স্বয়ং ব্রহ্মসনাতনী,
এপাশে দক্ষিণে গজেন্দ্রবদন, প্রকাশিত যেন প্রভাতি তপন,
বড়ানন স্বশোভন কমলা ভারতী সহ যেন চারিভিতে প্রকাশ মণি॥

#### হাম্বির মিশ্র।

নিশি যে পোহারে যায়।
বল কোন্ প্রাণে নিশি অবসানে, ভোমারে দিব বিদায়॥
কোথা যাবে তুমি চলি,
কবে এসে কিরে এ ছান্য পরে ঘুমায়ে পড়িবে ঢলি,
আমি বিভাের নয়নে চেয়ে মুখপানে ভেসে যাব ছ'জনায়।
তুমি যাবে চলে যাও, শুধু ব'লে যাও, কবে আসিবে ফিরে গো,
মম প্রাণ যদি চায় রহিব আশার ভোমারি স্থপন আশে গো,
পোড়া জীবন জুড়াইব ভোমারি শাতল ছার॥

#### সিন্ধ-মিশ্র।

হাদে বাঁধিয়া কেন নয়ন জল দাও না মুছিয়া।
সে যে অতীতের কথা হাদরের বাথা যাও না কেন্দু -লিয়া॥
আকুল প্রাণে হতাশ হাদরে তুমি মিছে কেন মর দ্বিরা।
তুমি অমন করিয়া মুখের পানে থেকো না গো চাহিয়া॥



সিন্ধ-থাম্বাজ। বে দিকে তাকাই কল নাহি পাই. কি যে করি তাই জানি না। পড়ে মায়া-জালে, হরি-পদ ভূলে, পাই কৰ্মফলে যাতনা ॥ বিপদ সময়ে জীবনের ভয়ে. ঠেকি ঘোর দায়ে ডাকি দয়াময়: শঙ্কট মিলিয়ে ভুলিয়ে চিন্ময়ে, করি সে চরণ বাসনা। পাপ অগণন করি আচরণ তথাপি সদয় সদা নারায়ণ. কমতির একি প্রেরণা॥ অস্তব্যে নির্ভয়, কহিছে বিজয়: সোজা পথে যেতে যদি ইচ্ছ: হয়. কল্যিত হিয়া, শোধিত করিয়া, পতিতপাবন ভাব না ॥

বেহাগ।

নিতান্ত আপন ভাঁরে, কেন নাহি ভাব মন॥
ক্ষণেক ভাবিলে পরে আনন্দে হবে মগন॥
তিনি ব্যাপ্ত চরাচর, তিনিই ত পরাৎপর;
হও তারি ধ্যানপর, বিশেষ করি যতন॥
থাতে বিশ্ব সমুদয়, হয় জাত স্থিতি লয়।
তিনিই পতি নিশ্চয় বিজয়-বাঞ্তি ধন॥

# ব্রেকর্ড-কাকলী

#### বিভাগ।

গিরিশীননিদনী মহেশভামিনী,
গণেশজননী ভূবন পূজিতে।
সংসার দাহনে শোকের তাড়নে.
তব কপাগুণে পারি মা ছুড়াতে।
দীন-স্তুত হেতু কাদে ব্রি মন,
তাই কি ছাড়িরা কৈলাস ভবন,
স্বসর দেহে নূতন জীবন
দিতে কি এস মা আধার জগতে।
কহে গোপেশ্বর, করি যোড় কর,
যে চরণ পেলে স্ক্রর পামর,
ডংখী ব'লে মাগো এত জনাদর,
দিবে না তরিতে এ দীন স্ততে।

#### বাগেনী।

এস গো মা ভবরাণি ! ভবভয় নিবারিতে।
আজি তব আগমনে নাহি তঃথ এ জগতে॥
ভোমার সম্ভানগণ,ছঃথ পায় আজীবন,
ভাই কি মা ক্ষণতরে এস গো তুমি ভুলাতে ?
অধম গোপেশ্বর, যদি ভায় রুপা কর,
নহিলে ভার নাহি উপায় মারের চরণ লভিতে॥





#### টোরি-ভৈরবী।

আমার মাথা নত করে দাও হে তোমার চরণ ধূলার' পরে, সকল অহঙ্কার হে আমার ডুবাও চক্ষুর জলে।
নিজেরে করিতে গৌরব দান, নিজেরে কেবলি করি অপমান, আপনারে শুধু ঠেলিয়া ফেলিয়া ঘূরে মরি পলে পলে॥
দেয়াল) আমারে না যেন ক'রে৷ প্রচার আমার আপন কাজে, তোমারি ইচ্ছা হউক পূর্ণ আমার জীবন মানে,
গাচি হে তোমার চরণে শান্তি, পরাণে তোমার পরম কান্তি,
প্রভু আমারে আড়াল করিয়া দাঁড়াও হৃদর পদ্দলে।
সকল অহঙ্কার হে আমার ডুবাও চক্ষুর জলে॥

#### থাম্বাজ।

আমি ত তোমারে চাহিনি জীবনে তুমি অভাগারে চেয়েছ।
আমি না চাহিতে হৃদয় মাঝে তুমি নিজে এসে দেখা দিয়েছ॥
চির আদরের বিনিময়ে সথা চির অবহেলা পেয়েছ।
আমি দূরে স'রে গেছি হু'হাত পাসরি টেনে ধ'রে বুকে নিয়েছ॥
ও পথে বেও না ফিরে এস ব'লে কালে কালে কত ব'লেছ।
আমি তবু চলে গেছি ফিরায়ে আনিতে পাছে পাছে ছুটে গিয়েছ॥

#### বেহাগ।

দিবানিশি তারা ব'লে ডাক রে পামর মন।

মুমর মহিমা-গুণে ঘুচিবে ভব-বন্ধন ॥

রীরা নামে স্থাধারা শিব তাহে আত্মহারা,

শবাকারে তারাপদ হৃদে ক্রয়ে ধারণ॥



#### ইমন।

জয় জয় শয়র ব্যোম্ ব্যোম্ হর হর
জটাজ্টবর বম্ বম্ ভোলা।
ব্যভ-বাহন বাগছাল আসন,
কপাল হুতাশন ধক্ ধক্ জালা॥
বামে লয়ে শয়রী মুথে বলে হরি হরি,
ভাঙ্ ধৃতুরা পানে আঁথি ঢোলা ডোলা।
ভূসী দিতেছে তাল নন্দী বাজায় গাল,
ভবানী ভূতেশনাথ কাঁধে ক'রে ঝোলা।

### कार्कि-निक्र।

জীবন বৃণায় মন যায় ( হায় ভারা )
কল লাগিয়ে ভাবি না কি হবে শেষে,
শেষে দেখি দিনে দিনে হয় আনুক্ষীণ—
মনে রেখো গো দীনভারিণী।
তব পদ সেকে, বিধি বিষ্ণু মংশ্বর,
দে পদ কেমনে পাবে অধন গোপেশ্বর,
ভবে যদি নিজ শ্রেণে ভার গো ভব ভবানী

#### टेडरवी।

নিশাপ শয়নে ভেবে রাখি মনে ওগো অস্তর্যানী<sup>ই</sup> ু° প্রভাতে প্রথম নরন মেলিয়া তোমারে হেরিব আমি॥



জাগিয়া বসিয়া শুল্র আলোকে,
তোমারি চরণে নমিয়া পুলকে,
ভেবে রাথি দিনেরই কর্ম্ম তোমারে সঁপিব স্বামী॥
দিনের কর্ম্ম সাধিতে সাধিতে ভাবি ব'সে মনে মনে,
কর্ম্ম অস্তে সন্ধ্যা বেলার বসিব তোমারি সনে,
দিবা অবসানে ভাবি ব'সে ঘরে,
তোমারি অসীম বিরাম সায়রে,
ক্রান্ত মনেরি ভাবনা বেদনা নীরবে বাইবে নমি॥

থাম্বাজ-মিশ্র।

দেখ হৃদয় আসন রেখেছি শৃষ্ঠ তব মুখখানি ভাবিয়ে।
দিবস রজনী ছিলাম বসিয়ে ( ওগো ) তব আশাপথ চাহিয়ে॥
পলে পলে কত গণোছ দিন আমি ( ওগো ) মোহন মুরতি আঁকিয়ে
কে জানিত বিধি হইয়ে সদয়, দিবে তোমা ধনে মিলায়ে॥
ছৃদয় মাঝায়ে রাখিব তোমারে যতন করিয়ে লুকায়ে।
বিরলে বসিয়ে হেরিব তোমারে ( ওগো ) কতদিন যাবে বহিয়ে॥

ভৈরবী-মিশ্র।
কেন হারাবি হ'ক্ল। (ওলো)
মর বালী শুন্লে পরে রবে না তোর কুল॥
যথন বাজে শ্রামের বালী,
শুনে মন হয় উদাসী,
হইবি বালীর দাসী বেড়াবি গোকুল॥

## ব্রেকর্ড-কাকলী

মোহন বাশার স্বরে, গৃহকাজে মন পাসরে, থাকিতে পারি না ধরে গোকুল হয় আকুল :

#### আগমনী।

গিরি ! গৌরি আমার এসেছিল।
স্বপ্নে দেখা দিয়ে চৈতত্ত করিয়ে চৈতত্ত্বরূপিণী কোথা লুকাল॥
কহিতে শিহণি কি করি অচল, নাহি চলাচল হ'লাম হে অচল,
চঞ্চলার মত জীবন চঞ্চল অঞ্চলের নিধি পেয়ে হারাল॥
দেখা দিয়ে কেন হেন মায়া তার,
মায়ের প্রতি মায়া নাই মহামায়ার,
জাবার ভাবি গিরি কি দোষ অভ্যার।
পিতদোষে নেয়ে পাষাণী হ'লো॥

বিজয়া — সিন্ধ-থাখাজ।

উমাকে বিদায় দিয়া কেমনে রব ভবনে।
স্থথের পর হু:থ পেয়ে বড় লাগে প্রাণে॥
ভবানী এ ভবে আসি নাশিল, ভাবনারাশি
কিন্তু শঙ্কর আসি রাখিল না এ ভূবনে।
উমার বিদায় শুনে কাঁচে গজ্জনে
এ যে জগৎ জননী কেমনে বাঁচে মা বিনে॥



#### থাম্বজে-মিশ্র।

রাঙ্গা জবাফ্লের মালা কে দিয়াছে তোমার গলে। রণপথে নেচে বেতে র'য়ে র'য়ে র'য়েছ বে, রণতরক্ত প্রমথ সক্ষ, চিক্র এলায়ে উলক্ষ, কি কারণে লাজভক্ষ কেগে৷ তব পদতলে॥

#### ভৈৱনী।

এ মায়া প্রপঞ্চময়, ভবের রক্ত-মঞ্চ মাঝে।
রক্তের-নট নটবর হরি যারে যা সাজান সে তা সাজে॥
কর্মাস্থেএ জীনমাত্রে সবে মাত্র মায়ায় গাণা,
কেহ পুত্র কেহ কন্যা কেহ ভগ্নি কেহ লাতা,
কেহ সেজে এসেছেন পিতা কেহ স্নেহময়ী মাতা,
কত রক্তের অভিনেতা, আসেন সেজে কত সাজে।
যথন যার হ'তেছে সাঙ্গ এ রঙ্গভূমির অভিনয়,
কাকস্ত পরিবেদনা আর তথন সে কারো নয়,
কোথায় রয় প্রেয়সীর প্রণয়, পুত্র কন্যায় কাতর বিনয়।
শোনে না কারো অনুনয়, চ'লে যায় সাজ শ্যা তাজে॥
না হইলে কর্মা শেষ কত আসিব কত যাইব,
সং সেজে সংসারের মাঝে কত হাঁসিব কত কাঁদিব,
ভূমিংলৈ যাবে অশিব, এ যাতায়াত কবে নাশিব,
মহাবিগ্রে কবে পশিব, মিশিব হরির পদরজে॥

## রেকর্ড-কাকলী

#### স্থরট-মিশ্র।

কত দিনে হবে সে প্রেম সঞ্চার,
মুথে বল্তে হরিনাম, শুন্তে শুণগ্রাম, অবিরাম নেত্রে ব'বে অশ্বধার
স্থরসে রসিক হইবে রসনা
জাগিতে ঘুমাতে স্থুবিবে ঘোষণা,
কবে হবে যুগল মন্ত্রের উপাসনা,
বিষয় বাসনা আমার ॥
কতদিনে হবে সর্বাজীবে দয়া, কতদিনে যাবে গর্ব্ব মম মায়া,
কতদিনে থব্ব হবে মম কায়া, নত হবে লতা যে প্রকার ॥
কতদিনে ব্রেরের প্রতি কুলি কুলি,
কাদিয়া বেড়ার স্কল্পে ল'রে ঝুলি,
কণ্ঠ বলে কবে দেব করে তুলি,
অঞ্জলি অঞ্জলি জল যমুনার ॥

#### স্থরট

আকুল হ'য়ে কেনে কেনে আঁথি তারা গেছে ক্ষয়ে কই মা তুলে নিতে কোলে এলোকেশা এলি পেয়ে। গুনেছি তুই অভয়া দীন চপ-হরা শ্রামা, আস্বি কবে দেগ্বি কবে, রাথ্বি কবে রাঙ্গাপ ভেবে ভেবে আমার মা দিন যে তারা গেল ব'য়ে.



#### ইমন-কল্যাণ।

( কর মন ) হরিপদ নিরাপদ সার।

সার মাত্র নাহি কিছু সকলি আত্ম-সংসার॥

যেতে হ'বে বহুদ্রে ক'রেছ কি তার সম্বল,

এইবেলা ডাক-না তাঁরে যিনি চর্ব্বলেরি বল,
ভেবে দেখ মন কেউ কারো নয় তুমি আমি কেবা কার॥

#### माम्त्रा ।

সে নিঠুর কালাচাদে আর ভালবাস্ব না।
সদর্থানি ছিঁড়ে গেছে নিভে গেছে জোছনা॥
দিনে দিনে দিন ফ্রাল, শ্রাম আমার নাহি এল,
এবার কালা এলে পরে আর কথা কইব না।
এবার শ্রাম এলে পরে আর ফিরে চাইব না॥

#### কাহারবা।

এস এস কাছে দূরে কি গো সাজে,
পাতিরা রেখেছি হৃদর আসন।
চরণের ধূলি দেহ মাণে তুলি,
আমি অভাগী কি হৃথ জীবন॥
এস প্রাণসাথি আজি শেষ রাতি,
ভাল ক'রে তোমায় করিব দরশন
জীবননাথ পুরিল সাধ
ভূলিছি যত অনাদর যতন॥



#### স্থরট-মিশ্র।

আমার দেগো মোহনচ্ড়া বেঁধে।
আমি কেন কেঁদে মরি, ক্রফ্তরূপ ধরি দাঁড়াব চরণ ছেঁদে॥
হ'রে ক্রফ্ত তারে রাধিকা সাজাব এম্নি ক'রে একদিন মথুরাতে যাব,
জানে না জানে না—জানাব জানাব, কি যন্ত্রণা শ্রাম-বিচ্ছেদে॥
রাধার ভাব যেদিন ধরিবেন হরি, কেঁদে কেঁদে দেবেন ধ্লায় গড়াগড়ি।
দিবা বিভাবরী ক্রফ্ত ক্রফ্ত করি বেড়াবেন কেঁদে কেঁদে॥
মানের দায়ে যে দিন ঘটবে প্রমাদ
বদনে ঝাঁপিয়ে রাথবেন বদনটাদ
কর্ত্ব বলে এবার মেগে অপরাধ (আমি) ধরিব যুগল পদে॥

#### ভৈরবী।

একদিন তোমার এমন হবে মুখে কথা বল্বে না।
হাতে ছুঁলে সর্বে না চরণেতে চল্বে না॥
নাম ধ'রে ডাক্লে তোমার শ্রবণে তা শুন্বে না।
পুত্র নিত্র জগৎ চিত্রে নেত্রে নিরপিবে না॥
অসাড় হবে এ রসনা আস্বাদন আর পাবে না।
ভাল মন্দ কোন গন্ধ নাসিকাতে যাবে না॥
হবে সাঙ্গ অবসাঙ্গ তোমার সঙ্গে কিছু যাবে না।
এই বেলা ডাক ডেকে নে রে তারে আর ডাক্ডে মুর পাবে না



#### मिका।

আর কিছু চাই না তারা ঐ পদ দাও শঙ্করী।
জানি মা তোর রাঙ্গা চরণ তরাবে ভববারি॥
আসিয়ে ভব-সাগরে প্রবল তুফান হেরে,
ভাসি মা নয়ন-নীরে দাও তরী ক্রপা করি।
আগে যদি জান্তাম মনে, রাখ্তেম তরী সঙ্গোপনে
কি হবে মা ব'লে দে না আশ্রয় করি চরণতরী।

#### ভৈরবী।

আর কেন কাঁদাও শ্রামা যদি মুছাবে না আঁথি।
(আমি) কাঁদিরা মরিলে কি মা তুমি তাহে হবে স্থী॥
কে মুছাবে আঁথি ধারা, তুমি না মুছালে তারা,
ভাই বন্ধু স্বত দারা, তারা কেবল স্থের স্থী॥

কাফি---সিন্ধু।

আমি কি তোর কেউ নই তারা।
তবে মা মা বলিরে কেন হই গো সারা॥
দিবস রজনী ডাকি মা মা ব'লে
আ তুমি একবার চাও-না আমার ভূলে,
গোরা কি হবে তারা ডাক্লে মা মা ব'লে—
লো গো সার

# রেকর্ড-কাকলী

ঝিঁ ঝিট—খাম্বাজ।
নিশিদিন তোমায় ভালবাসি তুমি অবসর পেলে বাসিও
আমি দিবানিশি হেথায় ব'সে আছি
ভোমার যখন মনে পড়ে আসিও॥
আমি সারানিশি তোমার লাগিয়া
রব বিরহ-শয়নে জাগিয়া
তুমি নিমিষের তরে প্রভাতে
আসিয়ে মুখপানে চেয়ে হাসিও॥

জঙ্গলা।

ভালবাসি যারে সে যদি না বাসে
তবু চিরদিন তারি।
চরণের ধূলি ধুরে দিতে তার দিব নয়ন-বারি॥
তারে দেবতা করিয়ে হাদরে রাথিব
রব চির-অমুরাগী।
মক্তভ্যে জলে কাননে অনলে পশিব তাহারি লাগি॥

স্থরট---মিশ্র।

তোমারি চরণে কেমনে শরণ পাব বল গো তারা।
ভক্ত মুক্তি নিজগুণে লভে, তারে তারিলে করুণা কি হবে।
বেজন তোমার ভকতি না জানে তারে তার ভবদার 
দীক্ষিত জনে তারিলে তারিণী তাতে কিছু ক্ষতি হবে না জননী।
ভব দয়াময়ী নামের মহিমা রেখো গো ত্রিপুরা॥



অধম সম্ভান বাচে করযোড়ি তার গুঃখনাশ করগো ঈশ্বরী সে বেন অস্তে তোমারি চরণে স্থান পায় মা পরাৎপরা॥

সকলি সঁ পিছু জীবনে মরণে
তোমারি চরণে শ্রামা মা মা ॥
একবার দেখা দেগো দীনতারিণী সময় কুরায়ে গেল মা ।
আর কিছু ত চাই না তারা বারেক হেরিতে চাই,
জ্বনমের সাধ পূরাব জননী কোলে যদি যেতে পাই,
বিতরি তনয়ে করুণা-লেশ, কর হঃথহরা হঃথেরি শেষ
আমি আর কত রুত করমেরি দোষে মরম যাতনা সব মা

#### থাম্বাজ।

নীলবরণা যমুনা ধাইছে সাগরে মিশিতে চাহে।
কুল কুল রব নাহি গুনি তব হাদি কি গুকাইল॥
সাধে কেন বাধ বিকাশে সাগরে মিশিতে চাহে।
সরজ-তটিনী তটে ফোটে ফুল মম হাদি মাঝে গুণাল মুকুল,
কালা প্রতিকুল ভেলেছে হুকুল এতে কেন বাদ সাধে॥

পিলু বাঁরোয়া।

কেন গো মা জিব্ কেটেছ মনে কি প'ড়েছে

মাগো কতগুলি জীব কেটেছ।

মা তোমার পদভরে ধরা টল মল করে

শঙ্কর যে মরে মরে তার একি দশা ক'রেছ।

# ব্রেকর্ড-কাকলী

(মা) হাতে খাঁড়া ভয়ঙ্করী হ'য়েছ মা দিগন্ধরী এলোকেশী সর্ব্বনাশী দিশেহারা হ'য়েছ। মনে কি ভাব-নি শিবে একাদশী কর্তে হবে হবে না যে বিধবা বে ঐটে যে ভুল ক'রেছ॥

#### ভেরবা।

তোর সিঁতের সিন্দ্র হাতের থাড়ু ঘুচে যাবে মা এবার বাবা বুঝি বাচ্বে না।

পর্তে হবে থান ফাড়া কর্তে হবে মাথা নেড়া,

নিরমিষ্যি থেতে হবে আর পাঠা বলি হবে না।

আছে কেবল কুমড়া শশা, চিঁড়ে মুড়কি ফুলবাতাসা তোমার ভোগের বহর ঐ পর্যস্ত, কেউ সিন্দুর থেলা থেলবে না।

আবার শাক্ত ভক্ত ত্যক্ত হ'রে কালীঘাটে যাবে না ॥

এখন শ্বাস আছে বাবার ভয় যাবে বিধণা হ্বার

চট্ ক'রে ভৄই নেবে দাড়া কেউ দেখ্তে শুন্তে পাবে না

নইলে ভাতার মারা বলণে তোকে,

তারা মা আর বল্বে না॥

## সিন্ধ-মিশ্র।

(তুমি) স্বেহের সস্তানে কি দিয়েছ তারা, দেবার মত কিছু দাও-নি।



না দিলে যা নয় তাই দিয়ে গুধু ভূলাইয়া রেখেছ জননী। দিয়াছ চরণ চলিতে যথন

াদগ্নছ চরণ চালতে যখন
কর নাই তোমার পথ নিদর্শন,
পথ ভ্রষ্ট হয়ে কুপথে যাই মা
স্থপথ দেখারে দাও-নি ॥
হাদরে বসিন্না যা করাও করি
যা শিখাও শিখি যা দেখাও হেরি,
তবে কেন দীনে শিখাও নি দে নাম মা
ভবভর হুঃখনাশিনী ॥

থায়াজ।

প্রভাত সময়ে আকুল হাদয়ে,
গাও অলি-বঁধু মহিমা কার ৷
বিভার প্লকে ডাকিছ কাহাকে,
গুন্গুন্ তানে বুঝাতে ভার ॥
যদি মতি থাকে ওতে ক্ষকায়,
কুস্থমে না হ'য়ে কুস্থম-স্রষ্টায়,
ধরি ষ্টুপদে শিখাও আমায়,

গুণাবলী বিধাতার।
পরাগ শরীরে তাঁর কি পদধূলি,

ই স চরণ-রেণু কোথা পেলি অলি,

সহচর কর সাথে যাই চলি,

মারা ছাই মুছে দে আমার॥

# ব্রেকর্ড-কাকলী

## স্থরট-মল্লার।

বড় ভালবাসি, বারে বারে আসি, তবু কেন দেখা দাও-না দাও-না।
তোমার লাগিয়া, বসে আছি সদা মুথ তুলে কেন চাও-না চাও-না॥
সারাদিন থাকি তোমারি লাগিয়া,
সারারাতি জাগি তোমারে ভাবিয়া.

(তুমি) নিমিষের তরে বারেক ভূলিয়া, চকিত চাহনি চাহ-না চাহ-না। কেন উষার বাতাসে হাসিয়া,

অরুণ আলোকে ভাসিয়া,

হিয়ার মাঝারে নাচিয়া, প্রেমের গরিমা গাহ-না।

এদ দলাজ হাস্ত হাদিয়া, এদ তেরছ-নয়নে চাহিয়া,

আমি অবশ হৃদয়ে, বিরহ বাবান টুটিয়া ছিঁড়িয়া দাও-না দাও-না ;

(এস) স্দয় আকাশ ছেদিয়া,

চাহ মেঘের আড়ালে থাকিয়া,

কুঞ্জ ভবন বিরহে মগন তুমিত ফিরিয়া এস না।

(এস) তারা-হার গলে পড়িয়া, এস জোছনার তথ হরিয়া,

मनत्र माक्टल मनत्नित्र मार्थ रनथा निष्त्र हरन रथ । । । । ।

ভীমপলঞ্জী।

এ তো মায়ের উচিত নয়। বল কোন্ মায়ায় ভূলে থাকে গা তনয়।



মায়া লাড্ছু দিয়ে রেখেছ ভুলায়ে,
চুষে পাই না রস কাদি লাল ফেলায়ে,
মারের এম্নি হিয়ে, দেখ-না আসিয়ে, কহি গো বিনয়ে ॥
বুঝেছি মা তোর পুত্র ল'য়ে থেলা,
কাজ নাই জননী ব'য়ে গেল বেলা.
দিয়ে পদভেলা, রাখ এইবেলা, ভবানীর অস্তুনয় ॥

সিন্ধু-থাম্বাজ।

মিছে কেন মা মা কর, মায়ের দেখা পাবে নাই। থাক্লে আসি দিত দেখা, সর্বনাশা বেঁচে নাই॥ শ্মশানে মশানে কত,

পিঠস্থান ছিল যত, খুঁজে হ'লাম ওষ্ঠাগত, কেন আর যন্ত্রণা পাই।

জে হ'লাম ওচাগত, কেন আর বরণা সাহ দ্বিজ্ব নরেশ্চন্দ্র ভণে, উমা মায়ের জন্ম ভাব কেনে.

মা গেছে নাম ব্রহ্ম আছে,—তরিবার আর ভাবনা নাই॥

## ভূপালী।

এস মা ঈশানী আমার অনেকদিন দেখি নাই তারা।
বরষ পরে নরন ভ'রে হেরি তোমার তুঃথহারা॥
জানি না মা মহামারা ধরার তোমার কেমন দরা,

औ ন তরে দেখা দিরে কর্বে আবার তারা হারা।
রূপে আলো করি মহী এলে যখন দরাময়ী,
নরন ছাড়া হ'রো না আর আঁধার করি সারা ধরা॥



## সিন্ধ-থাথাজ।

এদ মা আনন্দমরী এদ মা গৃহে আমার।
রান্ধা পারে করি আলো মা গো অথিল 'সংসার॥
কি আছে ও মা আমার করিব পূজা তোমার,
লও তৃণ, ফুল, জল, প্রেম-অফ উপহার।
লও স্থে তৃংখে মা চির-ভক্তি-পুস্পহার॥

## হান্থীর।

গতি কি গঙ্গে হ'বে না, গতিদায়িনী মা।
মা মা ব'লে কাছে গেলে, মায়ে কি ছেলে ঠেলে কেলে।
ব'লে কি মা সতীন ছেলে তীরে স্থল দিলে না মা॥
মা বলি শ্রামায় বটে জননী গো বলি তোমায়।
জানি না প্রভেদ কি মা বিমাতার আর স্বমাতার
তবে কেন এ সস্তানে তথ দাও নিশিদিনে,
এত স্থান পাকিতে তোমার দীনে স্থান দিলে না॥

#### বেহাগ।

এড়াতে চিস্তার উঠিলে চিতার অনলের জালা ভূলিরে।
তথন কণ্টক বেদনা পদে সহিত না,
এখন মুখানল আছ সহিয়ে॥
ভেড়ে সাধের বর সজ্জিত শ্রন,
ধলি ভন্ম হ'ল বসন ভ্রণ সকলি গেলে কি তাজিরে।



দরা মারা লাজ দিরে বিসর্জন,
উদাসীর বেশে বিদেশে গমন,
প্রাণের যাত্ত্বন প্রিয় বাছাধন,
কারে দিরে গেলে সঁপিয়ে॥

#### ইমন ৷

শবের বুকে থেকে নেমে নাচ মা শিবে।
সক্ষর ক'রেছ কি মা শিবকে বিনাশিবে॥
তুই মা পতিব্রতা সতী পদাঘাতে মার্লে পতি,
অসতা নাম জগতে রটিবে শিবহারা হ'লে শিবে নাম,
আর কে করিবে॥
নাচ্বার ইচ্ছা থাকে যদি বলি তোমার নাচ্বার বিধি,
পাতা আছে আমার স্কদি তাতেই নাচ্তে হবে।
মা শক্ত কি স্কার শক্ত এতেই বুঝা যাবে॥

## সাহানা-মিশ্র।

এলোকেশে হেদে হেদে ঐ বামা এদেছে।
আহা কিবা মেঘের বরণ যেন ছবি এঁকেছে।
মৃশুমালা গলে দোলে ঐ কপালে আশুন জলে।
একি জ্বা পদতলে পাগ্লা ভোলা র'য়েছে।
ছার কপালীর মুখে ছাই দয়ামায়া একটু নাই,
এলোকেশা সর্বনাশী ভূবন আলো ক'রেছে।



## পিলু।

স্থামাথা মুখে বল দেখি সথা "ভালবাসি" হ'টি কথা ভোমারি মুরতিথানি, যতনে সাজায়ে আনি, মুখে মুখে বুকে বুকে কথা ভানি ব'সে স্থাবাণী, ভয়ে তব পদতলে, ঢেলে দিয়ে আঁথি জলে, কুতৃহলে নানা ছলে সথা আঁকিব শ্রীপদথানি, তুমি কাণে কাণে তানে তানে "ভালবাসি" বল মুছাতে মরম ব্যথা। বিরহে মিলনে শমনে স্থপনে "ভালবাসি" হ'টি কথা॥

সাহানা।

আমি নিতে জানি থেতে জানি দিতে জানিনে ॥
আমি হাঁসতে জানি থেল্তে জানি কাঁদ্তে জানিনে ।
আমায় সবে ভালবাস্থক

দেখ্বো না কেউ মক্বক বাঁচুক,
(আমি) ভালবাসা চাইতে জানি বাস্তে জানিনে।
আপন বেলায় কড়া ক্রাস্তি,

দিবার বেলার মূলে ভ্রান্তি, (হামি) ধরা পড়্লে সরলপছী বৃঝেও বৃঝিনে॥ , সাধু সেজে লোককে শিখাই,

ধর্মকথার পরকে মঞ্জাই,

(আমার) আপন বেলার সবই বজার নিজেই মজিনে।।



#### থায়াজ।

আমি স্থপনে তাহারে কুড়ায়ে পেরেছি,
রেখেছি স্থপনে ঢাকিয়া।
স্থপনে তাহার মুখখানি নিরথি স্থপনে
কুহেলি মাখিয়া॥
তারে বরমালা দিয়ু স্থপনে
হ'ল হুদি বিনিময় গোপনে।
স্থপনে তুজনে প্রেম আলাপনে
যাপি সারা নিশি জাগিয়া॥
করি স্থপ্নে মিলন-স্থখ-গান,
করি স্থপ্নে প্রণয়-স্থখদান
হয় স্থপনে প্রেম-কলহ
যায় স্থপনের সনে ভাঙ্গিয়া।
য়া আছে আমার সব দিতে পারি,
স্থথ-স্থপনের লাগিয়া॥

## গারা-মিশ্র।

নীল আকাশে অসীম ছেরে ছড়িরে গেছে চাঁদের আলো।
আবার কেন ঘরের ভিতর আবার কেন প্রদীপ জাল।
পার্থি ুর ঐ আকুল তানে আকাশ ভ্বন গেল ভেনে,
থামা এখন বীণার ধ্বনি, চুপ ক'রে শোন্ বাইরে ব'সে।
এখন যদি মর্তে না পাই তবে আমার মরণ ভাল।

# <u>রেকর্ড-কা</u>কর্নী

সাঙ্গ আমার ধ্লাখেলা সাঙ্গ আমার বেচাকেনা,

এসেছি ক'রে হিসাব নিকাশ যাহার যত পাওনা দেনা,

আজকে আমি শাস্ত বড় ও মা কোলে তুলে নে না,

যেথানে ঐ অসীম সাদায় মিশেছে ঐ অসীম কালো।

সিন্ধ-থাখাজ— সাগমনী।
মা তোমার কি এতদিনে মনে হ'ল বস্থন্ধরা।
ধরা কি তোর বল মা তারা, সারা স্পষ্ট জগং ছাড়া।
দেখ্বো ব'লে আকুল হ'য়ে,

আছি আশাপথ চেয়ে, ওমা তোমায় দেখবো কি মা, আমার হু'নয়নে পড়ে ধারা ঃ

এবার এলে বাসনা মা,
রাথ বো হৃদে শ্বাসনা,
কর্বো না আর নয়ন ছাড়া,
ভারায় ভারায় রাথ্বো ভারা॥

ভৈরবী।

এই মা ছিলে কোণার গেলে মহেশ-মনমোহিনী।
অপরাধ পেরে বৃঝি লুকালে মা তিনয়নী॥
অপনে মা দেখা দিলে আবার কোথার লুকাইলে
অ্বপন কেন ভাঙ্গালে কাঁদালে কেন জননী॥
এদ আবার সদম হ'যে, কার্ত্তিক গণেশ সঙ্গে ল'য়ে,
(ল'য়ে) সরস্বতী লক্ষীমায়ে এস গো সিংহ্বাহিনী॥



#### े छत्रः

আমি দারা স্থত চিনি ভাই বন্ধু সবে তোমায় কেন বল চিনিনে।
আমি অনর্থের মূল অর্থ বুঝি বেশ পরমার্থ কেন বুঝিনে।
বিষয় বৈভব জানি বিলক্ষণ দয়াময়ে শুধু জানিনে।
জ্বামি দেহ গৃহ হেরি তন্ন তন্ন করি, চরণ যুগল হেরিনে।
অসার সংসার সদা সার ভাবি তোমারে কই ত ভাবিনে।
আমি সারা ধরা গর্কে সরাজ্ঞান করি, জগংপতি কভু মানিনে।

#### থাম্বাজ।

সারাটি জীবন ধরিয় স্থে চাহিয়া ধাই ছুটিয়া হে।
সেথা মরীচিকা আসিয়া আমারে ল'য়ে যায় গৃহ বাহিরে,
আমি ছুটি পাছে, পাছে ভাবিতেছি কাছে,
কাছে চাহি দেখি আছি দ্রে হে॥
কভু মনে করি ধরি ধরি নেহারি সে গেছে সরিয়া।
স্থেরে লাগিয়া হইয়া অদ্ধ আসিয়াছি পথ ছাড়িয়া॥
আমায় ছ্থ-কুপ মাঝে কে ফেলিল আনি,

কে তুলিবে বল টানিয়া। পাতকি-তারণ তোল এ পাতকী করুণা-রশিতে বাঁধিয়া॥

কেদারা।

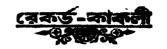
ে শিছায় আসিলাম কি কাজ সাধিলাম জীবন বিফলে যায় যা ।



হ'ল না সাধনা হ'ল না ভজনা,
পূরিল না মন বাসনা ॥
এবার আমার হ'ল আসা যাওয় সার,
কভুনা ভাবিলাম ভূলে একবার,
কেমনে তরিব ভব-পারাবার,
জীবন তাজিলে কায় মা ॥
থাকিতে জননী তিলোক তারিণী,
থাকিতে জননী পতিত-পাবনী,
থাকিতে মা ভুমি হঃখবিনাশিনী,
পতিতের গতি কি হয় না ॥

### शिकु।

ভালবাসি হরি যেই মনে করি,
যেই ভাবি কি দিবে আমারে।
প্রতিদানে যথন লালসা এত
ভালবাসা হয় জীবনে॥
নিবেদনের আগে প্রসাদের বাসনা,
জানি না কে কারে বিতরে।
ফল, ফল আশা ফাকা ভালবাসা,
প্রতিবারে তঃথ তোমারে॥



### ভৈরবী।

এখন নতুন প্রেমেতে তোমার যতন বেড়েছে।
তুমি বাঁকা, কুন্জা বাঁকা ছ' বাঁকেতে মিলেছে।
তোমার যেমন বাঁকা আঁখি,
কুন্জা তেরি কোটরচোধী
গাঁদা নাকে ঝুম্কো নোলক ঝুলিছে।
মাথার মাঝে টাকের উপর পর চুলেতে ঘেরেছে
ভাল ভাল গরনা গাঁটা,
তাতে আবার ডারমন্কাটা,
থরে সে ভাদর বুড়ি সেন্সেছে।
কিবা রূপদী মোহিনী দেখ্তে যেন
রাহ নাকি কালশনী গিলেছে।

(বিজয়া) ভৈরবী।

এস কোলে করি উমা ব'ল মা বিধুবদনে।
তোমার মাকে মা বলে, মা! কে আছে তোমা বিনে॥
তুমি আমার নরনতারা, তোমার বিদার দিরে তারা
তারা হারা নরনে কেমনে রব ভবনে।
তিনু দিনের তরে আসিয়ে, মা নির্বাণ আগুন জেলে দিরে,
নিদয় ু'রে বিদার দিতে বল গো কি কারণে।
সাগ্রি, নক্ষন-নিধি ভাগ্যেতে মিলালেন বিধি,
নিজ দোৱে হারই যদি পাব না আর জীবনে॥



#### বেহাগ।

তারে কোথায় গেলে পাওয়া যায়।

মে দেখছ তারে কোথা দে থাকে
কে জান তাহারে বল না আমায়॥
ভানি সে রহে সদা বর্ত্তমান—
তবু কেন তার না হয় সন্ধান,
সে অরূপ কি স্বরূপ বুঝে দেখ জ্ঞান
জ্ঞানাতীত হ'লে কি বুঝিবে তায়॥

## বাগেশ্রী---

অসার সংসার-মায়ায় মজিয়া র'য়েছ মন।
তাঁর চিস্তা কর যাতে ঘুচিবে ভব-বন্ধন॥
কার ধনে কেন ভূলে আছ হে ভব-জঞ্জালে
এবে সকল তাাগ করিয়ে কর হে হরিসাধন॥

### সিন্ধু।

যদি এক বিন্দু প্রেম পাই, (প্রেমসিন্ধু হে )
তবে কি তোমার চরণ ছেড়ে, আর কোথাও যাই। ,
থাকি চিরদিন তোমার অধীন, ধন, মান, সম্ভ্রম কিছুই

ह চাই;
সংসার-বন্ধন করিয়ে ছেদন আনন্দে নিশিদিন তথ গুণ গাই



## পুরবা।

মা ব'লে ডাকিলে তোমায় জুড়ায় তাপিত প্রাণ।
তাই ব'লে মা আনন্দময়ী করি তব নামগান॥
মা তোমার আশা-বচন, চির প্রসন্ন বদন,
বিষয় হাদয়-মাঝে শাস্তিবারি করে দান॥
মা তোমার দরশনে কত ভাব হয় মনে,
ইচ্ছা হয় সদা তব স্তত্য-ম্বধা করি পান॥

## হামীর।

এলো রণে ওই শ্রামা বামা কে,
কুস্তল বিগলিত শোণিত শোভিত
তড়িত জড়িত নবঘন ঝলকে।
বিপরীত একি কাজ লাজ ছেড়েছে দ্রে
রথ-রথী গজ্ঞ-বাজী বয়ানে পূরে,
মদবল প্রবল সকল হতবল,
চঞ্চল বিকল হাদয় চমকে॥
ভীম ভবার্ণব তারণ-হেতু, চরণয়ুগল তব করিয়াছি সেতু
কহয়তি প্রসাদ কবিরঞ্জন
কুকু কুপালেশ জননী কালিকে॥

সাহানা।
কাল ে কালী কালী বল-না রসনা।
কালের বশে কালী ভূলে কালী গায়ে মেথ না॥



প্রান্তি খুচাও মন মনের একান্তে,
নিতান্ত দেহ মন শ্রামাপদপ্রান্তে;
কাল জানে কালী জানে, থাক রে নিশ্চিন্তে
কালীর তনর ব'লে, কালে ভোমার ছোবে না
ছিল প্রামাচরণ বলে ভাবিরে শ্রামার চরণ,
ছিলি ওরে ভোলা মন, জননী-জঠরে যথন ॥
ব'লে এলি ভূমগুলে পূজব মারের প্রীচরণ,
ভূমিষ্ট হ'রে এথন তাও কি মনে পড়ে না॥

## সিদ্ধ-কাফি

এ পাতকী যদি ডুবে যার মা অন্ধকার চির মরণ সিন্ধনীরে

ওমা তোমার মহিমা কিছু বাড়িবে না তার।

সংগ্র হাদর করি নরন নিমীলন না করিল তব করুণা অনুশীলন

মোহ ঘিরিল মোরে রহি চির ঘুমঘোরে ব্যর্থ জীবন গেল ফুরাইয়ে হার
দীন দরামরী লক্ষ লক্ষ লহ কোলে ভীত হেরি নরক ভয়াবহ
কুদিত এ পথিকে হবে মা স্থান দিতে অশ্বণ শবণ বিতরণ ছার॥

একবার চল দেখি মন হরিসাধন পোষ্ট অফিসে,
আমি দিব অন্থরাগের চিঠি সেই হরির উদ্দেশে।
চিঠি লিখিব পোষ্টকার্ডথামে, দিচ্ছি চিঠি নামে নামে,
জবাব পাইনে কোনক্রমে গুর্ভাগ্য দোবে॥
পোষ্ট অফিস সেই ব্রজধাম, আমি যত্ন ক'রে লিং ্লাম,
চিঠি মারা যাচেচ শুন্লাম, পোড়া পাপ পিরনের দোবে॥

## ত্রীযুক্ত কে, মল্লিক।



মাতৃগর্ভে যখন আমি ছিলাম গো একা,
তথন হরি ভালবাসতেন আমার দিতেন গো দেখা,
এখন সংসারেতে পাঠিরে একা, ভূলেও দেখা দেন না এসে॥
আঞ্জির পোইমান্তারে, বল্বো হ'টি চরণ ধ'রে,
ডিটেনের এন্কোরারি ক'রে দেখা যাক্ শেষে,
অনস্ত গোঁসাই বলে, এবার চিঠি মারা গেলে,
জানাইব জেনারেল রাধারাণী হেড অফিসে॥

শোন রে উপায় তোরে বলি,
কেন ভব-শীতে কম্পানীতে থাক্তে হরি নামাবলি।
নামাবলি অঙ্গে দিয়ে অঙ্গ বাঁচা
কাজ কি শাল জামিয়ারে কাজ কি লম্বা কোঁচা,
মলে পরে পাবি দেড় পরসার এক কাঁথা,
ছেড়া চেটা আর বিচালি॥
বাদের আছে মায়া বাঁদিকের সিঁথে,
তারই বে ভূলে হলাই লক্ষোয়ের ছিটে,
পিরান-চারনা কোটে, সাধের বোতাম এটে,
সঙ্কটে ভূলেছ মন।
নয়ন মৃদে যে বা দেখে ছ্বীকেশে

নয়ন মুদে যে বা দেখে স্থ্যীকেশে সে হি े.লে রে লুই বালাপোষে, ত্যকে।নজবাসে সদা ভালবাসে, পিতাম্বর বনমালী॥



স্বীকেশ সদা জাগে যার মনে,
সেকি ভূলে রে পেণ্টলুনে চাপকানে,
চার না পাপচকে কাপড়ের দোকানে
নয়ন মুদে সদা থাকে, লাল কমাল দেখে,
হ'তে চাস রে লাল কণ্ঠ কর লালে,
কইরে নন্দলাল, একবার এনে দেখা
যশোদা গুলাল, কালের মুখে দিয়ে কালী ॥

## ভৈরবী--মিশ্র।

না তোর রঙ্গ দেখে রঙ্গময়ী অবাক হ'য়েছি।
হাসিব না কাঁদিব তাই ব'সে তাবিতেছি।
বিচিত্র ভবের খেলা, তাঙ্গ গড় ড টা বেলা,
ঠিক যেন ছেলেগেলা বৃঝ্তে পেরেছি।
এতকাল রইছু কাছে—বেড়াইছু পাছে পাছে,
শেষে না চিনতে পেরে হার মেনেছি॥

### ভৈরবী।

কিরে লও মা তোমার স্থথের সংসার, চাহি না ২ মাগো এ সব কিছু আর। অভয় চরণতরী দাও মাগো দয়া করি, হরি হরি হরি ব'লে হই ভবপার॥

## শ্রীযুক্ত কে, মল্লিক।



সাজ্ঞায়ে ভবের মেলা মা তুমি করিছ পেলা, অনস্ত তোমার লীলা বোঝে সাণ্য কার॥ ভক্তের বাঞ্ছিত ধন, মা তো তব শ্রীচরণ, জীবনের অবলম্বন জানিয়াছি সার॥

### রামপ্রদাদী।

নাচা হাসা পেলা ক'দিন ভবে।
পেলা ভেঙ্গে গেলে কোন্দিন যেতে হবে॥
ভার্যা পুত্র ভাই বন্ধুগণ সবাই
বল্ দেখি ভোর কোপার রবে।
ভোর উঠ্নে ভবে বাস (মন রে)
দিয়ে বৃকে বাশ শ্বশানের মাঝে কেলে আসিবে
গুরু উপদেশ তাজে, এখন রক্তের তেজে,
মজলি পাপেতে শেষ না ভেবে।
বলি একি থেদের বিষয়, বিষয় ২ ক'রে
বেড়াচ্ছিস্ ভুই কোন হিসাবে॥
এ সংসার চাড়ি গেলে তাড়াতাড়ি
নাহি ছাড়াচাড়ি স্থপের লোভে,
যদি পেতে চাস্মন বেকগুরে খালাস
হরি ব'লে ডাক ভবানী তবে॥



#### কেদারা।

কত খেলা জান ভূমি, তোমার খেলা কে ব্রুতে পারে।
যে বলে ব্রেছি আমি, পদে পদে দেই মা হারে॥
আমার বুদ্ধির মুখে দিরে ছাই, ঘুচাও যত আপদ্ বালাই।
মা বৃদ্ধি ধ'রে যেই চলে যাই, পাঁচভূতে মা বেঁধে মারে॥
মার খেতে পারি না তারা, পারে রাখ শিবদারা,
হ'রেছি মা দিশে হারা, মুক্তি দাও এ কারাগারে॥

ইমন্।

দীনতারিণী ছরিতহারিণী
সম্বরক্ষঃ তম ত্রিগুণধারিণী॥
ত্রিক্তন-পাসন নিধনকারিণী।
সব গুণ নিগুণ সর্কাস্তর্কাপণী॥
সং হি কালী তারা পরমা প্রকৃতি
সং হি মীন কৃশ্ম বরাহরূপিণী।
সং হি জল স্থল অনিল অনল
স্থা হি বম্ বম্ মহেশশোভিনী॥

## ঝিঁ ঝিট।

শিখারেছ মা বলিতে তাই তোরে মা ব'লে ডাকি।
দরামরী বলে ভবে, তাইতে দরার আশে থাশি॥
বলাও কালী তাই মা কালী, বলি বমে দিতে 

ক্মি হৃদরমাঝে, চরণ দেখাও, তাইতে নয়ন মুদে দেখি॥



গুৰুত্ৰপে যেই মন্ত্ৰ, দিয়েছ তাই জপে থাকি। যেরূপ দেখাও, তাই দেখি মা, চরণ কেউ দেখেছ কি

#### থাৰাজ।

ভেদ বিচারি কিছু নাহি জানি মনে।
বতনে দ্বদরে রাখি পূর্ণানন্দ প্রেমধনে।
স্থনীল আকাশ গার যার চিত্র শোভা পার,
আনন্দে বিহঙ্গ যার মহিমা সঙ্গীত গার,
উন্মন্ত তরঙ্গ তুলে কিন্তু যার রূপেতে ধার,
তাহারে হাদরে ভাবি নিত্য-শান্তি পাই প্রাণে।
যাহার প্রেমে হ'রে বিভোর নিশিতে বিটপীদল,
শিশিরের জলে ত্যকে ভক্তিপ্রেম অশ্রুক্তন,
তিনি মাতা তিনি পিতা সর্ব্বজীবে স্থমঙ্গল,
তাহারে হাদরে ভাবি নিত্য-শান্তি পাই প্রাণে॥

#### আশোয়ারি।

আমার সবই দিরেছ স্থ-ছ:থ-ভোগ-লোক-ভাপ-রোগ-যাতনা।
আশার নন্দন নিরাশামর শুধু করনার বিরাগ বাসনা॥
কতই দিরেছ কতই পেরেছি হেঁসেছি কেঁদেছি নানা,
আশান্তি প্রীতি-ভকতি দিরেছ শুধু, প্রেমে করিতে বঞ্চনা।
বতই িছ সব ল'রে যাও, ফিরে আর কভু চাহিব না।
হেম বলে আজ দাও প্রেম-সিজ্—প্রেম জিনি সাধনা॥

# ব্রেকর্ড-কাকনী

## দেশ-মিশ্র।

যদি হবি মায়ের বেটা বেটা তবে খুব হবি শক্ত।
শক্ত নইলে মুক্তকেশা অস্ত ভক্তে অমুরক্ত॥
ভক্তিময়ী মা যে আমার ভক্তিতে তার রঙ্গ,
তাই ভক্তে দিতে ভালবাসেন বিপদ তরঙ্গ।
বে ভক্ত শক্তি-বলে স্বহস্তে বিপদ দলে,
তারেই মা ভক্ত বলে করেন জয়যুক্ত
ভাই বলি রে মাভ্ডক্ত কবে কোণায় অমুতপ্ত॥

## আশোয়ারী।

ত্রি) ত্বনমোহিনী তারা কেন ভীষণ রূপ ধরি মগন রণরঙ্গে।
তুনি নিপিল-বিশ্বমাতা সমর কি সাজে স্তুত সঙ্গে।
স্তুজন তুর্জন মা সকাশে ভিন্ন তবে রোগ কর কি প্রসঙ্গে।
জ্ঞানহীন স্তুত কামপ্রসন্ধে চাহু গোমা করণা প্রসঙ্গে।

## গ্রীযুক্ত বিজেন্দ্রনাথ বাগ চি।

ঝিঁ ঝিট-शासाজ---यर।

রাধা বিনে ছ'নয়নে ছেরি অন্ধকার, রাধা-প্রেমে বাধা থাকি রাধা মম ম্লাধার। শয়নে স্থপনে ধ্যানে জানিনে রাধা বিহনে । দ্বিরাছি মন-প্রাণ শ্রীচরণে শ্রীরাধার॥



ঝিঁঝিট পাম্বাজ—একতালা।

মাজ কেন কালী কদম্মূলে।
নর-শির-হার লুকালে কোথায়
বনকুলমালা কে দিল গলে।
সঙ্গের সঙ্গিনী ডাকিনী যোগিনী
তাদের কোথায় লুকালে মা।
বাম করে অসি, শ্রামা মুক্তকেনী,
মোহন-চুড়া বানী রাধা বলে।

ৈভরবী--যং।

গোকুলে গোপনে তারা শ্রাম সেজেছ, হরেরি সেবিত ধন কারে দিয়েছ। তাজে নর-শির হার, প'রেছ মা বনফুলহার তাজে অসি মুক্তকেশা, বাশা ধ'রেছ॥ তাজে বাস কৈলাস, সাধের বৃন্দাবনে বাস, জয় রাধে শ্রীরাধে ব'লে বাশা ধ'রেছ॥

থাম্বাজ---ঠুংরী।

বারে বারে যে হঃখ দিয়েছ দিতেছ তারা সে কেবল দয়া তব জেনেছি মা চঃপ-হরা। সস্তান-মঙ্গল তরে, জননী কামনা করে, ( ওমা ) তাই বহি মা স্থপ-শিরে হঃথেরি পসরা॥

## প্রীযুক্ত ছিজেক্সনাথ বাগ্চি।



তুমি মা দিনতারিণী, শরণাগত-পালিনী
আমি ঘোর পাতকী ব'লে, তোমার হ'রেছি হারা॥
আমি তোমার পোষা পাথী, বা শিখাও মা তাই শিথি,
('ওমা) শিখারেছ তারা বুলি তাই ডাকি মা তারা তারা॥

### ভৈরবী—একভালা।

কেন যামিনী না যেতে, জাগালে না, বেলা হ'ল মরি লাজে।
সরমে জড়িত চরণ, কেমনে চলিব পথেরি মাঝে॥
আলোক পরশে, মরমে মরিয়া,
হের গো শেফালি পড়িছে ঝরিয়া,
কোন মতে আছে পরাণ ধরিয়া—-কামিনী শিথিল সাজে
নিভিয়া বাঁচিল নিশার প্রদীপ উষায় বাতাস লাগি,
রজনীর শশী গগনের কোলে লইল শরণ মাগি,
পাখী ডেকে বলে গেল বিভাবরী
বধু চলে জলে লইয়া গাগরি
আমি এ আকুল কবরী আবরি, কেমনে যাইব কাজে॥

সিন্ধ—থাম্বাজ—দাদ্রা।
পাণী এই বে গাহিলি গাছে,
কেন চুপ দিলি ঝোপে ডুবে গেলি
যেমনি আসিমু কাছে।



এখনো ফোটেনি তারা, এখন স্থধার ধারা, ঝরেনিকো পাখী, ধরণীর গায় আকাশে ভরা আছে। ঢেলে কি সমীরে তান, স্থধার কলসী অলসে ভরালি ভূলে কি গেলিরে গান; নিশার আবেগে দিবসে মাতিয়া আঁথিটা মুদিরা গেছে॥

ইমন-কল্যাণ-ক্ৰাপ্তয়

এখনও তারে চোখে দেখিনি শুধু বাঁশী শুনেছি,
মন প্রাণ যা ছিল সব দিয়ে ফেলেছি।
শুনেছি তার মূরতি কাল, তারে না দেখাই ভাল,
সধি! বল, আমি যমুনাতে জল আনিতে যাব কি ?
শুধু স্বপনে, এসেছিল সে, নরন-কোণে হেসেছিল সে—
সে অবধি সই আমি ভয়ে ভয়ে রই,
আঁথি মেলিতে ভেবে সারা হই;
কানন-পথে যে খুসি সে চার,
কলমতলে যে খুসি সে যার,
স্থি! বল, আমি আঁথি তুলে তার পানে চাব কি ?

ঝিঁ ঝিট---একতালা। ২রম করম সকলি গেল মা, গ্রামা পূজা করা হলো না হলো না।



মন নিবারিতে নারি কোন মতে,
ছি ছি একি জালা বল-না বল-না।
হেরে নরমালি কালী অসি করে,
বনমালী শ্রাম মূরলী অধরে
ত্রিভঙ্গিম ঠামে বঙ্কিম-নয়নে হেরে হই স্থি দিকবসনা।

সাহান।--থেমটা।

ধূলা থেলা কর্ব না আর, হরিনামে মন ম'জেছে।
চায় না মন অপর থেলা, জানি তায় কি গুণ আছে ॥
গড়বো হরির ছটি চরণ, পরাব তায় ফুলের ভূষণ,
হলে রেথে কর্ব যতন, ঐ থেলাতে মন ভূলেছে।
মায়ের কাছে আর যাব না, কুধা পেলে আর চাব না,
হরিনাম স্থধায় আমার, কুধা, তৃষ্ণা, সব হ'রেছে॥

ইমন-কল্যাণ—চিমে তেতালা
হরে মুরারে মধুকৈটভারে,
গোপাল গোবিন্দ মুকুন্দ শৌরে
কলির পীড়নে ব্যথিত জীবগণ,
পরম উষধি এ ভব পারাবারে ॥
যে ভাবে যেই ভাবে, সেই ভাবে তারে,
তার কপাময় এ ঘোর সংসারে,
প্রেম নবঘন হে শ্রীমাধব, উথলিত সদা আনন্দ সার্ব,
উচ্চ পুচ্ছ-চূড়া শিরে শিথি-পাথা, পরাৎপর গুরু পর্ম নথা,
অত্যে পাই যেন গঙ্গানারায়ণ বল রামনাম বদন ভ'রে॥



থাম্বাজ-কাওয়ালী।

ধীরে তীরে কর পার।
আমরা গোপের নারী না জানি সাঁতার
তরী করে টল মল, পসরাতে উঠে জল.
মাঝখানে ডুবালে তরী কলঙ্ক তোমার॥

## मिक्-यर।

কার প্রেমে অনুরাগে, ভুলেছ এই অধীনীরে।
কি দোষ ক'রেছি হে, বারেক না চাও ফিরে॥
পুরুষের কঠিন মন নিত্য নৃতনে যতন,
করিলাম হে প্রাণপণ, তবু যতন না করিলে॥
কলঙ্ক শুরু-গঞ্জনা, ঘরে পরে কি লাঞ্ছনা,
ভুমুরের ফুল হ'লে কি (প্রাণ)
রয়েছি হে প্রাণে ম'রে।

হামীর-কাওয়ালী।

তারে ভোলা হ'লো একিদায়!

আমার প্রাণ যায়!

কি ক্ষণে হইল দেখা, বুঝি প্রাণ যায়। বিষ<sup>্ধে</sup> জ্যাছনা মাথা, চক্রমা তুলিতে আঁকা, হোরলে তার মুখশনা, প্রাণ জুড়ায়॥

## শ্ৰীযুক্ত ছিজেন্দ্ৰনাথ বাগ্চি।



## থামাজ--থেমটা।

চাই না চাই না চাই না রে ওজন করা ভালবাসা।
সিদ্ধু সম ভালবাসা বিন্দুতে কি বায় পিপাসা॥
ভালবাসা পাকা সোণা, ভালবাসায় থাদ মেশে না।
ভালবাসা বেচা কেনা, ভরাডুবি করে আশা॥

## इमन-ज्यानी-का अवानी।

্মা) নমন্তে নমন্তে শারদে।
তুমি স্থানা মোক্ষনা, তুমি আদি অন্ত,
তুমি ধ্যান, তুমি জ্ঞান, তুমি হৃদি-পদ্ম'
কে বৃ্মিতে পারে গো মা কেবা পাবে অন্ত—কারে ভাষাও ভংগনীরে, কারে রাখো শ্রীপদে॥

#### বেছাগ।

বালিকা-বয়সে ছিলাম স্ববশে কোন জ্বালা সথি জ্বানি না লো।
ছিলাম বালিকা না ছিল যৌবন, নিজ বশে ছিল আপনার মন,
নব অমুরাগে প্রাণনাথ যনে হাসি হাসি করে ধরিল।
ছিল মরুভূমি এ পাষাণ প্রাণ, ক্ষণেক তাহাতে মোহিল।
তদবধি সদা প্রেম আলাপনে, থাকিতাম সথি আমু ুহু জনে
(সদা) নয়নে নয়নে শয়নে স্থপনে তিলেক তাহারে জ্বী ভূনি লো—

## শ্রীযুক্ত বিশ্বনাপ রাও।



## .ঐ।সুক্ত বিশ্বনাথ রাও।

প্রভাগী।

হর হর বম্ বম্ বামে শোভে গৌরী।
বাবা পাগলা ভোলা ত্রিপুরারি॥
আনিয়ে জবা তুলে, মাকে সাজাব ফুলে,
বাবাকে তুবিব ছটো বিষদলে;
বাবা ভক্তিতে ভোলে সেটা এতই কি ভারি।

পাস্বাজ-কাওয়ালী।

রাথ রাথ মিনতি মম আজিকে গো রাই।
তব প্রেমে বাধা সদা এ কাল কানাই॥
শরনে স্বপনে জ্ঞানে, জানি না কো তোমা বিনে
তবে কেন এ অধীনে দিতেছ বিদায়॥

## কাফি---সিন্ধু।

এমন দিন কি হবে মা তারা।

যবে তারা তারা তারা ব'লে তারা ব'য়ে প'ড়বে ধারা॥

হদি-পদ্ম উঠ্বে কুটে, মনের আঁধার ধাবে ছুটে,
তথন ধরাতলে পড়বে লুটে, তারা ব'লে হবো সারা॥

विकास সব ভেদাভেদ, ঘুচে ধাবে মনের খেদ,
তথন শত শত সতা বেদ, তারা আমার নিরাকার।॥

# রেকর্ড-কাকলী

### আশোয়ারী—তেতালা।

মুই অধমের অধম !

ত্মি না তারিলে তারা, কে তারিবে বল তারা, তার না তার না তার তার তার তার তার ॥ সমুচিত লাঞ্ছিত ভবেতে ক'রেছ আর, মের না মের না মাগো কেন মার মার ॥ শিবের ত্হিতা রামচক্র অধ্যক্তনে, ভনিবের পোন না কেন জন জন জন ॥

#### কাত্ডা।

যতন ক'রে ছাদে রাথ আদরিণী শ্রামা মাকে।
(মন) তুমি দেথ আর আমি দেখি, আর ষেন কেউ না দেখে।
কামাদিরে দিরে ফাঁকি, তোমার আমার জুড়াই আঁথি,

রসনারে সঙ্গে রাখি সে যেন মা ব'লে ভাকে॥

কমলাকান্তের মন

ভারিদ্রে পাইলে ধন সে কি অক্সন্থানে রাখে॥

বেহাগ।

জাল কেলে যম র'য়েছে ব'লে।
আমার কি হবে মা তারা লেষে।
আগাধ সলিলে মীনের আশ্রের,
জাল কেলেছে ভ্বনময়,
ব্যন যারে মনে করে তথনই তারে ধরে এসে।



পালাবার পথ নাইক জালে.
পালাথি কি মন ঘিরেছে যে কালে,
প্রসাদ বলে ডাক মাকে শমন দমন করুক এসে॥

## ঐমতী নরসুন্দরী দাসী

আমার নিয়ে বেড়ায় হাত ধ'রে। আমি নেথানে যাই সে বার পাছে, আমার ব'লতে হয় না জোর ক'রে॥

মুখথানি সে বত্নে মুছার, আমার মুখের পানে চার, আমি হাস্লে হাসে, কাদ্লে কাদে কতই রাখে আদরে। আমি জান্তে এলাম তাই, কে বলে রে আমার সে ধন নাই সত্যি মিথো দেখনা কাছে, কচ্ছে কথা সোহাগ ভরে॥

আজু কাঁহা মেরি হৃদর কি রাজা,
কাঁহা কাঁহা চুঁ ড়তহি—হাম।
আপন শির্মে আপন হিঁ কাটমু
কোন কাম্সে তেরাগিমু ধাম॥
ধরম করম সরম ভরম
সবহি দিমু পানিরামে ডারি,
পিরার নাগর নটবর-শেথর
রহল কাঁহাসে—কনকিয়া-ঠাম॥
রোওত রোওত ধ্যেরায়ত সোহি রূপ,
কোহ অপতহিঁ আজু হোসে নাম॥

## **শ্রীমতী নরম্বনরা দাসী।**

# <u>রেকর্ড-কাকলী</u>

মিশ্র-ঝিঁ ঝিট—আড়থেম্টা।

হেসে নেও—এ হু'দিন বৈ ত নয়।
কার কি জানি কথন সন্ধ্যে হয়॥
কোটে কুল গন্ধ ছোটে তায়,
তুলে নেও—এথনই সে ঝ'রে যাবে হায়;
গা ঢেলে দাও মধুর মলয় বায়।
—এলে মলয় পবন ক'দিন বয়॥
আসে যায়, আসে কের জোরার,
বৌবন আসে যায় সে কিন্তু ফেরে না'ক আর;
পিয়ে নেও যত মধু তার,
—আহা যৌবন বড় মধুময়।
আছে ত জীবন ভরা হৃংথ;
আসে তায় প্রেমের স্থপন—হু'দণ্ডেরই সুথ;
হারায়ো না হেলায় সে টুকু—
—ভালবাস ভুলে ভাবনা ভয়॥

সে মৃথ কেন অহরহ মনে পড়ে, পড়ে মনে।
নিখিল ছাড়িয়ে কেন, কেন চাহি সেই জনে ॥
এ নিখিল স্বর মাঝে, তারি স্বর কালে বাজে,
ভাসে সেই ছথ সদা স্থপনে কি জাগরকে;
এ মোহের মদিরা ঘোর, ভেঙ্গেছে ভেঙ্গেছে হিনর
কেন রহে পিছে পড়ি, পাপ-নাঃগ পরধনে॥



এস, প্রাণ এসো, হাদর আবরি তোমা রাখি হে।

এস নিধি এসো, আরো কাছে এস,
আঁথি পাশে, এসো নরন ভরি তোমা দেখি হে॥

এস প্রেফ্ল ফুল-দল সঙ্গ,

মলর মারুত শত-অঙ্গ,
এস আবরি সকল অঙ্গ, জীবন সনে রাখি আঁথি হে॥

আমি নারী হ য়ে বৃঞ্লেম নাকো কেমন নারীর মন।
ফুলের মত কুল-বালা পাযাণ এমন॥
সংসার শাশানে ভাসান, পতির বৃকে চাপান পাষাণ,
কলঙ্ক-নিশান তুলে, মদনে মগন॥
ধিক্ ধিক্ ধিক্ ফিক্ ক'রে হাসি—
ধিক্ আঁথি ঠেরে প্রাণাধিকে,
ছি চি ধিক্ ওলো সর্বনাশী,
ধিক্ তোর কাল কেশরাশি,
ধিক্ মমতাতে মাথা মধু সন্বোধন;
বলিহারি ওলো নারী তোর ভোলান বচন॥

সিন্ধ-থাস্বাজ—মধ্যমান।
কেন কেন যাবে নাচি পার
উচাটন মন তারে ধরিবারে চার।
বিশ্বিরাজে আকাশে কমলিনী জলে ভাসে
কি আসে সে হেসে হেসে ভামু পানে ধার—
চেরে চেরে নলিনী মলিনী শেষে হার॥



এস শুভদে বরদে শ্রামা !
শক্তি পাবক রসনা লক্ লক্ তারকা দেব অভিরামা।
হেম গিরিবর শৃঙ্গে কর্মোর তৃষার তট ভঙ্গে,
ভাব বিভঙ্গিনী এস রণরঙ্গিণী জয়া বিভ্রমা সথী সঙ্গে,
এস অচিস্থা-রূপহরা বর অভয়া তারা (গো)

ক্লপা হাদ বিকাশ তিষামা, এদ অ।কুল গলিত হিমধামা॥

টোরি-ঝিল্লা-একতালা।

চরম সময় হও মা উদয় দেখে মরি তারা শ্রীপদনলিনী।
ডাকি তুর্গা বলে, কেন আছ ভূলে,
তুর্গমে দে দেখা দানব-দলনী।
শ্রীপদ স্মরিয়ে সাগর বাহিয়ে, মশানে না মরি দেখ না আসিয়ে,
ওমা শ্বাসনা কর গো করুণা কাতর কিঞ্কর কেশ্রবাহিনী॥

কাঁচা বয়েস দেখে ওগো নজর দেয় ভূতে।
কে যেন পাছে আনে, ছম্ ছম্ করে গা—
পারিনে একলা শুতে॥
নন যৌবন যবে কোটে, কোথা থেকে কত ভত জোটে,
ফেরে পাবার আনে, আসে পাশে আগু পিছুতে॥
বেন্ধানৈত্য লুকিয়ে দেখে,
চ্যাংড়া ভূতে চিঠি লেখে,
সার গলায়-দ'ড়ে জালায় বড় আসে গুঁতুতে॥

## গ্রীমতী মানদান্তকরী দাসী।



ভূতের ভেতর আছে বড় লোক,
এত বড় জিবথানা তার অতি ছোট চোক,
গঙ্গা ময়রা হার মেনে যায়, সে যে পায় না কিছুতে।
আছরে আবদেরে ভূত,
পাান্ পেনে ঘান খেনে ভূত,
বুনিয়ে ঘুনিয়ে কাছে আসে চায় বিছানা ছুঁতে।
নাকে কথা কয় পড়ে বোধোদয় আমায় দেয় না ঘুমুতে।

## শ্রীমতী মানদাসুন্দরী দাসী। ভীমপন-শ্রী।

যাবে কি হে দিন আমার বিফলে চলিয়ে।
আছি নাথ দিবানিশি, আশাপথ নির্থিয়ে॥
তুমি ত্রিভূবন নাথ, আমি ভিথারী অনাথ;
দয়া করি এ দাসেরে, করুণা বিতর হে॥

#### থাখাজ।

মাঝে মাঝে তব দেখা পাই—

চিরদিন কেন পাই না।
কেন মেঘ আসে, হাদর আকাশে,
তোমারে দেখিতে দের না॥
কানিক আলোকে, আঁথির পলকে,
('ওগো ) তোমারে পাই যবে দেখিতে
হারাই হারাই, সদা ভর হয়
হারাইয়া ফেলি চকিতে॥

### **এমতী মানদাসুন্দরী দাসী।**



### সিন্ধ-কাফি।

অঞ্চল ছাড় চঞ্চল ভাষ, ওহে গুণধাম।
( আমি দধি বেচিবারে যাই),
পথি মাঝে মরি লাজে, একি ত্রিভঙ্গ কানাই:
শিবের পদরা টলে, পাছে পড়ে ভূমিতলে
কলম্ক দিবে সকলে, ঐ বড় ভয় পাই ( আমি )॥

#### থাম্বাক্ত।

যাতনা দিতে আমারে বাকি কি রেথেছ তুমি।
(আমি) গরলে সরল ভেবে, হ'য়েছিলাম অনুগামী॥
বারে বারে জানিবে প্রাণ, ফিরায়ে দাও পরেরই প্রাণ
ফিরে নিয়ে আমারই প্রাণ, বিরলে বসিয়ে কাঁদি॥

### পূর্বী।

বে বাবার সে সে বাক্ সইরে
আমি ত বাব না জলে।
বাইতে বমুনাব জলে, সে কালা কদবমুলে;
আমিঠারি আমায় বলে,
ফুলমালা দিব গলে॥

### **बियडी यानमाञ्चनती मानी।**



#### ভৈরবী।

রাধানামে অভিলাষী, রাধানামে সাধা বাঁশি বাজে ভথু রাধা ব'লে। আর কে বাজাবে বাঁশী কাল আমি গেলে চলে॥ বাশী তোরে যাব রাখি, শ্রীদামের মুখে থাকি, রাধা রাধা ব'লে ডাকি, ভূলাবি সকলে॥

#### কানেড়া।

কলুস্বিনাশিনী কালী (গো মা)।

শীকৃষ্ণরূপে বৃন্দাবনে ব্রজঙ্গনার মন ভুলালি॥
কথন বা অসি ধরা, কথন মুরারি,
কথন মা মুগুমালী, কথন বন্যালী॥

#### হাম্বীর।

আর কবে দেখা দিবি মা হররমা।
ক্রায়েছে ভবের থেলা, দেখা দে মা এই বেলা,
দিন দিন তকুক্ষীণ ক্রমে আঁথি হ'ল জ্যোতিহীন,
এখন না এলে শিবে পরে কি চিনিব মা॥
অন্তপা ক্রায়ে গেলে আঁথি হ'টা মুদে যাবে,
ত ্য আসিলে শিবে বল মা কি ফল হবে,
এ মুখে আর না হেরিবে, মনের হুথ মা মনে রবে,
এ মুখে আর মা বলিয়ে ডাকিতে নারিব মা॥



থাওয়ালি সাজালি তারা করিলি বহু যতন, আছু মাত্র জানি তারা না জানি রূপ কেমন সম্ভানের চোথে চুলি, তুমি ত দিয়াছ কালী কালবরণ হ'ল তমু তবু ত দেখিলি না মা॥

সিন্ধু-থাৰাজ।
গ্ৰাম রাথি কি কুল রাথি সই,
আমার হ'ল একি দায়।
ঘরেতে গুরুগঞ্জনা বাশীরবে প্রাণ যায়॥
বাশী বাজে রাধে ব'লে আমি ভাসি নয়ন জলে,
ভলে বলে মন নিলে করি কি উপায়॥

কানাড়া—মিশ্র।

চরণ ছাড়িরে কেন দাও না।

আমি বে রূপদী ছার, আমা কাছে কেন আর,

চক্রাবলীর কুঞ্জে কেন যাও না॥

কোটিচক্র জিনি ও রূপের তুলনা হয় না,

সে চাঁদ চকোর হ'রে আছ ভূমে লুটায়ে

ছি ! হি ! বধু ভোমার লজ্ঞা কি হয় না॥

খামাজ—মিশ্র। লাভে মরে যাই হোল একি রে বালাই। ংসেছে সন্ন্যাসী একজন, সে নাকি হবে নাত জামাই।

### अभागी मानमाञ्चनती मानी।



তোমার আমার যদি হ'ত কত লোকে কত কইত, বড় ঘরের বড় কথা, একি ভন্তে পাই॥

### शयीत ।

প্রেমার ) কেন মন চায়।
সে যদি না বাসে ভাল কেন মন চায়॥
কি দোষ দিব ভাহারে, সকলই কপালে করে
মনের তথ বলব কারে ভেবে প্রাণ যায়॥

#### াত্ত-

এস এস বলে রসিক নেয়ে
পার হবি যাদ আয় না ধেয়ে,
( আজ যমুনা পারে কে যাবি গো )
( আয় গো—বলি ও গোয়ালিনী গো )
( আমার দাড়াবার ত সময় নাই )
আসিয়া নিকটে লাগাল না,
দেপিয়া কিশোরী বাড়াল পা,
(আয় গো পারে যাবে ব'লে) ( আজ যমুনা পারে যাবে বলে )
যেইৣৢ নাকায় পা দিলে নাবিক তথন ক্রোধ ক'রে
ক বল্ছেন রে—

### এমতী মানদাসুন্দরী দাসী



### কীর্ত্তন ।

আমার স্থলর না, এতে কে আসি দের পা,

অম্নি হাসিয়া বলরে বোল পোণ হে।

( এর কমে পার করি না ) ( একে, বোল পোণ কড়ি )

কমে পার করি না, শুন ওহে গোয়ালিনী।

তোমার একে ত নিত্ব উচ,

আবার তাহে শুক্ষতর কুচ,

তাই বলি এক নায়ে ভার তিন জনার হে,

(তিনগুণ লব) (তোমার কাছে ধনি তিনগুণ লব)

( তুমি ত্রিগুণময়ী ব'লে )

আমি ত ভূবন নেয়ে

তাহে তুমি রাধে যুবতী মেয়ে,

চেয়ে দেখ হাস্ত পরিহাসে গেল দিন হে।

### ভৈরে।—মিশ্র।

মা তোর এ কোন্ দেশা বিচার।
খুঁজে বেড়াই পথে পথে দেখা দাও না একটিবার।
মদ থেয়ে মা বেড়াদ্ ধেয়ে, কে জানে মা কেমন মেয়ে
কোলের ছেলে দেশ্লিনি মা চেয়ে—
ঐ নদে মাতবা মাগো মা ব'লে ডাকবো না আ

# श्रीयडी गाननाञ्चनती नानी।



### ভৈরবী।

ওগো দরামরি কোন্ গুণে ভোর দরামরী নাম রটেছে।

ডেকে ডেকে কেঁদে কেঁদে মাগো নরনের জলে বৃক ভেসেছে।

অস্তর-যামিনী অস্তরেতে রাখি,
নরনের বারি মুছাতে না পারি,
তবে কেন শ্রামা, এ ছংখ দিলি মা,
ছংখহরা নাম কে রেখেছে ?

#### থাম্বাজ।

(প্রগো) পীরিতি ক'রেছি বিসর্জ্জন,
(প্রগো) প্রেমস্থ কুঞ্জবনে নাহি প্রেরোজন ॥
(তুমি ভাল থাক স্থথে থাক,
সে সব কথা ভূলো নাক,
মনে মনে বঝে দেখ, আমি ক'রেছি কত যতন॥

### ভৈৰবী।

প্রাণ আমার কাহারে জানাব মনোবেদনা,

এত সাধের ভালবাসা একেবারে ভূল না।

পুল্থম মিলনাবধি, নেন কত অপরাধী,

নিতান্ত জেনেতি রে প্রাণ তুমি আমার হবে না॥



ভৈরেঁ।—মিশ্র।
আমি আমি করি বুঝিতে না পারি
কে আমি আমাতে আছে কি রতন ॥
কার সাধ্য বলে, বেড়াই চ'লে বুলে,
কার অভাবে হবে এ দেহ পতন ॥
(এই) দেহ মাঝে আছে প্রাণের সঞ্চার,
তারে আমি বলি আমি যে আমার,
(এই) প্রাণ চ'লে গেলে কেবা হবে কার,
কেবা কার কোথায় রবে ধন জন ॥

### ভৈরবী।

( আমার ) থেকে থেকে কে যেন ডাকে ॥
আবেশে চমকি যাই, আর নাহি দেখা পাই,
মনেরি ব্যথা মনে গাথা থাকে ।
যতনে যে ছবি আঁকি, চুরি ক'রে চেয়ে থাকি,
সোহাগে কতই ডাকি, আঁথিতে মিশারে আঁথি,
দেখা দিরে দিতে ফাঁকি কে বল শেখালে ভাকে ॥

#### मिक् ।

এখনও কি ব্রহ্মমির হরনি মা তোর মনের মত।
( ও গো ) অকৃতী সস্তানে মাগো যন্ত্রণা দিবি কত॥
ভূলারে ভবে আনিলি,
বিষয়-বিষ পাওয়ালি,
বিষয়ে জালার সদাই জলি, মা ব'লে আর ডাকবো কত॥

# এীমতী মানদাস্থলরী দাসী।



ইমন-কল্যাণ।

চিরদিন কি এমনি যাবে কালী বল না।
কাল-নিবারিণী কালী কালের ভর ত রবে না।
তন রে অবোধ মন,
কালী নাম কর শ্বরণ,
হবে জীবের জীববারণ শমন-ভর তো রবে না।

### আসোরারী।

আমায় ভালবাস না বাস।
আমি তো কথন তোমার ছাড়িব না আশ।
যথায় তথায় থাকি,
তোমা ছাড়া হইনে স্থ্যী,
মারিলে মারিতে পার, রাখিলে তোমারই যশ

### সোহিনী।

ঐ যে বাজিল বাঁশী ষমুনা পুলিনে বমুনা-পুলিনে লো সই কুস্থম-কাননে ॥ কি ক্ষণে বমুনার এলাম, কৃষ্ণরপ কি হেরিলাম,

# **बिय**जी मानमाञ्चनती मानी



#### (क्षात्रा।

কতবার আসিয়া কত ভালবাসিয়া,
গিয়ছি ফিরিয়া কত কাদিয়া কাদিয়া।
কত ানশি জেগেছি, কতই বা কেঁদেছি,
তবু সাড়া পাই না সাধিয়া সাধিয়া॥
হে নাথ কোথায় তুমি দেখা দাও দেখা দাও,
আমি বে তোমারি—কোলে তুলে নাও তুলে নাও,
সহে না যাতনা আর, আসা যাওয়া বারবার,
নিয়ে আসে নিয়ে যায় বাঁধিয়া বাঁধিয়া॥

#### মূলতান।

আর কারো কাছে যাব না, আমি তোমার কাছে রব হে।
আর কারো সনে কব না কথা, তোমারি সনে কব হে॥
ঐ অভরপদ হৃদরে ধরি ভূলিব সব হৃঃথ হে।
তোমারি দেওয়া বেদনা-ভার হৃদয়ে তুলি লব হে॥

### ভীমপলঞ্জী।

( আমার ) ছ'জনার মিলে পথ দেখার ব'লে,
পদে পদে পথ ভূলি হ।
নানা কথার ছলে, নানা মুনি বলে,
সংশয়ে তাই ভূলি হে॥

# **बीग**डी गानमाञ्चकी मानी।



তোমার কাছে যাব এই ছিল সাধ,
তোমার বাণী শুনে ঘূচাইব প্রমাদ,
কাণের কাছে কাছে সবাই করিছে বিবাদ,
শত লোক শত বুলি হে॥
( আমার ) একবার তোমার প্রেমে বেঁধে,
একবার তোমার দেখাও অবিচ্ছেদে।
এই ছটার মাঝে পড়ে, মরি কেঁদে কেঁদে,
চরণেতে লও তুলি হে॥

#### সাহানা।

হুই হৃদয়-নদাঁ একত্র মিলিল যদি,
বল দেব কার পানে আগ্রহে ছুটিয়া যায়,
সম্মুণে রয়েছ তার তুমি প্রেম-পারাবার
তোমারি অনস্তঃ হৃদদে, হুটিতে মিলিতে চায়।
ঐ এক আশা ধরি হুইজনে মিলিয়াছে,
ঐ এক লক্ষ্য ধরি হুইজনে চলিয়াছে,
পথে বাধা শত পাষাণ পর্বত কত,
হুই বলে এক হু'য়ে ভাঙ্গিয়া ফেলিতে চায়॥
(বল দেব কার পানে আগ্রহে ছুটিয়া বায়)

### বাগেঞ্জী।

প্রাণপন্নে প্রাণ সঁপলাম যারে, সেই হস্তারক প্রাণে। কাঁদিব ার কার কাছে, কে আর আমার আছে, যারে পূজি হৃদি মাঝে, সেই বন্ধু হৃদে হানে॥

### <u>ত্রীমতী মানদাস্থলরী দাসী।</u>



ইমন।

এ প্রেম ছলনা। অবলা মজাতে কেন বল-না॥ আঁথি হেরে ভালবাসি, সোহাগে পরিয়ে ফাঁসি, পাই যাতনা॥

ভৈরে ।--- মিশ্র।

মা ভবভয়-কলুয়-বিনাশিনী মা ভয়নাশিনী
জগদম্বে অম্বে করুণায়য়ী তারিণী ॥
বহুগুণবতী সতী পশুপতি-মোহিনী
চরাচর-মুর-নর-জন-প্রতিপালিনী,
দমুজদলনী দশপাণি দয়ায়য়ী
দশরথমুত-হিতকারিণী ॥
কৈলাসবাসিনী কমলে কাত্যায়নী
করালবদনী শিবে শমন-দমন-কারিণী
ভগবতী ভবানী ভয়য়য়ী শয়রী
ভ্বনেশ্বরী মা মহেশ-মোহিনী
নগ-নন্দিনী উমে অভয়ে ক্ষেময়য়ী
অকিঞ্চনের মোকদায়িনী ॥

ভৈরবী।
কে বলে তারিণী তোমার কালবরণী (খ্রামা)।
নিরূপম-রূপা খ্রামা ভূবনমোহিনী॥

### **बीयडी यानमाञ्चनती मानी।**



তা নইলে কি ত্রিলোচন, করেন পরম যতন সতত সেবিছে মা তোর ঐ চরণ ত্র'থানি॥

বেহাগ।

ঐ বে বাজিল বাশরী বিপিনে।

মজালে অবলাকুল স্কুমধুর তানে॥

সতী ছাড়ে পতিব্রতা, শিশু ছাড়ে পিজামাতা
ভূমিলে বংশীর ধ্বমি একবার শ্রবণে॥

সাহানা—মিশ্র।
তোমারি প্রেমের কথা ( ওগো )
হলমের র'য়েছে গাঁথা।
নিশিদিন জাগে মনে সেই সব কথা ॥
কত কথা পড়ে মনে, কত আশা ছিল মনে
সে আশা-জল শুকায়েছে
পে ভূলেছে কি র'রেছে

পূরবী।

সাধে কি করুণাময়ি করি তোমার উপাসনা।
কাল্যু না থাকিলে কেহ তোমার সাধিত না॥
ভান গো মা আত্মশক্তি, করিতে জীবের মুক্তি,
কার হেন আছে শক্তি, তুমি বিনা ত্রিনরনা॥

# শ্রীমতী মানদাস্করী দাসী



### ভৈরবী।

মনের সাধে শিবের হাদে দাড়িরেছ মা পদ দিয়ে।
ছল ক'রে জিব বাড়িয়ে আছ মা যেন কত স্তাকা মেয়ে॥
বল্ দেখি মা ওমা তারা, তোর দেশের কি এমনি ধারা,
ওগো তোর মা কি তোর বাবার বৃক্তে দড়ো'ত মা পদ দিয়ে।

#### থাম্বাজ।

তুমি অরপ স্বরপ স্বগুণ নিগুণ,
দয়াল ভয়াল হরি হে।
আমি কিবা বৃঝি, আমি কিবা জানি
আমি কেন ভেবে মরি হে॥
আমি কিরপে এসেছি কেননে বা যাব
তা ভাবিয়ে কেন জীবন কাটাব,
তুমি আনিয়াছ ভোমারেই পাব
ভাই শুধু মনে করি হে॥

তাই ব'লে ডাকি, প্রাণ ধাহা চায়, ডাকিতে ডাকিতে হৃদয় জুড়ায়, যথন বেরূপে প্রাণ ভ'রে বায়, তাই হেরি প্রাণ ভরি হে ॥

### श्रीयठी यानमाञ्चनत्री मानी।



#### বেছাগ।

জানি না কি ব'লে ডাকি মা তোরে।
কথন শস্কর বামে, কভূ হরহালি' পরে॥
কথন বিশ্বরূপিণা কভূ বামা উলঙ্গিনী,
কভূ শ্রাম-সোহাগিনী কভূ রাধার পায়ে ধরে।
বে না বলে শুনিব মা, মা নামের নাই ভূলনা,
ভাই ডাকি ব'লে শ্রামা ভোমার অভয় চরণ পাবার ভরে॥

### ভীমপলত্রী।

যাবে কি হে দিন আমার বিফলে চলিয়ে।
আছি নাথ দিবানিশি আশাপথ নিরথিয়ে॥
তুমি ত্রিভ্বন নাথ, আমি ভিথারী অনাথ,
দয়া করি এ দাসেরে করুণা বিভর হে॥

### ভৈরবী।

এস রে নয়নে তোমায় লুকায়ে রাখি।
আর কারে না দেখাব, আমি ত নয়ন ভ'রে দেখি।
তুমি নয়ন-রঞ্জন, তুমি হৃদয়েরই ধন;
তুসি মম হৃদয়ের পোষা পাখী—
এস নয়নে লুকায়ে রাখি॥

### শ্রীমতী মানদান্তকরী দাসী



ঝিঁ ঝিট—থাস্বাজ।

আমি তোমার জন্যে কাঁদি—
তোমার প্রাণ কি কাঁদে না রে।
কাঁদালে কাঁদিতে হবে,
প্রাণ তোমারে বেসে ভাল,
আমার কি দশা হ'ল।
(আমার) কাঁদিতে জনম গেল,
আমি আর কাঁদিতে পারি না॥

### ঝি ঝিট।

আর জলে যাওয়া হ'ল না ( আমার )
কদম্বতলাতে কালা, ক'রেছে থানা॥
যে বেড়াত বনে বনে, সে কি নারীর মশ্ম জানে,
( আমার ) শঠের সনে প্রেম ক'রে স্থুখ হ'ল না॥

#### ঝিঁ ঝিট।

আর বাঁশী বাজা'ও না খ্রাম।

একবার বাঁশী বেজে রাধার, গেছে কুল মান॥

যে ঘরেতে ঘর করি, হরি বল্তে প্রাণে মরি।

আমার খাশুড়ি ননদি বৈরী, পতি হ'ল বাম॥

### शैयजी यानमाञ्चनती मानी।



ভীমপলশ্রী।

বাশরী বাজিল যমুনার। (ওগো খ্রাম্মের)
তোরা কে কে যাবি আর।
বাশী বাজে বিপিনে, চিত ধৈরজ না মানে;
(বাঁশী) রাধা রাধা রাধা ব'লে হুকুল মজার॥

বেহাগ—মিশ্র।

অন্তরে জাগিছে অন্তর যামী

তবু সদা দূরে ভ্রমিতেছি আমি।

সংসার-স্থুথ ক'রেছি বারণ,

তবু তুমি মম জীবন-স্থামা (হে)॥

না তেরিয়া পথ ভ্রমিতেছি পথে

আপন গরবে অসীম জগতে,

তব স্নেচ-নেত্র জাগে গ্রুবতারা

তব শুভ আশীষ আসিছে নামি॥

বসন্ত-মিশ্র।

শশধর তিলক ভালে গঙ্গা জটা বিমলে শিরকর ত্রিশুল রুড়াক রাজে।

नित्रसम्म विभूग प्रवास मादना

ব্যবাহন আসন মৃগছাল।

কালকুট কঠে হের তিমির রাজে॥

অঙ্গে ছাই গলে রুদ্রাক্ষমালা

ভৈরব ত্রিনয়ন হর যোগী সাব্দে।

# এমতী মানদাস্থলরী দাসী



মুখে রামনাম

শ্ৰবণে অতি কোমল

গা ওয়ত তান-মান-সপ্তস্তর রাগে॥

ভূপালী।

সথি রে মরমে পরশে তারি গান।
অধীর আকুল করে প্রাণ ॥
জোছনা উজলি উঠে মলয়া মূরতি পড়ে
কুঞ্জে কুঞ্জে কুল ফুটে, উঠে থরে থরে
বিশ্ববিমোহন গান।
আঁথি জলে হাসিমাথা আহা কি করণা বেদনা
নিজে হেসে কেনে বলে তার কেন না
হুদয় দিয়েছ প্রতিদান॥

প্রজ।

সই রে তারি রূপ মনে পড়ে,
তারি রূপ মনে হ'লে মনে মনে আমি
ভাসি সদা নয়নের জলে।
সদা স্ক্রিক্ষণ দহে মোর মন,
সে কেন আমারে হুপ দিলে॥

ভীমপলঞ্জী। দেহি শ্রীচরণ সূড়াক এ জীবন স্মার এ সমুণা সহে না।

### वीयजी माननाञ्चनती नानी



বারে বারে হরি সহিতে না পারি জননী জঠর-যন্ত্রণা॥ এই অধমের প্রতি ওহে যহপতি, কর হে কিঞ্চিত করণা॥

মিশ্র-ভৈরবী---এক তালা।

সেথা আমি কি গাহিব গান।
যথা গভীর ওলারে, সাম ঝলারে,
কাপিত দূর বিমান॥
থেপা হ্বর-সপ্তকে ব্যধিয়া বীণাং,
বাণা-শুভ্র-কমলাসীনাং

রোধ তটিনী জল-প্রবাহ তুলিত মোহন তান ।
আলোড়ি চক্রালোক শারদ, কবি হরিগুণ গান নারদ।
মন্ত্রমুগ্ধ করিত ভ্বন, টলাইতে ভগবান্ ॥
যোগীশ্বর পুণা পরশে, মন্তারাগ উদিল হর্ফে
মুগ্ধ কমলাকান্থ চরণে, জাহ্ননী জনম পান
আর কি ভারতে তাছে দে যন্ত্র,
আর কি আছে দে মেগুর কথ,
আর কি আছে দে মধুর কথ,
আর কি আছে দে মধুর কথ,

### প্রীমতী মানদাসুন্দরী দাসী।



কানাড়া---মিশ্র।

কালরপে গেল সকল।
হৈরিয়ে মনপ্রাণ বঙ্কিম নয়নে,
বাশীর গানে মন প্রাণ আকুল॥
চরণে চরণ দিয়ে এলায়ে পড়েছে বামে;
প্রতি অঙ্গ মোহিত ক'রেছে কামে,
ইচ্ছা হয় ও ললিত ত্রিভঙ্গঠামে
বাঁধা থাকি চিরকাল॥

#### মালকোষ।

প্রেম ভালবাসি ব'লে তাইতে লোকে কত বলে।
এগনি এমন হ'ল আরো কি আছে কপালে॥
নবীন প্রেমে ব্রতী হ'য়েছি সথি সম্প্রতি,
প্রেম করার এই রীতি গঞ্জনা প্রথম কালে॥

#### বি। বিটে।

(সপি) তারে ভূলিব কেমনে মন সঁপিয়াছি যারে আপন জ্ঞানে।
আর কি সেরপ ভূলি প্রেমত্লি করে তুলি,
সদয়ে এঁ কেছি যারে অতি যতনে॥
সবে বলে আমারে সে ভূলেছে ভূল তারে,
( প্রগো ) ভূলে তারে কেমন ক'রে একা রহি ভবনে॥



ভৈরবী।

( আমার ) বল সথি মনোবেদনা কব কারে।
আমার অন্তরের যত তথ রহিল অন্তরে॥
যে ভালবেসেছ হার কথাতে কি কহা যায়,
দেখাবার হ'লে দেখাই ছাদর বিদ'রে॥

রামকেলি।

(সনা) কালী কালী কালী বল মন।
কালী বিনা কে করিবে কালভন্ন নিবারণ॥
মন রে মনের কালী কালীনামে ঘুচাও কালী,
আসতে কালী যেতে কালী কালান্তে কালের সদন।

পিলু-মিশ্র।

কালী করুণাময়ী শিবানী অভয়া।
শব হ'য়ে পড়ে শিব পদে, তবু কি হ'ল না দয়া॥
কালী ভেবে হ'লাম কালী,
চোথে কালী মুথে কালী,
৪ কালী যোগেশ-জায়া॥

# শ্রীযুক্ত সতাভূষণ গুপ্ত।

কানেড়া।

\* অসার পরাণ যাহা যায়, তুমি তাই তুমি তাই গো।
তোমা ছাড়া আর এ জগতে মোর কেহ নাই কিছু নাই গো



তুমি স্থ যদি নাহি পাও, যাও স্থথের সন্ধানে যাও,
আমি তোমারে পেয়েছি হৃদয় মাঝে, আর কিছু নাহি চাই গো॥
আমি তোমার বিরহে রহিব বিলীন, তোমাতে করিব বাদ,
দীর্ঘ দিবস, দীর্ঘ রজনী. দীর্ঘ বরম মাদ,
যদি আর কারে ভালবাদ, যদি ফিরে আর নাহি এস,
ভূমি যাহা চাও তাই যেন পাও, আমি যত তঃখ পাই গো॥

ইমন্-পূর্বী—এক হালা।
রূপদী পল্লীবাদিনী
শৃস্ত ঘাটে কেন একাকিনী স্থহাদিনী॥
হেরিছ রঙ্গে, কত বিভঙ্গে,
পায়ে পড়ে তর্জিণী।

উড়ে অঞ্চল এলো কেশরাশি, চঞ্চল জল উঠে কল হাসি, উলসি বিলসি নাচিছে কলসী, তব সোহাগে সোহাগিনী।

শ্রান্ত ধেন্ত গেল ঘরে কিরে, বেলা গেল ডেকে চলে পাণী নীড়ে তীরে নীরে ধীরে ধীরে বিভালো শয়ন নিশাপিনী :

বাজিছে শহা ওই কলে, জলে দীপমালা গগনে সঘনে, আঁগার আলয়ে নাও দীপ লয়ে মুপুরে বাজায়ে রিণি-ঝিনি॥



### মূলতান---আড়াঠেক।।

এ হেন পাষাণ যদি, কেন ভাল বেসেছিলে।
আশা দিয়ে ভুলাইলে কেন বা ভুলে রইলে॥
তোমার বিরহ সহি, আমি দিবস-রজনী দহি
যাতনা দিতে কি প্রেমাগুন জালাইলে॥
প্রেমের স্বপন সেই মনে পড়ে বারবার,
আবেশে আবেগময় সভৃষ্ণ আঁথির ভার,
প্রেমের আবেগ-গীতি আদর ন্তন নিতি
কেমনে ভলিলে স্থা সকলি যে ফুরাইলে॥

#### দেশ-একতালা।

আমার সতা মিথা। সকলি ভ্লায়ে দাও—
আমায় আনন্দে ভাসাও।
না চাহি তর্ক না চাহি যুক্তি,
না জানি বন্ধ না জানি মুক্তি,
ভোমার বিশ্ববাণিনী ইচ্ছা আমার অস্তরে জাগাও
সকল বিশ্ব ভ্বিয়া যাক্ শাস্তি-পাথারে,
সব স্থুথ হৃঃ থামিয়া যাক্ জ্লয়-মাঝারে,
সকল চেষ্টা, সকল শক্ত, সকল থাকা হউক স্তর্ধ
তি নার বিশ্ববিজ্যিনী বাণী আমার অস্তরে জাগাও॥



থাস্বাজ—একতালা।
কাঙ্গাল বলিয়া করিও না হেলা,
আমি পথের ভিথারী নহি গো।
ভুধু তোমারি হুয়ারে অন্ধের মত অঞ্চল পাতি রহি গো।
ভুধু তব ধন করি আশ,
আমি পরিয়াছি দীন-বাস,
ভুধু তোমারি লাগিয়া করিয়া আশ
মরমের কথা কহি গো।
মম সঞ্চিত পাপ-পুণা, আমি সকলি ক'রেছি শৃত্য.
ভুমি পূর্ণ করিয়া ভরি দিবে, তাই রিক্ত হৃদর বহি গো॥

মূলতান—-আড়াঠেকা।
আর তো যাব না লো ক্লই, যমুনার জলে।
ভরিয়ে এনেছি কুস্ত নয়ন-সলিলে॥
হেরিলাম যে রূপ তার, আমার গৃহে থাকা হল ভার,
নাম নাহি জানি তার সে থাকে গোকুলে॥

মল্লার--কাওয়ালী।
বলে মাতরম্।
ফুজলাং ফুকলাং মলরজ-শাতলাং শস্ত-শামলাং মাতরম্।
ভুল-জ্যোৎসা-পুলকিত যামিনীম্,
ফুল-কুস্থমিত জ্মদল-শোভিনীম্,
ফুলাদিনীং সুমধুরভাষিণীং, সুধদাং বরদাং মাতরম্॥



সপ্তকোটকণ্ঠ কলকল-নিনাদকরালে,
দিসপ্তকোটভূলৈগু তথ্যকবরালে,
কে বলে মা ভূমি অবলে !
বছবগধারিণীং নমামি তারিণীং
রিপুদলবারিণীং মাতরম্ ॥
ভূমি বিষ্ণা, ভূমি ধর্ম্ম, ভূমি হৃদি, ভূমি মর্ম্ম,
কং হি প্রোণাং শরীরে ।
বাহুতে ভূমি মা শক্তি, হৃদয়ে ভূমি মা ভক্তি
তোমারই প্রতিমা গড়ি মন্দিরে মন্দিরে ।
ত্বং হি ত্র্পা দশপ্রহরণধারিণী,
কমলা কমলদল-বিহারিণী,
বাণী বিভাদায়িনী নমামি ত্বাং
নমামি কমলাং অমলাং অভুলাং স্কেলাং স্মতরম্ ॥
গ্রামলাং সচলাং স্কিলাং ভূষিতাম্ ধরণীং ভরণীং মাতরম্ ॥

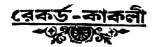
ভৈরবী---একতালা।

সার্থক জনম আমার জন্মেছি এই দেশে, সার্থক জনম মাগো, ভোমায় ভালবেসে।

জানিনে ভোর ধন রতন, আছে কি না রাণীর মতন,

শুধু জানি আমার অঙ্গ জুড়ায় তোমার ছায়ায় এসে ॥ কোন্বনেতে জানিনে ফ্ল, গল্পে এমন করে আকুল,

কান্ গগনে উঠে রে চাদ এমন হাসি হেসে॥
বিবে তোমার আলো প্রথম আমার চোথ জুড়ালো,
সেই আলোতে নয়ন রেথে আমি মুদিব নয়ন শেষে॥



বেহাগ—চিনে তেতালা।

এখনো প্রাণে ছবি কেন তারি। থেকে থেকে জেগে ওঠে বুঝিতে নারি॥ সে শরতের মেঘ যেমন, হৃদরেরি ভাব তেমন, এখনো তাহারে আমি ভূলিতে নারি॥

ইমন কল্যাণ।

তুমি সন্ধ্যার মেঘমালা, তুমি আমার নিজ্ত সাধনা, মম-বিজন-গগন-বিহারী। আমি আপন মনের মাধুরী মিশারে তোমারে ক'রেছি রচনা। তুমি আমারি, তুমি আমারি, মম-বিজন-জীবন-বিহারী ॥ मन काम्य तक वार्ध তব চরণ দিয়েছি রাক্সিয়া মম সন্ধাা-গগন-বিহারী। তব অধর এঁকেছি স্থগা বিষে মিশে. মম সুথ তুথ ভাঙ্গিয়া— তুমি আমারি তুমি আমারি মম বিজ্ञন-জীবন-বিহারী। মন মোহের স্থপন লেখা ত্ব নয়নে দিয়েছি পরায়ে মম মুগ্ধ-নয়ন-বিহারী॥



# 🔊 মতী নশীবালা দাসী।

বেহাগ-খাস্বান্ধ।

দিও না দিও না দিও না ব্যথা।

বেও না বেও না রাথ-না কথা॥

সদরে হৃদরে মিশারে থাকি,

জাগিরে জাগারে স্থপন দেখি,

নড়ে না চড়ে না নয়ন-পাতা॥

এখনও মধুর মূহর হাসি,

বোল না বোল না বোল না আসি,

কাদিয়ে কাদায়ে যাবে গো কোথা॥

মিশ্ৰ--থাৰাজ।

কে তুমি আড়াল থেকে মুখের পানে চেয়ে থাক।
কেন তুমি অমন ক'রে ভাল মন্দের খবর রাথ।
ডাকিলে আদ না কাছে বেড়াও তুমি পাছে পাছে
কেন তুমি এমন ক'রে দিবানিশি হাসি দেখ।

হাধীর—কা ওয়ালী

তারে ভোলা হ'ল এ কি দার।

আমার প্রাণ বায়।

কিক্ষণে হটল দেখা, বুঝি প্রাণ বায়।

বিমল জোছনা মাথা, চন্দ্রিমা তুলিতে আঁকা,

তেরিলে তার মুখশনী প্রাণ জুড়ায়॥



ব্ঝিতে পারি না তারা এ কেমন মায়ের ধারা।

যারা ডেকে ডেকে হয় মা সারা তারা তোমার পায় না সাড়া।

পথের মাঝে ফেলে দিয়ে, চলে গেল পাষাণী হ'য়ে,

এ কেমন মেয়ের মেয়ে, ভাসালি মা তারা।

মন গরিবের কি দোব আছে।
তারে কেন নিন্দা কর মিছে॥
বাজীকরের মেয়ে শুসান, বেমনি নাচায় তেমনি নাচে।
শুনেছি সে দয়ামগ্রী লোকে বলে বেদে আছে,
আপনার ভাবে আপনি চলে, পরের বেদন কি তার কাছে:
(আপনি যেমন মেয়ে তেমনি হোমা)

#### হাম্বীর।

ব'লব তারে যদি দেখা পাই।

এ কেমন তার ভালবাসা ক'দিন হ'ল দেখা নাই
সরল প্রাণে দিয়ে ব্যথা ভূলেছে স্নেহ-মমতা,
এই কি রে তার ভালবাসা, মরমেতে মরি সথি,
ইচ্ছা হয় গ্রল খাই॥

#### **कक्र**म

চুড়ী নিবি গো ? এই নতুন সাধের কাচের চুড়ি যায় জোড়া করা। আবার যেমনি পাবি তেমনি নিবি প'রে যা তোরা॥

# बीयूक वनारंमाम नान।



লাল, নীল, কালা, সব্জ আছে রং বিরং,
দেগ্লে চোথে হারা হবি কর্বি না লো চং,
এ চুড়ী হাতে দিলে,
তাদের দেখে নাগর ভূলে আপনি না দিবে ধরা॥

# শ্রীযুক্ত বলাইদাস শীল।

বাহার।

এক মনে তোর একতারাতে

একটি যে তার সেইটি বাজা।

ক্ল-বনে তোর একটি কুস্কম,

তাই নিয়ে তোর ডালি সাজা॥

যেখানে তোর সীমা রে ভাই,

তানন্দে তুই মিস্ শেষে।

যে কড়ি তোর প্রভ্র সেবা

সেই কড়ি তুই নিস্রে হেসে॥
লোকের কথা নিস্নে কানে

কিরিস্নে আর হাজা প্রাণে,

যের রে তোর স্থায় জেনে

স্বায় তোর আছেন রাজা॥



আলাইয়া।
তোমারেই করিরাছি জীবনের ধ্রুবতারা
এ সমুদ্রে আর কভু হব নাক পথহারা।
বথা আমি বাই নাক, তুমি প্রকাশিত থাক
আকুল নরন-জলে ঢাল গো কিরণ-ধারা।
তব মুখ সদা মনে, জাগিতেছে সঙ্গোপনে,
তিলেক অন্তর হ'লে না হেরি কুল-কিনারা
কখন বিপথে যদি, ভ্রমিতে চাহে এ ছদি
অমনি ও মুখ হেরি সরমেতে হই সারা॥

ভঙ্গন—ঝাঁপতাল।
অথিল ব্রহ্মাণ্ডপতি প্রণমি চরণে তব,
প্রেম-ভক্তি-ভরে শরণ লাগি।
তুর্মাতি দূর করি শুভ-মতি দাও হে,
এই বরদান ভগবান্ মাগি॥
যোর নিজুর রিপু অন্তরে বাহিরে,
ভীত অতি আমি এ অন্ধকারে।
দীন বৎসল তুমি তার নিজ সেবকে,
তব অভয় মুরতি ভয় নিবারে॥
বিষয় মহার্গবে গমন হ'য়ে ডাকি হে,
দীনহীনে প্রভু রাণ রাথ।
তব রূপা যে লভে, কি ভয় তব সঙ্গটে,
কাটি যাবে বিপদ লাখো লাখো।

# 



# ঝিঁ ঝিট---ঠংরি।

কর তার নাম-গান যত দিন দেহে রহে প্রাণ হে।

যার মহিমা জ্বলস্ত জ্যোতি, ' আহা ) জগত করে হে আলো,
প্রোতে বহে প্রেম-পীয়ধ-বারি সকল জীব স্থাকরি হে॥
করুণা শ্বরিয়ে তমু হয় পুলকিত, বাক্যে বলিতে কি পারি,
যার প্রসাদে এক মুহর্তে সকল শোকে অপসারি হে॥
উচ্চে নীচে দেশ দেশাস্তে ( আহা ) জলগর্তে কি আকাশে,
অস্ত কোথা তাঁর, অস্ত কোথা তাঁর এই সদা সবে জিজ্ঞাসে হে॥
চেতন নিকেতন পরশ রতন সেই নয়ন অনিমেষ ( আহা )
নিরঞ্জন সেই যার দরশনে নাহি রহে তঃখ-লেশ হে॥

#### ইমন-কল্যাণ।

তোমারি রাগিণী জীবন-কুঞ্জে বাজে যেন সদা বাজে গো।
তোমারি আসন হৃদয়-পলে, রাজে যেন সদা রাজে গো।
তব নন্দন গন্ধনন্দিত গিরি স্থন্দর ভবনে,
তব পদ-বেণু মাথি ল'য়ে তমু, রাজে যেন সদা রাজে গো।
সব বিদ্বেষ দূরে যায় যেন তব মঙ্গল মস্ত্রে
বিকাশে মাধুরী হৃদয়ে বাহিরে সঙ্গীত ছন্দে,
তব নির্দ্ধল নীরব হাস্ত হেরি অম্বর ব্যাপিয়া,
তব নীরবে সকল গর্বর রাজে যেন সদা রাজে গো।



### ঝিঁ ঝিট।

অচল ঘন গ্রহন গুণ গাও ঠাহারি, গাও আনন্দে সবে রবি চক্র-তারা, সকল তরুরাজি সাজি ফুলফলে গাও রে, বিহ্গকুল, গাও মধুতর তানে। গাও জীব জন্ধ আজি গে আছ দেখানে জগং পুরবাসি, সবে গাও অফুরাগে ? মম জদয় গাও আজি মিলিয়ে সব সাথে ডাক নাথ, ডাক নাথ বলি প্রাণ আমারি॥

ছায়'নট--নাপ্তাল।

বিপদ-ভর বারণ, দে করে ওরে মন.

ভারে কেন ডাক না।

মিছে ল্লে ভূলে সদা র'য়েছ ভব ঘোরে মজি
একি বিধির বিভূম্বনা।
এধন জন রবে ছেন, ভারে যেন ভূল না,
ছাড়ি অসার, ভজ্ঞ সার, যাবে ভব যাতনা॥
এখনও হিত-বচন শোন, যতনে করি ধারণা;
বদন ভরি নাম হরি, সতত কর ঘোষণা প
যদি এ ভবে পার হবে, ছাড় বিষয় কামনা
সঁপিয়ে তম্ম জদয় মন ভারে কর সাধনা॥



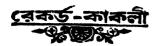
ক্ষিক।

প্রাণ রাখিতে সদাই যে প্রাণার। জিমতে কে চাইত যদি আগে সেটা জানত।। ভোরে উঠেই ঘুমটা নষ্ট, তার পরেতে যে সব কষ্ট, বৰ্ণিতে লঙ্কিত আমি সে সব ব্যস্তাস্ত ॥ নানা বিপদ্নিতা নিতা, কুবায় জ'লে যায় পিত, থেতে বসলে চর্বণ করতে করতে পরিশ্রাম। দদি বা পাই যথাসাধ্য. থেলেই যায় ফুরায়ে খান্ত, পাস্ত আনতে লবণ কুরায়, লবণ আনতে পাস্ত॥ দিনে গা গড়াবা মাত্র. ওঠে মাছি সর্ব্ব গাত্র. রাত্রে মশার ব্যবহার অভদু নিতান্ত ॥ তদপরি ভার্যাার অদ্ধ্র রজনীতে গহনার ফর্দ্ধ্ নাসিকা ডাকা প্র্যান্ত নাহি হয় ক্ষান্ত॥ কিনিলেই কোন দ্রব্য দাম চাহে যত অসভা, রাস্তা ভূড়ে ব'সে থাকে পাওনাদার তুদাস্ত। বিয়ে করলেই পুল্ল-কন্তা, আসে যেন প্রবল বন্তা, পড়াতে আর বিয়ে দিতে হই সক্ষোন্ত ॥

> Comic. ভৈরবী।

তারেই বলে প্রেম।

যথনু াকে না future এর চিন্তা থাকে নাকো shame. যথন বদ্ধি শুদ্ধি লোপ.



বথন past all surgery আর যথন past all hope, এই তারেই ভিন্ন জীবন ঠেকে যথন ভারি tame.

তারেই বলে প্রেম।

তপুর রাত্রি কিংবা দিন

ঝড় কি বৃষ্টি রক্ষুর হ'ক when it doesn't care a pin, হ'ক সে কাফ্রী কিংবা ম্যাম,

মুচি, মুদী, মুদ্দফরাস when it doesn't care a 'damp'
Blind ব্বি, bald, কি deaf কি dumb,
কি haunch-back কিংবা lame,
ভারেই বলে প্রেম।

রাস্তায় সর্প কিংবা ব্যাং

পাহাড় বন কি বাঘ কি ভন্নুক when it doesn't care a hang;
কান্ধটি অস্তায় হ'ক কিংবা ঠিক
ঠাটা হ'ক কি নিন্দা হ'ক

when it doesn't care a kick; মরি কিংবা বাচি when it is very much the same.

তারেই বলে প্রেম॥

বি বিট-খাৰাজ।

বুড়োবুড়ী হ'জনাতে মনের মিলে স্থপে থাক্ত ॥
বৃড়ী ছিল পরম বৈঞ্ব, বুড়ো ছিল ভারি শাক্ত ॥
হ'ত যথন ঝগড়াঝাট, হ'ত প্রায়ই লাঠালাঠি,
ব্যাপার দেখে ছুটোছুটি, পাড়ার লোকে পুলিশ ডাক্ত ॥

# 🎒 युक्त वनारेमान भीन।



একদিন বুড়ো 'ছব্ডোর' ব'লে,
হঠাৎ কোথার গেল চলে,
বুড়ী তথন বুড়োর জন্তে কর্লে আঁথি লবণাক্ত।
শেষে বছরখানেক পরে,
বুড়ো ফিরে এলো ঘরে,
বুড়ী তথন রেঁধে বেড়ে তারে ভারি খুসী রাখ্ত।
ঝগড়াঝাট গেল থেমে,
মনের মিলে গভীর প্রেমে,
বুড়ী দিত দাতে মিশি, বুড়ো গায়ে সাবান মাখ্ত।

### কমিক।

তোমায় ভালবাসি ব'লে তুমি বুঝি মনে ভাব।
বে তোমার চক্রমুথগানি না দেখিলে মরে যাব॥
যুলু চড় বে আমার বাড়ী, উন্থনে উঠ্বে না হাঁড়ি,
বৈদ্যেতে পাবে না নাড়ী,
এমনি অস্তিম দশায় থাবি থাব॥
এথনি ইস্তফা—তবে বা হবার তা হয়ে গেল,
তুমি যদি আমার ভাল না বাস ত আমার তবে ব'য়ে গেল।
ডাক্লে তোমার পাইনে সাড়া,
নেই কি কেউ ব্ঝি তোমা ছাড়া,
এই েশ জোড়াতে দিলে চাড়া তোমার মত অনেক পাব



#### ক্মিক।

তোমারি বিরহে সই রে দিবা-নিশি কতই যে সই। এখন ক্ষুধা পেলে খাই 📆 আর ঘুম পেলে ঘুমুই। কি বলবো আর পরিত্যাগ এখন একেবারে চিড়ে দই— রোচে না'ক মুখে কিছু আর একটু পাঠার ঝোল আর লুচি বৈ॥ এখন সকাল বেলা উঠে ভাই, হতাশভাবে স্ফেশ থাই, কত্ ত'থান সরপুরিয়া—আর চঃথের কথা কারে কই, তংগের বারিধি আমার কোন মতেই পাইনে থৈ॥ আবার বিরতে বুঝি ( আমার ) কুধা জেগে উঠে ঐ ? ( এখন ) বিকেলটা ও যদি হায়, সরবং পেয়ে কেটে যায়, সন্ধ্যায় একটু হুইস্লি ভিন্ন প্রাণটা আর বাচে কৈ। কে যেন সদাই এ প্রাণের পাকা ধানে দিচে মৈ-(তাই) রাতে ত্'চার ইয়ার ডেকে (এ দাকণ) বিরহের বোঝা বই॥ এপন ভাবি ও বিধু-বয়ানে, ঘুম আসে না নয়নে, কেবল রাত্রি ও মধ্যাকে ভিন্ন চনিবশ ঘণ্টাই জেগে রই। বির্ভেতে দিন দিন ওজনেতে বেশা হট :---এত দিনে বুঝলেম প্রিয়ে আমি তোমা বই করে কারো নই।।

#### ক্ৰিক।

বাঞ্চিছে তেনা তেনা তেনা তেলাক্ লাতুর ধিনি কেই—

যদি বলিস্ বৈষ্ণবী তুই কিছু না জানিস্,

না হয় চৈতন্ত ছিঁছে ফেলে দাতে মিদি দিস্,



কিছু দিন খ্যাকর। তুলে, স্থাকর। কোরে ছোকরার দলে হইগে মেলা ফেলে দিই তিলক মালা, কপুনি ঝোলা ধিনি কেষ্ট॥

কৃকুড়োগুলো দেণ্তে ভাল, মাণায় রাঙা ফ্ল, ওলো আন্নো তায় চুরি ক'রে, যায় যাবে জাত-কুল। হায় বৈষ্ণবী রে ধো না, গাঁচায় রেপে বোলো বিলিতি টিয়া পাখী,

প'ড়বে দানা নানি চাচা কৃদু ধিনি কেই।
আর একটি কথা তোরে শোন বৈষ্ণবী বলি।
ভোরে অতি ভালবাদি বেন চোথের বালি,
বৈষ্ণবী তুমি তুলো, আমি বাতাস, তুমি বাশ মুই ঘুণ
বৈষ্ণবী তুমি কাটা ঘা, আমি তাতে জন—ধিনি কেই॥
ঢোঁড়া সাপ বাঙে ধ'রেছে তাড়াতে গেলাম তারে,
সাপকে মার্তে ঢোলা, বাছা গেল ম'রে
(হায়) কি বলি, বিচার কলির গৌরাঙ্গের বিচার ভাল,
ঢোঁড়া সাপ ফাঁকি দিয়ে পালিয়ে গেল, ধিনি কেই॥

#### ক্মিক।

আহা বিঘোরে বেহারে চড়িন্ন এক!
লাগে ধুপ-ধাপ, বিষম ধাক।।
রোদে চাঁদি ফাটে, ধূলা ঢোকে পেটে,
শাক্ত গোব্দ তার এমনি পাকা।
তাহে আঁকা গাঁকা গলি বেগে যদি চলি,
কায়া মায়া অমনি চাড়রে ঝাকা॥



নরদামায় পড়ি, ভাবি গড়াড়ড়ি
আঁথি মুদি হেরি মেদিনা-মকা।
তাহে গুল্কী গমনে, ঝন্ঝনে ঝনে
বাজে করতাল ঘুঙুর টেকা।
কান ঝালা-পালা, প্রাণ পালা পালা
চোৎ মাসে যেমন গাজনে ঢকা।
তাহে বাঁকা হুটি বাঁশ, শোভে হুই পাশ,
মাঝথানে তার সকলি ফাকা
লতা-পাতা নিয়ে, আসন গড়িয়ে
ছেঁড়ে যদি তবে অমনি অকা!
তাতে লাল কাল সাদা, আসমানি জরদা,
যোত জোড়া এমনি ছাকা।
(আহা) তাহে অখিনী-নন্দন, বাধা তাতে রন,
প্রাণ করে তার পাঞ্জা ছকা॥

# ঐমতী চারুবালা দাসী।

কানেড়া---মিশ্র।

এমন যামিনী মধুর চাদিনী, সে যদি গো শুধু আসিত।
পরাণে এমন আকুল পিয়াসা, সে যদি গো ভালবাসিত॥
মিথ্যা বিধি ভূমি মিথ্যা তব সৃষ্টি, কেন এ সৌন্দর্য্যে নাহি তব দৃষ্টি,
হলাহলে ভরা প্রেম-স্থা-বিষ্টি, তবে কেন প্রাণ, ত্ষিত।
এ স্থ্থ-বসস্তে এত শোভাগাশি, এ নব যৌবনে এত রূপরাশি,
সকলি উঠিত পুলকে বিকাশি, সে যদি গো শুধু চাহিত॥



#### মিশ্র—ভৈরবী।

এদে বঁধুয়ার পালে, গলা ধ'রে হে্দে হেদে,
আধ আধ প্রেমভাবে, ব'লে গেল দে।
তথন দে কথা শুনে, বিশ্বাস হইল মনে,
প্রেমে বাঁধি নিরবধি থাকিব হ'জনে।
কত দিন এল' গেল, কত রাতি পোহাইল,
বঁধুয়ারি কথা হ'ল কৈ এল' দে॥
যাবত জীবন রবে, জীবন তোমার হবে,
আর যে কতই কথা ব'লে গেল দে॥

#### দিন্দু--থাছাজ।

মিলনে যে কত স্থুও সে জানিবে কেমনে।
যে জন না জলিয়াছে বিচ্ছেদেরি দহনে॥
স্থাতল বারি বল কে চাহিত যতনে
স্থবিমল আশা ফল কে চাহিত স্থপনে॥
অমানিশা না থাকিলে শশবর শোভনে
পূর্ণিমার রাত্র বল কে চাহিত যতনে ॥

#### বেহাগ।

বড় ভালবাসা লেগেছে প্রাণে কেমনে তাহারে ভূলিব হায়।
ভূলিব ভাবি ন কেঁদে উঠে প্রাণ, তারে ভোলা আমার হল যে দায়॥
মনেরে বোঝালে বোঝে নাকো মন, প্রাণেরে বোঝালে কেঁদে উঠে প্রাণ,
নয়ন করে বারি বরিষণ, থেকে থেকে আমার হ'ল যে দায়॥



#### কীর্ত্তন।

( আমি ) গেরুয়া বসন অঙ্গেতে পরিব
শভোর কুণ্ডল পরি।
আমায় দে দে বোগী সাজায়ে দে গো
বেশ ভূমণে কি কাজ আছে
আমি যোগিনীর বেশে ( বলি ও গো ) আমার মরম স্থি
যাব দেশে দেশে যুগা নিদারুণ হরি॥

#### কীর্ত্তন।

শভ্য করহ চুর বেশ করহ দূর (গো) তোড়হি গজমতি-হার।

(ফেলে দে, দে, দে, হার ফেলে দে, )

(দে গো) যমুনার জলে গজমতি হার ফেলে দে,

(দেগো) শ্রীষমুনার কাল জলে হার ফেলে দেগো

আমার গলার গজমতি হার আমার হাদে দংশন করে।

স্থি হার ভূজজ হয়ে জদে দংশন করে।

ভূড়বা গজমতি-হার গো,

সিঁতাকো সিন্দ্র মুছায়ে করহ দূর,

আমার প্রিয়া বিনা সব আঁধুয়া দেখি ক্লফ সথা এমন হ'ল,

গোকুলচাদের উদয় হ'ল না স্থি॥

#### কীর্ত্তন।

স্থবলে রাথিয়ে ঘরে চলিল রাধিকা। সবে মাত্র পয়োধর নাহি গেল ঢাকা॥



( যাওরা হ'ল না ) ( বলি আমার যাওরা হ'ল না স্থবল )

( যুগল পরোধর আমার বাদী হ'ল )

( ও ভাই প্রাণের স্থবল যুগল পরোধর আমার বাদী হ'ল )

( রুষ্ণ দরশনে আমার যাওরা হ'ল না স্থবল )

স্থবল কহ কি করি উপার, এ যুগল পরোধর কেমনে লুকাই।

( স্থবল দে দে উপার বলে দে )

(যুগল পরোধর আমার বাদী হ'ল দে দে দে উপার বলে দে )

এ যুগল পরোধর কেমনে লুকাই॥

#### কীন্তন।

পরিবার নীল শাড়ী দিল আজড়িয়।
কটিতে বাধিল ধটি যতন করিয়া।
(ধটি বেঁধে যে দিয়েছে) ( যতন ক'রে ধটি বেঁধে যে দিয়েছে)
করের কন্ধণ দিল স্থবলের হাতে,
নিজ্ক করে কবরী বাধিয়া দিল মাথে।
(বেণী বেঁধে যে দিয়েছে) (কত যতন ক'রে বেণী বেঁধে যে দিয়েছে)
মুকুরে নিরথি মুথ দিল্টর মুছাই বাধিল বিনোদ চূড়া এলায়ে কবরী।
(চূড়া বেঁধে যে দিয়েছে) ( যতন ক'রে চূড়া বেঁধে যে দিয়েছে)
( দরশনে যাবে ব'লে চূড়া বেঁধে যে দিয়েছে)
স্থবলে রাথিয়ে ঘরে করিল পয়ান,
গোবিন্দদাস বলে হ'ল এক দায়॥
( ক্লঞ্চ দরশনে অম্নি চলিল ধনী॥)

# ব্রকর্ড-কাকনী

# ঐীযুক্ত নারায়ণচক্র মুখোপাধ্যায়।

রামপ্রসাদী। কেন গঙ্গাবাসী হব।

ঘরে ব'সে মায়ের নাম গাইব॥

আপন রাজ্য ছেড়ে কেন পরের রাজ্যে বাস করিব, কালীর চরণ তলে লব শরণ, গরা গঙ্গা দেথ্তে পাব॥ শ্রীরামপ্রসাদে বলে কালীর পদে শরণ লব, আমি এমন মারের ছেলে নই যে, বিমাতাকে মা বলিব॥

বরাড়ী।

বিকল হ'তেছে মাগো ক্রমে এই দেহ তারা। জ্ঞান বৃদ্ধি গেছে চ'লে হইতেছি শক্তিহারা॥ যৌবন আবেগ বশে, ভ্রমিছি মন উল্লাসে, কিসে তরী ভবনদী ব'লে দে মা ভবদারা॥

সাহানা ( আগ্ৰুনী )।

তুমি ত মা ছিলে ভূলে আমি পাগল নিয়ে সারা হই।

হাসে কাঁদে সদাই ভোলা—জানে না মা আমা বই।
ভাং পেয়ে মা সদাই আছে, পাক্তে হয় মা কাছে কাছে,
ভাল মন্দ হয় গো পাছে সদাই মনে ভাবি তাই।
দিতে হয় মা মুখে তুলে, নয়তো খেতে য়য় মা ভূলে,
ক্লেপার কণা ভাবতে গেলে আমাতে আর অংশি নই॥
ভূলিয়ে যথন এলাম চ'লে, (ও মা) ভেসে গেল নয়ন-জলে;
একলা পাছে য়য় গো চ'লে, আপন-হারা এমন কই॥



থাস্বাজ—যং।

ঈশানী পাষাণীর বেটি তুই চিরকাল।
ও তোর রঙ্গ দেখে পদতলে প'েড় আছে মহাকাল॥
একে উন্মন্ত রণে, ঘুরিস্ মা শাশানে মশানে,
ভূলাইলি জগং জনে দিয়ে একটা মায়া-জাল।
কে জানে তোর তত্ত্ব শিবে—মা, মায়ায় করিস জীবে,
দয়া ক'রে ঘুচাও শিবে এ দাসের কর্মফল॥

রামপ্রদাদী।
কালী গো কেন গ্রাংটা ফের।
কিছু লজ্জা কি গো নাই তোমার॥
বসন ভূষণ নাই মা তোমার, রাজার মেয়ে গুমোর কর।
প্রগো এই কি তোর কুলের ধর্মা, পতির বুকে চরণ ধর॥
আপনি গ্রাংটা পতি স্থাংটা শ্রশানে মশানে চর।
আমরা সবে মরি লাজে, এবার মেয়ে বসন পর॥

দিন্ধু—কাফি।
আমি ভালবেদে ভাল করি নাই!
কাদা-কাদি সাধা-সাধি এ বড় বালাই॥
ভেবেছিলে সঁপে' দিলে প্রাণ,
ব'রে যাবে শুধু স্থথের তুফান,
না হ'তে ফেটে যাব যা ছিল সদাই॥



ভৈরবী—যং।
( আমার টানাটানি প'ড়েছে।
উপার্জ্জনের নামটা নাই মা,
দেনায় মাথা ডুবেছে ( বিকিয়েছে )।
বাজারেতে ধার মেলে না, এবার চুরি কর্ব শ্রামা
চুরি ক'র্ব তোর পা হ'থানি—তারা,
তাও কি শিব নিয়েছে প

#### হান্ধীর---যং।

এত ক'রে ডাকি শ্রামা শুনেও তা শুনিস্ না দিবা নিশি কাঁদি আমি দেখেও তা দেখিস্ না। অকুলে পড়িয়ে তারা ভাবিয়া হ'তেছি সারা, কিসে পাব পরিত্রাণ ব'লে দে মা ত্রিনয়না!! মায়া মোহ আদি ক'রে, সকলি র'য়েছে শিরে, এ সকল ছিল্ল ক'রে দানে কর মা করুণা॥

#### সিন্ধ--থাৰাজ।

মা ) অত্যে যেন ও চরণ পাই।
ক্পণতা কর যদি শিবের দোহাই॥
শিব যদি হ'ন সত্যবাদী, তবে কি মা তোমায় সাধি
পাষাণ-নন্দিনী ব'লে তাইতে (মা ) ভরাই॥

# ীযুক্ত নারায়ণচক্র মুখোপাধ্যায়।



#### থাম্বাজ।

বুঝেছি মা তোর ইচ্ছা!

মারার কৌশলে হঃথার্ণবে ফেলে আমার হুর্গানাম ভূলাবি ছলে। বতেক কষ্ট আমার দে না, হুর্গানাম ত ভূলিব না মারে কি ছেলে মারে না, তবু ছেলে কেঁদে মা মা বলে। চাইনে মা বিষয়-সম্পদ, বিষয় অতি বিপদ। হুদুর চার তাই অভয় পদ নিরাপদে রবে ব'লে॥

#### রামপ্রসাদী।

মাগো আমার এই ভাবনা।
(আমি) কোথায় ছিলাম কোথায় এলাম কোথায় যাব নাই ঠিকানা।
দেহের মধ্যে ছ'জন রিপু তারা দেয় মা কু-মন্ত্রণা।
(আমার) মনকে বলি ভজ কালী তারা কেউ কথা শোনে না

## ভৈরবী।

মা ব'লে ডাকিস্ না রে মন মাকে কোথা পাবে ভাই। থাক্লে এসে দিত দেখা সর্বনাশী বেঁচে নাই। গিয়ে বিমাতার তীরে কুশপুত্তল দাহন ক'রে অশৌচাস্তে পিশু দিয়ে কালাশৌচে কাশী যাই॥

(কালেংড়া — আগমনী)।
বন্ধ সপ্তমী উষা গগনেতে প্রকাশিল
দশদিক আলো ক'রে আমার দশভুজা মা আসিল,



# 

কথন আসিবে মেয়ে ছিলাম তার পথ চেয়ে

এবে বাই আমি ধেয়ে হৃদি-কমল বিকশিল।

সিংহ-পৃঠে ভবরাণী গুহু গজানন বাণী

সঙ্গে লয়ে নারায়ণী জয়া বিজয়া আসিল!

পুলকে পূরিল হিয়া শঙ্খ ঘণ্টা ৰাজাইয়।

চল সথি উলু দিয়ে বরণ ক'রে মাকে আনি লো॥

ইমন্—কল্যাণ।

হরি হে কেমনে চিনিব তোমার।

ওহে বছুরার ভূলে রইলে মথুরার।

ওহে হরি বনমালী, বনমালা কই কই

বে চূড়াতে রাধার নাম সে চূড়াটি কই কই

কই হে তোমার মোহনচূড়া,

কই হে তোমার পীতধড়া,
গোপীগণের বস্তুহরা ভাও কি মনে নাই॥

মাঝির গান।

ঈশান কোণে ম্যাঘ উঠেছে কর্তিছে গোঁ গোঁ।

ওরে ডিঙ্গা বেঁধে থো

আদে আথ্ চাক চিকুনি, আথাবি হানে জলের ঘানি
ঝোড়ো দাদা উন্ন ক'রে আস্তিছে দোঁ সোঁ।
শেষে সামাল দিতে নারবি ডিঙ্গা

ডাকবে বুড়ো কোঁকোর কোঁ, ডিঙ্গা বেঁধে থো॥



ভৈরবী—সাহারোরা।
ভোরা মিশি নিবি মিশি নিবি ও বৌরেরা।
আমার নৃতন গোলাপী মিশি রংয়েতে ভরা ॥
ধান চাল বিনে, এ মিশি বেচিনে
বারণ ক'রেছে আমার কর্তারা।
এ মিশি দাতে দিলে, যৌবন জালা যায় গো ভূলে,
বিদেশে যার প্রাণপতি আসে লো ওরা ॥

ঝি ঝিট—এক গ্রালা।
মোট ব'রে মোর কাট্লো দিন (কালী)
(ওমা) দিচ্ছ মাথার ততই বোঝা (মা)
যতই হচ্ছি শক্তিহীন।
ভূই তো পাষাণীর মেয়ে (তারা মা)
দেখিদ্ নাকো একবার চেয়ে—
ওমা পারি না আর খাট্নি ব'য়ে
ক্রমে হ'ল আয়ুহীন।
রোগে দায়ে বিয়, হ'লে মরবে না আর
চরণ তলে হব লীন॥

থাম্বাজ—দাদ্রা।
আ মরি কি লাজের কথা মিন্সের উপর মাগী।
পদ লৈ পড়ে আছে অভুত যোগী॥
নম্মনে দেখে না চেয়ে, শিব আছেন শব হ'য়ে.
একি সর্কানাশী মেয়ে লজ্জা সরম ত্যাগী॥



# প্রীযুক্ত নারায়ণচক্র মুখোপাধ্যায়।

ঝিঁ ঝিট থামাজ।

থেমন শ্রাম তেমনি প্রামা থেমন কালা তেম্নি কালা।
ভূবনমোহন যুগল মিলন অভূলন রূপ নৃত্যকালী ॥
পতির হাতে মোহন বালা স্ত্রীর মূথে মধুর হাদি,
মুগুমালা করালীতে, মোহন কালা বনমালী।
ভর থেমন অভর তেমন,মায়ের কোলেই জীবন মরণ,
মধুর ভীষণ মিলন যে ভাই, শ্রামে শ্রামা কালায় কালী॥

বিভাষ মিশ্র ( জাগমনী )।
বিলম্বে কি কাজ যাও গিরিরাজ
এনে দাও আমার পরাণ পুতলী।
সম্ববংসর গত মুখে কব কত
মরমে গুমরি বে জালায় জলি॥
উমা যে আমার সরলা ললনা
ভাল মন্দ বাছা কিছুই ত জানে না,
ভিগারীর ঘরে দারিদ্রো-যাতনা
সবে সে কেমনে বৃঝ গো সকলি।
সবে মাত্র কন্তা উমা যে আমার, বৃক চেরা ধন
সংসারের সার,

তাই তোমায় যেতে বলি বারবার কোঞ্চু এনে দাও সোণার কমল কলি ৷



#### শ্রাম (বিজয়া)

কেমনে যাবি মা চলে অভাগি মারেরে ফেলে,
কে আর আমারে (উমা) ডাকিবে গো মা মা বলে ॥
যে জালায় জলে অস্তর, নয় মা দে যে দেখাবার,
চেরিয়ে বদন তাের র'য়েছি সব ভূলিয়ে—
পঞ্চ ঋতুর অস্ত করি শরতে এলি মা গৌরি
তৈনটি দিন থেকে গৌরি বাবি মা আমায় কঁদায়ে ।
মা হ'য়ে কত সহিব, কেমনে বিদায় দিব,
প্রাণে কি বেচে থাকিব তােমায় গো মা না হেরিয়ে ॥

#### বেহাগ-থাম্বাজ। (আগমনী)

দেখ লো সজনী আসে বারি ধারি ত্রিতাপনাশিনী জননী ওই।
কপের ঝলকে চপলা চমকে নথরে চক্রমা উদিত ওই॥
আয়লো সহচরী সবে যাই স্বরা করি, আনি ঘরে মার চরণ ধরি,
আমরা অবলা ললনা, জানি না ভজন সাধনা,
চল লো সজনী জগত জননীর চরণে শ্বরণ লই॥

# ভৈরবী (বিজয়া)

ওমা ত্রিনয়না দেও না যেও না ভক্তের প্রাণে ব্যথা দিও না দিও না ভূমি ত্যজিলে এ পুরী শৃত্যময় ছেরি কেমনে গৃহে থাকিব বল না। আমি দীনক্ষ্ বাচ্বো যতদিন, এম্নি ক'রে পূজা কর্বো ততদিন, দাসেরি আলয়ে এস দীনের দীন-দয়াময়ী নামে কলঙ্ক রেথো না॥

# <u> বীযুক্ত নারায়ণচক্ত মুখোপাধ্যায়।</u>



( আগমনী—ভীমপলত্রী )
আর জাগাস্নে মা জয়া অবাধ অভয়া,
কত ক'রে উমা এই ঘুমাল।
ঘুম ভাঙ্গিলে একবার ঘুম পাড়ান ভার,
চঞ্চল স্বভাব চিরকাল॥
কা'ল উমা আবার এসে সন্ধ্যাকালে,
কি জানি কি ছলে ছিলেন বিষমূলে,
বিষমূলে স্থিতি করিয়ে পার্ম্বতী,
ঘামিনী জাগিয়ে পোচাল॥
শঙ্করীর সনে যদি কর্বি থেলা,
তবে যা গো এখন জাগুক মঙ্গলা,
দিজ রমাপতি বলে উমায় না ভাগালে
ত্রিজগতে কে জাগাবে বল॥

(বিজয়া-কালেংড়া)

গমন সময়ে উমা আয় মা একবার কোলে করি।
আবার কবে দেখা হবে কি জানি বাঁচি কি মরি॥
বাসনা সদাই মনে রাখিয়ে নিজ ভবনে,
মায়ে ঝিয়ে ছই জনে থাক্বো গো হ্থে শঙ্করী।
কপাল তেমন নয়, করি জামাভার ভয়,
কি জানি কিসে কি হয় কি ভাবিবেন ত্রিপুরারি॥

# প্রীযুক্ত নারায়ণচক্র মুখোপাধ্যায়।



# शृत्रवी।

ভূমি কার কে তোমার কারে ভাবরে আপন।
মহামায়া নিদ্রা-বশে দেখিছ স্থপন ॥
নানা পক্ষী এক বকে, রজনী বঞ্চয়ে স্থ্থে,
প্রভাত হটলে তারা করে দশদিকেতে গমন ॥
তেমনি জানিবে সব, আমাত্য বন্ধ্বান্ধব,
সময়ে পালাবে তারা কে করে বারণ॥

# আসোয়ারী।

সংসারেতে এসে বিদেশীর বেশে পাস্থশালায় পড়ে যায় যে জীবন।
মোহে মুগ্ধ হয়ে চাকচিকো ভূলিয়ে কিনিলাম কাঁচ ফেলিয়া কাঞ্চন।
বহু পরিশ্রম করি নিরস্তর, নানাবিধ দ্রব্যে সাজাইয়ে ঘর,
সেই ঘর ফেলে যেতে হবে কিছুই কিছু নয় ব্ঝিলাম এখন॥
সংসারের সার ছুর্গা নাম ধন, সঞ্চয় করিতে কর রে যতন,
যে ধনেতে ধনী যোগী ঋষি মুনি সেই ধন, সঙ্গে করিব গমন॥

#### দিন্ধ---থাম্বাজ।

সকলি তোমার ইচ্ছা ইচ্ছামন্ত্রী তারা তুমি।
তোমার কর্ম তুমি কর মা লোকে বলে করি আমি।
পক্ষে বদ্ধ করাও করী, পঙ্গুকে লঙ্ঘাও গিরি,
কান্দ দাও রাজত্ব পদ মা কারেও কর অধোগামী।
থে বোল বলাও তুমি, সেই বোল বলি আমি,
তুমি তন্ত্র তুমি মন্ত্র তন্ত্রসারের সার তুমি॥

# ব্রেকর্ড-কাকনী

# 

হামীর।

এই সময় ভজরে মন তারা।

গেলে এ সময় হবে অসময়,
শেষে স্থলে মূলে ভূলে হবি দিশেহারা॥
সময়ে সকলি হয় অসময়ে অনর্থময়,
রিপু ছয় মাঝে আছ ঘেরা।
কাল ফিরিছে অনুদিন তমু করিছে ক্ষীণ,
রাত্র গেলে দিন, হবি পরাধীন,
কমলাকান্তের কাছে এথন উপায় আছে,
রঞ্জি রসনায় কালী বল-না,
আছে শিব উক্তি. হবে মৃত্তি ভজলে ভবদারা॥

রামপ্রসাদী।

মা আমার বড় ভর হ'রেছে।
তথার জমা ওয়ানাল দাখিল আছে ॥
বিপুবণে চল্লাম আগে, ভাবলাম না কি হবে পাছে।
চিত্রগুপ্ত বড়ই শক্ত, যা ক'রেছি তাই লিখেছে॥
জন্ম জন্মান্তরের যত বকেয়া বাকী জের টেনেছে।
বার যেমনি কর্ম তেমনি ফল মা ধ্র্মফলের ফল ফলেছে॥

ললিভ---(বিজয়া)

চলিলে আনন্দময়ী আজি নিরানন্দ ক'রে ভূলিয়ে থেক না মাগো এ'দ আবার দয়া ক'রে।

# <u> वीयुक्त नात्रायनहत्त्र मूर्शानाधाव</u>



এই নিরানন্দ শিবে পুন আসিয়ে নাসিবে, বেন মাগো এই ভাবে পুজিতে পারি ভোমারে। হিম, পীত, বসস্ত, গ্রীম, বরবার অস্ত, পঞ্চশতুর পঞ্চত্বে প্রমন্ত হইলে শরং শুরু পক্ষ এলে, শুভ ষ্ট্রী সায়ংকালে, এ'স মা সর্ব্যক্ষলে শ্রীপদে জানাই কাতরে॥

#### সিন্ধ---থাম্বাজ।

তবে তারা তোমার ভ্রসা বল কে করে।

বিদ্যাপনার কর্মাফল ফলিবে আমারে॥

যে পথে চালাও তুমি, সেই পথে চলি আমি,

তবে স্থ তঃথের ভাগী কেন করিলে আমারে।

কমলাকান্তের এই নিবেদন ব্রক্ষময়ী

শমন সঙ্গট যদি না থাকিত নরে॥

দোষ করিলে রোষ করে না স্থাংটা মাগী কালী।
মায়ে যেমন করে যতন জান তো সকলি ॥
পাগ্লির মন যথন বেমন তথনি যায় ভূলি।
দোষ করিলে রোষ করে না তাকেই তো মা বলি॥
ডাকিনী যোগিনী কত ভূতের হলাহলি
দেবের প্রধান বিষ্ণু ঈশান তারাও ক্লতাঞ্জলি॥

অনস্ত মহিমা গো মা তব অস্ত কেমনে পায় ! তব অনুপায়ের উপায় কালী যারে রাথ পায় সেই পায়

# এমতী মালতীবালা দাসী।



ভক্তি ভাবে তব পায়, যে যা চায় তাই পায়
বামনে ইচ্ছিলেও সেও চক্সমা ধরিতে পায়।
পায়ের আশ্রয় নিলে, ইক্সপদ যে তুচ্ছ তায়॥
তাহে স্থর নর মুনি সবে, চরণে পুজিতে চায়
পাইলে তোমার পায়, ভব ভয় দুরে যায়

পায়ের কুপায় পায় পারের সে সত্পায় পারের শ্বরণ তিলে কুতাস্ত ভয় পায় তব পায়ে ধরি দীন রামে রেখে৷ গো মা রাঙ্গা পায়

কাফি-সিন্ধু—যং।
ভামের নাগাল পেলেম না লো সই
আমি কি স্থথে আর ঘরে রই ( আর )।
ভাম যথন বাজায় গো বাঁশী,
আমি যমুনা থেকে জল ল'রে আসি
আমার কাঁকের কলসী রইল কাঁকে,
ভামের বদন পানে চেরে রই॥

# শ্ৰীমতী মালতীমালা দাসী।

সাহানা-মিশ্র।

মনের আশা রইল মনে দেখা হ'ল না।
আস্'ব ব'লে ব'লেছিলে তবু এলে না॥
সানে সানে বাধা, সার হ'ল কাদা,
দেখার আশা ভেঙ্গে গে'ল হতাশ গে'ল না॥

#### শ্ৰীমতী মালতীবালা দাসী।



কালেংড়া মিশ্র।
হরজদি সরোজ পরে এ'ল কার বামা,
তিমিরনাশিনী বামা কালরূপে আলো করে॥
মুখ অতি স্থবিস্তার, তাহাতে রক্তেরি ধার,
কুধির মাংসেরি লোভে চারিদিকে পিশাচ ঘিরে॥

#### ভৈরবী।

কালী নাম জপ রে মন সদাই তুমি এই ভাবে। তোমার সঙ্গে সঙ্গে ফির্ছে শমন কথন বাঁধি ল'য়ে যাবে কালী নাম কর শ্বরণ, ভাব মায়ের ঐ শ্রীচরণ, থাক্বে না শমনের ভয় মন, ঐ চরণ ভাবিলে পরে॥

#### ভৈরবী।

তোমার দিব না শ্রাম বাইতে।
জুড়াতে এসনা রে প্রাণ এস জালাইতে॥
আসিয়া মম মন্দির, সদা যাই যাই কর,
আমার কি হয় না সাধ তোমারে দেখিতে।
অস্ত গেলে দিনমণি, নলিনী মুদে অমনি,
( ওগো ) কুমুদের কি হয় না সাধ ভামুরে দেখিতে॥

থাম্বাজ-মাশ্ৰ।

়ন ভাবি, ভাবি তাই, ভাবি আর ভাবিব কত। ( ওগো ) ভেবেছি ভাবিতে আছি এ ভাবা জনমের মত॥

# শ্ৰীমতী মালতী বালা দাসী।



ভাবি যদি প্রাণ যায়, ( আমি ) প্রাণ পাই ভাবনায়, ( ওগো ) কারে ভাবি কে ভাবায়, মিছে ভাবা অবিরত ॥

#### আসোয়ারি।

প্রাণ চাহে যারে মন তারে চাহে না।

অদর্শনে যত চুঃথ দর্শনে থাকে না॥

হেরব ব'লে মনে করি, সেরূপ আর নাহি হেরি,

( ওগো ) হেরিলে সকলি ভূলি কিছু মনে থাকে না॥

#### ভৈৰবা।

অস্থথে দিন যায় মা তারা জগদন্ধে তোমায় বলি।
আর কত কাল ডাক্বো গো মা ভেবে ভেবে হ'লেম কালী
আমি এমন পাতকী ছিলাম, জননীরে না চিনিলাম,
কেবল মাত্র এলাম গেলাম সত্য, ত্রেতা, দ্বাপর কলি॥

#### থাম্বাজ---মিশ্র।

কালা ভূমি ছল ক'রে অবলা মজাও। বাঁশার তানে এনে বনে, এপন বল ফিরে যাও॥ জয় রাপে শ্রীরাধে শ্বরি, কি বাশা বাজালে হরি। এখন কেন বংশাধারী, সরল প্রাণে ব্যাপা দাও ॥

# **শ্রীযুক্ত অঘোরনা**থ চক্রবত্তী।



যতন তোমায় করি কত তুমি ত কর না তত।
মন দিলাম প্রাণ দিলাম তবু হ'লেম না তোমার মনের মত
দেথ তে সাধ হয় মনে চাহ তুমি পাঁচ জনে
কিনেছে কি বা গুণে সে হৃদি-রতন
তুষিতে তোমারে আমি করিতেছি প্রাণপণ॥

ভবে এসে বেড়াই ভেসে অকুলে কূল দে মা ভারা।
আমারে ছয়টা রিপু দিবা-রাত্রি ক'রে দেয় গো দিশেহারা॥
প্রাণ যাবে মা ভেবে ভেবে, শেষের দিনে কি যে হবে,
প্রাণান্ত কাল উদয় হবে যন্ত্রণায় হইবে সারা।
কত জন্ম জন্ম ধ'রে
তুমি না করিলে দয়া কে তারিবে ভবদারা॥

অঘোরনাথ চক্রবর্তী। জন্মন

গোবিল-মুগারবিল এ নিরখি মন বিচারে,
চন্দ্র কোটি ভালু কোটি কোটি মদন হারে !
স্থলর কপালে দোলে, পক্ষ-মুগল নয়না,
অধরবিম্ব মধুর হাস, কুলকলিকদসোনা,
মণি-কুণ্ডল মুথরাক্তি, গুলি গোবিল পূজা,
কেশরত তিলকগই শোনে মরি মনজা
নবজলধর পিতাম্বর, গলে বনমালা তোঁহে,
নীলানচতুর প্রভু, জগজন মন মোহে॥



#### ভজন |

আনন্দ-বন গিরিজাপতনগরী,
মন কাহে নহি বাস লাগাওত রে মন।
কাশী সমান নহি দিতীয় পুরী, ব্রহ্ম আদি গুণ গাওত রে মন॥
হে মন, কাজি কাহে নেহি যে মহাদেব মন গাও রে—
মুক্তি-প্রবাহ বহে ঘাঁহা গঙ্গা, স্থরনর মুনি হর গাওত রে।
সথি জগদম্বা আদি মন জিউ, ভবকি মুক্তি করাওত রে,
অস্ত সময় শিউ শস্তু সদা জিউ, পরাথ মন্ত্র শোনাওত রে॥
বাঘ ছালে রাজা রাণী ভবানী, ডমক সিংগ্রা বাজাওত রে মন॥
তুলসীদাস ভজ গাওরে মহাদেব কালী পরম পদ পাওতে রে মন॥

#### ভৈরবী।

বিফল জনম বিফল জীবন জীবন-নাথে না হেরে।
খুঁজি সব ঠাঁই কোণাও না পাই কে হরিল মনটোরে॥
স্থােও ডালে বসি ডাকিছ পাথীরে, ডাকিছ কি সেই পরম পিতারে,
কি বলে ডাকিস্ ব'লে দে আমারে, ডেকে দেখি দদি পাইরে—
শুজারি ল্রমরা করি শুন্ শুন্, গাইছ কি সেই শুণাকর-শুণ,
শিখাও আমারে আমি রে নিশুণ, কি ছলে ভুলালে তাঁরে॥
কৈলাস স্থােক ওহে বিদ্যাচল, দিবানিশি ধ'রে কি হেরিছ বল
ক'রেছ কি হেরে জীবন সফল, বিশ্বস্তর বিশ্বেরে॥
স্থানীল গগন নীলাম্বর আবরণে, লুকায়ে রেখেছ বৃথি প্রাণধনে
খোল আবরণ বারেক নয়নে, হেরে মন প্রাণ জুড়াই



#### টপ্রা।

নজ্ব। দিল্ বাহার বেনিয়া ( লেলে রে ) কুল পিলায়ে চল্ জাতি সর সধিয়া চল্ জাতি। রোয়ে মিলা জায়েক রহা ওয়ে মন্তা বলুবুল্ তেরি তুম্ জানাবে আজানি সে মিলা জানাবে।

# ঐমতী পালাময়ী দাসী।

কীৰ্ত্তন।

বেলি ) ও কুজার বন্ধ হরি । আজ হ'তে
রাধানাথ আর ব'লবো না হে।

ওকে ডাকে দীনের রাজা, ছি ছি কেমন ক'রে,
কোন্ পরাণে পাশরিলে রাই মুথ ইন্দ্
তেমন পোণার মুথটি মনে পড়েনা বে,
মোর নাগরালী ( রাধে ), বালাই কিনোরী প্রেম বিনা কুতৃহলে
প্রেম শুধিব শুধিব শুধিব, কহিলাম বন্দী হইলাম ঋণে .

( তা'ত হ'ল না ধনী )

তোমার প্রেমের ঋণ শোধা কালো পাক্তে হ'ল না ধনী।

কীর্ত্তন।

রাই ধৈর্যাং, রহু ধৈর্যাং—২, প্রেমমন্ত্রী গরবিনী রাধে, রাধে গরবিনী।



ভূই অমন করে কাঁদ্লে যাওয়া হবে না (রাই)
ভূই অমন ক'রে প্রেমমন্ত্রী প্রেমমন্ত্রী!
ছটি চরণ-ধূলা (পথে) যাবার, বেলার, চরণ-ধূলা দে মোর মাথে
ওগো রাই ভূই ভাবিদ না রাই,
এনে দোব তোর ব্রজনাথে,
মম গচ্ছং মথুরায়—( এই যে ) আমি চলিলাম গো
ওগো দে দে চরণ-ধূলা দে, আমি চলিলাম গো
টোড়ব পুরী—ভারে কোন্ধনী বা রেথেছে গো।
আমি যাব কি ভারে বেধে আনবো,
টোড়ব পুরী, ভারে রাজা ব'লে ভন্ন কর্বো না গো।
টোড়ব পুরী, প্রতি প্রতীক্ষা, যাহা দরশন পাওয়ে

ব্রহ্মনাথের জামাদের এই ব্রহ্মনাথের—আমাদের সেই গোপীনাথের, প্রগো আমাদের ২—ও সেই রাধানাথের যব্ দরশন পাওয়ে।

#### কীর্ত্তন।

মধুপুর নাগরী, মধুপুর নাগরী—
হাসি কহত ফিরি—গোকুলে গোপ কোঁয়ারী
হায় গো, গোকুলে গোপ কোঁয়ারা ॥
কেমন ক'রে বা যাবি গো, কালালিনীর বেশে,
কেমন ক'রে বা যাবি গো, এমন কালালিনীর বেশে ২।
সপ্তম দ্বারে, পারে রাজা বৈঠত ২। তাঁহা কাঁহা যা বি নারী
সাহস দেখে লাজে মরি—বল কেমন ক'রে যাবি গো
হা হা নাগর গোপী-জাঁবন-ধন—কাঁহা নাগর—সেথা দিয়ে প্রাণ রাথ

# প্রীমতী পারাময়ী দাসী।



কোথার আছ হে—গোপীজনবল্লভ, হে মথুরানাথ—একবার দেখা দিয়ে দাসীর (প্রাণ) মান রাথ হরি হা হা নাগর।

কোথার আছ হে ছদর নাথ ছদর-বন্নভ দেখা দাও।
দেখা দিয়ে দাসীর মান রাথ হরি,
হা হা নাগর, গোপীজীবন ধন,
হতি ডাকত উভরার হে।—

কীৰ্জন ৷

শমন উরো রমণ মোহে তুল্লোরে প্রির সথি।
( সঙ্গিনী—মরম সথি )
আমার শমনে কেন নিলে না মা॥
( আমার ) শ্রাম শমন তুলেছে গো
শমন কেন নিলে না মা )
কি করি উপার বল না রে সথি,
তোরা উপার ব'লে দে মা॥
ওগো, তোরা আমার মরম সথি,
আমি কি সাধনে রুক্ষ পাব।
( তোরা উপার ব'লে দে গো )
ইহ দিবস যামিনী কৈছে নীরে বাহব।
( আমি ) দিবানিশি ব'দে কাদি'
এতিই তুথে হত্ত জীও গেল না, রে সথি,
বল প্রোণ কি স্থথে আছে॥
( আমার প্রোণ কৃষ্ণ হারাইয়ে )



#### কীৰ্ত্তন।

পরাণ প্রিয়া মোর জীবন প্রিয়া গো
কোথা বা গেলে—গুণের প্রিয়া কোথা বা গেল,
( আমায় অনাথিনী ক'রে—প্রিয়া কোথা বা গেল)
- আনহি নিক্সই কঠিন হিয়া গো
( যায় না কেন,—প্রাণ আমার যায় না কেন),
কি স্থাে বা দেহে আছে,—প্রাণ যায় না কেন,
প্রাণক্ষণ্ণ হারাইয়ে.—কি স্থােথ বা দেহে আছে,
প্রাণ যায় না কেন,—

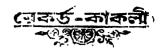
সব হাম বল প্রিয়া পরিহরি গেল গো
প্রিয়া দোষ-প্রিয়া গুল বৃক্তই না ভেল গো॥
নগর গোঁয়াইন্তু কিটে নথে লিখি গো,
নয়ন আঁধুয়া ভেল প্রিয়া পদ দেখি গো,
আমি আঁধুয়া দেখি,—প্রিয়া বিনে সব আঁধুয়া দেখি,
আমি বে দিকে ফিরাই আঁথি,—সব আঁধুয়া দেখি,
ভণয়ে বিদ্যাপতি শুন বর নারী!
বৈরব ধরতে চিতে মিলিবে মুরারি।

#### কীৰ্ত্তন।

প্রিয়া বিনে হিয়া মোর ফাটিয়া না যায় কেন। প্রিয়া কোণায় বা গেল— আমায় অনাথিনী ক'রে, (কোণা বা গেল)

নিলাজ পরাণ নাহি যায় গো—প্রাণ গেল না কেন

# শ্রীমতী পারাময়ী দাসী।



কি সুথে বা দেহে আছে প্রাণ গেল না কেন।
কি সুথে আছে গো প্রাণ, আমার প্রাণক্ত্ব্ব হারাইয়ে,
(নিলাজ) পরাণ কেন সঙ্গে গেল না,—তবেই জানতাম অমুগত।

#### কীর্ত্তন।

মরিব মরিব স্থি, নিশ্চয় মরিব।
আমার কালু তেন গুণনিধি কারে দিয়ে বা যাব.

কারে দিয়ে বা নাব।

না পোড়ায়ো রাধা অঙ্গ, না ভাসায়ো জলে;

দেখ যেন অঙ্গ পোড়ায়ো না গো.( ক্লফ বিলাস ক'রে গেছে )

অঙ্গ জলে ভাসায়ো না গো—

মরিলে তুলিয়ে রেখো তমালের ডালে॥

পরশ হবে. কালো ত পরশ হবে, ক্লম্ভ কালো তমাল কালো,

কালো ত পরশ হবে:

কালো বড় ভালবাসি, শিশুকাল হ'তে চিরকাল,

কালো বড ভালবাসি.

আমার কানু-অনুগত দেহ কালো ছাড়া ক'র না গো 🖟

#### কীন্তন।

অতি শাতল মলয়ানিল।

মলমু বাতাস ভাল লাগে না মা ( রুষ্ণ-বিল'সিতে )

यि भन्या हन्तन ( कृष्ध-विनामिट्ड)



মলর চন্দন্ মাথি গায়, ( বলি হায় গো )

ক্রম্ণ বিলাসিতে আমার শ্রীচন্দন শুথারে যায় মা।

ছিল মন্দ মধুর বহনা হরি বৈমুখী

এবার মলাম মলাম ( প্রাণে )

বৃঝি বাঁচ্লাম না গো ( সঙ্গিনী ) রুক্ত-বিলাসিতে
আমার ইহু মদনানল দহনে, প্রাণ বাঁচে না

( বলি হার গো রুক্ত-বিলাসিতে প্রাণ আর বাঁচে না গো )

কোকিল-কুল কুর্কতি কল কোকিলের গান ভাল লাগে না মা

( আহা গো ) বঁধুর মোহন বিনে ॥

#### কীর্ত্তন।

ধিকং রাজা ধিকং ধিকং রাজা শতং

একি (মাথার ) পাগ বেঁধেছে (রাই পদে লোটান )

মাথার পাগ বেঁধেছ, একি বলবস্ত

ছিছি আমরা দেখে লাজে মলাম,

তোমার এখন বিষয় বেড়েছে যে—

দে দিন মনে নাই হে, সে দিন তোমার মনে নাই হে—

দিন পেরে দিন ভূলে গেছ,

বলবস্ত পদাহিতে এবে বিষয় এত

তোমার একদিন নিধুবনে কোটালিতে

সকল আছে জানা, পাগ সেই দেখেছি,

(আমরা ত পাগ সেই দেখেছি, )

# য়ীমতী পালাময়ী দাসী।



কোটালি করা পাগ সেই দেখেছি,
( ওহে ) মথুরাতে ও রাজা হ'রে রেখেছ যে ঘোষণা,
ভরং ভেঙ্গে যে যাব, সাজান ভরং ভেঙ্গে যে যাবে,
ভরং দেখি কে পিরীত করে, ভরং ভেঙ্গে যাবে।
একদিন গলে ক্লত হ'রে নত রইতে চরণ ধরি,
তথন বল্তে কোথার বা যাব ( রাধা )
( কেউ ত আমার ল'বে না আমি কোথার যাব॥)

# কীর্ত্তন ।

নন্দ-কুল চক্রমা শিথি চক্রকালক্কতি।
আমি আর দেণ্তে পাই না, কেন, (কোণা গেল কেবা নিল)
মন্দ মুরলী বয় কোন স্থরেক্র নিল ছতি!
বালা কোণা বাজে, আর কে বা শোনে,
রাধা নামের সাধা বালা কার নাম ধ'রে বাজে,
সে দেশে কি রাধা আছে;
সার ধ্বনি নবান্থ্ন গরজন জিনি, আকর্ষে গোপী চাতকিনী
বাস রস তাগুবী সথি জীব রক্ষোষধি
ওরে কইরে আমার রাসবিহারী, নাচব বাছ ধরাধরি
জীরাসমগুল ক'রে,—
নিধির মন্দ্র স্বস্থাত্ম তব হস্তা হা ধিক্ বিধি
কেন দিয়ে নিধি হরে নিলি দত্তাপহারি হলি,—
রিধি তেরি মন্দ করি নাই রে॥



## কীৰ্ত্তন।

বছ দিন পরে বধুয়া আইল দেখা না হইতে পরাণ গেল ছিল প্রাণ তাই দেখা হ'ল বধু নইলে দেখা হ'ত না ছঃখিনীর দিন ছঃখেতে গেলে নথ্রা নগরে ছিলে ত ভাল, ( যা হোক তুমি ত কুশলে ছিলে.— তুমি ত কুশলে ছিলে ) বধু আমার ভাগা যা হোক বিচ্ছেদ বেদনা সহিলাম যত, পাষাণ হ'লে কেটে যেত। সব ছ খ মোর গেল হে দুরে হার ও রতন পেলাম হরে গগনে উদয় ইউক চক্র, মলয় পদন বছক মনদ।

#### केंद्रिन ।

একবার ব্রজে চল ব্রজেশর দিনেক ত'রের মত।
(ব্রজে বেতে যে হবে) (একবার ব্রজে যেতে যে হবে)
তোর মন মানেত —
(কেউ ত ধ'রে রাণ্বে না হে।
তোর মন মানে ত পাক্বে দেখা, নইলে আস্বে জত।
(ধ'রে রাণ্ব না হে) কেউ তো ধ'রে রাণ্বো না হে)
(কেউ ত কেউত কেউত ধ'রে রাথ্বো না হে)
(আমরা কেউত প'রে রাণ্বো না—তোমার কৃতা
কিছু বল্বে না হে)
যদি বল চল্তে চরণ ধূলায় পূস্র হবে!
(বল্লে বলতে পার) এখন বল্লে বলতে পার—

# 🗃 মতী পানাময়ী দাসী।



এখন রাজা হ'য়েছ বল্তে পার; (পাগ বেঁথেছে বল্তে পার)
(ওহে সে দিন তোমার মনে নাই—বল্তে পার)
না হয় ব্রজ গোপী—বঁধুহে—
না হয় ব্রজ-গোপীনয়ন জলে চরণ পাথালিনে॥
(বারি রেখেছে নাথ) (নয়ন বারি রেখেছে)
(তারা ঝারি পূরে বারি রেখেছে নাথ)

#### कौर्छन।

ধিক ধিক তোরে, নিঠুর কালিয়ে,— (ধিক্ রে পরাণ-বধু) বেধু তোকেও ধিক্ তোর প্রেমেও ধিক্) (ও সে—ও প্রেম কে শেখালে— তারেও ধিক্—তোর প্রেমেও ধিক্) কে তোরে এ বৃদ্ধি দিল। তারে কেবা সেধেছিল---(প্রেম কর প্রেম কর ব'লে কে বা সেধেছিল) কেবা সেধেছিল পিরীতি করিতে মনে যদি এত ছিল। ( कि वा मिर्सिष्टिन ) ( 'अरह वंधू कि वा मिर्सिष्टिन ) লাজের নাহিক লেশ---ছি ছি লাজের নাহিক লেশ--(ছি—বই আরু কি বল্বো হে ) (তোমায় ছি বই—) এত দেশে এলে অনল জালায়ে—পোডাইতে আরও দেশ হে ( 🚰 এন লাগে না.) ( এ দেশে আগুন লাগে না ) ( আজ হ'তে এ দেশে আগুন লাগে না )

# শ্রীমতী পানামরী

# <u>রেকর্ড-কাকলী</u> ক্ষুপ্তি

ষ্ণগাধ জলের মকর বেমন, না জানে তিত কি মিঠা,— চিনি সরবত দূরেতে রাধিয়ে চিটেতে আদর এত। (তোমার চিটে কি চিনি জ্ঞান নাই)

#### কীর্ত্তন।

वनि यनि किकिनिश, नखक्ति कोमूनी, ( চাও নইলে প্রাণে মরি, আমার পানে চাও, বা না চাও কথা কও. তা নইলে প্রাণে মরি:) (হে প্রিয়ে) হরতি দর তিমিরমতিযোরম। ( আমার ) মনের তিমির নাশ কর একবার, বদন চাঁদের উপায় কর। ক্ষুরদধর-সীধবে তব বদন চন্দ্রমা, ( হে প্রিয়ে ) রোচয়তি লোচন-চকোরম. আমার নয়ন চকোর ব্যাকুল হ'ল েতোমার) চাঁদ বদন-স্থধার আশে,ধনি আর চকোরের দোষ কি কাল সারানিশি উপবাসী: ্প্রিয়ে চাক্লীলে ৷ মুঞ্চনিয় মানমনিদানম সপদি মদুনানলো, দৃহতি মুমু মানসম আমি জলে জলে, জলে মলাম, ( এরাধে ) দেহি মুথ-কমল-মধুপানম্ ( কিবা ) ভ্রমসি মম জীবনং, ভ্রমসি মম ভূষণম্ ( হে প্রিয়ে ) ত্ব্যসি মম ভব-জলধি রত্ত্ম

## শ্রীমতী পান্নাময়ী দাসী।



## কীর্ত্তন )

চির দিবস ভেল হরি রহল মথুরা পুরী—
( কেন এল না—এল না এল না—আর ত এল না সথি )
( প্রিয়ে কাল আস্বো ব'লে কেন এল না,—এল না আরত
এল না সথি )

অতএব হাম বৃঝরু অনুমানে
( অনুমানে বোঝা গেল ( সথি সার আস্বে না হে )
আর প্রিয়া এল না গো সন্ধিনী॥

# কীৰ্ত্তন ( মান ) !

সে হেন রসিক নাগরের সনে ( রাই ধনি, গরবিনী, প্রেমময়ী )
কেন বা করিলি কলহ।

তুই আগে না বৃঝিলি ( আগে পিছে ভাব্লি না রাই ) মানেতে মজিলি, অব কাঁহে মুঝে বলহ॥

( বল বল এখন কারে বা বল )

( তোমার মানকে বল খ্রাম এনে দিতে )

(ধনি! নারিলি পিরীতি রাখিতে)

( রুফ্ট প্রেম রাখা কি কথার কথা)

একি প্রতিদিন, কলহ করিবি, নারিব মোরা সাধিতে॥

( মাঝে থেকে মোদের প্রাণ গেল )

একবার তোরে সাধি আর তারে সেধে

এমন ক'রে পারব না গো।

ওগো তাদের কারা নিতুই মান॥



#### কীর্ত্তন।

মধুনাগরি যোষিতা সবহুঁ স্থরত পণ্ডিত: ( তারা রূপে যেমন আর গুণে তেমন ) কেউত রস পণ্ডিতা রূপে যেমন গুণে তেমন )

বাধি মন স্থুরত-রতিদানে॥

(তারা রতি দানে বেনেছে গে ) সবহাঁ রদ পণ্ডিতা

( তারা গুণ জানে— ওগো জারা ( আমাদের মনমোহনের ন ভলায়েছে গো )

( তারা গুণ জ্ঞানে— গুণের সিন্ধ; কোন গুণে ক'রেছে বন্ধা ) মোরা গ্রাম্য গোপ বালিকা, সবহু পশুপালিকা ( আমরা আইারিণা, আর ক্রপিণা ) ক্লফ্ড সেবার

কি বা জানি

হাম কিরে শ্রাম সম ভাগ্যে।
(তেমন ভাগ্য কি আমার হ'বে) আমরা ক্লফ স্থাপের
(স্থাী হ'ব) (আমরা এমন ভাগ্য কি ক'রেছি।
ক্লফ্ষ সেবার দাসী হ'ব এমন ভাগ্য কি ক'রেছি।

#### কীর্ত্তন।

একবার যা গো সহচরী, মথুরা নগরী, হামারি বচন শুন। একবার যা, গিয়ে জেনে আয় গো আমার বৃধু এই দেশে আদে কি না আদে বারেক বারতা জান।



( যা যা ) গিয়ে জেনে আর গো

আনক প্রকারে ব্রাইবি তারে, যদি নাছি আদে সে,

( আমার হ'য়ে ) তারে ৩'টো কথা ব্রায়ে বলিস্মরম সথি )

এবার ব্নিয়ে নিশ্চিত, করিব বিহিত, মনেতে আছয়ে য়ে
মিছে আশে আশ, করিয়ে প্রয়াস, রহিব কতেক দিন,

( আজ কাল ক'য়ে গো ) তার আশার আশে,
প্রাণ ক-দিন বাচে ( সক্ষিনী )

আমার যা আছে কপালে ( বলিও গো স্থি গো )

করি এই কালে আমি মিটাব আথরতি

( স্থি আমার হলো পিরীতি মরণ ) ( ওগো )

### কীর্তন ( মাথ্র )।

যশোমতী নক অন্ধ সম বৈঠত

(তাদের কেদে কেদে নয়ন গেছে, তারা নয়ন তারা হারায়েছে)

সগনে উঠা না পারে হে

(তোমার মায়ের উঠিবার শক্তি নাই, বসিলে উঠিতে নারে

(তোমার মা যশোমতী) ( কেদে কেদে ছ'টা নয়ন গেছে )

সারি শুক পিক কোট নেহি বোলত (শুকের মনে স্থুখ নাই হে)

কোকিল না পঞ্চম গায় হে—

(তারা স্থুল গান করে না ) (তারা নীরব হ'য়ে বদে আছে )

বিরহিণীর বিরহ কি কহব হে মাধ্ব,

তোমার মেমন রাই আর তেমন নাই হে॥

# ব্রেকর্ড-কাকনী

#### কীৰ্ত্তন।

ধনী ভেল মৃচ্ছিত হারাল গেয়ান।

সারা নিশি কাঁদি সথি মুদিল নয়ন॥

(কেন এমন হ'ল) ধনী কেন এমন (হ'ল রাই!)

(এই যে ধনী কণা কইতেছিল)

কে লেপিবে চন্দন রাধারই অঙ্গে—

(আর কি প্রাণ জুড়াবে বল)

কে ভাসাবে জলে সথি, কে যাবে সঙ্গে।

(কৃষ্ণ-অন্তরাগী ম'লে ভাসবে কিরে)

কীর্ত্তন।

নৃপতি স্থথ-বাঞ্ছা যদি

ব্ৰেক্ত কি আশা মিটে না হে—
গোকুলে বসতি কেউ নন্দংঘাষে কয় না হে
সেথা ছিলে রাজার ছেলে,
হেপা তোমার আর কি আছে।
যদি রাজা হ ওয়ার সাধ ছিল হে মনে;
নন্দকে বল নাই কেনে।
আমাদের রাই রূপনী হ'তে কুক্তা বড় স্থন্দরী;
বুকে পিঠে আছে হে কুচগিরি;
ছি লাজে মরি—
ছি ছি কালা মুথে লাজ বাস না॥



#### কীর্ত্তন।

অন্ধর-তাপ তপনে যব জারব।

যদি জ্বলে গেল গো ( অরুর ) যদি জ্বলে গেল গো,

কি করব বারিদ মেঘে, অন্ধুর বিচ্চেদ তপন তাপে

যদি জ্বলে গেল গো।

ইহ নব-যৌবন বিফলে গোঁরাইন্ন

( যদি নব-যৌবন বিফলে গেল গো)

কি করব সোপি আলেহে।

হরি হরি কিয়া মোর দৈব ত্রাশা

সকলি করমের দোষ ( আর কার দোষ নাহি দেখি .

#### কীর্ত্তন।

সকলি করমের দোষ।

সংপ্রতি পুরপতি ভূপতি মহামতি হে ( একি সং সেজেছে ! ওহে রাজা, ওহে সে দিন তোমার মনে নাই হে বঁধু, এখন বিষয় বেড়েছে, ও নিরদয় )

তাহা কাঁহা পশুপতি ভাম হে!
তাল দল শিক্ষা বংশী মুরলীধর হে!
( তাল পাতার শিক্ষা বাজাইতে হে,—দাদা গ'ড়ে যে দিত,
বলাই ক্রীনা গড়ে যে দিত, সে দিন তোমার মনে নাই হে—
তোমার হিন্না কত রজনী ভাম হে।

# <u>রেকর্ড-কাকনী</u>

#### কার্ত্তন।

প্রেম কি অঙ্কুর।

আত যাত ভেল না ভেল যুগল পালাসা॥

প্রতিপদ চাদ উদয়, যাইছে যামিনী;

স্থ নব ভগইতু নৈরাশা ॥

অবমুঝে নিঠুর মাধার, আর নাই আর নাই

( এমন নিঠুর আর নাই আর নাই,

স্থি আমার প্রিয়ার মত )

( তেমন নিঠর আর নাই আর নাই )

অব্ধি রইল, এই অব্ধি অব্ধি হোল,

( স্থি ক্লফ্ত প্রেমের অব্ধি হোল ) ॥

तक कारन है। में, हरकातिना वक्क वे,

তাগে আমি জানি না.)

চাদ চকরে বঞ্চিবে স্থি জানি না---

আগে আমি জানি না.

(স্থিকে জানে,)

। দে দে কু-জন ব'লে তা ত জাতি না,

জানিলে প্রেম করিতাম না,

( অগে আমি জানি না, )

স্থ-জন ভেবে প্রাণ সঁপেছিলান, আগে জানি না

সে যে কু-জন আগে জানি না )॥



কীর্ত্তন।
কিবা অমুভব কামু,
পিরীতি অমুমানিয়ে—
বিঘটিত বিহি পরমাণ গো!
(পাপ পরাণ মোর, আর জানে না,—জানে না।
সদা কৃষ্ণ অমুগত—আর জানে না,—জানে না।
বিঘটিত বিহি পর্মাণ গো।

আন নাহি জানত (প্রেম রুক্ত বই জানে—না)। কান্থ কান্থ করি ঝুরি গো'— (কোণা রুক্ত রুক্ত ব'লে, ঝুরে যে মলাম গো,

কীর্ত্তন।

স্থি হা রুক্ত হা রুক্ত ব'লে, সদা ঝুরে যে মলাম গো ) ॥

ছি ছি কি দারুণ মানের লাগিয়ে বঁধুরে

হারায়েছিলাম।

এমন বধু কার বা আছে, বধুর মত এমন বধু—
কার বা আছে—

একি খ্যামল-স্থন্দর রূপ মনোহর, অ.মি তার বিনে পরাণে গেলাম সথি জুড়াইল মোর হিয়ে—

> আমার বঁধুর অঙ্গে স্থগন্ধ সৌরভ তাহার বাতাস পেরে, তোমরা স্থীগণ, করহ সিনান, পঞ্চ-গব্য দিরে শিরে

পাপিনী পরথ ক'রেছে ) আমার বধুর যত অমঙ্গল সকল যাউক দূরে॥

२०३

## <u>রেকর্ড -কাকলী</u> -৩২জেজ

কীর্ত্তন। উঠিতে কিশোরী বসিতে কিশোরী. কিশোরী ক'রেছি সার। আমি রাধা বই আর জানি না হে---আমার রাধা ভজন রাধা পুজন (ওগো আমার) কিশোরী ভক্তন রাধে প্রেমমরী আমি রাধা বই আর জানি না হে---( গরবিনী কিশোরী ভজন, কিশোরী পুজন, কিশোরী গলার হার॥ দেহেতে রাধিকা, প্রেমেতে রাধিকা, রাধিকা আর্তি পালে। রাধা বই আর জানি না ধনি। রাধা মন্ত্রে উপাসনা. ওগো আমি রাধাকে ভব্তিয়ে রাধাকান্ত নাম ( আমি ) পেয়েছি অনেক আশে : ( খ্রামের বচন মাধুরী গুনিয়া

#### কীর্ত্তন।

প্রেম বিষে বাঁচি না )।

চান চাঁদ চাঁদে চাঁদের বামে চাঁদ-বদনী দাঁড়াল।

দাঁড়াল রে বিনোদিনী যেন কাল মেঘের কোলে সৌদামিনী

আধ গলে গজমতি রে আধ বনমালা,

আধ গৌর ভেল আমার আধ চিক্ন কালা—



আধ অলিছে যেন রোদের শিখা, তমাল বেড়িল যেমন ( হায়রে আমরা )

দোঁহ মূথ স্থলর রে—কি দিব তুলনা
কান্ত মোর পল্ল-মণি রাই কাঁচা সোনা ॥
কাঁচ বেড়া কাঞ্চনেতে—কাঞ্চন বেড়া কাঁচে,
রাধাশ্রাম গুঁহ তন্তু একই হ'রে আছে—
দোঁহ মূথ ফিরাফিরি রে—ফিরাফিরি বাহ,
যেমন শারদ পূর্ণিমা চাদ গ্রাসিল রাহ ॥

## কীর্ত্তন।

বল না রে সথি কহ না রে সথি !

আমার প্রিয়া কোন্ দেশে গেছে গো
(আমার অনাথিনী ক'রে, প্রিয়া কোন্ দেশে বা গেল গো)
(আমার প্রিয়া কোন দেশে বা গেল গো)

মরণ আর হয় না, তার আশা যায় না— প্রিয়া কোন্ দেশে যায় আমারে কেউ বলে না।

( দুতী ভংসনা )

পুন:হ মিনতি করি কান রে
নাগর কত কেঁদে, কেঁদে ( খ্রাম )
রাইয়ের দয়া পাবে ব'লে—
হাম হয়া অমুগত, তোঁহে ভাল জানত,
ব্রজের বাসী কে না জানে,—

### মাষ্টার মদনমোহন চট্টোপাধ্যায়।



হাম তুরা দাস ব'লে (প্রেমমির !)
( ওছে ) তা তুমি কি জান না, প্রেমমির !
মহা প্রেমের স্বরূপিণি !

( কাঁহে দগধ মুঝে প্রাণ রে )
তুঁহ যদি স্থলরি মঝু মুখ না হেরবি,
( তোমার রাঙ্গা চরণ ছেড়ে )
কোথা ধাব—বল বল আর আমি কোথা যাব

( গাম প্রাণ গোকুলে চার হে )
তুহা বিনে জীবন কোন কাজে রাখব
আমি এ ছার পরাণ রাখ'ব নাহে ॥

## মাষ্টার মদন মোহন চট্টোপাধ্যায়

দেশ-খাম্বাজ।

নীল গগনতলে নিভ্ত নিশার কোলে,
নীল নীরদ জলে নীরব নীথর গায় !
নীল পাপিয়া দল, নীরথি জোছনা জাল,
নীরবে উড়ে উড়ে ফুলে ফুলে মধু থায় ॥
ঝিকি মিকি ঝিকি মিকি তারা হাসিছে,
পিয়া পিউ পিয়া পিউ পাথী গাহিছে,
তাথিয়া তাথিয়া থিয়া নাচে স্থাকর পিয়া
মৃত মৃত পরশিয়া সোহাগে মলর বয় ॥

#### মাষ্টার মদনমোহন চটোপাধ্যায়।



ভূমি ভাব চো কেন বিনোদিনী মনেতে।
আমি এখনি হইব কালী আয়ানের তরেতে।
আমি তাকে বাঁশা, ধ'রব অসি জেনো তোমার তরেতে
কেলে বনমালা, মুঙ্মালা লব আমি গলেতে।
(আমি জয় রাধে ব'লে)

## কল্যাণ--পূর্বী।

সন্ধ্যা সমীরে থরে থরে কে দেছে মধুর বাস।
সরসীর বুকে কুমুদিনী মূথে কে দে'ছে মধুর হাস।
চাদে কে দিয়েছে জোছনা রাশি,

প্রেমিকের গলে পরাতে ফাঁসি,
কামিনী অধরে কেন স্থা ঝরে কেন সেথা বহে সদা মধুমাস।
এ ভব ভবন কেন বা স্থানর, কেন সেথা ক্ষরে সদা রবিশশি কর,
কেন বা তটিনী কুলু কুলু ধ্বনি চলিছে সাগর-পাশ।

#### কীর্ত্তন।

কোথা হে প্রাণ সথা কোথা তুমি দয়াময়।

অসময়ে রাসবিহারী ঠেলোনাকো পায়।

( আমায় দেখা তুমি হরি দেবে না কি

আমার অসময়ে দাও হে সথা )

আমি ভাল জানি হরি বিপদকাগুারী অসময়ের সথা তুমি

বংশাধারী,

তবে কেন প্রাণসথা সথা হে দিতেছ না দেখা, ভূলেছ কি অভাগায়।

### শ্ৰীমতী ব্ৰহ্মবালা দাসী।



হরি তুমি ভোল তাতে নাইক ক্ষতি, যেন তোমাতে হে থাকে মতি, আমি ডাক্ছি ভোমায় ওহে অনাথের নাথ অসময়ে আমি ডাক্ছি তোমায়

> দেখি পাই কি না পাই তোমার দেখা। ওহে দীননাথ দেখি পাই কিনা পাই তোমার দেখা॥

## শ্ৰহ্মতী ব্ৰজবালা দাসী।

সিদ্ধ।

তুমি যদি ভালবাস প্রাণ আমার মনেতে
তবে কি বিচ্ছেদ হয়, এ জীবন থাকিতে ॥
বাদী যদি হয় পরে—পরে কি করিতে পারে :
ভাল্প থাকে লক্ষান্তরে কমলিনী জলেতে ॥

#### বেহাগ।

দিনে দিনে গেল দীন-তারিণী তারা।
হ'ল না হ'ল না মা তোমারি সাধনা,
গেল না গেল না মম বিষয়-বাসনা,
অনিত্য স্থেণতে মজে হ'রে তারা হারা॥
এখন রে মৃঢ় মন, মা নাম কর স্মরণ,
সে নাম করিলে মুখে আসিবে না শমন,

#### শ্ৰীমতী ব্ৰহ্মবালা দাসী।



( ওমা তারা ) কত দিনে হব পার।
তারা তোমা বিনে এ দীনের গতি নাই মা আর॥
চাহ করুণা-নয়নে বারেক দীন জনে,
হ'ও না মা কাতরা, রুপাবিন্দু বিতরণে—
দেহ শ্রীচরণ দাসে, মরি মা ত্রাসে, নিকটেতে এল কাল॥
( কাল ভর হারিণি )॥

#### স্থরট-মিশ্র।

বমুনারি জলে মোর কি নিধি নিলিল।
ঝাপ দিরা পশি জলে, যতনে তুলিরা গলে,
পরেছিত্ব কুতৃহলে যে রতনে—
নিদ্রার আবেশে মোর, গৃহেতে পশিল চোর;
কাটিল কণ্ঠেরি ডোর, মণি হ'রে নিল॥

আজি এসেছি নাথ পারে ধ'রে চলে যাব।
হাদে রেথে পা চ্'থানি প্রেমজালা নিভাইন॥
এ গভীর বনমাঝে একলাটী চলে যাব,
তব নাম শ্বরি নাথ তব গুণ গাইব॥
পাতার পাতার তরু-লতার তব ছবি হেরিব,
নাথ তব চারুছবি পাশরিতে নারিব;
কৈদে যদি স্থুথ পাই তবে কেন হাসিব॥

## শ্ৰীমতী ব্ৰজ্বালা দাসী



#### সাহান। '

ভালবাসি ব'লে কি রে এত হৃঃথ দিতে হয়।
অবলা সরলা বালা কত জালা প্রাণে সয়।
ভালাবেসে এই হ'ল, মরণ নিকটে এল,
প্রাণনাথ বদন ভোল, চেয়ে দেখ রে আমায়।

#### বাগে-শ্ৰী।

নাথ তুমি কয়েছিলে, তোমা বই আর কারু নই হে।

সে কেবল কথার কথা তে—

না বুঝে করিলে প্রেম রাখিতে নারিলে তে—

কলক্ষের ডালি দাসীর মাথায় তুলে দিলে তে॥

থাস্বাজ মধ্যমান।
তোমারই তুহনা তুমি প্রাণ, এ মহীম গুলে।
আকাশের পূর্ণশনী সেও কাঁদে কলঙ্ক-ছলে॥
সৌরভে গৌরবে, কে তব তুলনা হবে;
আপনি আপন সম্ভবে যেন গঙ্গাপজা গঙ্গাজলে॥

### পূরবী।

প্রাণ সঁপিরে পরের হাতে ভেবে ভেবে প্রাণ বাঁচে না না বুঝে প্রেম ক'রে শেষে সইতে হ'ল এত যাতনা॥ পরের মন পাব বলে, প্রেম দিলাম হাতে তুলে নতুন পেরে গেল ফেলে তুলে কলন্ধ-নিশানা॥

## **এ**বুক্ত নিকুঞ্জবিহারী দত্ত।



#### ভৈরবী।

রূপের শোভা দিন হুই চারি গুণের শোভা চিরকাল, রূপেতে নয়ন ভোলে, গুণে করে মন পাগল। শিম্লের ফুল দেখিতে লাল মনে করি আছে রে মাল পাপ্ডি ভেঙ্কে দেখিরে প্রাণ, মধু নাই ভার শুধুই তুলো

## ঐাযুক্ত নিকুঞ্জবিহারী দত।

#### থাম্বাজ-য়ং।

করণা করিরে রুপাময়ী ! আমায় নিজগুণে দয়া কর গো শ্রাম। আমি জানি না ভজন, জানি না সাধন, অতি অভাজন অধম গো মা, আমায় নিজগুণে দয়া কর গো শ্রামা জনমাবিধি আমার কুপথে ভ্রমণ, কথন করিনি সাধু আলাপন, থাকি কুচিস্তায় রত সর্বাক্ষণ; আমার পারের উপায় কি হবে মা। এ ভবজলিধ কেমনে তরিব, শমনের দায় কেমনে এড়াব, সদা পাপে রত কিসে ত্রাণ পাব, অকুল কাগ্রায়ী তুমি মা। এই দীন হীন তার নিজগুণে, এসেছি তোমার ছ্র্গানাম শুনে, বিনা ও চরণ তরী তরিব কেমনে; জননি! পাবাণী হ'য়ে না মা।

কাসেংড়া—যং। দিন বেঁ আমার যায় মা কালি। ভেবে দেহ কালী হ'ল। ঘরে ফিরে নে যা মাগো আর কত কাল ঘুরুবো বল॥

## বেকর্ড-কাকলী

ছ'বেটা গাঁট কাঁটা জুটে, আমার যা ছিল সব নিল লুটে; ( এখন ) ম'লাম শুধু বেগার থেটে বুথা এ জীবন গেল॥ দারা পুত্র দিরে মোরে. ওমা ভূলাচ্ছো কতই আমার থাক্ব না আর অন্ধকারে জেলে দে মা জ্ঞানের আলো॥

## পীলু--যৎ

উঠ গো করুণামরি ! খোল গো কুটর দার ।
আঁধারে হেরিতে নারি হৃদি কাঁপে অনিবার ॥
তার-ম্বরে ডাকিতেছি তারা তোমার অনিবার,
দরামরী হ'রে আজ একি হেরি ব্যবহার,—
সম্ভানে রাথি বাহিরে, আছ শুরে অন্তঃপুরে
মা মা ব'লে ডেকে মোর, হ'ল দেহ অতি-চর্দ্মদার ॥
থেলার মন্ত ছিলাম ব'লে, বৃঝি মুখ বাঁকাইলে,
একবার চাও মা বদন তুলে, খেলিতে যাব না আর॥
দীন-রাম বলে ও মা, কার কাছে যাব আর;
মা বিনে কে ল'বে এই অক্কতী অধ্যের ভার॥

সিন্ধ-ভৈরবী—একতালা।
সম্পদে সে পদে ভূলে বিপদে প'ড় না।
অনিত্য বিষয়াম্পদে পদে পদে যাতনা॥
যদি পাও হে রাজ্ঞাপদ, সেও নহে নিরাপদ;
তাই বলি চির অভয়-পদ শ্রামাপদ ভাব-না
যে পদ পঞ্চানন হৃদে, ক'রেছেন ধারণ
সেই পদ ভাব মন ভোর এ আপদ রবে না॥

## শ্রীমতী উষাবালা দাসী।



ঝিঁ ঝিঁ ট—একতালা।
তারাপদ ভাবনা যে করে তার আপদ কোন্ থানে।
শিব রেথেছেন শীতল পেরে, ছদ্-কমলের মাঝখানে॥
নইলে সে ত বাচ্ত না অনল-সম সংল্-প্রাণে।
হারিয়ে সে ধন, নাম হারাধন, রইলি ভূলে আন-মনে;
( তুই ) একাস্ত-চিত্তে ডাক রে মাকে, যা আছে করুন তাঁর মনে॥

মলার।

রাক্ষসী প্রেয়সী শশী, গজদন্তে লাগিয়ে মিশি
আমার গলার আস্ছে কাঁসি
আর বলা হ'ল না।
তোমার রূপের বালাই নিয়ে,
যে মরে সে মরুক গিয়ে;
আমি নাকে তৈল দিয়ে ছড়াই হস্ত-পা॥
তোমার কটা চোথের যে কটাক্ষ, দেখে হলেম করপক্ষ
এক হাঁপেতে লাগে মোক্ষ, বাবা রে বাবা রে॥

## উহাবালা দাসী।

शिका।

পার কর হে বংশীধারি !
তরক্ষেতে রঙ্গ কর মুরলীধারী ॥
আমং। নবীনে বিনে, গতি নাই তোমা বিনে;
তরণী ডুবাও কেন,—ক'রে কত ছল চাতুরী॥

## **बीमडी** উषावाना नामी



#### থাৰাজ।

গভীর ষমুনার জলে, ভূব্ডুব্ প্রায় তরী।
অন্থির হ'তেছি প্রাণে অবলা আতক্ষে মরি॥
চতুর লম্পট শ্রাম, রাধারে হ'ও না বাম'
কলকে ভূবিলাম হে শ্রাম, মন সমর্পণ করি॥
প'ড়েছি শ্রাম ঘোর অকুলে লও আমার কুলে ভূলে।
বিকাইব বিনামূলে, ও রাঙ্গা চরণে হরি॥

#### সিন্ধ।

আমি যদি শ্রামের দেখা পাই

তবে মনসাধে বাঁশা বাজাই ॥

একবার বাজাও জনম-শশা, আমার মন চোরের সঙ্গ লই ।

শ্রাম বাজার রাধা ব'লে—

আমি বাজাইব কৃষ্ণ ব'লে—

মথুরাতে নদীর কূলে, আমার প্রাণ-বধুর প্রাণ ভুলাই ॥

## ভৈরবী।

এবার বৃঝি আমার ভাগ্যে পিরীত সইল না।
সাদা প্রাণে কালী দিলে তোমার ভাল হবে না॥
শুন ওহে শুণনিধি, কেন কর অপরাধী
যার জক্ত করি চুরি সেই হ'লো বাদী—
এক ক'রে যোগাই মন, তবু ত তার মন পেলাম না।

## রেকর্ড-কাকলী

#### থাম্বাজ।

এমন নয়ন-বাণ, কে তোমার ক'রেছে দান।
দর্পণে হেরিলে আঁথি, আপনি হবে সন্ধান॥
নয়ন কটাক্ষ-ভূণ, তাহে কটাক্ষ নিপুণ,
বিধি যদি দিত গুণ, বধিতে অবলার প্রাণ

#### থাম্বাজ-মিশ্র।

দূটেছে কমল-কলি আপনি এসে জুট্বে অলি সে কেন শুন্বে মানা মিছে কেন বলাবলি॥ গোপনে কমল বিকাশে, মনে মনে মন জানে তাই ল্মর আসে, যারে যে ভালবাসে সে যায় তার কাছে; জেনো লো প্রেম যেথানে, সেথানে চলাচলি॥

#### সিকু---মিশ্র।

আমার আফ্লাদে প্রাণ আটখানা !

( ও প্রাণ ) কেমন কেমন করে,
আমি বৃঞ্তে পারি না ॥
আমি আসছি ধান দুর্ব্ব নিষে,
মামুজী কর্বে বিষে,
গলাগলি চলাচলি কর্ব ছ'জনা ॥

## ব্রেকর্ড-কাকলা ব্যুক্ত

## শ্রীযুক্ত বিংকে মিত্র।

চাষার প্রেম। (কমিক)

সোণার ফসল ক্যাতের মাঝে চিক্ চিকারে হাসে।
ও তোর কাঁচা সোণার বরণথানি পরান ভা যে ভাসে।

ও বৌ লো বৌ

সাঁজের বেলি আসমানেতে

কালের দড়াদড়ি।

আল্তা মাথা পা-হুথানি তোর কস্তা পেড়ে শাড়ী।

ও বৌ বৌ লো

বনের ধারে হরিণ ছানা কর্ছে ছুটাছুটী।
দেখে মনে পড়ে বৌরে—তোর চারু নয়ন চু'টি।

ও বৌ লো বৌ

ত্বতলে তোর মুথের মাঝে নোলকটা জবর। আর চাউনি থানার ধারটা যেন কাল্ডেরি ঠোকর॥

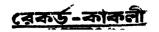
ও বৌ বৌ লো

যে ধারেতে চাই'রে বৌ যে ধারেতে চাই। ও তোর মিশি দাঁতের হাসিথানি দেগ্তে যেন পাই।

ও বৌ ও বৌ লো—

#### ক্মিক।

কই রে কই রে কই রে আমার সাধের নাপিনী। কে'ন কাজে গিয়েছে সে যে কিছ না জানি।



পাড়ার লোকের আক্ষেল দেখে, থাকি আমি মনের হু:খে, শিউরে উঠি থেকে থেকে ভাবি দিবা যামিনী। ভাড় বগলে বেড়াই ঘুরে, মনটি আমার থাকে ঘরে, শেষ দশার কি হবে আমার কিছু না জানি॥

> কমিক গান। থাবার মাহাত্মা—

আহা কি আছে এমন মোগুার সমান রতন।
মন্বরার দোকানে বাহা ক'রেছে শোভন॥
লুচি গুজিরা গজা জিলিপি নিখুঁত থাজা
পাস্তরা, রসে ভাসা মন বিমোহন।
মনোহর মনোহরা রসকরা রসে ভরা,
বরফিতে মন-হরা নম্বন বিমোহন।
এ সব যদি থেতে পাই মোক্ষপদ নাহি চাই—
বর্গে যেতে নাহি চাই—যাবত জীবন॥

ক্ষিক গান।

( খ্রামা মায়ের দোকান)

খ্রামা কে তোমারে পারে চিনিতে।

আহা মরি মরি কৈলাসেশ্বরী কি দোকান তুমি মা ব'সেছ পেতে।

থরে থরে কিবা রেথেছ জননী

জেলিপী কচুরী সন্দেশ পাঁপড় মুড়ী

ভামি মরেছি মা ঐ মনোহরাতে।



নিমকী মিঠাই গন্ধা ছেনাবড়া থান্ধা মদ আফিম গুলি চরস চণ্ডু গাঁন্ধা সব রেথেছ মা করে তান্ধা তান্ধা বাকী আর কিছু নাইকো এতে॥

## ननीलाल यानाळ्यी।

দীন ছনিয়া কো মালিক খোদা নেওয়া দেওয়া সবি তার।
ছথের স্থথের আসা যাওয়া যেন জোয়ার ভাঁটা দরিয়ার॥
তব্জায় বসে আমীর বাচছা, প'রে শাল দোশালা সন্মা সাচচা,
হ'লে পরে খোদার ইচছা, শাল হবে তার টেনা সার।
দেণ্ছো যেজন ঘুরে মরে দারে দারে ভিক্ষা করে।
কাল সে তব্জায় বস্তে পারে প'রে সন্মা চূড়িদার॥
সাচচা ধর ঝুঠা ফেলে, তাতে খোদার হয়া মেলে,
নইলে গুটির মতন জড়িয়ে জালে ক'রে মর্বে হাহাকার॥

রতন দেখিয়ে অবাক্ হইরে চেয়ে থাকে সবে সাগর পানে।
কোথা হ'তে ওই রতন সে পার বল দেখি কে জানে ?
গাছে গাছে ওই কুস্থমের কলি, বল কার প্রেমে পড়িতেছে ঢলি,
কুলু কুলু রবে গিরি নিঝ রিণী গাহিছে কি গান মধুর তানে॥
ওই যে স্রয় ভাসিছে আকাশে, কেন চলে যায় কেন ফিরে আসে,
ধরাপানে চেয়ে কেন বল হাসে নিমগন বল কাহার কুশনে॥



गका---विका---विका

তোমার শুল্র বরণ, চক্রণমন—তোমা বিনা দব ফাঁকা॥

যারে তুমি হও প্রদন্ধ, ধরায় দে গণ্য মান্ত, হোক্না কেন বুদ্ধিশৃত্ত,
লোকে কবে ধল্ত ধল্ত, বলে পাণ্ডিত্যে কি ভাব মাধা।
( আবার ) বারে তুমি হও বিমুথ, ত্নিয়াতে তার কোণায় স্থ।
মাগ বোঝে না প্রাণের তথ, ভূত ব'লে পুত চায় না মুথ,

(ভাবে) বৃথা ভবে প্রাণ রাথা !

নানা সাজে ছনিয়া মাঝে পেতে কুহুক কাঁদ.

কি—থেলা—থেল রূপটান!

দানধন্মে ক্রিয়াকন্মে কারে বা মাতাও,
বিলাস রঙ্গ-রসে ( আহা ) কারে বা ডুবাও,
কোথা বাধিয়ে লড়াই রক্ত-স্রোতে মেদিনী ভাসাও,
কোথা বা দন্ধি চেলে শাস্তি চেলে ঘুরাচ্চ সংসার চাকা।
ফর্মের তুমিই রণ, তুমিই দেখাও নরক-পথ—
হাসাও কাদাও সং-অসং ( তুমি ) কখন সোজা কখন বাঁকা।
কে বোঝে ভোমার তত্ত্ব, রূপা ক'রে দাও দেখা॥

আমার বিধি, আমার বিবি, আমার বিবি।
তার রূপের চোটে রোদ্নি জ্বলে কোথায় লাগে পটের ছবি॥
বিবির গলা এম্নি মিঠে—কথা কয় মধুর ছিটে,
কোয়েল্ক্রীড় তোলে না রা কাড়ে না,
কে জানে সে কোথা গিয়ে খাচ্ছে খাবি ?



থোঁপাতে জড়িয়ে মালা, ছড়িয়ে জালা,
চলে বিবি ঠাট ঠমকে,
নয়ন জলে সে কবিলে ভাস্ছে কত আমায় ভাবি ॥
পিয়ারী বড়ই মোরে পিয়ার চোধের আড় কর্তে নারে,
কত যুত ক'রে না গড়ুক সে নলটি এনে মুথে ধরে,
আদরে ঢ'লে পড়ে, কথন বা ঠোনা মারে,
( আবার ) রাগ্লে পরে পয়জার ছাড়ে
এমন বিবি কোথায় পাবি ॥

### আদোয়ারী।

বুঝলাম না তোর লীলার ধারা।
কত জনম গেল বৃথা,
আপনি শেষ শ্মশান থেলার শিবকে কল্লি লক্ষীছাড়া।
অবশেষে অহর্নিশি কেবা শ্মরে
সাধিতেছে ঘরে ঘরে তোরি ধারা
কাঙ্গাল কেঁদে অনাদরে এরা
দল্লার নৃপুর খুলে রেখে, পা ছটি মান্নায় ঢেকে,
দেখা দিবি থেকে থেকে ওমা ধ্রতে গেলে হবি হারা।

#### আদোয়ারী।

আমার বল্তে ছিল যাহা, নিলি যদি ডিক্রী কর্মী; তবে আর কেন রাখিস্ বাঁধা মা তোর দেনার দারে থেকে

## রেকর্ড-কাকলী

আনিগে ধ্ববা ধ্ববা তুলে, মাকে সাজাব মুলে, বাবাকে তুষিব ছ'টো বিবদলে; বাবা ভক্তিতে ভোলে সেটা এতট কি ভারি॥

## শ্রীযুক্ত রাধারমণ দাস।

কীর্ত্তন ।

অল্প বন্ধসে মোর শ্রাম রসে জর জর,
না জানি কি হবে পরিপামে।
( আমার এই বন্ধসে এমন হল )
যাদ নরন মুদে থাকি অন্তরে গোবিন্দ দেখি,
নরন মেলিয়া দেখি শ্রাম।
যদি চলে বাই পথে শ্রাম বায় মোর সাথে সাথে,
( চরণে চরণ ঠেকাইয়া )
ভ্রমেতে ফিরিয়া দেখি, কেউতো নাই সঙ্গে
( সথিরে ) মরে থাকি প্রেমে মুরছিয়া ॥

কীৰ্ত্তন।

সো বর নাগর রাজ গো। (আমি এই এখনি দেখে এলাম)
(কিবা) তপন তনরা তটে নিপহি নিকটে
হিলন নটবর সাজ গো।
মরকত্রুরতন মুকুর যিনি লাবনী প্রতি তহু পিরীতি পসরা
(পিরীতের মুরতি থানি /



শারদ চাঁদে চাঁদে মুখমগুল কুগুল শ্রবণে বিহারে গো।
গুগো মকর কুগুল আপনি দোলে ( ছুই গণ্ড যুগে )
মন-মীন গ্রাস করবার লাগি ব্রজ যুবতীর।

## প্রফেসার রাধিকাপ্রসাদ গোস্বামী।

ছায়ানট।

দীন তারিণী ব'লে মা ডাকি গো তোমায়।
তবে কেন দীনের প্রতি নিদয়া হইলি ছামা।
যদি পুণ্যকলে তারা তবে যায় মা ভবদারা,
তারা নাম হুথহরা ভবে আর কে কবে গো মা॥

বিবিট--গাম্বাজ।

নোহাগে মৃণাল ভূজে বাধিল শ্রীরাধা খ্যামে। চপলা অচলা হল, নীলাচলে মিশাইল,

> শোভিল কদম্শ শ্রীমতি ভাষ সমাগমে ॥ গোপনে গোপিনীকুল, সে মাধুরী নেহারিল, পুঞ্জে পুঞ্জে অলিকুল, কুজে আসি গুজরিল, কালায় ভাবি কাল জল রাধায় কমলিনী ভ্রমে ॥

স্বপন যদি ভাঙ্গিলে রঙ্গনী প্রভাতে পূর্ণ কর হিয়া মঙ্গল কিরণে। রাগ মোরে তব কামে নবীন কর এ জীবনৈ হে।



আসোরারি।
বিমল আনন্দে জ্ঞাগরে।
মগন হও স্থপ-সাগরে॥
হৃদয় উদয় চলে দেপরে চাহি,
প্রথম পরম জ্যোতির আকরে॥

## ত্রীযুক্ত শরহচক্র চট্টোপাধ্যায়।

আডানা।

মন্দিরে মম কে আসিল হে,
সকল গগন অমৃত মগন দিশি দিশি গেল নিশি অমানিশি
দূরে দূরে।
সকল ত্রার আপনি খুলিল, সকল প্রদীপ আপনি জলিল,
সব বীণা বাজিল নব নব স্থারে স্থারে ॥

ভৈরবী।

তোমারই ইচ্ছা হউক পূর্ণ করুণাময় স্বামী।
তোমারি প্রেম স্বরণে রাথি—চরণে রাথি আশা,
দাও হথ দাও তাপ সকল সহিব আমি।
তব প্রেম আঁথি সহত জাগে জেনেও তা জানি না,
ঐ মঙ্গল রূপ ভূলি তাই শোক সাগরে নামি।
আনন্ময় তোমার বিশ্ব শোভা স্থপপূর্ণ;
আপন দোষে হথ পাই হে বাসনা অনুগামী॥

## ীযুক্ত তিনকড়ি চক্রবর্ত্তী।



#### রামকেলী।

মোরে ডাকি লয়ে যাও মুক্ত ছারে তোমার বিশের সভাতে।
উদয়গিরি হ'তে উঠে কও মোরে তিমির লয় হ'ল হাদি সাগরে,
ভাব হ'তে জাগ দৈন্য হ'তে জাগ
সব জডতা জাগ জাগরে সতেজ উন্নত প্রভাতে॥

#### ভৈরবী।

সংসারে যবে মন কেড়ে লয় জাগে না যথন প্রাণ।
তথন ওহে নাথ প্রণমি গাহিব যে তব গান॥
অন্তর্যামি ক্ষম গো আমার পুণাদানের রুথা অহঙ্কার,
পুস্পবিহীন পূজা আয়োজন ভক্তিবিহীন প্রাণ।
জপি তব নাশ উচ্চ কণ্ঠে, আশা করি প্রাণপণে,
নিবিড় প্রেমের শরত বরষা নিবিয়াছে যদি প্রাণে,
সহসা একদা আপনা হইতে ভরি দিবি তুমি তোমার আমিতে,
এ ভরসায় করি পদতলে শুনা জদয় দান॥

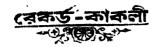
## ত্রীযুক্ত তিনকড়ি চক্রবর্ত্তী।

ঘন তমসাবৃত অম্বর ধরণী, গর্ম্জে সিন্ধু, চলিছে তরণী, গভীর রাত্রি, গাহিছে বাত্রী, ভেদি সে ঝঞা উঠিছে শ্বর।

## রেকর্ড-কাকলী

" ওঠ্মা ওঠ্মা দেখ্মা চাহি এই ত এইছি আর চিম্ভা নাহি---জননী হীনা ক্রা দীনা · 95 मा '95 मा अमील धन्न ॥ লজ্যি বনানী পর্বতরাজি. তোর কাছে এই আমি এইছি ত আজি॥" কোথায় জননি। গভীর রজনী. গৰ্জে অশনি, বহিছে ঝড়। "একি ! কুটীর যে মুক্ত দ্বার । নির্বাণ দীপ--গৃহ অন্ধকার---কোথায় জননি ! কোথায় জননি ! मृश्च (य मंशां, मृना (य घत ।" সে ধ্বনি উঠিয়া আর্তনিনাদে. বিধাত চরণে পড়িয়া কাঁদে; চরণাবাতে বক্স নিপাতে. মুক্তিয়া পড়িল সে অবনী'পর॥

ও সেই মহাসিদ্ধর ওপার থেকে কি সঙ্গীত ভেসে আসে।
কে ডাকে কাতর প্রাণে আকুল তানে বলে "আয় চলে' আয়
ওরে আয় চলে' আয় আমার পালে।"
বলে শুমায়রে ছুটে আয়রে ত্বা,
হেগা নাইক মৃত্যু—নাইক জ্বা,



হেথার বাতাস গীতি গন্ধভরা চির-স্থিম মধুরবাসে,
হেথার চির স্থামল বস্থন্ধরা, চির জ্ঞোৎসা নীলাকাশে।
কেন ভূতের বোঝা বহিস্ পিছে,
ভূতের বেগার থেটে মরিস্ মিছে;
দেখ ঐ স্থাসিন্ধ উথলিছে পূর্ণ ইন্দু পরকাশে।
ভূতের বোঝা ফেলে, ঘরের ছেলে, আয় চলে আয় আমার পাশে।

## শ্রীযুক্ত তুলসী চরণ দাস।

খাম্বাজ।

স্বপনের ছবি সম কেরে ঐ চলে যায়।

অপাঙ্গে স্কুহাসি হাসি চকিতে সে ফিরে চায়।

উষার স্বাম মাগা, মোহন মূরতি আঁকা,

চরণ বিভঙ্গে কত মাধুরী ছড়ায়।

আবেশে অবশ আঁগি আবেশে আবেগময়।

#### হামীর।

বাশরী বাজায় কিরে কিরে চায় কদমতলায় কেরে।
বনমালা গলে নেচে চলে প্রাণধনে এনে দেরে॥
বল না কেমনে প্রবোধিব মনে মন ত মানা না মানে,
অবশ এ চিত মোহে বিমোহিত কি জানি কি গুণ জানে
লাঞ্ছনা গঞ্জনা আর ত সহে না পশিব সমুনা জলে।
মরণ সময় যেন রসময় মনে রেখো দাসী বলে॥

## শ্রীযুক্ত তুলসীচরণ দাস।



#### কানেড়া।

( আজু হরি ) জগনাথ জগদীশ।
আজি তার ব্রন্ধ পরমেশ্বর ঈশ্বর,
কলিযুগে প্রভু আপনি প্রকাশি।
গলে দোলে বনমালা বৈজয়ন্তী-হার
শ্রবণে কুগুল অতি বাহার
দামিনী চমকে প্রকাশি তাহায়
কলিযুগে প্রভু আপনি প্রকাশি।
তান্দান কহে এই মোর আশ,
তব চরণ তরে হইন্থ দাস,
মহিমা তাহারি কর প্রচার,
যুগে যুগে পাই যেন চরণ তুহারি।

#### ভৈরবী।

কোলের ছেলে ধ্লো ঝেড়ে নে কোলে তুলে।
ঠেলিস্নে মা, ধ্লো কালা মেথেছে ব'লে,
সারা দিনটা ক'রে খেলা ফিরেছি মা সাঁঝের বেলা,
খেলার সাথী সে যার মত গিয়াছে চলে।
কেউতো আর চাইলে না ফিরে, নিরাশ আঁধার এলো ঘিরে,
মনে হ'লো মায়ের কথা নয়নের জলে॥

## শ্রীযুক্ত তুলসীচরণ দাস।



#### থাম্বাজ।

তারা মোরে রেখেছিল ভূলাইরে।
হ'লিনেরি মোহমাথা হাসি খুসি দিয়ে॥
নিজ স্থথ তরে মম স্থথভোগী
তারা শুধু চার তাহাদেরি লাগি,
মিছে আশা দিয়ে কত করে অহুরাগি,
(শেষে) দ্রে দাড়ায়ে হাসে সর্কান্ত নিয়ে॥
দেথা হ'লে আর কথা কহে না কহে না,
এ যাতনা আর প্রভূ সহে না সহে না,
ভাজিরছে ঘুমঘোর এসেছি ফিরিয়া॥

#### क् ला।

অমল ধবল পালে লেগেছে মন্দ মধুর হাওয়া।
দেখি নাই কভু দেখি নাই এমন তর্নী বাওয়া।
কোন্ সাগরের পার হ'তে আনে কোন স্বদ্রে ধন।
ভেসে ফেতে চার মন কেলে যেতে যায় এই কিনারার
সব চাওয়া সব পাওয়া

পিছনে ঝরিছে ঝর ঝর জল—গুরু গুরু দেয়া ডাকে,
মুথে এসে পড়ে অরুণ কিরণ ছির মেঘের ফাঁকে।
গুগো কাগুারী, কে গো তুমি কার হাসি কারার ধন ?
ভেবে মরে মোর মন কোন্ হুরে আজি বাধিবে তু
কি মন্ত্র হবে গাওরা॥

## শ্রীযুক্ত ভবসিন্ধ দত্ত।



#### হামীর।

আর ভাল লাগে না তারা সহে না আর এ যাতনা কাতর হ'রেছি বড় কর্ব কি মা তাই বল মা॥ ফেলেছে বিষম ফেরে পাই না কিছু ঠিক ঠিকানা। কবে যে কিনারা পাব ভাবিতেছি সেই ভাবনা॥ মা হ'রে সস্থানের প্রতি নিদয় হ'লে আর চলে না। তাই বলি করুণাময়ী কুপা ক'রে পথ দেখাও-না॥

#### সিন্ধ-ভৈরবী।

খুলে দে তরণী খুলে দে তরা স্রোত বহে যায় রে।
মন্দ মন্দ রঙ্গে ভেঙ্গে নাচিছে তরঙ্গ রঙ্গে,
ভাঙ্গিয়া ফেলেছি হাল, বাতাসে পরেছে পলি,
স্রোতমুথে প্রাণ মন যাক ভেসে যাক রে।
কে যাবি আমারি সাথে এই বেলা আয়ে রে॥

## শ্রীযুক্ত ভবসিন্ধ দত্ত।

নাউল।

দরাল আমায় ভবে কর পার।

আমি দীন হুরাচার,
ভক্তন জানি না তোমার;
অক্লের কাণ্ডারী দয়াল তুমি ভবকর্ণার॥

আমায় আমি এসেছি হুয়ারে;

আমি যে দিকে ফিরাই আঁথি, দেখি সব অন্ধকার॥



সাধু মুণে শুনি আমি, পতিতের বন্ধু ভূমি,
কত পাপী করিলে উদ্ধার :—
আমি অধম রইলাম পড়ে ভবে, কি হবে আমার ॥
দীনহীনের এই বাসনা, পাপে যেন আর ডুবি না,
যন্ত্রণা সয় না বারে বার ;—
আমি বাঁচি যেন দয়াল ব'লে, জয় জয় হউক ডোমার ॥

#### (नवा अन ।

শুনেছে তোমার নাম অনাথ আতুর জন, এসেছে তোমারি দ্বারে, শূক্ত কেরে না বেন। কাদে যারা নিরাশার আঁথি মুছে যার, বেন গো অভর পার তাসে কলিত মন। কত শত আছে দীন, অভাগা আলয় হীন শোকে জীর্ণ প্রাণ কত কাদিতেছে নিশি দিন, পাপে যারা ডুবিয়াছে, যাবে তারা কবে কাছে, কোণা বা আর পথ আছে, দাও তারে দরশন।

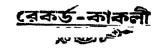
#### की उन ।

অন্ধ বিমৃত্মন, কেন মজলি নারে।

( এমন হরিনামে )

ছারা মায়া মরীচিকার, কত আর ঘুরিবি হার্মী

জান না কি প্রাণাস্ক হবে হাহা ক'রে পিপাসায়॥



প্রাণের প্রাণ হ'য়ে সদা তিনি কাছে, তাহাতে জীবিত প্রাণ, তাই প্রাণ বাঁচে, তিনি বিনা আর কে আছে তোমার যাবে কার কার নারে

সত্য মঙ্গল প্রেমময় তুমি,

গ্রুব জ্যোতি তুমি অন্ধকারে।

তুমি সদা বার জ্দে বিরাজ

গুথ জালা সেই পাশরে—

সব গুংথ জালা সেই পাশরে॥

তোমারি গ্যানে তোমারি জ্ঞানে,

তব নামে কত মাধুরী—

থেই ভকত সেই জানে

তুমি জানাও যারে সেই জানে।

ওহে তুমি জানাও যারে সেই জানে॥

## শ্রীসুক্ত রাধাচরণ ভট্টাচার্যা।

মূলতান।

মনের বাসনা যদি গাবে গান।
(মন) যদি থাকে উদ্ব লয় স্থান॥
তার প্রতারিণী ব'লে, তারা নামে ধর ভান।
(মন রে) বসম্ভের হয়ো না বশ,

## রেকর্ড-কাকলী

বাহার অতি নীরদ নট-খুটে দিওনা রে যোগ্যতা
অহং রাগ পরিহর, গৌরী আরাধনা কর,
জর জয়জী ব'লে ধর তান (মন তৃমি)
তথন শ্রীরাগ আসিবে, হবে বাগেশ্বরীর অধিষ্ঠান ॥
(ও মন) আশার আশে থেকে ভূল না রে মূলতান,
মন ললিত আলাপনে তোবহ স্বারি প্রাণ,
ছায়ানটের সভার এসে, কি ক'র্বে তোর মালকোবে,
(ও মন) পর যে কর তাপে আপন জ্ঞান,
এখন সিল্পতে পার হ'লে (ও মন)
থাকে যে গোবিন্দের মান॥

#### ভৈৰবী।

তুমি নির্মাণ কর, মঙ্গল করে, মলিন মর্ম্ম মুছারে।
তব পুণ্য-কিরণ দিয়ে যাক্ মোর, মোর কালিমা বুচায়ে॥
লক্ষ্য শৃন্তা, লক্ষ-বাসনা, ছুটিছে গভীর আঁধারে;
প্রগো জানি না কথন, ভূবে যাবে কোন্ অক্ল গরল পাথারে।
তুমি বিশ্ব-বিপদ্-হস্তা, তুমি দাঁড়াও রুধিয়া পদ্থা,
তব শ্রীচরণতলে, নিয়ে এস মোর মত্ত বাসনা ঘুচায়ে॥
আছ অনল অনিলে, চির নভোনীলে, ভূধর সলিল গহনে,
আছ বিটপী লতার, জলদেরি গায়, শশি-তারকার তপনে।
আমি নয়নে বসন বাঁধিয়া, বসে আঁধারে মরি গো কাঁদিয়া
আমি দেখি নাই কিছু, বৃঝি নাই কিছু, দাও হে দেখি ব্রুবায়ে॥



বিভাস—( আগমনী )

ওমা গা তোল, গা তোল, বাধ মা কুন্তল,

ঐ এল পাষাণী তোর ঈশানী।

ল'য়ে যুগল শিশু কোলে, মা কৈ ব'লে, মা কৈ ব'লে

আস্ছে মা তোর শশধর বরণা॥

তোমার ঐ তারা চক্রচ্ড্-দারা ( মা ) চক্র-দর্শহরা চক্রাননী,

এমন রূপ দেখি নাই কার, মনের অন্ধকার,

হরে মা তোর শক্কর-ঘরণা॥

তোমার ঐ কন্তে ( মা ) তিভুবন মান্তে, ত্রিভুবনে ধন্তে

তোর মেয়ে সামাত্তে নর গো রাণি ( মা )—

আমারা ভাব্লাম ভবের প্রিয়ে, মা নাকি তোর মেয়ে,

উমা নাকি ভবের ভয়-হারিণা॥

দাশরথি কয়, অস্তিম সময়, ( মা ) ওগো দিও ও পদ ছ'থানি॥

টোরি—ভৈরবী।

প্রভাত অরুণ-কণ, রঞ্জিত কানন, বিকশিত কমল কলাপে।
কোকিল পঞ্চম মূখরিত কুঞ্জে, মধুকর-চুম্বিত স্থমনস-পুঞ্জে,
বিহরতি মদন বিলাসে—
তাজ অলস, কুরু লালস, যাপিহি যামিনী চিত্তবাসে॥

ভৌমার চরণে করি হুঃথ নিবেদন। শান্তি সুধায়ত অচল নিকেতন॥



হাদর হীন সব বধির ভবে,
আপনারে লয়ে মহাব্যস্ত সবে,
আপ্তে না চাহে যত, স্বার্থ পরম ব্রত,
পলকে ফ্রাবে প্রাভু করি নিবেদন ॥
অনাদরে অবহেলে তবশ পরাণ,
চরণে শরণাগত রাগ ভগবান্;—
ভাস্ত পথেরি পাশে, নয়ন মুদিয়া আছে,
দেহ পরশ দিয়ে কর তারে সচেতন ॥

#### গাম্বাজ।

কে বে হৃদয়ে জাগে, শাস্ত শাতল রাগে,
মোহ তিনির নাশে প্রেম মলয়া বয়।
মালন মধুর আঁথি, করণা অমিয় মাথি,
সাদরে মোরে ডাকি, হেসে হেসে কথা কয়॥
কহিতে নাহিক ভালা, কত স্তথ কত আশা,
কত স্নেহ ভালবাসা সে নয়ন কোলে রয় —
সে মাধুরা অভপম, শাস্তি মধুরোপম,
মুয় মানসে মম, নাশে পাপ তাপ ভয়॥
হৃদয় বাসনা বত, পূর্ব ভঙ্কন ব্রত,
পুলকে হুইয়া নত, আদরে বরিয়া লয়;
চরল পরশ কলে, পতিত চরণ তলে,
স্তিত রিপুদলে বলে হোক্ তব জয়॥

## 🗐 যুক্ত রাধাচরণ ভট্টাচার্য্য।



#### খাষাজ।

কুটিল কুপথ ধরিয়া, দূরে সরিয়া---আছি পডিয়া হে— ত্রব শাস্তি-সৌধ মঙ্গলকেতু আর দেখি না কিসে ফেলিল যেন আগ্রিয়া॥ দীর্ঘ-প্রবাদ যামিনী আমারে চুবায়ে রেখেছে তিনিরে। আর প্রভাত হ'ল না আধার গেল না আলোক দিলে না মিহিরে তে-কৰে আসিয়াছি কেন আসিয়াছি কোথা, ( আজি ) আসিয়াছি গেছি পাসরিয়া " ে ওছে ) তোমারি পতাকা করিয়া লক্ষ্য ( আমি ) আদিয়ছি গৃ৹ ছাড়িয়া, आगाग्र कण्डेक नत्न. (क नर्हेन रहेता, পাথেয় লইল কাড়িয়া হে— যদি জাগিতেছ প্রভু দেখিতেছ ত্রে ল'রে চল আলো বিভরিয়া।

বেহাগ—থাৰাজ-মধামান।

কি সন চুরি যে ক'রেছে তারে কি

সই পাব আর।

# <u>রেকর্ড-কাকনী</u>

আমার মন চুরি করে, সে গেছে
( স্ট ) দেশাস্তরে,—

থরে পুনঃ কি আসিবে ফিরে

হেরিব চাদ মুথ তার॥

## ভ্ৰগেক্সবালা দাসী :

থাৰাজ-একতালা।

আমি হারারে ফেলেছি আমারে
কোথা গেছি কোণা আছি শুধানো কারে॥
নিজে খুঁজে দেখিবারে চাই—
দেখি আমি আমাতে ত নাই;
ব্ঝিয়াছি চুরি গেছে চোরা ব্যাপারে
বুঝি না কেমনে পাব আমি সে চোরে॥

তারানা বাহার—বং।

এস প্রাণ সথা এস প্রাণে

মম দীর্ঘ বিরহ অবসানে।
কর তৃষিত প্রাণ অভিষিক্ত তব প্রেম-স্থারস দানে
বন আকুল বনফুল গদ্ধে মুথরিত মন্মর ছলে;
বহে শিহরি পবন মৃত্যনদ, গাহে আকুল কোছিল
কুত্ কুত্ তানে॥



## ইমন-ভূপালী-কাওয়ালী।

বদি এসেছ এসেছ এসেছ বঁধু হে দয়া করি কুটারে আমারি।
আমি কি দিয়ে তুষিব পূজিব তোমারে ব্ঝিতে না পারি।
আমি বাইব কি জাল-পন ছুটিয়া, আমি রহিন কি পদতলে লুটিয়া,
হাঁসিব গাহিব চালিব চরণে নয়নের বারি।
বিদি পেয়েছি তোমায় কুটারে আমার, আশার অতীত গণি,
আজি আধারে পথের ধূলার মাঝারে কুড়ায়ে পেয়েছি মণি,
বিদি এসেছ দিব জাদি-আসন পঃতি,
দিব গলে নিতি নব প্রেমের হার গাথি,
রহিব প্রিয়া দিবস রক্তনী—চরণে তোমারি।

#### কীত্তন-এক তাল:।

হারে রে রে রে রে রে উঠ রে কানাই।
বেলা হ'ল চল চল গোঠে যাই।
( আয় রে কায় আয় ) উঠ রে গোপাল, দাঁড়ায়ে রাখাল
পণপানে সবে চায়—
বেলা হ'ল চল গোঠে থেলা করি,
কদমতলায় বাজাবি বাশরী, দাড়ায়ে পায় পায়।
বনক্ল তুলি সাজাব তোরে, আয় আয় কায় উঠরে উঠরে
বা য়ল বেলু, নাহি ভনে বেণু, কাননে নাহি যায়।
পুনঃ হায়ারবে তাদের ডাকে, পেফ বনে মেতে নাহি চায়॥



### সিন্ধ-পোস্তা।

লুকিয়ে তোমার পাশে থেকে হান্ব হরে পঞ্চার।
রমণ-রসে মন মাতাব, কাতর হবেন যোগেশ্বর
রসবতী তোমা বিনা বিফল ফুল-বাণ,
কূল-বাণে না অধীর হোলে আমার কিসের মান,
সাথী তুমি রসময়ী, তাইতে আমি ভূবনজয়ী
একাকিনী আপন হারা আমার আমি নই;
ব্যর হর নয় তো আজ হর, রক্ষময়ীর নটবর॥

## গৌরী-মিশ্র—বৎ।

উঠে চাঁদ দেখ তুমি ভ্বন হাসে।

ছান কি কমলিনী একাকিনী জলে ভাসে॥
গোপনে প্রেম ক'রেছে, গোপনে জদে ধ'রেছে.

মনের বাথা মনের কথা মনে হ'য়েছে—

সমর মত কাদিছে সোহাগ ক'রে যাব শেষে

সজনি! কুমুদিনী তোমার সে যে ভালবাসে॥

যোগিয়া-ভৈরবী—যং।

কামাই নাকি শ্বশানবাসী গুন্তে পাই।

কামি ভেবে দারা, বল না ভারা, সভ্যি নাকি স্থাই তাই
একে সে কেপা-সন্নাদী, বৃঝিয়ে কোথায় কর্মিরবাসী:
পোড়ার উপর একি পোড়া গুনে ভর পাই—

ক'রে এলোকেশী উল্লিনী বসিদ্ বুকে সরম নাই॥



মরি ভেবে বুঝাব আর কবে, ক্ষেপাকে কে বুঝাইবে তবে
মার প্রাণে বল আর কত সবে—
ঘর ক'রেছিস্ ভূতের বাসা—মেতে বেড়াস মেথে ছাই॥
নয় ত এখন কচি মেয়ে সে দিন গিয়েছে—
যা হো'ক ছ'টো গুড়ো গাড়া কোলে হ'রেছে
আর কতকাল এলো হয়ে বেড়াবি নেচে,
তুই যদি না বুঝে চলিস, বুঝুবে কি ভাঙ্গড় জামাই॥

## ত্রীযুক্ত চণ্ডীচরণ বন্দ্যোপাধ্যায়।

আসোয়ারী--আগ্রনী।

তের গিরিরাণি ! ভোমার নন্দিনী রাজ্বাণী সাজে ব্রুআসিছে। ভিপারী-ঘরণী কে বলে ভোর মেয়ে, সিংহপরে রাজরাজেশ্বরী সেজেছে॥

চরণ তার রকত-উংপল নথচ্ছটা কোটি চাদ চমকিছে, সে চরণ'পরে নৃপুর শোভে রে রুফুঝুফু রুফু বাজন বাজিছে। মায়ের ক্ষীণ কটি হেরি বৃঝি বা কেশরী:

ও পদে আশ্রয় নিয়েছে :

ছিল যে দিভূজা, হ'য়ে দশভূজা, তগ্ৰগের বামা আসন ক'রেছে

বেহাগ--থাম্বাজ।

যদি পরাণে না জাগে আকুল পিয়াসা ১ চাথের দেখা দিতে এসো না।

## मैयुक छञ्जीहरू नत्नाभाषाय



ভালবেসে যদি ছংগ পাও স্থা পারে ধরি ভালবেস না॥ সারাটি দিন আমি একলা বসিয়ে, চেয়ে রব ঐ পথের পানে;— সারাটি রজনী একলা জাগিব, চাদ জাগিবে আমারি সনে,— যাহা চাও স্থা দিব ফিবাইয়ে ( শুধু ) শ্বতিটুকু ফিরে চেও না॥

## কাফি-সিন্ধ্ -- যং।

মিনতি করি তে কালাচাদ আমায় মেরো না আর পিচকারী। আমি এসেছি বমুনায় নিতে জল ভিজিবে নীলাম্বরী॥ শাশুড়ী ননদী এরা প্রতিশাদিনী, বলে কলাম্বনী রাইকিশোরা, ভূমি আফকের মত বিদায় দাও গ্রাম কাল খেল্সো হোরি॥

#### गल्लात-का अवानी।

সাধের গুম বোর কভু কি ভাঙ্গিবে না।
কাল-বিছানায় শুয়ে, আশার চাদরে ঢাকা
কত দিন কেটে গেল, বিনেক রজক-ঘরে
তারে ধুয়ে লও না॥
বিষয়-মদ খেয়ে, আছ তুমি মাতাল হ'রে,
দে মদের গোর কি রে কভু কি ভাঙ্গিবে



কোলে করি আছ শুরে, কামনা স্থরূপা মেয়ে,
তারে ছেড়ে একবার পাশ ফির না ॥
কি ছার ঘুমখানি, যতনে সেধেছ তুমি,
স্থপের রজনী কি রে কভ্ ভোর হ'বে না,—
কিন্তু এ ঘুম-ঘোরে, মহাঘুমে ঘেরিবে তোরে,
ডাকিলে চেতনা যে দিন আর তুমি পাবে না ।
তপন প্রাণের বাছাগুলি, প্রিয়ারও আকুল বুলি,
ডেকে ডেকে আর তোমায় জাগাতে পারিবে না ।
এপন ফিরে যাবার বেলা হ'ল, আর কত ঘুমাবে বল,
সময় থাকিতে কেন হরি হরি বল না ॥

## সাহানা।

াত লুকিয়ে লুকিয়ে পোড়া পিরীত রাণ্বো কত আর।
নথ পিরীত হ'লে, প্রকাশ পেতে বাকি পাকে কার॥
পিরীত করা কি ঝক্মারী, উভয়েরি লুকোচ্রি,
পিরীত করা কি দাগাদারি শেষে প্রাণ বাঁচান ভার॥

ললিত-ভৈরবী। কালি বেলা অবসানে গিয়া যমুনা সিনানে

মোহন ম্রতি এক, রসে তমু চল চুল,

দেখিয়া আসিমু এক, তাহে নব নটবর,

ইেলিয়া ছলিয়া সথি বানীটি বজায় গো।

## <u>রেকর্ড-কাকলী</u>

বরণ উজ্জ্বল স্থাম,

রূপ জিনি কোট কাম,

ধরিরা রাখাল-বেশ গোধন চরায় গো॥

বিভঙ্গ-ভঙ্গিম রূপ,

পদতলে পড়ি কত শত চাদ কাদে গো।

সে রূপেরি সাগরে

অলকা-বলিত মুখ.

নয়ন দিন্ত কাতরে,

হিল্লোলে ভাসিয়া গেল যুগল নয়ন গো॥

নয়নে ভলিব ব'লে

ভূবিল মন অতল জলে,

আঁখি মন হারাইমু, এবে পাগলিনী গো॥

#### থাস্বাজ।

কদমতলায় কে গো বাশরী বাজায়।

এতদিন আসি যমুনার জলে,

এমন মোহন মূরতি কভু দেখিনি এসে হেথায়,

অঙ্গ অঞ্চল-চন্দন চচ্চিত বনমালা গলায়।

কুঞ্গ বকুলেরি মালে বাধিয়াছে চূড়াটি গো, ভ্রমর গুঞ্জরে তায়।

বিশ্ব অধ্যের অর্পিয়া বেণু, সেই রবে গো-ধেমু চরায়।

স্থান্যর, স্থঠাম, ত্রিভাজ, ভিজিম, কালক্ষপ দেখি স্থি ভূবন ভূলায়

#### বেহাগ।

যে দিন বুকে রাখ্তে তোমায় চেয়েছিক প্রাণ, সে দিন তোমার মন হ'ল না এখন উলটো অভিমান, কেন লো উলটো অভিমান।



একদিন পায়ে ধ'রে কত কেঁদে গেছি, ( কত কেঁদে গেছি )

সে দিন কর্লে তৃমি মান

এখন প্রেম-নদীতে জলের অভাব,
নাই জোয়ারের টান রে, আমার নাই জোয়ারের টান ॥
একদিন তোমার পেলে হল-মাঝারে বাড়তে প্রেম-তৃফান—

এখন জোয়ারের জল গুকিয়ে গেছে,
নাই তাইতে টান রে আমার নাই তাইতে টান ॥

### का अप्रानी।

করাল্বদ্নী কালী কপালিনী কালিকে।
করুণা করিতে ধেন রুপণতা কর না স্তে॥
দকুজনগ্রী দ্য়াময়ী দাক্ষায়ণী,
অশরণ জনের শরণ-স্থগদায়ীনী,
পরমা প্রকৃতি পরমেশ্বরী মোহিনী, হেম ভূধর-ছহিতে।
চতুরানন, পঞ্চানন গুণ গায় ঈয়ৎ তব লীলার,
শচীপতি হয় যার দশ শত বদন প্রণত সদা যার পায়,
কি ভার তোমার রাম শহুরে তারিতে।
অগতজননী জগদীশ্বরী যা কর,
যতেক জনার জীবনরূপে বিহর,
অথিল ভূবনে যত স্থরাস্থর নাগ নর
ভুমি সব, সব তোমাতে।



## শ্রীযুক্ত চণ্ডীচরণ বন্দ্যোপধ্যায়।

## বারেঁ।মা-থেমটা।

যাছ আড়-নয়নে মুচ্ কি হেসে আর মের না আমারে।
যদি না পার্বে ভালবাসা দিতে,
তবে কেন সরল প্রাণে দাগা দাও জোর ক'রে হে॥
তৃমি মনোমত ধন নিয়ে. থেক টাদ পানে চেয়ে,
তোমাদের প্রেমের কথা কিছু আমি শুন্তে আসবো না,—
আমি থাক্বো দূরে দূরে, তোমার কাছেও যাব না রে,
শুধু চাঁদপানা ঐ মুথথানি দেথ বো ঘুরে ফিরে;—
তুমি হাসিমাথা মুখটি নিয়ে দেথা দিও মোরে॥

#### ক্রিক।

দাদা গো আর ব্ঝি মোর বিয়ে হ'ল না!
বয়স হ'ল তিন কুজি পার, আই বুজো নাম ঘুচ্লো না ( ঘুচ্লো না )।
লোর গরমে তপুর বেলা, এগিয়ে দিয়ে ভাতের থালা,
পাও না ব'লে আদর ক'রে,
কেউ তো মোরে ডাক্লে না ( ডাক্লে না )।
চালের গিরে গুণে গুণে, রাত কাটাতে আর পারিনে,
বোলের গায়ে হাতটি দিয়ে ( হাতটি দিয়ে )
দম্ভরে ঘুম হ'ল না ( হ'ল না )।
একটা গাঁদা পাঁচা যদি হ'ত বংশ তবু রক্ষা পেত,
আমি ম'লে এ পুরুষে কেউ
পিণ্ডি দিতে রইলো না ( রইলো না ) ॥



#### পাম্বাজ।

ভূলিতে কি বল সথি, আমি কেমনে ভূলিব তায়।
যৌবনেরি ভালবাসা মলে কি গো ভোলা যায়॥
য্গ-স্গান্তর কেটে গেলে,
সে রতন আর নাহি মিলে,
থৌবনেরি ভালবাসা মলে কি গো ভোলা যায়।
আপনার প্রাণ হাতে ক'রে ( একদিন )
দিয়েছি তার করে ধ'রে,
বল তারে কেমন ক'রে প্রাণের বাহির করা যায়॥

সিন্ধ--- পাস্বাক্ত।

প্যারি ঐ এলো বৃনি তোর,
শঠ লম্পট গ্রাম নটবর,
পরবধুবাসে করে নিশি ভোর ॥
প্রভাতে উঠি আসিতেছে হাটি,
অলস আবেশে টলে পদ ড'টি,
আঁথিটি পালটি চাহে মিটি মিটি,
এখনও ঘোচেনি ঘুমের ঘোর।
শাস্ত প্রাণাকান্ত প্রেম রঙ্গ করি,
দেখে ছংখ হয় রাগে জ'লে মরি,
আমায় ক্লশ্যা ক'রে দে না লো কিশোরি,
শাসরি যে জালা দিয়াছে কিশোর॥



একে গোপী-প্রেমভাবে তিন ঠাই ভঙ্গ,
ভারের উপর ভার সর্ব-শঙ্গ ভঙ্গ,
প্রভাহীন প্রভাতে করিয়া অপসঙ্গ,
চাঁদ নয় যেন এলো নোর ( গো )
কমল-বঁধু বেশে আসি পদ্মকূলে,
প'ড়েছিল বঁধু কেতকীর ফুলে,
কৃষ্ণ-সেবা সে কি ভানে গো গোকুলে,
বলিতে পারি করিয়। ভোর য়

## মিস্ দাস।

বেহাগ-কা ভয়ালী।

চির স্থা ছেড় না মোরে ছেড় না।
সংসার গছনে নির্ভয় নির্ভর, নির্জনে স্কানে সঙ্গে রহ।
অধ্যের হও ধন, অনাপের নাথ হও ছে অবলের বল,
জরা ভারাতুরে নবীন কর, ওচে স্থাসাগর॥

#### বাহার ৷

একি করণা করাময় ! হাদর শতদল উঠিল কুটি,
তামল কিরণে তব পদতলে হে !
তান্তর বাহিরে হেরিফু তোমারে,
লোকে লোকে লোকান্তরে,
আঁধারে আলোকে, স্থথে হাংথে হেরিফু হে ;
স্প্রেহে প্রেমে, জগতময় চিত্তময় হে



#### বাহার।

একি আকুলতা তুবনে! একি চঞ্চলতা প্রনে!

একি মধুর মদির-রগ-রাশি, আজি শৃক্তভলে চলে ভাসি,

ঝরে চক্র করে একি হাসি, দুলগন্ধ লুটে গগনে॥

একি প্রাণ ভরা অন্তরাগে, আজি বিশ্ব জগং-জন জাগে,

আজি নিথল নাল গগনে, সুগ-পরশ কোথা হ'তে লাগে,

সুগে শিহরে সকল বনরাজি, উঠে মোহন বাঁশা বাজি—

হের, পূর্ণ বিকশিত আজি মম অন্তর স্থুকর স্থপনে!

( আহা ) জাগি পোহাল বিভাবরা,
রাস্ত নয়ন তব স্থানর !
রান প্রদীপ উবানিল চঞ্চল,
পা ওর শশপর গত অস্তাচল,
মুছ আঁথিজল, চল সপি চল
অক্ষে নীলাঞ্চল সম্বরি ॥
শরত প্রভাত নিরাময় নিম্মল
শাস্ত সমীরে কোমল পরিমল,
নিজ্জন বনতল শিশির স্থাতল
পুলকাকুল তরু বল্লরী !
বিরহ-শয়নে ফেলি মালন মল্লিকা,
গাগি লহ অঞ্চলে নব শেফালিকা,
অনলে নবীন স্থল-মঞ্জরী।

ব্রেকর্ড-কাকনী

রামপ্রসাদী। আমি কি ত্থেরে ডরাই। তবে দাও ত্থ মা আর কত চাই।

আগে পাছে তথ চ'লে মা, যথন আমি যেখানে যাই,
তথন তথের পথে চলে গিয়ে তথ দিয়ে তথের বাজার মিলাই ॥
বিষের ক্রিমি বিষে পাকে মা'—বিষ থেয়ে প্রাণ রাথে সদাই,
আমি তেমনি তথের ক্রিমি ( মাগো ) ত্থের বোঝা নিয়ে বেড়াই ।
প্রসাদ বলে মা ব্রহ্মমিয়,—বোঝা নামাও থানিক জিরাই,

ওমা স্থুথ পেয়ে লোক গলা করে, আমি করি ত্থের বড়াই।

টোরী-ভৈরনী।

অরি, ভূবন মন-মোহিনি।

অরি নির্মাল সূর্য্য-করোজ্জল ধরণি।

জনক জননী জননি।

নীল-দিল্পজল ধৌত চরণতল,

অনিল বিকম্পিত শ্রামন অঞ্চল

অন্ধর-চৃষিত ভাল হিমাচল শুল তুষার কিরিটানি,
প্রথম প্রভাত উদয় তব গগনে,
প্রথম সাম রব তব তপোবনে,
প্রথম সাম রব তব কনেভবনে,
জ্ঞান ধর্ম কত কত কাব্য-কাহিনী .

চির কল্যাণ্ময়ী তুমি ধন্তা, দেশ বিদেশে বিতরিছ অর ;
ভাজ্বী যমুনা বিগলিত করণা, পুণ্য-পীয়ধ স্তন্ত-বাহিনি।



## শ্ৰীযুক্ত কাশীনাথ চট্টোপাধ্যায়

( ষ্টার থিয়েটার )

গাম্বাজ—কাওয়ালী
কেমনে বৃন্ধিব ভোমারি ছলনা
অবোধ অপরাধিনী আমি হে ললনা।
প্রেমবাণ মেরেছ হলে আসিতে অসিতে,
তুমি ত আছ হে ভাল প্রাণ থুলে বল না॥

কীতুন-মিশ্র-থাস্থাজ—একতালা।

চল চল কাচা অঙ্গের লাবনি অবনী বহিয়ে যায়।

ঈষং হাসিয়া তরঙ্গ-হিল্লোলে মদন মূরছা পায়।

মালতীজুলের মালাটা গলে,

হিয়ার মাঝারে দোলে,

উড়িয়া পড়িয়া মাতল ভ্রমরা লুটিয়া চরণতলে,

হাসিয়া হাসিয়া অঙ্গ দোলাইয়া মরাল-গমনে চলে,
না জানি কি জানি হয় পরিণাম, দাস গোবিক বলে॥

কী ত্তন মিশ্র-থাস্বাজ—একতালা আমার থাচার পাথী গেল উড়ে থুয়ে হুটো লম্ব। সাং। শেয়ালগুলো ভাকছে থেয়াল তান ধ'রেছে কালে: ব্যাং।

্মন করে প্রেম ক'রে সই,

ভাল দিলে ভালনা দিলে দিলে নাক ভথ দই,
তাইতে এবার গাজন বন্ধ চড়কতলায় ছাডাং ডাাং।

## <u>রেকর্ড-কাকলী</u> -৩৪৪৪৪

## কীৰ্ত্তন

এদ বধু এদ, আধ ফরাদে বদো,
কিনিয়া রেপেছি কলদী দড়ি ( তোমার জন্ত হে )

তুমি হাতী নও ঘোড়া নও

বে দোরার হ'রে পিঠে চড়ি ॥

তুমি চিড়ে নও বধু, তুমি চিঁছে নও
বে থাই দধি গুড় মেথে ( বধু হে )
বিদি তোমায় নারী না করিত বিধি, তোমা হেন গুণনিধি
চিড়িয়াপানায় দিতাম রেথে ॥

## কীর্ত্তন-লোকা।

শ্রীমৃথপদ্ধ দেখ্নো বলে হে, আমি তাই এসেছি এ গোকুলে।
আমায় স্থান দিও রাই চরণ-তলে॥
নানের দারে ভুই মানিনী, আমি তাই সেজেছি বিদেশিনী,
এখন বাঁচাও রাধে কথা ক'রে, চলে যাই হে চরণ ছুঁরে।
দেগ্বো তোমায় নরন ভ'রে, তাই বাজাই বাঁণী ঘরে ঘরে,
যখন রাধে ব'লে বাজে বাঁণী, তথন নরন-জলে আপনি ভাসি,
ভূমি যদি না চাও ফিরে, তবে বাব যমুনা-তীরে,
ভাজবো বাঁণা তাজবো প্রাণ, এই বেলা তোর ভাসুক মান।
(শ্রীমুখপদ্ধ দেশী বলে হে)



## এই প্রত্যামিনী।

হাম্বীর মিশ্র—যৎ

মন যে নিল সে ত আর ফিরে দিল না। জনম ফুরায়ে গেল আর দেখা হ'ল না॥

তাহারে হেরিশে সই.

মুখপানে চেয়ে রই

विन विन भारत कित्र चात्र वना र'न ना।

নিশিতে ঘুমায়ে থাকি,

শয়নে স্থপনে দেখি.

ইচ্ছাহয় হলে রাখি আর রাখাহ'ল না॥

হাম্বীর---য

আসি ব'লে চলে গেল সই কই সে আর আসিল না। আমি ভাবি তারি তরে. সে ত কভু ভাবে না॥ ন'লেছিলাম হঃখভরে, ধ'রে তারি হ'ট করে.

যাবে যাও হে প্রাণনাণ ফেন ভূলে থেক না

कक्रमा---मामता।

প্রাণ তোমার স্থথের পথে কাটা হবো না আমি। একবার দেখে চ'লে যাব আর তো আসবো না আমি॥ কত যে কেঁদেছি আমি, আর তো কাঁদবো না আমি। এই যে দেখা শেষ দেখা, আর কিছু চাই না আমি॥



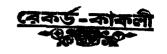
সিন্ধ-মিশ্র—বং।

মনে করি ভূলি ভূলি ভূলিতে পারি না তারে।
কলে কলে দের দেখা আসিরে হৃদর মাঝারে॥
এত সাধের ভালবাসা, এত সাধের প্রেম-আশা
(আমার) সকলি কুরায়ে গেল—হার হার একেবারে॥

কান্ধি-সিন্ধু—আড়াঠেকা।
ভালবাসি ব'লে কিরে আসিতে ভালবাস না।
আপন করম দোবে হ'লো না স্থুখ-সাধনা॥
হেরে তব মুখশনা, স্থুখের সাগরে ভাসি,
দেখিতেছ না ফিরে ফিরে ভাবিতে তব ভাবনা।
ভূমি মম ধ্যান, জ্ঞান, ভূমি মম জীবন,
বধিতে অবলার প্রাণ ক'রেছ বিবেচনা॥

কেদার---মিশ্র।

দেখ সথা ভূল ক'রে ভালবেস না,
আমি ভালবাসি ব'লে তুমি থেন বেস না।
আমি স্থবী হব ব'লে তুমি কাছে এস না॥
আপন বিরহ ল'রে আপনি আছি ভাল,
কি হবে চির আঁধারে নিমিবেরি আলো,
আশা-স্রোতে ভেসে বাই, যা হ'বার হবে তাই,
আমার অদৃষ্ট-স্রোতে, তুমি থেন ভেস না॥



### ছায়ানট।

কেনরে মন কিসের তরে মিছে কেন ভাব সে ভাবনা।
পর কি কখন হয়রে আপন অন্ত গাছের ছাল অন্তে
লাগে না॥

প্রথম প্রথম ব'লে আকাশেরি চাদ

এস কোলে করি ওরে সোণার চাদ

বিধু মুথে হাসি, কর তুমি খুসি

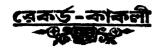
হু'দিন বাদে তোমায় কেউ পুঁছবে না ॥

#### (मन ।

আমার মন বেদনা সই ব'ল কারে কই।
সরমে মরম ব্যথা মরমেতে মরে রই ॥
যে ক'রেছে মন চুরি
কেমনে তারে পাশরি
সতত বাহারে হেরি সে বিনে প্রাণ বাঁচে কই॥

## ভৈরবী।

আনন্দময়ী হ'য়ে গো মা আমায় নিরানন্দ ক'রো না।
ভবানী ভাবিয়ে পারে যাব চ'লে, আমার মনে ছিল এই বাসনা
অহরহ নিশি হুর্গানামে ভাসি, (পুরো তবু হুঃধরাশি গেল না)
আমি যদি মরি হর-শঙ্করি! তবে হুর্গা নাম কেই লবে না॥



টোড়ী।
বুণা দিন গেল হে হরি;
আমি ভজন সাধন কথন করি।
প্রভাত সর্বারী, হ'লে মনে করি, তুলদী কুসুম চয়ন করি।
আমার এমনি মায়াযোগ ( হরি হে ) হয় না মনোযোগ,
ভূতের বেগার থেটে মরি॥
কেউ নাহি বন্ধু, ওহে দীনবন্ধু, ভবসিন্ধু আমি কিসে তরি,
আমায় বেঁধে মায়াপাশে ( হরি হে ) চতুর্দিকে ব'সে,
রমানাথ ভাবে কি ঝক্মারি॥

ইমন-ভূপালি।

হর হর শক্কর শশান্ধশেথর, ব-ব-বম্ ভোলা শিব মহেশ্র।

ফণীক্রভূষণ, নগেক্র-শাসন উপেক্রমোহন, যোগী দিগম্বর।

অনাদি অশেষ পরেশ মহেশ, শেষ বিশেশ যোগী দিগম্বর,

বব বম্ বব বম্ গালবাত্ম কর, দৃমিকি দৃমিকি দৃম বাজে ডম্বর

ভাগৈ ভাগে ভালে নাচে মহেশ, হর বম্ হর বম্ সদা

করে ডম্বর॥

সিন্ধ

তুমি মা তারা তঃগছরা, আমার চ'থে কেন ধারা। কেন্ট নাই মা এ সংসারে, ওগো আপন আপন নিয়ে তারা॥ কেন ভবে পাঠারেছিলি, পরে কেন কাঁদাইলি, ভবের ভার আর সয় না প্রাণে, কোলে নে মা ভবদারা॥



## शिनू।

তুমি আমার পোষা পাখী আমি তোমার পিঞ্জরা।
আমার ছেড়ে যাবে কোপা ওরে কাল ভ্রমরা॥
বে অবধি গেছ তুমি হ'রে আছি কাতরা,
হৃদর্থানি খুলে দেথ হ'রে গেছে ঝাঁছরা॥

মরি হ'ল একি দায়।
সে যদি না চায়, প্রাণ যারে চায়, সে না ফিরে চায়
অবলায় কেন গো কাঁদায়॥
যারে ভালবেসে ভাবিয়ে আপন,
সে না ফিরে চায় আমারে এখন,
কেন গো হ'ল এমন, নাহি জানি তারে, মন কাঁদালে অবলায়
প্রেমসিন্ধুনীরে উঠিল গরল, নাহি জানি আর ভাবিয়া কি ফল
মুদিত হইল কুমুদ সকল দহিল আমায়॥

বেহাগ।

প্রেম ক'রে প্রাণ সথি প'ড়েছি বিষম দায়।
পরে রে আপন ভেবে আপনারি প্রাণ যায়।
ত্যক্তে সথি কুলমান সঁ পিয়াছি মন প্রাণ,
কথায় কথায় অপমান, সদা করে অপমান,
তবু ত প্রাণ তারে চায়।



#### কেদারা।

দ পৈছি জনমের মত এ জীবন তব করে,
মরমে মরিতে হয় আছি চিরদিন তরে।
কি আর রেখেছ বাকী ডুবে তব প্রেমনীরে,
দিবানিশি নিরবধি দংশিতেছে বিষধরে,
এমন কঠিন তুমি বারেক না চাহ ফিরে
হানিতেছ তীক্ষ ছুরি কেন আর বারে বারে॥

#### মল্লার।

আমারে গোপন ক'রে ধর্তে চাও কি উড়ো পাথী।
বল্তে পারি মনের কথা আমার কাছে লুকোচুরি।
থলে বল মনের কথা, ঘূচিয়ে দিব প্রাণের ব্যথা,
তাই এসেছি আমি হেথা, আমা ছাড়া প্রেম করি,
এ চোথে প্রেমিক হ'লে প্রাণে প্রাণে মিশে রাখি॥
বে যাহারে ভালবাসে, সে প্রেম আছে আমার কাছে
আমিত কাঁদিব না ভালবাসা যে জানে না
মনের মতন পেলে পরে প্রাণে প্রাণে মিশে থাকি॥

## কানেড়া।

এত সাধিলাম কাঁদিলাম ধরে ছ'টি পার কত বুঝালেম করে ধ'রে মিনতি করিয়ে তার



পারে ঠেলে চলে গেলে সে নিঠুর আমার রে আশা বা ছিল আঁথি জলে তা ডুবিল, মুখ-পাথী উড়ে গেল নিরাশা প্রনে হার (রে)।

## গ্রীযুক্ত যতীক্রনাথ বসু।

কমিক (মাঝির গান)।
ওরে লাজের মামৃদ চল না যাই ঘরে।
কাজ নেই ওরে কাজ নেই আর

ঐ কচু পোড়ার নোজগারে॥
ঐ যে প'লো ফাগুন মাস, বন্ধু রইল পরবাস,
কে দেবে, কে দেবে আমার বাগুণ ক্যাতে চায—
আর ঐ গাজেলা কোহিল গ্যাজ লায় ব'সে
কৃত্ কৃত্ রব করে॥

বাউল।

মা কি তুই পরের ছারে পাঠাবি তোর ঘরের ছেলে।
তারা যে করে হেলা, মারে ঢেলা, ভিকা ঝুলি দেখুতে পেলে।
ক'রেছি মাথা নীচু, চ'লেছি যাহার পিছু

যদি না দেয় সে কিছু অবহেলে।—
তবু কি এমনি ক'রে ফির্ব ঘরে আপন মারের প্রসাদ ফেলে॥
কিছু মোর নাই ক্ষমতা, সে যে তোর মিথাা কথা;

এখনও হয়নি মরণ বিশকোটী ছেলে।— আমাদের স্থানীন শক্তি, আপন ভক্তি চরণে তোর দেব মেলে॥

## শ্রীযুক্ত যতীক্রনাথ বন্ধ

# ব্রকর্ড-কাকলী

নেব গো মেগে পেতে, যা আছে মোর ঘরেতে,
দেবো তোর আচল পেতে চিরকেলে—
আমাদের সেই থানে মান সেই থানে প্রাণ
সেইথানে দিই হৃদয় ঢেলে॥

কীর্ত্তন।

সজল-জলদাঙ্গ স্থাতিভঙ্গ বাকা তক্তমূলে।
হেরিলে হরে জ্ঞান মন প্রাণ পড়ে পদতলে॥
নবীন নটরাজ কে বিরাজে ব্রজমণ্ডলে
সাজ হেরি লাজে দ্বিজরাজ নভোমণ্ডলে
উচ্চশিথা তুচ্ছ করি পুচ্চশিথা বামে হেলে,
তুচ্ছ করে জাতি ধর্ম, মূর্চ্ছা করে নারীকুলে;
নীলকণ্ঠ ভণে; ক্ষণে ক্ষণে অচেনায় চিনিতে পারে,
চিনিতে পারে—জিনিতে পারে, কিনিতে পারে বিনামুলে

মাঝির গান।

মন মাঝি তোর বৈঠা নে বে ভাই
আমি আর বাইতে পালাম না।
( ও ) নৌকা ভাইটোর বই আর উজোর না॥
( আমি ) সারা জনম বাইলাম বৈঠা রে
তবু তোর মনের নাগাল পালাম না॥



ভাঙ্গা দাড় আর ছেঁড়া দড়ি রে নৌকার হালে জল আর মানে না। অফর বেলায় ধর্লাম পাডি রে, নদীর কূল-কিনারা পাইলাম না॥

কীর্ত্তন।

আমি বাহার লাগিয়ে কলঙ্কিনী নাম কিনিমু ব্রক্তের মাঝে।
আমি বাহার লাগিয়ে কাননে পশিমু, সাজিমু বোগিনী-সাজে।
('ওগো প্রাণস্থি!)

তাজি পিতা-মাতা পতি ধন জন সতত সেবিমু যারে।
ও আমার প্রাণের অধিক প্রাণ-বল্লভ
আমি আজিকে হারামু তারে॥
আমি মুকুতা পাইতে সাগর ছেঁছিমু উঠিল গরল-রাশি।
আমি নন্দন-কাননে দেবতা পূজিতে দানব উদিল আসি॥

কমিক।
রাম তুই হলি বননাস,
একি হেরি সর্বনাশ।
তোরে ছেড়ে রবে না প্রাণ
আমার গ্রুব এ বিশ্বাস।
নিতান্ত যাবি রে বনে
সঙ্গে নে সীতা লক্ষণে
ভাল এক জোড়া পাশা আর
ভাল তু'জোড়া তাস।

# ব্রেকর্ড-কাকনী

আমি বদি তুই হটতাম, পোটম্যান্টার ভিতর নিতাম বঙ্কিমের থানকতক ভাল উপস্থাস

## কীর্ত্তন।

কিছুই ৰ'ল না তারে গো সে যে আমার বঁধু,
আমি তারি বিরহে মরি মর্মে (কিছুই ব'ল না সে যে আমারি)
বঁধু—তা কে না জানে, সে যে আমার কেনা বঁধু,—
আমার প্রাণ-মন দিয়ে কেনা বঁধু।
তারে এক বেঁধেছে নন্দরাণী,
আবার বেঁধেছে দব গোপিনী,
তার যে আভিমান মনে ছিল, তাই তো মথুরায় গেল,
তাই তো রাগার দশা এমন হলো॥

## কমিক।

আপন বধুরা আন-বাড়ী যার আমরা আঙ্গিনা দিয়া।
প্রাণ রাখিতে নারি, আমার প্রাণ গেল,
( সথি আমার বড় জালা, জীবন রবে না গো,
ও তার অবহেলার প্রাণ আর রবে না )।
সপি আমার ধর ধর ধর ব্ঝি ত্বরা করি খ্রামের বিরহে
আমি ব্ঝি মরি প্রাণে (প্রাণ যার গে!)।



#### ক্মিক।

হরি হে দেখ্লাম তোমার চিড়িরাখানার
বাড়ছে বাহার দিনে দিনে।
বং-বেরং পশু-পাথী কতই দেখি, সাধ্য কার তা কে বা চিনে॥
জানিতাম পশু ব'লে, চার পার চলে, লোম গায়ে লেজুড় পিছনে।
এদের নয় সে আক্কৃতি নবাক্কৃতি
ছইখানি পদ লেজুড় বিনে ( বলি এ নৃতন পশুর )
গো মহিব হরিণ মেষে শিংদে ছুঁসে
মারতে আসে সবাই জানে॥
এদের সিং হয় না মালুম, হায় বেমালুম,
শিংএর ঘায়ে প্রাণে বাচিনে ( বেমালুম )।
কেউ নারিকেল গাছে চিলের সাজে
ব'সে সবলিক নজর হানে,
কার কিসে মারবে সে ভৌ, ব্যাং কি ছু চো,
কথন বা কারে বধে প্রাণে ( বলি সে চিলের সাজে )॥

### কীর্ত্তন।

কেন আর গাথ লো মালা
মালা গেঁথ না মানিনী।
আজ হ'তে হবি পাগলিনী॥
বল আর কি হবে মালায়,
ছেড়ে যদি চলিল কানাই,
ঐ ুকী তোর কাল-মালা হবে লো রাজনন্দিনি।



জালা পাবি রাই পাবি রাই

(ঐ ছঃথের মালা আপন গলে )

বনমালী বিনে মালা কার গলে গুলাবি ধনি,
কালা গেলে মালা হেরে কাঁদবি লো দিবা-যামিনী।
ঠিক তেমনি ঠিক তেমনি ক'রে,
এই কুঞ্জে সেই নটবরে,
তুমি কাঁদিয়ে ছিলে বিনোদিনি ( মানিনী হ'য়ে ) ॥
( গরবিণী বরণ ধরায়েছে, কালা আপন বরণ ধরায়েছে )
জিবাইবে ভেল সন্দেহ।
বুঝি বাঁচিবি না রাই, কালার সঙ্গে প্রেম ক'রে
বিঝি বাঁচিবি না রাই ॥

## কীর্ত্তন ।

আমি সংসারে মন দিয়েছিল, তুমি আপনি সে মন নিয়েছ
আমি স্থা ব'লে তু:খ চেন্নেছিল্প, তুমি তু:খ ব'লে স্থা দিয়েছ।

সদয় যাহার শতথানে ছিল শত স্থার্থের সাধনে।
ভাহারে কেমনে কুড়ায়ে আনিলে, বাঁধিলে ভক্তি-বাধনে।

স্থা স্থা ক'রে, দ্বারে দ্বারে মোরে কতক দিকে কত পোঁজালে।

তুমি যে আমার, কত আপনার, এবার সে কপা বুঝালে।

করণা তোমার, কোন্ পথ দিয়ে, কোণা নিয়ে যাও কাহারে।

সহসা দেখিলু নয়ন মেলিরে, এনেছ তোমারি ত্রারে।



ভিথারীর গান

জয় রাধে গোবিন্দ বল (ও আমার মন)।
আহা জয় রাধা গোবিন্দ বল॥
এ নাম মধুর হোতে মধুর (বল)
এই নামের গুণে তরে যাবে,
ও নামে পাপী তরে,
ও নাম লহ রে লহ রে প্রহরে প্রহরে।
এই মধুর গোবিন্দ নাম যে গুনেছে,
ও সে তরে গেছে।
আহা জয় রাধে গোবিন্দ বল॥

কমিক।

যাটে লাগারে ডিঙ্গা পান থারে যাও।
পান থারে যাও রে বঁধু তামুক থারে যাও ॥
কোন্ গেরামের লাও তোমার কোন গেরামের যাও
একথান কথা কও বা না কও, পান থেরে যাও ॥
আমার গাছের পান-স্থপারি তোমার কড়ির ভাও।
কড়ির কথা শেষ হবে পান থারে যাও ॥

## থাকমণি দাসী।

বেহাগ খাস্বাজ। ছি ছি কেন ব'লে গেল। আস্বে বুংক্লী আশা দি'য়ে গ্রাম আষার নাহি এলো॥



চাঁদ পানে চেন্নে চেন্নে, শ্রামচাঁদে ধেরাইনে, আমার স্থথের নিশি কুঞ্জে ব'সে পোহাইল।

#### থায়াজ।

আ মরি কি মালা গেঁথেছো।
মদনের বাণ যাত্ব হাতে ক'রে এনেছো ॥
হেরিলে ঐ ফুলমালা ভোলে কত রাজবালা,
আমি তোর মাসী মালিনী, আমারি প্রাণ বেঁধেছো।
আমি তোর মাসী মালিনী, কড়ের ড্রী নাইকো স্বামা,
কি বলুবো রে বাছা তুমি মাসী ব'লে ফেলেছো।

#### থাম্বাজ।

( আমি ) না জেনে পরেশ ভ্রমে পাষাণে প্রাণ সঁপেছি।
সে যে এত নিদারুণ আমি আগে কি তা জেনেছি।
ভেবেছিলাম মনে মনে,
জানে না সে আমা বিনে,
সে আশার নিরাশা হ'ল আমি এখন প্রাণে মরেছি॥

কীর্তন।

হরি নামের তরী বাঁধ ভাই। দেখ গগনে আর বেলা নাই।

## 🗐 যুক্ত এম, এন, ঘোষ ( মোস্তা )।



সন্মুখে যামিনী তামসী ঘেরা,
কেন হইবি রে হুকুল হারা ;
খোল হাল, তোল পাল, গেল কাল বিফলেদেখ গগনে আর বেলা নাই ॥
নামের নিশান হরষে তোল,
হরি হরি হরি সকলে বল,
সে নামে যাইবে বিপদ ঘুচিয়ে
দেখ গগনে আর বেলা নাই ॥

## শ্রীযুক্ত এম, এন, যোষ ( মোস্তা )

ভৈরবী।

মা তোদের ক্যাপার হাট বাজার।
গুণের কথা কারে কব কার॥
তোরা ছই সতীনে, কেউ বুকে
কেউ মাথার চড়িস তার।
কর্তা যিনি ক্যাপা তিনি,
ক্যাপার মূলাধার (মা)
আবার চেক্লা ছাড়া চাালা হটা
সঙ্গে অনিবার।
(ওমা) গজ বিনে গো আরোহণে
ফিরিস মা কলাচার॥



আবার মণি মুক্তা ফেলে দিয়ে মা,
পরিস্ নরশির হার।
শ্রশানে মশানে ফিরিস্ ( মা )
কার বা ধারিস ধার।
এবার রামপ্রসাদকে ভবনদী
ক'রতে হবে পার॥

দিন্ধ-থাখাজ।
কোলে তুলে নে মা কালি
কালের কোলে দিস্নে ফেলে।
বড় জালার জলছি যে মা—
যেতে দে জর কালী ব'লে॥
কাদতে ভবে পাঠিরেছিলি,
কেঁদে কালি হ'লেম কালী,
আমার ইহকালের সাধ মিটেছে,
রাথিস পারে পরকালে॥

ইমন।
কি ধন তোমারে দিতে পারি ( ভামা )
নয়ন মুদে দেখ্লাম ভামা ব্রহ্মাণ্ড তোমারি
কি দিব মা রত্বাস রত্মাকর যে তব দাস
ন্ধর্ণ-কাশীপুরে বাস কাশীতে বিশ্বেশ্বী॥

## শীযুক্ত এম, এন, যোগ ( মোস্তা )।



## প্রভাগী।

ভবে সেই সে পরমানক নে জন পরমানক্ষয়ীকে জানে। নে জন না যার তীর্থ প্রাটনে, কালী কথা বিনা না গুনে কাণে, আঁথি চুলু চুলু রজনী দিনে কালী কথামূত পীযুর পানে॥ রামকৃষ্ণ কর তেমতি জনে, লোকের নিকা সে না গুনে কাণে, সন্ধ্যা পূজা কিছুই না মানে, যা করেন কালী ভাবে সে মনে॥

### টোরি—ভৈরবী !

বিল্লহর সারাৎসার পূর্ণব্রদ্ধ সনাতন প্রাণাধার,
জগত-জীবন জগদীশ্বর অধম তারণ হে।
অনাগশরণ নীরদবরণ জং হি নারারণ
দেবকী-নন্দন প্তনাঘাতন কংসমথন হে।
শ্রীরাধারমণ ভ্বনমোহন মোহন মুরলীধারী,
কল্মহর ওহে চরাচর পামর মানব ভয়;
অতুল ক্রপদ যাচে অভরপদ পাতকী মানব হে॥



## প্রভাতী।

হর হর হর মহাদেব গঙ্গা গৌরী নারায়ণ,
প্রথম প্রভাতকালে গাওরে পামর মন।
অহলা, দৌপদী, তারা, পঞ্চকতা সতী থারা
অজ্ঞান তিমিরহরা গুরু-ব্রন্ধ-নারায়ণ॥
হরিশক্ত প্ণাকল শ্রীবংস নলরাজন
দীন ছরিতবারণ, রাম-সীতা-লক্ষণ,
শ্রীগোবিন্দ কংস কেনা নারায়ণ॥

সদানক্ষয়ী কালা মহাকালের মনমোহিনী।
আপন স্থা আপনি নাচ মা আপনি দাও মা করতালী
আদিভূতা সনাতনী ব্রহ্মরপা শ্রাভালী
ব্রহ্মাণ্ড যথন ছিল না মা মুণ্ডনালা কোণা পেলি।
সবে মাত্র তুমি যন্ত্রী তন্ত্রী তোনার দল্লে চলি।
যেমন রাখ তেমনি থাকি মা যেমন বলাও তেমনি বলি।

#### সাহানা।

েল্তে কি এসেছি ভবে মিছে থেলার গেল ফাঁকি। েলিস যদি তারি থেলা তারে কেন নাহি ডাকি॥ তার থেলা সে থেলে ব'লে খেলি সবাই তারি দলে,



থেলার ছলে তারেই ভুলি থেলা ঘরের পূলা মাথি।
জন্মাবি থেলা-থেলি গেল না ত মনের কালি,
তাই বলি ভাই বেলা-বোল এদ বুড়ি ছুয়ে রাখি॥
বে থেলেছে তার সনে থেলার মজা দেই জানে,
শয়নে স্থপনে ধ্যানে থেলে একা বদে থাকি॥

## ক্যিক।

ঐ পরদা উড়ে যার। এই সহর কলিকাতার, কত আজু বিবি তাহে, ছলে বলে কল কৌশলে পরদা উড়ে যার।
কেরিওয়ালার দল হত কাণের কাছে অবিরত,
যে যার বাল ডেকে যায়।
রকম রকম তাদের হুর, বড় মজা বড়ই মধ্র.
ভানেই ভার জিহ্বা নাম, জলে ভিজে যায়।
নাকে মুখে তিলক কেটে,
একটা পাহাড় প্রমাণ বোজকা পিঠে,
বিকি টাকায় চারিখানা কাপড় একখানা কাই,
যোটা সোটা গোটা ভাষা, হিলিতে চ্যাচায়।
তপ্র বেলায় লুরে মাগার কুড়ি—
গান্তীর বিয়ান হ্লেন, চুড়ি চাই বালা চাই,
কংনহ শুনি রমণীর মধুব প্রনি,
দাতের পোকা বার করি,



## বীযুক্ত এম, এন, ঘোষ (মোস্তা)!

বাত আরাম করি কোমরের বেদনা আরাম করি॥ ছেড়া কাপড় সেলাই করা, তার জন্যেও ফেরিওলা, ছপুর বেলার রিফুকর্ম, বুড়ো হেকে যায়॥

বৃথা ভবে খেল্তে এলি তাস। এতো খেলা নম্নত সর্কানাশ।
এমন কাগজ পেয়ে অলকপেয়ে কেন ডাকলিনি ইস্ত ছক্ পঞ্চাশ॥
ভাতের রং থাক্তে এ তুই খেল্লি একি রূপ,
এবে তোর সাক্ষাতে বিপক্ষেতে মারবেরে তুরুপ,
কিসে বল্রে এবার, পিট পাবি রে আর,
ভাতের সকল ফেরাই দিলি পাশ॥

ভৈরবী।

মোহ অন্ধকার নাশিয়ে আমার

শ্বরূপ ভোমার দেখাও আমারে ॥

ও যে মহাপাপী আমি তোমারে না জানি,

গৃহে কুপাময় জানাও কুপা ক'রে ॥

গৃমি অনাদি তুমি অনস্ত, তুমি বিশ্বব্যাপি

গুচে শ্রীকান্ত !

আমি পারি না হেরিতে এ পাপ নরনে

অজ্ঞানে দাও দেখা হরে মুরারে ॥



### কমিক।

দিবসে নিশিতে নিয়ত ভোজনে পাটা থেতে কেন পাই না।
পাই থাই করি থাইতে না পারি ভাব বৃঝি আমি চাই না;
ওহে বোকেন্দ্র যেওনা কো দূরে—কাছে এসে ডাক স্থমধুর স্বরে
সৌরভে তব ভরিবে উদর নহিলে যে ভাত ওঠে না॥
ডাকি তে স্থমাংসী আকুল পিয়াসে
ওগো বাা বাা ধ্বনি কর কাছে এসে
তোমারে তেরিয়া অয় দিব গ্রাসে
পরে তানা হ'লে যে ক্ষুণা মেটে না॥

## শ্ৰীষতী ডালিম মণিদাসী। গীৰ্জন।

- িন ৩৭ পর্যথ রস লালসে কাতে সঁপিল নিজ দেহ।
- (বিচার ক'রলি না রাই) কাহে সঁপিল নিজ দেহ
- (বিচারিণা হয়ে বিচার ক'রলে না রাই।)
- কোল রূপ দেখিয়ে তুই বিচার করলি না রাই । কাহে সঁপিল নিজ দেহ
- ( চু'দিন দেখ তে হয় বাই যাবে প্রাণ সঁপিতে হয় )
- ( সে শঠ কি সরল ছ'দিন দেথ্তে হয় রাই )
- ( যারে প্রাণ সঁপতে হয়, ছ'দিন দেখ তে হয় রাই )

💋 কাহে সঁপিল নিজ দেহ

## শ্রীমতা ডালিমন্থি দানী।



দিনে দিনে খোয়ায়বি ও রূপ-লাবণ্যে ( একবার চেয়ে দেখ আপন অঞ্পানে চেয়ে দেখ রাই ) কি ছিলি কি হলি একবার অঞ্পানে চেয়ে দেখ )

## কীর্তুন।

এমন কালিয়ে টাদ কে আনিল দেশে গে। অকলম্ব কুলেতে কলম্ব হ'ল (শ্বে গে:। (কুল আর রাখতে নারি) ( অকলক কল আর রাখতে নারিলাম) ( আমার কুলেতে কল্ম হলো ) ( কুল আর রাখ্তে নারিলাম ) অকলফ কুলেতে কলফ হলো শেষে গো॥ গগন উপরে চাদ সবে মাত্র জানি গো।। ( আমরা ইছাই তো জানি (গগন উপরে একটী চাঁদ) আমরা ইছাই তে, জানি গো ) গগন উপরে চাদ সবে মাত্র জানি গো. গোকুলে চাঁদের শাখা কে রপিল আনি গো॥ (কে রোপণ বা কৈল) ( চাদের বুক্ষকে কে রোপণ কৈল ) হ্লতে চাঁদ পায়ে চাঁদ আর চাঁদ কপালে।

## नैगडी डालियगि मानी।



এমন কভু শুনি নাই যে চাঁদের গাছ চলে গো।
( আজ দেখে বে এলাম )
গাছ চলা দেখে যে এলাম )
( টাদের গাছ চলা দেখে যে এলাম )
( যা কখন শুনি নাই তাই দেখে যে এলাম )
এমন কভু শুনি নাই, চাঁদের গাছ চলে গো॥

## কীৰ্ত্তন।

নারী জনমে হাম করম অভাগী।
( নারীর জনমে ধিক,—ধিক্ ধিক্ )
হিতাহিত জ্ঞান নাই যার জনমে ধিক্ )
( সঙ্গিনী রে—নারীজাতির জনমে ধিক্ )
( জনমে ধিক্ আর করমে ধিক্ )
মরণ সমান ভেল মাণিক লাগি॥
( আমার মরণ হ'ল—তার মানে )
( সাধ করে মান ক'রেছিলাম— )
ভার মানে আমার মরণ হ'ল )
সঙ্গিনী রে——
তনয়ে বিভাপতি শুন বরনারী।
বৈর্য ধর চিতে মিলিয়ে মুরারি।



### শ্রীযুক্ত হেমচক্র সেন।

ধরা যদি হুংথে ভরা—
তবে কেন তারা তোরে ডাকি (মা)।
(আমি) স্থথের আশে দিবানিশি, হুংথের রাশি স'য়ে থাকি॥
কারে জানাই হুংথের বেদন, মা বিনে কে আছে এমন
(শুনি) পেটের বাছা ক'ল্লে রোদন
থাক্তে মা পারিস্না নাকি।
এবার মা তোর ধরার এসে, এক দিনও ঠিক বেড়াই নে হেসে,
গোণা দিন কটা গেল নিমিষে, শেষেও কিনা দিবি ফাঁকি॥
(ও) নাম শুনেছি হুংথহরা, তাই এতকাল ডাকছি ভারা,
(আমি) বৃঝি না কি সজীব মরা
জানি না এর পরে ও পরকালেও বা কি॥

#### বেহাগ---এক তালা।

স্থাদেশের ধূলি স্থান-রেণু বলি, রেথো রেখো হাদে এ ধ্রুব জ্ঞান।
যাহার সলিলে, মন্দাকিনী চলে, অনিলে মলর সদা বহমান ॥
নন্দন-কাননে কিবা শোভা ছার, বনরাজিকাস্তি অতুল তাহার,
ফল শস্ত তার, স্থার আধার, স্থা হ'তে সে যে মহা গরীয়ান্॥
এ দেহ তোমার তারি মাটা হ'তে, হ'য়েছে স্প্রিত পোষিত তাহাতে,
মাটা হ'রে পুনঃ মিশিবে তাহাতে, ভবলীলা যবে হবে অবসান॥
পিতামহদের অস্থিমজ্জা যত, ধূলিরূপে তাহে আছে যে প্রিশ্রত,



এই মাটী হ'তে হবে যে উথিত, ভাবিকালে তব ভবিশ্বসম্ভান। কংস-কারাগারে দেবকীর মত বক্ষেতে পাষাণ লোহ-শৃঙ্খলিত, মাভৃভূমি তব র'য়েছে পতিত পরিচয় তুমি তাঁহারি সম্ভান। প্রকৃত সম্ভান জেন সেই জন, যে করিবে মার তঃথ-বিমোচন॥

সিন্ধু--মধামান। দেও দেখ দেখ সবে ভাই। দোনার ভারত হ'য়েছে শ্মশান, পড়ে আছে শুধু ছাই। অরপূর্ণা মাতা আজি অরহীন, কাদিছে সম্ভান অনাহারে ক্ষীণ. হা অর হা অর ভির রাতি দিন, অন্ত কিছু কথা নাই॥ লক্ষীর ভাণ্ডার লুক্তিত হ'য়েছে, ধর্ম্মের আগারে অধন্ম পশেছে. গৌরবের ধন সকলই গিয়াছে, কিছু নাই কিছু নাই ॥ যে দেশের শিল্প জগৎ ছেয়েছে. দেই দেশে এখন বল কিবা আছে, च्ध वित्तत्मत मूथ टिए बाह्म, हि हि नात्क मरत गाउँ। ভীষণ চুভিক্ষ আর মহামার, দেখ করিতেছে দেশ ছারখার, ঐ শুন ঐ শুন হাহাকার, কারও সুথ-লেশ নাই।। বিরোধ করিয়া আজি ভায়ে ভায়ে, 🥒 কেন থাকি ভধু পরমুখ চেয়ে,

# <u>রেকর্ড-কাফলী</u>

আপনারি ধনে ভিপারী হইয়ে, কেন গালাগালি থাই ?
তাই বলি ভাই বেষ হিংসা ভূলি,
ভাইয়ে ভাইয়ে এস করি কোলাকুলি,
মরমের কথা ক'রে বলাবলি,
মরম-জালা জুড়াই!
ডাকি আর এস জগতের নাথে, মনে বল ভাই পাইব যাহাতে,
তিনি না রাথিলে কে পারে রাথিতে, সবে বিভুগুণ গাই॥

## ঐাযুক্ত রাধাগোবিন্দ গোসামী।

কি বিউ--- পাৰাজ।

বাশরী বাজায় শ্রাম রায় ( সই )—
মোহন মূরতিয়া ধরিয়ে সপি ডাকে রাধিকায়॥
কলক্ষেরি ডালি সাজাইয়ে,

कुलगान हल पिछे (श विलाहेख,

য় কর শ্রাম (মার বা রাথ হরি)

বিনা মূল্যে তোমার হ'লাম

শ্রীপদে নিবেদি গে বিকাইব সই ঐ রাঙ্গা পায়॥

ভৈরো-মিশ্র।

আরতি নব-গৌরচক্র চক্রানন রাজে। নদীয়া সমাজে প্রেম-সাজে রস-রাজ হরি বিরাজে।

### শ্ৰীৰুক্ত রাধাগোবিক গোস্বামী



বিষণ বোলত ভাল, বালকগণ ধরত তাল,
নারীগণ মঙ্গলাল গান স্বর বিরাজে।
ভরি-রস-মকরন্দ পান, চুলু চুলু চুলু হু'টা নয়ন,
চাচর কেশ চিত্রবেশ ভেরি মদন লাজে।
ভীক্ষেদাস-রচিত ভাষ জানি জগত মন উল্লাসে।
মণি-কিন্ধিনী কটা বিরাজে নধুর মধুর বাজে।
জীরাণাগোবিন্দ নিমাই মন্দিরে এ গান-রস-রাজে।

ভৈরবী। আংটা মেয়ে কালী।

দোষ করিলে রোষ করে না তারেই ত মা বলি॥
আপন মায়ে যেমন করে যতন জানত সকলি।
পাগলের মন যথন কেমন তথনি যায় ভুলি॥
ভাকিনী নোগিনী কত ভূতের হুলাহুলি।
যত দেবের প্রধান বিষ্ণু ঈশান তারাও ক্বতাঞ্জলি
প্রসাদ বলে নিক্জ্ঞালে যদি যাবি চলি
সকল ছেড়ে হুদয় মাঝারে ভাব রে মুগুমালী॥

<u>এ</u>মিতী ভানুমতী দেবী

বড় ছঃথ রহিল মরমে। ( জাঞ্জি কারে বা বল্বো, ( মনের ছঃথ কারে বা বল্বো)

#### গ্রীমতী ভারুমতী দেবী :

# ব্রেকর্ড-কাকলী

(মন জানে আর আমি জানি, ছংথ কারে বা বলবো)
(সঙ্গিনী গো) গোবিন্দ জানে মনের ছংথ, )
(মন জানে আর আমি জানি )
বড় ছংথ রহিল মরমে।
আমারে ছাড়িয় প্রিয়া, মথুরা নগরে গিয়া,
এই বিধি লিখিল করমে॥
(আমার ভাগো লিখেছিল)
(বঁধু মধুপুরে যাবে, আমার ভাগো লিখেছিল, ।
বিধিরে, দারুণ বিধি, এই বিধি লিখেছিলি, )
এই বিধি লিখিল করমে॥

#### কীর্ন।

চলইতে অঙ্গ রাধার চলই না পারিরে ।
ছল ছল নয়নে বহয়ে ঘন বারিরে ৷
( আর চলে থেতে যে নারি )
( রাই ধনি কার ব'লে বা যাবে )
( গ্রাম সামর্থ হারায়েছে )
নয়ন ধারা, ( যেন মন্দাকিনী ) বয়ে যে পছে,

( স্থামের বাহিয়া পড়ে )
টুটল মান ভেল বিরহ তরক্সরে
গ্রহ মাঝে বৈঠল সহচরী সক্ষ রে

#### শ্ৰীমতী ভাত্মমতী দেবী।



( কিছু বল্তে নারে )॥ ( বদন পানে চেয়ে রয় ধনি বল্তে নারে )

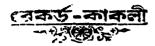
#### কীর্ত্তন।

( সিগরে ) কেন গেলাম যমুনারি জলে,
কাজ ভাল ত করি নাই
সাঁজের বেলায় জলে গিয়ে,
আনা জল ফ্যালা হয়ে ( শ্রীযমুনার জলে গিয়ে )
আর নন্দের গুলাল চাদ, পাতিয়ে রূপের ফাঁদ,
( পাতিয়ে কলক্ষের ফাঁদ )
ব্যাধ-ছলে কদম্বের তলে
দাড়ায়ে আছে মোর, ( কালরূপের ফাঁদ পেতে )
ফাঁদ পেতে যে কুলবতীর কুল নেবে বলে ॥

## শ্ৰীমতী পঞ্চমণি দাসী।

থাম্বাজ।

র'য়ে র'য়ে কেন তার মৃথ মনে পড়ে,
ও মেঘেরি বারি বিনে চাতকিনী প্রাণে মরে
ও চু'টী চরণে ধরি কতই যে কাঁদিয়,
ভালবাদ কিনা বাদ তাই তারে ভ্রথাইয়,
নাঞী ব'লে পাষানি ঠেলিলে চরণে মোরে,



এই লও তীক্ষ ছুরি হান মম বক্ষোপরে, নিভে যাক্ আঁথি তারা হেরিতে হেরিতে তোরে।

#### থাম্বাজ।

কে তুমি হে তক্ষবর, আছ স্থপে দাঁড়াইরে ।।
গোপিকা বেষ্টিত তাহে রাধালতা জড়াইরে ।
তমাল পিয়াল নহ, অগুরু চন্দন নহ,
সারাৎসার কল্লতক অনুমান নির্থিয়ে।
বৃন্দাবন পূণ্যণামে, দাঁড়ায়ে ত্রিভঙ্গ ঠামে,
সন্ধ রক্ষ তম তিনে, আছ তায় মিশাই

এবারে উমা এলে আনার যেতে কর্মো মান:।

মা আমার কৈলাসেতে পায় না থেতে

ঐ চিনের বাদাম ঘুগনী দানা।

নাইকো ইলিশ, তোপসে মাছ, নোলায় সরে জন,

ন্যাংড়া বোদাই আমের গাছ নাইকো আপেল ফল্

মোগুল, মেঠাই, সে দেশে নাই

থাবার খাওয়াবো নাইকো মিহিদানা

এবারে এই সহরে রেপে ভারে, ইংরাজী পড়াব

বাহু সিংহি ছাড়িয়ে মাকে মটরে চড়াব.

#### অভয়পদ চট্টোপাধ্যায় ও হারমাত।





সে বে কেমন মায়ের কেমন মেয়ে

এই বারেতে বুঝে পড়ে বাবে জানা
ব'লবা কি ছ:থের কথা নাইকো সেথা পাচ ছ তালঃ বাড়ী
সম্বল সংধু বুড়ো বলদ নাইকো ডামের গাড়ী॥
আবার নাই বাজোস্কোপ,
নাই থিয়েটার নাইকো গ্রানোকোন
নাইকো গোরার বাজন: "

## শ্রীমতী রাজলক্ষী মুখাজ্জী।

কার্ত্তন--থেমটা।

আর ত ব্রজে ধাব না ভাই ধেতে প্রাণ নাহি চায়।
ব্রজের থেলা ফুরিয়ে গেছে তাই এসেছি মথুরায়॥
মা পেয়েছি বাপ পেয়েছ ছেলে থেলা ভুলে গেছি।
তোমরা ক'জন মা ব'লে ভাই, ভুলিয়ে রেথ মা যশোদায়।
আবার ননী থেও, গোঠে যেও, প্রেম বিলায়ো গোপীকায়।

সিন্ধ-খাম্বাজ—মধ্যমান।

একা প্রেম রাখা হ'ল দায়।

যতনে যোগাতে বিন্দু সিন্ধ শুখায়।

আমার হ'ল যেমন, সাপেতে ম্যিক ধারণ, .
তাহার নয় তেমন, এবে জীবন রাখা দায়॥



## অভিনয়।

মিঃ এস, এন্ হোষ ও মিস কিরণ।

## পৃথ্বিরাজ

সংযুক্তা ও সূর্য্যসিংহ।

সংযুক্তা। স্থ্যসিংহ! কোন্ প্রয়োজনে মাগিয়াছে দুশ্ন আমার গ নহি আর মোরা দোহে বালক বালিকা. নিভতে ভোমার সনে মম আলাপন আর নহে কর্ত্তব্য আমার। বল ত্বরা কি বা প্রয়োজন ? কি বা প্রয়োজন ৪ ব'ল কারে ৪ সূর্য্য। কে ভানিবে দগ্ধ এই মংমের বাথা গ কে বৃঝিবে প্রাণের এ জালা গ পাষাণি ' আমি তব ধাইব পশ্চাতে সাথে ল'য়ে তপ্ত আঁথিজন. অনস্ত এ প্রেম মোর. ' ডালি দিতে চরণে তোমার, তুমি কিন্তু যাবে চ'লে ফিরায়ে বদন, বর্ষিয়া বিজ্ঞপের হাসি!

সংযুক্তা। সেই পুরাতন কথা। কে চাহে তোমার প্রেম ? রেখে দাও যতনে তুলিয়ে তার তরে. সোহাগে যে ধরিবে হৃদয়ে: শৈশব হইতে মোরা একত্রে পালিত. কত থেলা থেলেছি ত'জনে আমি ছোট বোন্টি তোমার ভগ্নী প্রতি কোন হেন প্রলাপ বচন ? সংযুক্তা! একদিন সন্ধ্যা-সমাগমে, সূর্য্য । খরস্রোতা নদীতীরে খেলিতে খেলিতে শ্বলিত-চধ্ন হ'য়ে, নিমজ্জিতা হ'য়েছিলে অগাধ সলিলে. শ্বরণ কি আছে তব কে বা সেইজন. নিজ প্রাণ ভুচ্ছ করি, যে বা তব রক্ষিল জীবন প সংযুক্তা। আছে। স্থা। ভেবে দেখ অক্তদিন মনে, বনমাঝে মহারাণা সনে, গিয়াছিলে শিকার-সন্ধানে:

সংযুক্তা। অ 🎉 ।

শ্বরণ কি আছে তব,

ভীষণ শাৰ্দ্-ল-গ্ৰাস হ'তে কেবা তব ৰক্ষিল জীবন গ্

তবে এই বৃঝি প্রতিদান তার 🤈 দ্যা | দংযক্তা। শোন স্থাসিংহ। সন্ধীৰ্ নহেক হেন সংযুক্তা-জদয়, इल यात প्राणमां कत्न. প্রয়োজন হ'লে, নিজ প্রাণ-দানে রক্ষা তব করিব জীবন, डेशकात इम्र यमि छन. অবহেলে সংপিও ডিডি. নিক্ষেপিতে পারি আমি জ্বন্ত অনলে। কিন্তু প্রতিদান চাত যদি প্রণয় আমার (इ.स. मान महालग उत्। ত্ত্বে কি দেখিবে ভূমি মরণ আমার कृशा । मीद्रम रामन (कार्य-छट बन. মরিবে মা এক কেঁটো অভ জল ৮ সংযক্ত। অসি করে সমর-প্রাঙ্গণে পার বলি তাজিতে জীবন ভগিনীর আঁথিনীরে তিতিবে মেদিনী. স্ভোদরা হাহাকার শুনিবে জগং। কিন্তু যদি তাজ প্রাণ আমার কারণ,

দামান্য রমণী তরে,

বিসর্জন দাও তব অমূল্য জীবন, কাপুরুষ শব তেরি ফিরাব নয়ন।

# <u>রেকর্ড-কাক্লী</u>

এত যদি সাধ তব তাজিতে জীবন. নিলেছিল নাগোরা-সমরে তব উত্তম স্থ্যোগ! প্রষ্ঠপ্রদর্শন তবে কেন বা করিলে গু কেন বল পলায়ে আসিলে গ তব তরে—ভধু তব তরে স্থ্য এখনও রেখেছি প্রাণ: দয়া কর--দয়া কর মোরে। বল বল---হাদয়ে ধরিয়ে তোমা জুড়াব কি প্রাণ ? পতি ব'লে সম্ভাষণ করিবে কি মোরে গ জা। পতি ঠ দূরের কথা ! ভ্ৰাতা বলি এতদিন ভেবেছি তোমারে, কিন্তু জেনো, আজ হ'তে— সংযুক্তার কেই নই আব কলোজের ।শরে, যেই অকাতরে দেছে তুলে কলম্ব-পশরা, পৃষ্ঠ-প্রদর্শন রণে ক'রেছে যে জন, সংযুক্তা তাহার সনে, আর না করিবে কভু ম্থের আলাপ! সংযুক্তা! কর ভূমি সংযত রসনা, হুৰ্যা। জেনে। মনে সীমা আছে মানব-ধৈর্যোর। **ঐ**হর্যাসিংহ নহে কাপুরুষ !



কিন্তু এই নিশীথ সময়ে,
নির্জন লতাকুঞ্জ মাঝে,
করি বাদ আমি তব অঙ্গ পরশন,
কি করিতে পার তুমি সংখুক্তা স্থলারী পূ
সংখুক্তা ৷ হাঃ হাঃ হাঃ
কি করিতে পারি আমি !
শত স্থ্যসিংহ নাহি ধরে শক্তি কভু,
স্পর্শিবারে কেশাগ্র আমার !

## রিজিয়া।

বক্তিয়ার ও রিজিয়া।

বক্তিরার। বুঝেছি সম্রাজ্ঞি ! তুমি চাহ পিপাসিত জনে,
অ্যাচিত বারিদানে পিপাসার
তীব্রতা বাড়া'রে দেখিতে কৌতুক।
বিন্দুমাত্র করুণা যদি থাকে তব হুদে
দিল্লীশ্বরি ! ও আদেশ দিও না দাসেরে।
তার চেরে ধর এই শাণিত ছুরিকা,
আমূল বসা'রে দাও হুদরে আমার,
ছিঁড়িয়া বাহির করি' তপ্ত-রক্ত-সিক্তা
হুদ-পিণ্ড মম, দেথ কার ছবি আঁকা
আছে পরতে পরতে তার।

#### विकिश।

## <u>রেকর্ড-কাকলী</u> <del>- ৩,৪৪৪,৫০-</del>

রিজিয়া।

বীরবর '

পুরুষ-হাদয়ে নিরস্তর ফুটতেছে
সহস্র বাসনা, তৃপ্ত সাধ অতৃপ্তের
সনে একস্রোতে যেতেছে ভাসিয়ে;
নব আকাজ্জার পুন: হ'তেছে উদয়।
পবিত্র প্রণয়-পাশে বাধ এই
হিন্দুরমণীয়ে; হাদয় হইতে মুছে ফেল
রিজিয়ার মুথ; শভিবে অতুল স্থথ
রাজ-অনুগ্রহ-ছায়ায় ব সয়ে।

বক্তিয়ার।

र मि

আশা মম এ জনমে না হয় পূরণ, তা'ও ভাল। শাহাজাদি! অন্য ললনারে বক্তিয়ার কভু নাহি অপিবে সদয়।

রিজিয়া।

বক্তিয়ার! বক্তিয়ার! এখন কি ব্র নাই রিজিয়ার মন! ভস্মান্তর বহিং যথা পাংশু-আবরণে রাথে লুকাইয়ে আপন দাহিকা-শক্তি, স্পূর্ণ মাত্রে ভস্ম করে সব; রিজিয়াও সেইরপ হাসি দিয়ে রেখেছে ঢাকিয়ে হৃদয়ের তেজ। আরে আরে ম্নণিত তাতার! জান না কি





স্পর্শ-মাত্রে দহিবারে পারে শত শত তাতারেরে গ

বক্তিয়ার !

শাহাজাদি ! সমাটননিনি। মৃত্যুভয় দেখাও কাহারে গ জান না কি তাতার-বালক মাতৃ-অঙ্ক হ'তে ছুটে যার সিংহশিশু সনে করিবারে মল্লরণ। শাণিত ছুরিকা ক্ষুদ্র ক্রীড়নক তার ! জীবনের ভয় দেখাও সমাজ্ঞি গ বক্তিয়ার মরিতে প্রস্তুত সদা, কিন্তু শাহাজাদি ! জীবনের সাধ এখনও মেটেনি তব। তুমি সন্নাট-নন্দিনী '---অপ্রয়ে লোকবল অর্থবল তব. তুমি দিল্লীশ্বরি !—কটাক্ষে তোমার শত শত তাতারের বক্ষ-রক্তে বধ্যভূমি হটবে রঞ্জিত,--কিন্তু গদি এট রক্ষীশন্য কক্ষে এই দণ্ডে নিম্নোষিত অসি মম দ্বিপণ্ডিত করে তব শির. কি করিতে পার ভূমি গ

রিজিয়া।

ক করিতে পারি আমি !
আরে, আরে, বাতুল তাতার ! এই
বাম পদাখাতে কুদ্র পতকের মত,
এই দণ্ডে তোমারে দলিতে পারি ; মূর্থ ়



বক্তিয়ার! বাসনা যগ্নপি তব দেখ প্রত্যক্ষ প্রমাণ—কি করিতে পারি আমি।

রক্ষী। কি আদেশ শাহাজাদি। রিজিয়া। যাও চ'লে, প্রয়োজন

হ'লে পুনঃ করিব আহ্বান।

বক্তিয়ার। এতদিনে টুটিন স্বপন! যেই আশা লভিকায় এতকাল ধরি' কবিলাম স্বিল সিঞ্চন, উংগ্ৰাটত হ'ল আজি মলদেশ তার! পিপাসায় জজারিত প্রাণ, ছটিলাম এ একাল মরীচিকা লক্ষ্য করি, আজি শেষ তার—শান্তি আশে বাথে নর প্রাণ, আজি অবসান তার— আসুরিক বীর্যা ধর সূদয় আমার ; স্কুমার বৃত্তি-চয় নিজগুণ তাজি; প্রতিহিংসা রূপে আজি হও পরিণত। রিজিয়ার নাম মড়ে ফেলে দিব ধরা হ'তে। যেন অন্ত কেহ আমার সমান না ব্যারিয়ে তার করে সাঁপে প্রাণ। আমি প্রাণপণে সাধিয়াছি মঙ্গল তাহার;— বাহুবলে নাশিয়াছি অরাতি সকল ;--তাই অতি অহম্বারে আজি স্থল্তানা রিজিয়া। অপনান করিলি আমারে। রে পাপিষ্ঠা!



### আমি জালিয়াছি দ্বীপ ; আমি আবার ফুংকারেতে করিব নির্বাণ।

## বিজয়-বসন্ত !

তৃতীয় অন্ধ—চতুর্থ গর্ভান্ধ। রাজা, রাণী ও বলবন্দ্র।

বল। মহারাজ সব শেষ, সব শেষ---

রাজা। কি ! কি ! বলবস্ত তুমি কাপ্ছ যে—কাপ্ছ যে ?

বল। কাঁপ্ছি মহারাজ, কৈ তা তো জানি না! রাজআজ্ঞা পালন ক'রেছি, কুমাগদের নিঃশেষ ক'রেছি। দেখ্বেন! দেখ্বেন!
আমার সঙ্গে আফ্ন, চট মুগু মশানে গড়াগড়ি বাচ্ছে, এখনও শৃগাল
কুকুরে থারনি! মহারাণী আপনিও আফুন, বিশ্বাস না হয় স্বচক্ষে দেখে
যান,—খুব প্রতিশোধ হ'রেছে—খুব প্রতিশোধ হ'রেছে।

তৃৰ্জ্য। বাও—যাও, বলবন্ত যাও, তুমি মহারাজের সাম্নে থেক না, হন্ত প্রকালন কর গে। বল। কি প্রক্ষালন ক'র্বো—রক্ত! এ কি যে সে রক্ত যে সামান্ত জলে প্রক্ষালন হবে! এই হাতে বিজয়ের রক্ত, এই হাতে বসস্তের রক্ত, রাজবংশের রক্ত! গাঢ়—তথ্য, সমুদ্রের সমস্ত জলে রক্ত প্রক্ষালিত হবে না! দেখুন মহারাজ! দেখুন মহারাণি! আমি কেমন কৃত্ত ভূতা—রাজ-আক্তা অক্ষরে অক্ষরে প্রতিপালন ক'রেছি।

রাজা। যাও বলবস্ত যাও, তোমার পুরস্কার পাবে-- যাও।

বল। যাই মহাবাজ, দেখুন, আমার কোন ক্রটা নাই, ঠিক দেখুন কুমারদের রক্ত কি না ? দেখুন আপনার রক্ত—আপনি দেখ্লে চিন্তে পার্বেন।

গুর্জায়। বলবস্থ, নাও--্যাও দেখ ছ না, মহারাজ কাতর হ'চেছন।

বল। কিসের কাতর ! রাজা রাজকার্য্য পালন ক'রেছেন—পতি পত্নীর সম্মান রেপেছেন। কাতরতা দেপ্ছি আমি, এই তামসী নিশীথে বিভীষিকাময় মশানে কুমারদের কাতর ক্রন্দন শুনেছি, "কোথায় মা—কোথায় বাবা" ব'লে চীৎকার ক'রে কেদেছে তা শুনেছি, ''গুরুদেব রক্ষা কর" ব'লে আমার পায়ে প'ডেছে অমনি মুগুচ্ছেদ ক'রেছি।

রাজা। ও:—হো:।

বল। কেমন মহারাজ, আজ্ঞা পালন ক'রেছি তো? মহারাণী আপনারও আজ্ঞা লজ্ফান করি নি, আগে বসস্তের—তারপর বিজ্ঞারের মস্তকচ্ছেদ।

তৃক্ষ। আমার আজ্ঞা! আমার আজ্ঞা! বিজয় নাই! রাজা। ইঞ্জিঃ রাণি, তোমারি আজ্ঞায় বিজয় নাই, বিজয়



নাই; —বসস্তও নাই— গমি নিকাংশ। আমার কেউ নাই কেবল তুমিই আছ — তুমিই আছ। আর তোমার অপরপ রপ আছে, এস, ওই রূপে তুবে থাকি। আমায় আলিঙ্গন কর, পার যদি পুত্রখাতীকে আলিঙ্গন কর।

## প্রফুল।

#### চতুর্থ অন্ধ-পঞ্চন গর্ভান্ধ

জ্ঞানদা। যাদব ! একটা কথা বলি, এই চারটে টাকা বেশ ক'রে বেধে নে, কেউ চাইলে দিস্নে, কারকে দেখাস্ নি, দোকানে বা ইচ্ছে হয় লুকিয়ে বার ক'রে কিনে থাস। আর এখন এই ছই আনার পরসা নে, দোকান থেকে কিছু খাবার কিনে খেগে, আমি এইখানে ব'পে থাকি। এই তো আসরকাল উপস্থিত-অদৃষ্টে যা ছিল হ'ল, ম'লেই কুরিয়ে বাবে। যেদোর কি হবে, আর তো দেখ্তে আস্বোনা, আজ তো বাছা খেতে পাবে।

যোগেশ। কোপাও তো কিছু হল না, এই চারটে প্রনা োরেছি এক ছটাক মদ দেবে। এ কে জ্ঞানদা প'ড়ে না কি ?

জ্ঞানদা। তুমি এসেছ ! আমার মৃত্যুকাল উপস্থিত,একটা কথা শোন, আমায় মার্ক্ডনা কর, আমি ঠাকুরপোর বৃদ্ধি শুনে তোমার এই সর্কানাশ ক'রেছি। আমি শিবপূজো ক'রে শিবের মতন স্বামী পেয়েছিলেম, আমার বরাতে সইল না, তোমার অপরাধ নাই; ুএখনও শোধরাও, তোমার সব হবে।



যোগেশ। মচ্ছো, রাস্তান্ন ম'র্তে এসেছো ? তোমাদের এতদ্র হ'রেছে ! আমার সাজান বাগান শুকিয়ে গেল ! যেদোও ম'রেছে ! বেশ হ'য়েছে ! মচ্ছো-মর, আমি মদ খাইগে । আমার সাজান বাগান শুকিয়ে গেল ।

জ্ঞানদা। তুমি আমার একটা উপকার কর, যদি ঐ কথাটী স্বীকার পাও তা হ'লে আমি স্থথে মরি; কোন রকমে যদি পীতাম্বরের বাড়ী পাঠিয়ে দাও, কি সে এসে নিয়ে যায় তা হ'লে আমি স্থথে মরি।

যোগেশ। তুমি রাস্তায়—নেদো দেথার, ম'র্বে কেমন। তা বেশ!
আমি ব'ল্তে পারি নি, মিছে কথা বল্বো না, পারি যদি পীতাম্বকে
চিঠি লিথ বো! আমার ঘাড়ের ভূতটা এখন তফাতে দাঁড়িয়ে আছে;
যদি শিগ্গির না ঘাড়ে চাপে তা হ'লে পাকো, আর ঘাড়ে চাপ্লে আমি
কি কর্বো। কি বল লাথি মেরেই তোমায় মেরে ফেলেছি কেমন ?

জ্ঞানদা। তোমার অপরাধ কি, আমায় ভগবান মেরেছেন।

যোগেশ। নানা ভূনটা তফাতে আছে, আমি ব্ঝতে পাচ্ছি আমিট মেরে ফেলেছি, কি কর্ব বল, ভূতে মেরেছে চারা নেট; মচ্ছো মর মর; আমার সাজান বাগান শুকিয়ে গেল। আ-হা হা আমার সাজান বাগান শুকিয়ে গেল।

## পৃথীরাজ।

সংযূক্তা, জয়চাদ পৃথীরাজ। ( পৃথীরাজ-প্রতিমৃত্তির গলায় মাল্যদান )

জয়টাদ। কি করিলি অবোধ বালিকা? ক্লীভুমে হলাহল করিলি যে পান।

### <u>রেকর্ড-কাকলা</u> ব্যুক্ত

বিপ্রগণ! অজ্ঞান বালিকা নাহি জানে কার মূর্ত্তি-গলে দেছে মালা, মার্ক্জনীয় নহে কি এ ভ্রম ?

সংযুকা। নহে ভ্ৰম পিতঃ ! জেনে গুনে মাল্য দান ক'রেছি উহার।

জয়টাদ। কি কহিলি ?

সংয্কা। জানি আমি কার পদে সঁপিলাম প্রাণ।
কায়মনোবাকো দদা ভজেছি তাঁহায়,
পতি মোর পুণীরাজ।

জন্মচাদ। আরে আরে কুলের কণ্টক!
পিতৃ-অরি পতি তোর 

ত্থা দিয়ে সর্পশিশু করিত্ব পালন

হ'ল যাই বিষের উদ্গান;
প্রসারিয়ে কাল-ফণা,
কেলায় পালক শিরে করিলি দংশন!
ভেবেছিস্মনে, ভূলে স্নেছ আকর্ষণে
ক্ষমা বৃঝি করিব রে তোরে 

চাস্ যদি আপন মঙ্গল,

অঞ্জনে বরমাল্য কর্ সমর্পণ!

সংযুক্তা। সে কি কথা, দেব !
শিশুকাল হ'তে তুমিট শিখা'য়ে দেচ ু
সতীত্ব পরম নিধি রমণী-জীবনে;

### পৃথ বাজ :

জয়টাদ।

সংযুক্তা।



তুমিই ব'লেছ, তাত ! "নারী-ধর্ম করিতে পালন হ'লে প্রয়োজন তুচ্ছ প্ৰাণ দিও বিসৰ্জন।" তবে কেন তথ উপদেশ তুমিও বিশ্বত হও পিতঃ ? বর-মাল্য সমর্পিয়ে একের গলায়, অন্যে বল, কেমনে ভজিব 🗸 দ্বিচারিণী সংযুক্তারে ক'বে জনে জনে, তাহে মান বাড়িবে কি তব > চক্রবর্ত্তী রাণা জন্মচাদ স্থী কি হবেন তায় ? প্রগল্ভা বালিকা ! কে চাহিছে উপদেশ তব ? চাহ যদি আপন মঙ্গল সত্তর করহ মোর আদেশ পালন। নারী-ধর্ম রক্ষা হ'তে কি মোর মঙ্গল ১ পায়ে ধরি পিতঃ

তনরারে শিখাও না কুলটা-আচার!
জয়টাদ। তনরা! কে মোর তনরা!
অকাতরে পিতার উন্নত শিরে
ॐ জন চেলে দেয় কলছ-কালিমা,

পিতৃ-অপমান করি আনক ঘাহার, পিতৃ-আজ্ঞা অবহেলে দলে যে চরণে. সে মোর তনয়া। জয়চাদ। আজি নির্বংশ রে তুই। মহাভমে হাদয় কাননে. বিষ্বল্লী করিয়ে রোপণ বেধেছিলি মায়া আর স্নেভের প্রভাবে, এবে নিজ করে নিশ্নম হইয়ে বিষবল্লী ফেল উপাডিয়ে। সংযুক্তা ! প্রস্তুত হও, শ্বর ইষ্টদেব । ( শ্বনি নিকাসন ) পিতঃ ৷ ছহিতা তোমার মরণে কি ডরে গু সংশক্তা। সভীত্ব অমুলা নিধি করিতে রক্ষণ, হ'লে প্রয়োজন বারবালা হাসিতে হাসিতে, भगत्नद्व (मग्न आलिक्षन् । ভাল---নর তবে, জয়চাঁদ। নিভে যাক্ প্রাণের এ জালা। ( অসি উত্তোলন ) রাওমল। কি কর বাতুল ? ( জয়চাঁদের হস্ত পারণ ) জন্মটাদ। প্রতি পদে, বৃদ্ধ, তুমি বাগা দাও মোরে, এবে লও প্রতিফল। (রাওমলকে তরবারির আঘাত) কোথা গেল সে কালনাগিনী ? ( সংযুক্তাকে মারিবার জন্য পুনরায় জীব্র উত্তোলন ১



পৃথীরাজের প্রবেশ
পৃথীরাজ। কাপ্কন তনয়ার চাহ ল'তে প্রাণ ?
এস, প্রিয়তমে!
আজি হ'তে দ্বোবারিক গৃহে তব স্থান।
প্রণমি চরণে তব,
পুক্রনীয় শুন্ত ঠাকুব।

## পাণ্ডবগোরব। দণ্ডী ও উর্বেশী।

দণ্ডী।

ক্ষম প্রিয়ে, ভদ্র আর না হেরি এ স্থানে,

মিলি দেবগণ অচিরে করিবে আক্রমণ।

ক্ষমরারি দল বলে পশিবে সংগ্রামে

সংগ্র কে বা ধরে বিভবনে——

নিবারে এ জ্মান বাহেন।

স্বায় সহিত নাশ পাপ্তব হইবে;

উপায় না রবে—বিবিৰে আমায়

ক্ষম্ম লবে তোমারে কাড়িয়ে।

প্রাত্তে সবে হবে তব অধিনী-আকার,

পলাইব জুই জনে,

রহিব নিভ্ত্য স্থানে লোক অগোচরে।

উর্বিশা।





কেন তুমি মজ মোর আশে ? অকপটে ব'লেছি ভোষায় কাঁদে প্রাণ থাকিয়ে ধরায় কর তুমি প্রেম-আলাপন বিষবৎ হয় জ্ঞান। দিবস-বামিনী-অখিনী-কামিনী কহ কত সয়—ত্রিদিবমোহিনী আমি। मखी। এই কিরে তোর আচরণ গ ছিলি গছন কাননে. সিংহাসনে দিছি স্থান! তাজি রাজ্য তাজি প্রণয়িনী: বংশধর নন্দনে ত্যজিয়ে, আছি তোর সনে পরাশ্রয়ে : এত যত্নে তোর নাহি উঠে মন 🤫 তুই বারবিলাসিনী! পাষাণী প্রণরহীনা---বোগ্য শাপ দের নাই মুনি.---অহল্যা সমান. উচিত আছিল তোর প্রস্তর হইতে। कानि वशा नित्र मृत्थ চালাইব স্থতীক্ষ চাবুক গায়---প্রবেশিব সাগর মাঝারে.



পিতৃ-আজ্ঞা না হবে লজ্ফান---করি আশ্ব অজ্জুনে অর্পণ চলে যাব যথা ল'য়ে যায় আঁথি। বুথা ধন্ম ধ'রেছি মা করে, বিফল জীবন---শক্র-ভয়ে অস্ত্র ত্যজি দাসত্ব করিব ! বীরদন্তে অখভালে ক'রেছে লিখন রণে আবাহন করি, ত্যজ্ঞিরণ ক্ষতিয়-নন্দন পরাজয় মানি লব ! হেন প্রাণ কেন মা রাথিব, কেন মা গো প'রেছিলে গর্ভে মোরে ? বংস ৷ ত্যজ মনস্তাপ-প্রবল প্রতাপ পাওব ফাব্রনী ওনি। তুমি নূপতি নয়নের নিধি তাই রাজা নিবারে তোমারে সমরে যাইতে বাছমণি ! বলবানে পূজাদান আছে এ নিয়ম রণস্থলে বীর করে বীরের আদর। শুনিয়াছি নর-নারায়ণ ধনঞ্জয়, বজ্জা নাহি হেন জনে-সন্মান প্রদানে! ড়ুৱে পূজা দ্বণা করে বীর !

55.7

প্রবীর।

कना ।

## ব্রেকর্ড-কাকনী

ফিরে দিতে যাই যদি বাজী. ঘুণার অর্জুন কথা নাহি কবে মম সনে; ফিরায়ে বদন বীরগণ হাসিবে সকলে। ভূনি মাতা—জাহুবীর বরে পাইয়াছ মোরে. কাপুরুষ পুত্র কি দেছেন ভাগীরথী ! त्रा यि ना या इ कर्नान--দেবতার হবে অপমান ! মাগো! তব পদে মতি, তোমার চরণ মম গতি. অক্ষয় কিরীট শিরে তব পদ্ধৃলি---মাতৃনাম অক্ষয় কবচ বুকে; সম্মুথ সমরে বিমুথ কে করে মোরে ? নয়ন-আনন্দ তুমি জীবন আমার क्रमा। ভাবি মনে পাছে তোর হয় অকল্যাণ। রণে মৃত্যু হ'তে কিবা আছে মা কল্যাণ! প্রবীর। কে কোথায় ক্ষত্ৰিয়-জননী সম্ভানে অঞ্চল ঢাকি রাথে? কুলাঙ্গার পুত্র কার কামনা জননী ! ক্ষত্রিয়-নন্দিনী কার ভীরু পুত্র সাধ। পিতার নিষেধ যদি---ना क्तित द्रश, कित्त फिर इय, কিন্ত লোকময় কলকভাজন

রাথিব জীবন ছার

মনে স্থান দিও না জননী !

রণে যদি বেতে মোরে মানা,

বন্দি চরণ—

বিদার হইরে যাই জন্মের মতন !

জনা । স্থির হও—আমি বুঝাইব ভূপে ।

হর হোক্ যা আছে মা জাহ্নবীর মনে,

রণসাধ যদি তোর রণ পণ মম ।

প্রবীর । ধরি তোর পদধ্লি শঙ্করে না ডরি ।

(রাজা ও বিদূরকের প্রবেশ )

বিদ্যক। এই যে মারে পোরে একত্র হ'রেছেন, নিশ্চর দামোদর আস্ছেন সন্দেহ নাই, অগ্নি দেবতার বর কি আর বিফল হয়? মনে কর্ছ রাজা, রাণী ঠাকুরুণ বোঝাবেন, উনি না ঢাল খাঁড়া ধ'রে রণাঙ্গনা হ'রে দাঁড়ান, ও আমার মুখের ভাবেই মালুম হ'রেছে! আপনি ঘোড়া ফিরিরে দিতে বল্ছেন, কেঁদে তুলাল রাণীর কাছে এসেছেন! সকাল থেকে পুরে হির রব একি বিফল হয়?

## হরিরাজ।

ত্রীমতী কুসুমকুমারী ও ত্রীযুক্ত অমরেক্রনাও দত।

শ্রীলেখা ও হরিরাজ । শ্রীলেখা। এই বংস ; কি হেডু বিলম্ব এড



একে জ'লে নিশিদিন, বাঁচি প্রাণে তোর মুখ চেয়ে,
তুই যদি দিবি বাধা ক'য়ে কথা এত নিদারণ
প্রবোধ না দিয়ে জননীরে—
কার তরে রহিব সংসারে আর ?
বংস হ'য়া না নির্দয় এত জননীর প্রতি।

হরিরাজ। মাতা ! নিষ্ঠুরতা অধিক কাহার ?
নহে ত আমার ; ভাব একবার নিজ ব্যবহার
আমার পিতার প্রতি।

শ্রীলেখা। হরিরাজ ভূলেছ কি মনে—কার সনে কর বাক্যালাপ ?

হরিরাজ। হুর্ভাগ্য অপার জননী আমার।

কি কহিব রুদ্ধ অসি মম,

নহে কি এখন থাকিত জীবন কল্মিত দেহে তব ?

যার স্নেহ্ন করি অনাদর, কুলমান বিসজিলে অপরের পায়,

সেই স্নেহ্-ধারা হ'তে লইয়া বিদায়

দেবলোক হ'তে হুর্ভেম্ম কবচে রক্ষা করে জীবন তোমার।

নহিলে কি ক্তিয়-সম্ভান এ কলম্ব করিয়া বহন

মাতা বলি করিত মার্জনা ?

পিতা! আর যে সহে না, ভূলে যাব আদেশ তোমার।

কলম্ব মাতার পুত্র হ'য়ে কেমনে সহিব ?

ঐ ঐ শুন অশরীরী বাণী! সকরুণ ঐ আবাহন ;

শুন কণা, কলম্ব-বারতা আর নাহি স্থিকাশ জগতে।

বিভূপদে কর স্বরা আত্ম-সমর্শণ

#### रुत्रित्राक ।

### <u>রেকর্ড-কাকনী</u> -%

দ্বণিত জীবন শুদ্ধ কর চিত্ত অমুতাপে। হরিরাজ, হরিরাজ, রক্ষা কর, রক্ষা কর মোরে। শ্রীলেখা। ধ'রেছি জঠরে মাতৃহত্যা করিবি কি শেষে ? যাই আমি যাই পলাইয়ে। হরিরাজ। কোথা যাও, দেথ চিত্র অতীব স্থলর। কি বিশাল ঠাট প্রশস্ত ললাট ভ্রমুগল বাসবের চাপ সম, পূৰ্ণ জ্যোতি আকৰ্ণ নয়ন, নাসিকা গঠন, থগরাজে দিয়ে লাজ. আজামুলম্বিত বাহু সুললিত শরাসনে করে কার্ত্তিকেয় পরাজয়। বীর বপু হের—বক্ষণ্ডল হেরি রিপুদল কাঁপিত সভয়ে এই জন ছিল তব স্বামী। জ্ঞানচক্ষু কর উন্মীলন, হের অন্য জন---ভিক্ষা অনে পালিত কুরুরে হিংসাভরে কুঞ্চিত ললাট ক্রভঙ্গেতে কুৎসিত আচার ভাসে। আঁথিপাশে নরকের ছায়া, দয়া মায়া ভয়ে করে পলায়ন। **্রেন জন বিলাসের কীট তব** ? মাতা, গৰুমতি দলি পদতলে



কাঁচখণ্ডে করিলে আকিঞ্চন।
ধন্য তুমি ফুল শরাসন!
আঘটন কিছু নাহি তব পাশে।
মাতা, জিজ্ঞাসি তোমারে,
কিবা ঘোরে আছের করিল তব প্রাণ
ছিল না কি জ্ঞান, কোথা ছিল হ'নরন ?
শ্রীলেথা। রক্ষা কর, রক্ষা কর, তিরস্কার আর নাহি কর
জামু পাতি মাগি ক্ষমা।
হরিরাজ। আমি কে বা কি করিব ক্ষমা,
শ্রামাপদে যাচ প্রতিকার
দেবী-পদে লওগে আশ্রয়;
শোন মাতা পুত্রের হৃদয়ন
মাতৃহত্যা, পাপে লিপ্ত নাহি কর স্থতে।

## কপালকুণ্ডলা।

### নবকুমার ও মতিবিবি।

নব। আর কি ব'ল্বে বল, নীরব হ'লে কেন ? তবে আমি এখন চল্লেম; তুমি আর আমার ডেক না।

মতি। বেও না, আর একটু থাক; আমার যা বল্বার তা এথনও শেষ হরনি।

नव। कि व'न्दि वन ? करेके

#### কপালকুওলা :



মতি। উ: এত লাগুনা।

नव। देक कि व'न्द वन १

মতি। কি ব'ল্ব, কি কথায় আমার অন্তরের জালা বোঝাবো।

নব। কিছু ব'ল্লে না, নীরব রইলে বে ? তুমি যদি আমার কিছু না ব'ল্বে, তবে আমার থাকৃতে ব'ল্লে কেন, আমি যাই।

মতি। না—তুমি বেওনা।

নব। তুমি কি ব'ল্বে বল না!

মতি। তুমি কি চাও ? পৃথিবীতে কিছু কি তোমার প্রার্থনীয় নাই ? ধন সম্পদ, মান, মর্যাদা, রঙ্গ, রহস্ত, যাকে লোকে প্রণয় বলে, পৃথিবীতে যাকে স্থথ বলে, আমি তার সকলি তোমায় দিচ্ছি—কিছুই তার প্রতিদান চাই না, কেবল ভোমার দাসী হ'তে চাই, তোমার যে পত্নী হব এ গৌরব রাখি না, কেবল দাসী,—ঐ চরণের দাসী হ'তে চাই; এই আমার নিবেদন।

নব। আমি দরিদ্র বাহ্মণ, ইহ জনমে দরিদ্র বাহ্মণই থাক্ব—তোমার ধন সম্পত্তি ল'য়ে যবনীজার হ'তে পারবো না।

মতি। জার—যবনীজার—ভাল যাক, সে কথা থাক; বিধাতার যদি তাই ইচ্ছা হয়; তবে না হয় আমার সকল সাধ অতল জলে বিসর্জ্ঞন দিব, এখন আমার একটা কথা, অমুরোধ রাথ্বে কি ? এই পথ দিয়ে তুমি এক একবার যেও, দাসী ভেবে দর্শন দিও, আমার জীবনের সকল সাধ, সকল আশা পূর্ণ হবে, আমি তোমায় দেখে চকু পরিতৃপ্ত ক'র্ব।

নব। তুমি বনী, পরস্ত্রী, তোমার সঙ্গে এরপ আলাপেও দোব হর, তোমার সঙ্গে আর আমার দেখা হবে না।

# <u>রেকর্ড-কাকলী</u>

মতি। তুমি আমার নও ? তবে কার দৈববিজ্বনার আমি তোমার হারায়েছি ? আমার রত্ন কে অপহরণ ক'র্লে ? আমি কেন সহু ক'র্বো—না সহু ক'র্বো—বিধাতার বিজ্বনা, আমি যবনী, উপায়হীন, প্রাণ যায়, ওহোঃ হোঃ প্রাণ যায়। নির্দ্ধয় ! আমি তোমার জন্তে আগ্রার সিংহাসন পরিত্যাগ ক'রে এসেছি, তুমি আমায় পরিত্যাগ ক'রো না।

নব। তুমি আগ্রায় ফিরে যাও, আমার আশা ত্যাগ কর।

মতি। এ জনমে নয়, এ জনমে তোমার আশা কথনও ছাড়্ব না।

নব। এ কি । কে রমণী, কম্পিত নাসারস্কু, ললাটদেশে ধমনী ক্ষীত রমণীয় রেখা; জ্যোতিকায় চক্ষু—সমুদ্রবারিবং ঝলসিত, দলিতফণা ফণিনীর ক্যার ফণি তুলে দগুরমানা কে এ রমণী, উন্মাদিনী—কে ?

মতি। তোমায় ত্যাগ কর্বো—এ জনমে নয়; তুমি আমারই হবে।

নব। এ কি অপূর্ব্ধ শোভা, বজুস্চক বিচাতের ন্যায় মনোমোহিনী শোভা, হৃদয়ে ভয়সঞ্চার হয়। আমার বহুদিনের কথা অরণ হ'ছে, আমার প্রথমা ক্রা পদ্মাবতীকে যথন শয়নাগার হ'তে বহিদ্ধত কর্তে উন্মত হ'য়েছিলেম—ঘাদশব্দীয়া বালিকা তথন সদর্পে আমার প্রতি এইরূপ ফিরে দাড়িয়েছিল, এমনি নাসারস্কু কাপিয়াছিল,এমনি মস্তিষ্ক হেলিয়েছিল! বহুকাল সে মূর্ত্তি মনে পড়ে নাই, আজু এই য়বনী দেখে সে মূর্ত্তি মনে প'ড়েছে, তুমি কে ?—

মতি। আমি পদ্মাবতী---

নব। কি ভয়কর সংঘটন, এর পরিণাম কোথায় ?

#### ভ্রমর

শীবুজ অমরেক্সনাথ দত্ত, শীষতী কৃত্যক্ষারী ও মিঃ এন্, দি, বহ। রাসবিহারী। তাই ত ! এত দেরি হ'ছে কেন ? এখন তাস্ছে না কেন ? ঐ যে কে আসছে ? সাড়া নি—কে গা ?

রোহিণী। তুমি কে গা?

রাসবিহারী। আমি রাসবিহারী গো।

রোহিণী! আমি রোহিণী।

রাসবিহারী। এত দেরী হ'লো যে—

রোহিণী। একটুনা দেখে আস্তে পারিনি। তাবড় কট হ'য়েছে নাং

রাসবিহারী। না কট আর কি, তবে অনেকক্ষণ ব'সে আছি, ভাব্লাম বুঝি আমাকে ভুলে গেলে আর এলে না।

রোহিণী। যদি ভুলতে পার্তুম তা হ'লে আমার এ হর্দশা হবে কেন। একজনকে ভুল্তে না পেরে এদেশে এসেছি, আর তোমায় ভুল্তে না পেরে—কে—রে ১

গোবিন্দলাল। তোমার যম।

রোহিণী। ছাড় ! ছাড় ! আমি কোন মন্দ অভিপ্রায়ে আসিনি ; আমি যে অভিপ্রায়ে এসেছি, তা না হয় ঐ বাব্টীকে জিজ্ঞাসা কর !

গোবিন্দলাল। কৈ? কে তোর বাবু? কা'কে জিজ্ঞাসাঁ ক'ৰ্ব? রোহিণী। কই? কোথায় গেল? কেউ ত এখানে নাই। গোবিন্দলাল ্ট্রী কেউ নেই কেন; এই যে আমি আছি রোহিণী! রোহিণী। কি?

# <u>রেকর্ড-কাকনী</u>

গোবিন্দলাল। তোমার সঙ্গে একটা কথা আছে।

त्राहिगी। कि।

গোবিন্দলাল। তুমি আমার কে?

রোহিণী। কেউ নই, যতদিন পায়ে রাখ ততদিন দাসী। না হ'লে। আর কেউ নই।

গোবিন্দলাল। পারে ছেড়ে তোমার মাথার রেথেছিলাম। রাজার স্থার ঐশ্বর্যা, রাজার অধিক সম্পদ, অকলঙ্ক চরিত্র, অত্যজ্ঞা ধর্মা, সব তোমার জন্ম ছেড়েছিলাম। তুমি কি রোহিণি! তোমার জন্য ভ্রমর, জগতে অজুল, চিস্তার স্থুপ, ছঃখে তৃপ্তি, সেই ভ্রমরকে ত্যাগ কর্লুম! তুমি রোহিণি! তোমার মুখ চেয়ে সর্বান্থ ছেড়ে বনবাসী হলুম। সেই বিশ্বাসের এই পরিণাম! সেই বিশ্বাসের এই প্রতিদান! সর্বানাশি! রাজসি! তোর ত কিছুই অভাব ছিল না। রাজরাণীও এত আদরে থাকে না; তবে কেন তুই এ কাজ করিল। ছি! ছিঃ অতি ঘূণিত কাজ। নরকেও তোর —(পদাঘাত)।

রোহিণী। উ:---

গোবিন্দলাল। রোহিণি দাঁড়াও! তুমি একবার ম'রতে চেয়েছিলে আবার ম'রতে সাহস আছে কি?

রোহিণী। এখন আর ম'র্ভে চাইব কেন ? হীবনের যা **স্থ ছিল** সব পূর্বিরেছৈ তবে আর হঃথ কিনের ?

গ্যেথিন্দলাল। তবে চুপ ক'রে নাড়াও। নোড় না! এই দেখ পিন্তল ভরা। কেমন মর্ভে গার্বে?

ক্লেছিণী। না!না! মেরোনা; মেরোনা, আমি ম'র্তে পার্বো ৩০০



না! আমায় মেরোনা! আমায় মেরোনা।

গোবিন্দলাল। কি আশ্চর্যা! রোহিণী এখনও তোমার বাঁচবার সাধ হয়? না না, তা হবে না! তোমার বাঁচা হবে না। তুমি না মর্লে আমার মতন অনেকে প্রতারিত হবে। চুপ ক'রে দাঁড়াও। এই দেখ পিন্তল—চুপ্!

রোহিণী। নানা, মেরোনা! মেরোনা! আমার নৃতম যৌবন, নৃতন স্থ, মেরোনা! মেরোনা! আমায় চরণেনা স্থান দেও, আমায় বিদায় দেও,—

(गाविन्नवाव। এই निर्दे ( शिखनाघाउ)

## विन्यञ्जन।

বিশ্বমঙ্গল ও চিন্তামণি।

বিৱ। এই আথ দডি আথ।

চিস্তা। কৈ দেখি (প্রাচীরের নিকট গিয়া) ওগো মাগো, এযে অজ্ঞাগর গোধরো সাপ।

বিশ্ব। এঁয়া, অজাগর গোথরো সাপ ?

চিন্তা। এ কি ! তুমি কাল সাপ ধ'রে উঠেছিলে ! তুমি বৈ আমার মুখপানে চেয়ে রয়েছ যে ?

বিশ্ব। তোনার দেখ্ছি!

চিন্তা। কি দেখুছো?

বিষ। তুমি বঁড় স্থলর !

### রেকর্ড-কাকলী

চিন্তা। তুমি নদী পেরলে কি ক'রে ?

বিষ। আমি নদীতে ঝাপ দিলুম—ভাবলুম সাতরে পার হব, কিন্তু বড় তুফান, মাঝখানে এসে চেউ লেগে আমার নিশাস বন্ধ হ'য়ে যেতে লাগল! এমন সময় একথানা কাঠ ভেসে যাচ্ছিল—

চিন্তা। তোমার গায়ে অত গুর্গন্ধ কিসের ?

াবল। আমি তো তোমায় ব'লেছি তা আমি বলতে পারিনে।

চিন্তা। সাপটা অনায়াসে ধরলে ?

বিল। চিস্তামণি! বোধ হয় তুমি কখন প্রাণ দাওনি, তাই'লে বুঝ্তে প্রাণ অতি তুচ্ছ তাহ'লে জান্তে সাপে দড়িতে বিশেষ প্রভেদ নাই।

চিন্তা। তুমি কি উন্মাদ?

বিল্ল। বদি আজ্ঞ নাবুঝে থাক, নিশ্চর তুমি প্রেমিক নও, কিন্তু তুমি অভি স্থনর! অভি স্থনর!

চিস্তা। কি ফ্যাল ফ্যাল ক'রে দেপ্ছো?

বিষ। দেখ্ছি তোমার কথা সত্যি কি নিছে। আমি উন্মাদ এ পরিচয় কি তুমি আগে পাওনি! তুমি নিদ্রা বাও আমি সমস্ত রাত্রি তোমার মুখপানে চেরে থাকি, তুমি দীর্ঘ নিশ্বাস ফেল্লে দশদিক শৃন্ত দেখি, তোমার চক্ষে জল পড়লে আমার বুকে শেল বাজে, এতেও কি বৃঝতে পারনি আমি উন্মাদ কি না? আমার সর্কাশ্ব ঋণে বিকিয়ে যাছে, একবারও তার প্রতি চাইনি; নিন্দা অঙ্গের আভরণ ক'রেছি, আজ কি তোমার বোধ হয় এ কথা আমি সত্য ব'লছি? (সর্পের প্রতি দেখাইয়া) আমি উন্মাদ কি না তাথ! প্রত্যক্ষ তাথ! প্রত্যক্ষ তাথ! সত্য চিস্তামণি আমি উন্নাদ, কিন্তু তুমি অতি হৃদর! অতি হৃদর!

চিন্তা। আচ্ছা বক্ছ কেন গ

বিল । জানি না। অবশুই অতি স্থানর, নৈলে এতদিন কার পূজা কর্ছি? তোমায় দেখ্ছি তুমি দেবী না রাক্ষসী! যদি দেবী হ'তে মনের কথা ব্রতে, নিশ্চয়ই তুমি রাক্ষসী। কিন্তু অতি স্থানর। অতি স্থানর।

চিন্তা। চল তুমি কি কাঠ ধ'রে এলে আমি দেখ্ব। বিব। তোমার এখনও অবিশাস চল।

শ্রীযুক্ত সভ্যেক্তনাথ ঘোষ ও শ্রীমতী বিনোদিনী দাসী

### विन्यभन ।

মঙ্গলা, বণিক, অহল্যা ও বিশ্বমঙ্গল।

বণিক। আস্তে আজ্ঞা হয়, আস্থন!
আহলা। স্বামি, পতি, প্রাণেশ্বর! তুমি দায়ে ঠেকিয়েছ, তুমিই রক্ষা
করবে। আমি অবলা!

(বিত্বমঙ্গলের প্রবেশ)

বণিক। এই আমার গৃহিণী---আপনার দাসী।

( প্রস্থান )

অহল্যা। আপনি পালঙ্কের উপর উপবেশন করুন।
বিব। না: শ্রীমি তোমায় দেখুব—এইখান থেকেই দেখুব।



( হগত ) ভেবে ছাথ্মন কত তোরে নাচায় নয়ন! ছিলি ব্রাহ্মণ-কুমার---বেখ্রাদাস নয়নের অনুরোধে ! পিতৃ-শ্ৰাদ্ধ-দিনে, ধৈৰ্য্য নাহি প্ৰাণে, ঘোর নিশা' মহা ঝঞ্চাবাতে. তরক্ষের সনে রণ ! রহিল জীবন শব দেহ আলিঙ্গনে ! সর্পে রর্জ্জু ভ্রম, হেন অন্ধ ক'রেছে নয়ন; পুরস্বার-বারাঙ্গনা তিরস্বার ! মন. হাসি, পায়-হ'ল তোর বৈরাগ্য উদয় ! চ'লে গেলি একবাসে গৃহবাস তাজি; 'কোথা ক্লম্ভ বলি হলি উতরোলি. —্যেন ভোর কত প্রেম! আরে রে পাগল মন ! ধ্যানে মগ্ন বাপীভটে সাধুর আকার— শুনি কন্ধণ-ঝঙ্কার, চাহিলি নয়ন মেলি। ভাগ্পুনঃ নয়নের ছলে কি উন্মাদ দশা তোর।

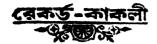
#### বিশ্বমঙ্গল ।



মন, তুমি আঁখির গরব কর। —নিতা ডর পাছে যায় এ রতন ! ছাথ তোর আঁথির আচার। সেই মাংস অস্তি. কাৰ্ছভ্ৰমে, প্ৰাণের কারণে, **मिल** याद्र जानिक्रन-সেই মত গলিতে হইবে। বাহ্যিক এ লাবণোর আবরণ----এই রত্ব ভাব তুমি সংসারের সার। ভাব মন বুথা জন্ম তার এ রতনে বঞ্চিত যে জন। বুঝ, মন নয়ন তোমার অন্ধ কিবা নহে। কিছু নাহি হেরে; অপর যে বস্তু তাহে কহে নিতাধন। এর ছলে কত দিন রবি ভূলে ?

( প্রকাশ্যে ) তোমার অলঙ্কার থেকে ছটো কাঁটা খুলে দাও! মা! তোমার স্বামীকে বলগে, আমি তোমার পাগল ছেলে; ষাও মা, তোমার পতি আজ্ঞা; আমার কথা হেলন কর্ত্তে নেই।

আহেল্যা। কে এ মহাজন! (প্রস্থান)
বিষয়ে মন এখন কি আঁখির মমতা কর?
শক্তার শীঘ্র কর বধ!



দিব আমি উত্তম নয়ন

যেই আঁথি ব্ৰজের গোপালে
আমার বলিয়ে তুলে নেবে কোলে

অন্ত সব দেখিবে অসার!

যাও, যাও নশ্বর নয়ন

চল পদ যথা ইচ্ছা হয়।

### মাতালের গোপাল দাদা। ছেলে মাতাল হ'য়ে এসে বাপ্কে ডাক্ছে।

ছেলে। আজ রাত্রি প্রায় তিনটে বেজে গিয়েছে, এত রাত্রে বাড়ীতে গিয়ে "বাবা বাবা" ব'লে ডাকলেই তো দেখ্ছি গোলযোগ। বাবাটী বুড়ো হ'য়েছেন, কিন্তু ওঁর শনিবার দিন বাড়ী আসাটির কমাই নেই। হ'দগু যে ডানা মেলে উড়্বো, তার যোটি নাই বাবা। বাই হোক্ একটু কেদ নিক'রে ডাক্তে হ'চ্ছে। বাবার নাম গোপাল, ডাক্ছে—'গোপালদা" "গোপালদা!" ওর মা ছিল উপরে! ওর বাপকে ডেকে দিছে—

মা। "ওগো" কে ডাকছে, বল দেখিনি ও কে মাতালের মত চ্যাচামেচি ক'বছে তোমাকে ডাকছে—একবার নীচে যাও না ?

বাপ। আরে এত রাত্রে কে আবার ডাকাডাকি কচ্ছে, ছাই!
মোমবাতিটা একবার দাও দেখি, অফিসের কেউ হয় তো মাতাল হ'য়ে
এসেছে। (তাড়াতাড়ি দরজা খুলে দিয়ে দেখেন যে—মূর্ত্তিমান ছেলে—
'আরে হৃতভাগা' ম'লো যা, ভূই রাত তিনটের সময় এছি পাড়ার মদিখানে



"গোপালদা" "গোপালদা" ব'লে ডাকচিদ্—তোর জভ্যে মান ই**অং** সব গেল।

ছেলে। ই। ই। বাব্র মান ইজ্জৎ একেবারে সব গেছে আর কি—
আর "বাবা ও বাবা" ব'লে ডাক্লে একেবারে মান বাড়্তো, আর যে
"গেপোলদা" ব'লে ডাক্ছি পাড়ার লোকে মনে কর্বে গোপালের
কোন্ ইয়ার এসেছে। ইাা হাঁ৷ বেটার বৃদ্ধি দেগ না—আমি মান ঢাক্ছি—
উনি পুলে শিচ্ছেন আর কি ?

বাবা। হাড়হাবাতে বাড়ী ঢোক তোর আর বিছে প্রকাশে কাজ নাই। হাড়হাবাতে কোথাকারের। লোকের ছেলে প্রেগে মরে, এ বেটার মৃত্যু নেই—হাড়মাবাতে বাড়ী ডোক্।

ছেলে। আরে, আমায় বাধা জালাতন কর কেন—অমনি সাদাসিদে
বল বাবা—চোপ রাভাবার দরকার কি বাবা—সাদাসিদে চল, স্থুক ক'রে
চুকে যাচ্ছি—আর বেয়াড়াগিরি যদি কর, তা'হলে বাবা! আমি এখন
মিলিটারী মেজাজে রয়েছি, ও "বাবা কাবা" এখন কেয়ারে আসে না
বাবা,—হাঁ৷ হাঁ৷—এখন বন্দুকহন্তে সূর্ত্তিমান্ ম্যাক্ হয়ে রয়েছি বাবা,—হাঁ৷
ও চালাকি এখন আর পাট্ছে না বাবা—এমন ছেলে ক'জনের হ্য বল
দেখি; ভাগ্যে তোমার বরাতে এমন আইরণ অক্টোবর মিলেছে, বাবা,
আর কথা বাড়াবার দরকার নাই; পার ত কথা বাড়িও না বাবা—আমি
বাডী যাচ্ছি। বাবা, কথাবার্ডায় দরকার নেই।

### আমি তো মুদ মারি তুমি যে মাতাল মার।

বাপ-বেটায় কুক্ড়ো লড়াই লেগেছে আর কি। ছেলের বাপ্ 🌬 নেক

## <u>রেকর্ড-কাকনী</u>

রকম ক'রে বারণ ক'রেছে—দেখ বেটা মদ আর খাস্নি। এঁটা কাণে কামড়ে বা কর্ণবেধের মত কাণ ছেঁদা ক'রে বুঝিয়ে দিয়েছি। ছেলে বেরিয়েছে—দে দিন শনিবার বারদোয় না পেয়ে কি আর বাড়ী কেরে! কাড়ীর কাছে এসে তখন মনে প'ড়েছে যে তাই তো কি করা যায়,— বাবা তো খথেইরপে বারণ ক'রেছেন, যা হোক্ সাফাই দেওয়া যাবে বাবা, এই বাটো যেমন ভাগনেকে ভালবাসে। অন্ধকারে তার নামটাই না হর ক'রে দেব, এই স্থির ক'রে বাটীর কাছে গিয়ে চাকরটাকে ডাকছে।

ছেলে। বিষয়ক, বিষয়ক!

এখন ওর বাপ পাশের যরে শুয়েছিল, সে ভদুলোক তাড়াতাড়ি দর্জ: খুলে দিরেছে, খুলে দিনেই দেখে ছেলে!

বাপ। ইচ রে বেটা হতভাগা, তোকে বারংবার ক'রে বারণ করি 
তুই ব্যাটা তবু সেই মদ গিলে এসেছিস্, বাটো হতভাগা কোথাকার এঁ। !
কেরে তুই ? এবাটো কথা কয় মা—কেরে তুই, কেরে ?

ছেলে। এঁ। এঁ। - সামি তোমার ভাগনে গো বাবা!

বাপ। ওরে বাটো, জল জেয়ান্ত ব্যোকে তুমি মামা বানাতে চাও হতভাগা !

বোলেই পড়ম প্রথার মারস্ত ক'রেছে। ছেলে (স্বগত) বল্ছে।

ছেলে। বাবা এমন বিপদও করে, এ যে বাটো চারদিকে রক্ত ঝুঁঝিয়ে বেকতে লাগল রে, কি গুগুরি-কাছট ক'রেছিলাম।

বাপ। বাটা কের তুমি মদ মেরে এসেছ—

্ছেলে। (স্বগত) ই। ই। বাবা, জামি তুনা হয় নদ মারি তুনি যে মানুষ্ধ কোটাটা সবই মারো বাবা, এই সকাল বেলা প্রসাদের মাথম ২০৮



মারো, এই ছপুর বেলা মাছি মারো, রাজে মশা মারো, রাগলে মাকে মারো, এই বাজারে বেরুলে মহাজন মারো, হাঁ হাঁ ভারি জার কি, আমার বড়— অপরাধ।

বাপ। তবে রে বাটে। পাজি কোণাকার, ছুঁচো হারামজাদা শুয়ার, তোমায় বারংবার বারণ ক 'রেছি তবু বাটো তুমি আমার কথা শোম নাক।

ছেলে। আ রে বাবা শুন্বে কে ? ই। হা সে বাটা কি আর তথন ছেলে আছে, সে একটা জিলান্ত উপদেবতা হ'য়ে বাবা লাড়িয়েছে।

বাপ। মারে এই জামাতাই নবগ্রহ ছিল, গুনেছিলেম এই নব-গ্রহরও উপর কথন কথন যেতো, এ বাটো ছেলে যে আমার হ'য়েছে এ বাটো দেখছি বাবা তায়াদশ গ্রহর উপরে যার, বাটা হাড়ে-মাসে ভাজা ভাজা ক'রলে, এই বুড়ো বয়সে বাটাকে যত বারণ করি, হাড়হাবাডে বাটা তত্তই মদ গিল্বে—আর হতভাগা লক্ষীছাড়া কোথাকার, বাটোকে ব'ল্বো এক আর কর্বে এক, হাড়হাবাডে বাটা কেথাকার, বাটা কের মদ মেরে এসেছে।

ছেলে। ওবাবা আমি তনা হয় মদই মারি, আর তুমি যে বাবা মাতাল মার।

বাপ। কের কথা কচ্চ শুয়ার—মাতাল মারি, আমি মাতাল মারি— আমি ওর মতন মাতাল মারি, হাড়হাবাতে বাাটা কোথাকার বাড়ী ঢোক শুয়ার কোথাকার।

ছেলে। আছে। বাবা আর্ ব'লতে হবে না।



#### ভাত্রকুট-মাহাত্ম।

আনবোলাং নমস্কৃতাং ফোড়**নীঞ্চ** গড়গড়াং।
দেবীং ছকাং কলিকাঞ্চততো-জ্যমুদীরয়েও॥

আয় -আয় একদা নিরামিষারণ্যে মহর্ষি কেশাকর্ষণ-পুত্র ব্যাদ্রশ্রতা মৃগশক্ত প্রমুখাদি সপ্তকোটি ঋষিগণকে, কল্পি-পুরাণের অন্তর্গত তামকট-মহাত্ম কীর্ত্তন করিয়াছিলেন। কথাতে-কথাতাম। রাজা বৃদ্ধিগোময় মহর্ষি হকা নারায়ণকে কহিতে লাগিলেন—মহারাজ! আমি ঘোর পাপে কলুষিত, সদা তাকিয়া ঠেসনে শায়িত, মোসাহেবগণ পরিবেষ্টিত, জাল জুয়াচরিতে রত, সুরাগুণে মোহিত, মানসিক বাাধিগ্রস্ত, প্রভু হে ! আমার গতি কি হবে-এই বলিয়া মহারাজ সাতিশয় অনুশোচনা ও পরিবেদনা প্রকাশ করিতে লাগিলেন; তদ্ধশনে হকানারায়ণ মহারাজকে নানারূপ **ভোকবাকা দ্বারায় সান্তনা করতঃ কহিতে লাগিলেন, মহারাজ ৷ চিন্তা** ক'রবেন না—আপনার মুক্তির উপায় স্থির করিয়াছি। আপনি অচিরে যমপুরের উদ্ধভাগে ধুমলোকে গমন করিয়া শান্তিলাভ করিবেন, আপনি নিশ্চিন্ত রহন। মহারাজ শ্রীহরির শ্রীচরণ স্থারণ বিনা জীবের গতি নাই হে (হরি হরি বল ) কিন্তু মহারাজ ও পাপমুগে ভ্রম ক্রমেও একবার ভগবানের নাম উচ্চারণ করেন নাই, শ্রীহরির নাম উচ্চারণ করাও আপনার পক্ষে কষ্টসাধ্য। তবে এক উপায় বলি শ্রবণ করুন,--- মাপনি হকাদেবীর সারাধনা করত তাম্রকৃট সেবনে রত ইউন। এ বোর কলিকালে তাম্রকট সেবন ব্যতীত জীবের আর কোন উপায় নাই, মহারাজ। তামকুটং দেবনং বিনা কলো নাস্ত্যে গতিরম্ভথা। আয় আয় ব্যার মহারাজ অবধান করুন, মহেশ্বরের ডমরু হইতে কলিকা, 984

## ব্রেকর্ড-কাকলী

বিষ্ণুর ক্বক্ষ অবতারে বংশী হইতে নলিচা এবং ক্রমার কমগুলু হইতে খোলের উৎপত্তি হইরাছে, এই তিনের একত্র সংযোগে হ্বকাদেবী আবির্ভূতা হইরাছেন। মহারাজ! ভগবানের ত্রিমূর্ত্তি তাম্রকৃট সেবন হারার প্রকটিত হ'ন এবং এই হ্বকাদেবী ভগবানের একমাত্র ত্রিগুণাগ্রিকা বহিরক্ষ শক্তি। মহারাজ! স্থরা পরিত্যাগ করিয়া অহিফেন সেবনে রত্ হন, এখনই আচম্বিতে আপনার শরীরে ত্রিগুণাগ্রিকা শক্তি সঞ্চারিত হইবে। মহারাজ! আনি অতি শৃচ্মতি, আমি নিজ মাহাত্ম্য বর্ণনা করিব। ভক্তগণ এক্ষণে সজ্জং কুক্ব তাম্রকৃটং জয় জয় তাম্রকৃটের জয়, জয় জয় হ্বকদেবীর জয়।



### স্থর-পরিচয়।

নিয়ে, যে যে রাগ-রাগিণীতে যে যে পদা ব্যবস্থত হয় তাহা প্রাদত্ত হইল। কোমল পদাগুলি ( ) বন্ধনীর মধ্যে কোঃ দিয়া দেওয়া হইল। পাঠক অরণ রাগিবেন—গায়ক যে রাগিণীতে গান করিবেন; সেই রাগিণীর পদার (ঠাটের) মধ্যে তাঁহার কণ্ঠস্বর আবদ্ধ রাগিবেন; স্কতরাং সামান্ত একটু 'সা রে গা' সাধা থাকিলে পাঠক বিনা আয়াসে নিম্নলিখিত ঠাটের সাহাযো যে কোন রাগিণীতে গাঁত যে কোন সঙ্গীতের সহিত হারমোনিয়ম বাজাইতে সঙ্গম হইবেন।

রাগ ও রাগিণীর

वाढं

নাম ( ক্রথাৎ যে যে পদ্ধা বাবস্থত হয় )
ক্রাসাবর্নী—সা, (রে কোঃ), (গা কোঃ), না, পা, (ধা কোঃ), (নি কোঃ)।
ক্রাভানা—সা, রে, ( গা কোমল ), মা, পা, ধা, ( নি কোমল )।
ক্রালাহিয়া—সা, রে, গা, না, পা, ধা, নি ।
ইমন্—কায়ণ—সা, রে, গা, না, (মা কড়ি), পা, ধা, ( নি কোঃ )।
কানাড়া—সা, রে, ( গা কোমল ) মা, পা, ধা, ( নি কোমল )।
কামোদ—সা, রে, গা, মা, পা, ধা, ( নি কোমল )।
কালাংড়া—সা, রে কোমল ), গা, মা, পা, (ধা কোমল ), নি ।
কেদারা— সা, রে গা, মা, (মা কড়ি), পা, ধা, নি ।
থাখাজ—সা, রে, গা, মা, পা, ধা, ( নি কোমল ) ॥
পৌরসার্কী
রে, গা, ( মা কড়ি ), পা, ধা, নি ।

# রেকর্ড-কাকনী

গৌরী---দা, (রে কোমল), গা, মা, (মা কড়ি), পা, (ধা কোমল) নি। ছাগনট-সা. রে. গা. মা. পা. নি। জয় জয়ন্তী-- দ রে, গা, ( গা কোমল ), মা, পা, ধা, ( নি কোমল )। বি বৈট—সা, ..., গা, মা, পা, ধা, ( নি কোনল )। তিলক কামোদ—সা, রে. গা, মা, পাধা, (নি কোমল)। টোড়ী—সা. ( রে কোঃ ), ানা কোঃ ), ( না কছি ), পা, ( ধা নি কোঃ ), দরবারি কানাড!—সা, রে. ( গা কোঃ ), মা, পা. (ধা কোঃ), ( নি কোঃ (म - मा, त. भा, भा, भा, धा, (नि कामन)। পঞ্চন -সা, (রে কোঃ), গা, মা, ধা, নি। (ইহার্টে-<sup>ক্রিণ</sup> জিত)। পরজ-না. েরে কোমল ), গা, ( মা কড়ি ), পা, ( ধা কো 🎺, নি । পাহাড়ি--সা, রে, গা, মা, পা, ধা, ( নি কোমল )। পিল—সা, বে, ( গা কোমল ), মা, পা, (ধা কোমল ), নি। পুরবী—সা. ( রে কোমল ), গা, (মা কড়ি), পা, (ধা কোমল ), ি। প্রিয়া--- সা. ( সে কোঃ), গা, গো কড়ি), ধা, নি । ( ইহাতে "পা" বক্ষিত ) : বসন্ত-সা (রে কোঃ) গা, (মা কড়ি) ধা, মি। ( ইহাতে ) "পা" বর্জিত বাগে 🕮 — সা. রে. (গা কোমল), মা, পা, ধা, (নি কোমল)। বারে যা—সা. রে, ( গা কোমল ), মা, পা, ধা, ( নি কোমল )। বাহার—সা, রে, ( গা কোমাল ), মা, পা, ধা, ( নি কোমল )। বিভাষ- সা, রে, গা, পা, ধা, নি,। ইহাতে "মা" বৰ্জিত )• বুন্দাবনী সারঙ্গ —সা, রে. মা, পা. নি। ( ইহাতে "গা" ও "ধা" বর্জিত ) বেহাগ —সা, গা, 👣 ন কড়ি, পা নি।) ( ইহাতে "রে" ও "ধা" বক্ষিত 🤆 ভীনপলন্মী—সা, রে, ( গা কোমল ) মা, পা, ধা, ( নি কোমল ) 📝

## <u>রেকর্ড-কার্কলী</u>

```
ভূপানী—সা, রে, গা, পা, ধা, (ইহাতে "মা" ও "নি" বর্জ্জিত)
ভৈরব—সা, ( রে কোমল ), গা, মা, পা ( ধা কোমল ) (নি কোমল)
হৈত্রবী—সা, (রে কোঃ) ( পা কোঃ ) মা, পা, (ধা, কোঃ) (নি কোঃ)
মলার-সা, রে, গা, মা, পা, গ: (নি কোমল),
মালকোষ-না, (গা কোমল), পা, ( ধা কোমল ), (নি কোমল)।
                               (ইহাতে "রে" ও "পা" বর্জিত \
ৰ্লত্যন— ' ,ব্ :
                               ন। কড়ি ), পা, (ধ: কোঃ), নি।
নেছ— শ্রা, প্রার্থিত প্রায় ক্তিত )
জেপিজ্য — নিয়ম - শ্রিকিড স্ক্রিক (শ্রেক্সেল ) নি ।
রামকেলী-- ে কোঃ), প্রাকোঃ)(নি কোঃ)।
ললিত—: াল) ধানি। ইহাতে "পা" বক্তিত)
'শঙ্করা---সা, সে, সা, সা, ( দা কোমল ) ধা, নি ।
🕮রাম—দা, ( রে কোঃ ; 🙄, ( মা কড়ি ) পা (ধা কোমল) নি ।
সারক—সা, রে, গা, মা, পা, (নি কোমল)।
সাহান সা, রে, (গা কোমল) পা, ধা, (নি কোমল)।
সিদ্ধ-সা, রে, (গা কোমল) মা পা ধা, ( নি কোমল )।
স্থরট-শা, রে, গা, মা, পা, ধা, ( নি কোমল )।
সিদ্ভা-না, রে. (গা কোমল), পা, ধা (নি কোমল)।
সোহিনী—সা, (রে কোনল) ধা, নি। (ইহাতে "পা" বর্জিত)
হাৰীর-সা, বে, গা, ( মা কড়ি ), পা, ধা নি।
হিন্দোল—না, গা, ( মা কড়ি ) ধা, নি। ( ইহাতে "রে" গু "পা" বৰ্জিত )
                          সমাপ্ত:
```